Nagari-Pracharini Granthamala Series. No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RASO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.
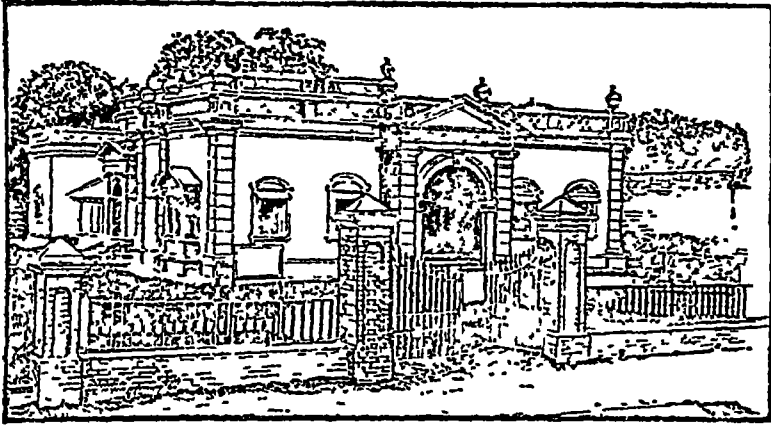
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) रु०] [*Price Rs 4/.*

सूचीपत्र ।

(२९) घघर की लड़ाई समय ।

(पृष्ठ ९४५ से ९९८ तक)

---

(३०) करनाटी पत्र समय ।

(पृष्ठ ९५९ से ९६६ तक)

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ९९७ से ९९३ तक ।)

---

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९१ से १०१३ तक)

---*---

(३२) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१९ से १०२९ तक)

---

(३४) जैतराव युद्ध समय।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक।)

---

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०४५ से १०५८ तक।)

—:o:—

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक ।)

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

---

(३८) बरुण कथा।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक।)

---

[३९] सोमबध समय ।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

---

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

[४२] चंद द्वारिका समयौ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

———

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

——:o:——

[४९] भीम बध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

(४५) संयोगिता पूर्व्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

---

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२६४ तक)

[४६] सुक वर्णन।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

—:o:—

[४८] बालुकाराय समय।

(पृष्ठ १२६३ से पृष्ठ १३२९ तक)

---

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(उंचासवां समय ।)

---

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पचासवां समय ।)

---

(५१) हांसीपुर युद्ध।

(इक्यावनवां समय।)

---

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

---

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

---

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय।)

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी में पहुंचा ।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिराज । अवनि आषेटक [1]षिल्लय ॥
साठ सहस असवार । जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धूनि धरा पतिसाह । रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्थ लिये सामंत । दिली कैमास सु [3]जानय ॥
न्नगया सु रमय प्रथिराज वर । गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरौ इंद्र दिल्लेस वर । सुभर सरस ढिग सुभ्भियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा ॥ गई षबर ध्रम्मान की । उट्ट चढ़े असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तषत । दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज साजत पवँग । है गै नर भर भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि । कुहकबान हथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
डेरा करि पेसोर न्रप । सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन[4]पंथ विच पंथ दोइ । गज्ज ग्रज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए.-षिल्लिय, ढिल्लिय । (२) ए. कृ. को.-धरत्तिव (३) ए. कृ. को.-मत्तिय । (४) ए.-पंच ।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत। चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षवरि प्रथिराज। चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत। तवहि तत्तार सु बुझ्झय ॥
कहा करंत दिलेस। चढ़त गिरवर धर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि। तीन पाव लष्षह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल। उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय। संग स्वानं घन चीते ॥
नावकं पावक बिपुल। जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बघ्घह सु। संत मेघा कलि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु। लंब सिरषां सिर [2]पुट्टिय ॥
जुर्रा [3]रु बाज कूही गुहा। धानुक्की दारू धरा ॥
वहु काल भाल वदकं बिला। जम भय तव जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट। सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह। रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिच। सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब। दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कों। तब तसबी कर मंडिहौं ॥
टामंक सद्द नद्दह करों। जुगति साह तब [4]छंडिहौं ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हवश और बलख़ आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

---

(१) कृ. को. ए.-सित्त। (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय।
(३) ए. कृ. को.-जु। (४) मो.-ठंडिहौं।

दूहा ॥ देस देस कग्गद फटें। पेसंगी षुरसान ॥
रोम हवस अरु बल्लक में। फट्टे पट्टु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत। लष्ष पंचह मिलि पष्षर ॥
कूंच कूंच परि घैर। गुरज धारी लष गष्षर ॥
कोस दहं दह कूच। आइ गिरवान सपत्तौ ॥
दौरि दूत दिल्लेस। जाम कर चय दिन वित्तौ ॥
मुक्काम कियौ प्रथिराज न्टप। तहां षवरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर। सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घग्घर नदी पहुंचा।

चैत मास रवि तीज। सेत पष्षह कल चंदह ॥
भयौ सुदिन मध्यान। चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
कटक सबर झिल्लोर। भार सेसह करि भग्गिय ॥
चढ़ि सामंत सकज्ज। नह सुर [१]अंमर जग्गिय ॥
गज रोर सोर बंधे घटा। सिलह बीज सिलकावलिय ॥
[२]पप्पीह चीह सहनाइ सुर। नदि घग्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह। पैसंगी पतिसाह ॥
[३]पच्छांई बादल प्रबल। भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥

बरन बरन तहां देषियै। घंटा रव गजराज ॥
सन्नाहा सन्नाह रजि। पष्षर सष्षर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥

भई हलोहल सेन सब। पान व्यूह बर षेत ॥
लष्ष एक भर अंग मैं। छच धर्‍यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

(१) मो.-अमर सु जग्गिय। (२) ए.-पापीह। (३) कृ.-पच्छाहीं।

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि। हुअ संनाह सनाह ॥
हुअ हलोहल सुब्भरग। दोउ दिन इक राह ॥ छं० ॥ १४ ॥

सेना का वर्णन।

चोटक ॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज वरं ॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव वाहल संमिलयं ॥
छं० ॥ १५ ॥

सु अग्गें हथनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं ॥
तिन पिट्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]झरंत करी तिहलें ॥
छं० ॥ १६ ॥

तिन पिट्ठह फौज गहव्वरयं। धरि गोरिय मुट्ठ करं धरियं ॥
कमनेंत अभूल सु लष्ष लियं। तिन मध्य ततारह छच दियं ॥
छं० ॥ १७ ॥

लष दोय गुरज्ज स गण्परियं। षुरसान दियं दल पष्षरियं ॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं ॥
छं० ॥ १८ ॥

षुरसान तनं दल उप्पटयं। मनुं साइर सत्त उलट्ट भयं ॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अब्ब सरं। लोहानिय पानिय षेत षरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कती। बहु जाति अनेक अनेक भती ॥
छं० ॥ २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गो तत्तारिय ॥
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु भारिय ॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर ॥
पाचि पीठि रुस्तंम। पना बहु भांति अवर नर ॥

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जब। (३) ए.-ध्यानिय।

उत्तरिय नद्द गोरीस पहुं। वज्जा दस दिसि वज्जिया॥
मानों कि भइ उलटी मही। साइर [1]अंवु गरज्जिया॥ छं०॥ २१॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया।

दूहा॥ दिल्लीपति फौजह रची। दियौ जैत सिर छत्त॥
चामंड रा अग्गै भयौ। मनों सु गिरवर गत्त॥ छं०॥ २२॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

कवित्त॥ फौज रची सामंत। गरुड़व्यूहं रचि गड्डिय॥
पंष भाग प्रथिराज। चंच चावंड सु गड्डिय॥
गावरि अत्ताताइ। पांइ गोइंद सु ठड्डिय॥
पुच्छ कन्ह चौहान। पेट पम्मारह पड्डिय॥
सुंडाल काल अग्गो धरे। [2]कढे दोइ कलहन्न किय॥
चालंत बान गोरै प्रबल। मानहु अंधकि मार दिय॥ छं०॥ २३॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना।

तत्तारह उप्परह। चित्त चावंड चलायौ॥
दुहूं फौज अग्गंज। दुहूं भुज भार भलायौ॥
मीर बान बरषंत। धार धारा हर लग्गौ॥
वाही चामँडराइ। भूमि तत्तारह भग्गौ॥
उत्तरे मीर सै पंच दुइ। दाहिम्मै किन्नौ दहन॥
पहिलै जु झुज्झ दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन॥ छं०॥ २४॥

तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता।

भूमि पर्यौ तत्तार। मारि कमनेत प्रहारै॥
एक घाव दोइ टूक। परे धारन मुहु धारै॥

---

(१) ए.-अंव्रर। (२) ए.-कढ्ढे दोई कल किंयं।

[1]षुर बज्जै षुरतार। चमकि चामंड चलायौ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन धायौ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ। सत्त घरी साहस धरै॥
तिनमा [2]कटक्क त्रिविधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै॥ छं०॥ २५॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आषूंद। अठ्ठ सहसं बहु गष्षर॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्षर गष्षर॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर दो सहस लरै भर॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिन मथौ सहस कर॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पर्यौ। दौर्यौ जैत महा बलिय॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। कलि मझ्झे रिन बट कलिय॥
छं०॥ २६॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धपी [5]सेन सुरतान। [6]मुठ्ठि छुट्टी चावद्दिसि॥
मनु कपाट उधर्यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिद्दिसि॥
मार मार मुष किन्न। लिन्न चावंड [7]उपारे॥
परे सेन सुरतान। जाम इक्कह परि धारे॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेही भिंटयौ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल [8]कुट्टयौ॥ छं०॥ २७॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुष्ष कर॥
परे बज्ज सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर॥

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध।
(३) मो.-परिकर, क.-पष्षर। (४) क.-पयौ, ए.-भयौ। (५) मो.-मुट्ठि।
(६) मो.-तुट्ठि। (७) ए.-उषारे। (८) ए. क. को.-छुट्टयौ।

घुरसानी बंगाल। मनहु [1]डंडूर रमावैं ॥
भरै पत्र जोगिनी। डक्क नारद्द बजावैं ॥
अपछरा गीत गावत इला। तुंवर तंत बजावहीं ॥
सुरतान सेन दिल्लेस वर। [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं ॥ छं० ॥ २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धूनत पतिसाह। धाह सुनि सेना सथ्थिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार। परे बथ्थन सों बथ्थिय ॥
जम सों जम आहुरै। सूर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥
नई गंठि तन जोग। सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
घुरसान जैंत अब्बूधनिय। धार धार मुह कट्टिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्यौ सुन्यौ। दारुन मेछ दवट्टिया ॥ छं० ॥ २९ ॥
मनु द्वादस सूरज्ज। हथ्थ चंद्रमा मद्दा सर ॥
जिन उप्पर झलमलै। ताहि धर गोरिय सुभ्भर ॥
कटक कूह किलकार। सार परमार बजायौ ॥
भिरि भंज्यौ सुरतान। एक एकह सुष धायौ ॥
सिर सार धार बुथ्यौ प्रहर। तब दौर्यौ पज्जून भर ॥
निसुरत्ति षान लष्पह बली। लप्प एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥३०॥

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी ॥ मचे [3]कूह कूहं, बहै सार [4]सारं। चमक्कैं चमक्कैं, करारं सु [4]धारं ॥
भभक्कैं भभक्कैं, बहै रत्त धारं। सनक्कैं सनक्कैं, बहै बान [5]भारं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
हबक्कैं हबक्कैं, बहैं सेल भेलं। हलक्कैं हलक्कैं मची ठेल ठेलं ॥
कुकैं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं। बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दंडूक। (२) ए.-वग्ग।
(३) ए. कृ. को.-हूंक हूकं। (४) ए. कृ. को.-धारं। (५) मो.-धारं।

बद्दै चट्ट पट्ट, उघट्ट उलट्ट। कुलट्टा [1]धरै अप्प, अप्पं उहट्ट ॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं। कडक्कं वजै सैन, सेना सुघट्टं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बद्दै हथ्थ परमार, सिरदार सारं। परे सेन गोरी, बद्दै रत्त [2]धारं ॥
पऱ्यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं। हुऔ सूर मध्यान, दिल्ली स जित्तं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष। सार सिंधुरह गुड़ावै ॥
मार मार मुष चवै। सिंघ सिंघा मुष धावै ॥
दौरि कन्ह नरनाह। पटी छुट्टी [3]अंषिन पर ॥
हथ्थ लाइ [4]किरवान। रुंड माला किन्निय हर ॥
बिहु बाह लष्ष लोहै परिय। जानि करिब्बर दाह किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें। कलह कियौ कि उधान किय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं। गिरे काइरं, सूर बढ्ढे सनूरं ॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कंपारं। पियै जोगनी पच, कीयैं डकारं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बद्दै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं। करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं ॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं। लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय। भगिय सेना पतिसाहिय ॥
पंच फौज एकट्ठ। कन्ह करवारि [5]सम्हारिय ॥

---

(१) ए.-धरा। (२) मो.-षारं। (३) ए.-अंषनि।
(४) ए. कृ. को.-करिवार। (५) कृ.-सम्माहिय।

धर पारे बहु मीर। सथ्थ जब सेना भग्गिय ॥
गर घत्ती कमान। लियौ गोरीय उछंगिय ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे। हाय हाय सुष हुंकर्‌यौ ॥
पज्जून झेलि सुष मीर कौ। कन्ह लेइ गोरी बर्‌यौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना।

जनु उद्यान हलाइ। पवन चल्लै ज्यौं बांधै ॥
त्यों पज्जून नरिंद। मीर जमदड्ढै सांधै ॥
परे मीर सै सत्त। बिए रन छंडिव भज्जे ॥
चामर छत्र रपत्त। तषत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
कन्हा नरिंद पतिसाह लै। गयौ थान अप्पन वलिय ॥
पंमार सिंघ लग्यौ सु पय। चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना।

(१)रहै कन्ह अजमेर। *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद। दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर। †लिए पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किज्जै महिमान। पास ठड्ढा रहै इंदह ॥
वैठारि तषत सिर छत्र दिय। सभा विराजे सु पहुंभर ॥
सिर फेरि घेर दिज्जै दुनी। यों रष्पै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या।

एक लष्ष बाजिच। सहस तीनह मय मत्तह ॥
लष्ष एक तोषार। तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए. को.-हरै। * ए. कृ. को.-लिए पतिसाह नरिंद हिय।
† ए. कृ. को.-तहां चहुआन जैत लिह।

आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय धर सारिय॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्टे घाव सु बंधियै॥
रन जीत सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु बज्जियै॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए॥
गोयँद निद्दुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए॥
करौ दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह॥
रा पज्जून प्रसंग। राव हाहुलि हंमीरह॥
इत्तने मत्त मक्खह मिले। हम मारैं छोरैं न अब॥
ह्वैहै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु कब॥ छं० ॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस पंधार। दिए पछिबानं सारं॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं॥
गज्जन रष्षै देस। बियौ समपै प्रथिराजह॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हैम उप्पर काजह॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ नह॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जें हमहि॥छं०॥ ४३॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय॥
जग्य कियौ पंडवन। हेम काचौ [2]उन आन्यौ॥

---

(१) ए. कृ. को.-करिब। (२) ए. कृ. को.-तुम।

त्यौं लभ्यौ पतिसाहि। लष्य लोहा हम मान्यौ ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह कौ। लोहानौ सथ्थै दियौ ॥
असवार सहस सथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इतौ क्रियौ ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार लच कन्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह ॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह। वत्त सव जंपी अप्पह ॥
ह्वै षुसाल गजनेस। दई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह। गयौ दिल्ली सु ततच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सव। तेग दई दिल्लेस वर ॥
दो अश्व करी दोइ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर ॥
छं० ॥ ४५ ॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर ॥
तम रषियो हम प्रीति। वरष मन सत्तह केसर ॥
पेसंगी धर सीम। बीच पौरान कुरानं ॥
जो तक्कौं तुम अवे। तबै तुम कढ़ियौ प्रानं ॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौं ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत। हूंन अबै ऐसी करौं ॥छं० ॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना।

पहु चल्यौ सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थै ॥
दूत च्यारि अनुसार। काल छुट्यौ सें हथ्थै ॥
गयौ बीस म्होलान। अटक उत्तरि इन पारं ॥

(१) ए. कां.-चाहि, चाह ।

सोवन पथ्थ मेलान । सहस सम्हे असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन । आइ कियौ सलाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय । चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल्ल हरी नवट्ट । सहस अठ्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह । पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार । कटक देष्यौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ । सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार वज्जि चंबाल बहु । सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उत्तऱ्यौ कटक छोरिय अटक । नहि हुऔ उग्गंत पहु ॥छं० ॥४८॥

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंवालं । हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं । किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान । कोंन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन वेर । धनी पछिवानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच । कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब जान्यौ रयसल्ल । सेन आजान बऱ्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं । सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेव फौज लोहान बर । दुहूं फौज टामकं किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत । आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै दान बिहंग । जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संभाही आजान । तेग मानहु हबि दिट्ठिय ॥
जानि सिषर मझ्झि बीज । कंध रैसल्लह बुट्टिय ॥

लोहान तनी वज्जै लहरि । कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल । एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी । लोह वज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक्क तर । लुथ्थें लुथ्थ समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना ।

परयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं । ढुंढि षेत लोहान ॥
सुबर साह गोरी न्त्रिभय । गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार ख़ां खुरासान ख़ां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान । सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्यौछावर करि पैर । बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्प एक असवार । मिल्यौ गोरी दल पष्पर ॥
लष्प भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गप्पर ॥
उच्छाह भयौ गज्जन इला । गयौ मझ्झि गोरी धनिय ॥
दरवार भीर भीरन्न घन । मिलत आइ अप अप्पनिय ॥ छं० ॥ ५४ ॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।

डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान । तुरिय पंचास अप्प वस ॥
इह दिन्नौ लोहान । दियौ भेज्यौ न्टप राजं ॥
लादे दाइ हजार । सत्त सै तोला साजं ॥
इक इक्क तुरी हथ्थी सु इक्क । सामंतन दीनौं सवै ॥
मुह करिय कित्ति अन्नेक विधि । सुबर सूर फेरिय जबै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

लोहाना विदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दप्पै ॥
मिल्यौ बाह आजान। वत्त सुरतान सु अप्पै ॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं ॥
सोव्रन्न रासि रंजक षहर। मुक्कलियै चिचँगपुरैं ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं ॥
लादे सित्त सुरंग। सित्त लैं [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैबर कुल राकिय ॥
छच लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह ॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कानवज्ज ॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ । सुवर वीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि पलपठ सुरतान सौं । दल भग्गौ सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चढ्यौ सुवर चहुआन । वीर कन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव वर सेन । तारि कढ्यौ सु तुंग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर थाही ॥
वर वीर जुद्ध कमधज्ज करि । भीर भगी वर वीर [2]अचि ॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर । षग्ग सार बोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक्क सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जच तच एकठ भये । [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना ।

---

(१) ए.- कसवज्ज ।   (२) ए. कृ. को.-आगि ।
(३) ए. कृ. को.-मार्ग ।   (४) मो.-सब कमधजाहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति भस्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानक नाइक। नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु बिद्य। कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सथ्थ चीय रतिरूव तन। बर चवद्द चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल। अति मति अगनित [1]विद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

बाधा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं। अति अंगनि विद्यावल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं। पूरन हाटक बरन बिवंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं। स्वर जनु पंचम मझ्झ गुँजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं। सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै। बासन महल मंझ्झ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि। जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ। बहुर प्रसंसन साधक कीनौ॥छं०॥९॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ्झ समय अंदर महल। किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयट्ठौ राज तहँ। अनंत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं। सु धाम तेज तग्गियं॥
सजे सुभाल आसनं। अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-वैद्य। (२) मो.-अंति।

सु दीप साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं॥
कपूर पूर जंभरं। मृगज्ज वास अंगरं॥ छं०॥ १२॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि वासनं॥
कनक छत्र दंडयं। सु रंग रंग मंडयं॥ छं०॥ १३॥
अबीर [1]जष्ष कद्दमं। सरोहि ग्रेह सद्दमं॥
अभूत साष लोभयं। अबीर भूर ओभयं॥ छं०॥ १४॥
अयास धूम धोमरं। प्रसार वास ओमरं॥
प्रसून ब्रन्न वन्नयं। स भूषनं स भ्रम्मयं॥ छं०॥ १५॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं॥
भ्रुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं॥ छं०॥ १६॥
तहां सु राज आसनं। सरोहि सिंघ सासनं॥
सुपाय अंग रष्षियं। कला जु काम लष्षियं॥ छं०॥ १७॥
प्रवीन भाव पायसं। विचित्र चित्र पासयं॥
भवंति क्रंति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं॥ छं०॥ १८॥
प्रसून [2]विद्धि बासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं॥
बरष्ष षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं॥ छं०॥ १९॥
कला विग्यान विद्धयं। सु पास भूप सिद्धयं॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं॥ छं०॥ २०॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंभ्र राज सामरं॥
धरंत कव्वि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं॥ छं०॥ २१॥
सु घन्नसार पानयं। सुगंध विद्ध मानयं॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सष्षि [6]अद्धि संमरं॥ छं०॥ २२॥
शृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं॥
समोभ धामयं सजं। सुबास वासवं लजं॥ छं०॥ २३॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

(१) कृ. ए.-दच्छ, जच्छ, जच्छ।
(२) मो.-विद्ध। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-समं।
(५) कृ.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अद्ध।

कवित्त ॥ रचि धाम अभिराम। राज हरि थान वयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लीह। तेज उस्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस। बोलि जद्दव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति जामनि वल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर। लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल तास नाइक्क। सथ्य सथ्यह सव साजं ॥
बोलि पाच कर्नाटि। बैठि गानं वर वाजं ॥
नाटक भेद निवंध। बूझि राजन वर वत्तं ॥
कवन कला क्रत पाच। कहौ नाइक निज सत्तं ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि। एह पाच देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मय ॥छं०॥२५॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निढ्ढुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ तास कविचंद बानि। नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
सो धरौ कला विचार साज। निढ्ढुरह बयट्ठौ पास राज ॥छं०॥२६॥
नाटक्क विविध बुझ्झै बिनान। विचार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट। न्रप पास बयट्ठौ को सुभट्ट ॥छं०॥२७॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्यौ चंद नायक सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निड्ढुरह एव ॥छं०॥२८॥

(१) मो.-देह। (२) क्र.-चंद पुंडिर।

नायक कहै हय वत्त सच्च। आवन्न केम हुअ दिल्ली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चिंत। आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जौ सिंघ कियौ तहां उड्ड काज। अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु वेस उभय बंधव सरूप। श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल्ल निढ्ढुर सनेक। कहि कुमर राज सह्यौ सु एक ॥
उच्चर्यौ ताम निढ्ढुरह देव। कर कुमर हंम सिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद समुष निरषंत ताम। कल [1]कल्लिय लग्ग चामठ्ठ धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह। सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त ॥ समय एक निढ्ढुर। कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन। उभय एकल्ल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग। सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार। सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि। घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये बाग आगम सकल। लह्यौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल ॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिल्लिय अप्पं। तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं। रच्चे मंस बिबह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे। [3]चपतौ सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै। कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं। मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं। आयौ आतुर [5]बग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मल्लिय। (२) ए.-गोगिय। (३) मो.-नृप तौ।
(४) मो.-सुरंगं। (५) मो.-ब्रोगे।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे ॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। खुट्टी बस्त गोठि मनि सावं ॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे सुप जैचंद विरत्तौ ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिथ्थ वधायौ ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दुहा ॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बेंन उचार ॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ॥ ४० ॥
गाथा ॥ राजनीति गति रुवं। गुन संपूर चीस एकंगं ॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक ॥ विद्या विनय बिवेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा ॥
[3]सुबिचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौदंर्य्यता ॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं ॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
[5]उद्दायं उद्धार दाव उछहं एते गुना राजयं ॥

---

(१) ए.-कानिक। (२) ए. कृ. को.-मार सल्यं, विव्वेक विचारयं।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तप्प सोत्र सुमनं सौजन्य सोभाग्ययं।
(४) ए. कृ. को.-भाग्यं।
(५) ए.-जद्दायं।

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं ॥
सोयं [1]नीति सनीत कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं [2]जोरयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि। अहो चंद बरदाइ ॥
राग विनोदह चौसपट। कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥
* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदयं। सुरवंध न्टत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं। अभिलाप अर्थ पदादयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
[3]वक्षात जग्यपवीतयं। प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत यालक तल्पयं। ते पढ़य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोद्यं। प्रातापयंच प्रसोद्यं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं। निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं। प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं। सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनि नायक राजन्न मति। जंपहि दिल्ली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि। विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना।

प्रथम गान सुरतान गुन। वादी नेक विनान ॥
पाछें न्टत्य प्रचार भर। प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ तबै वोलियं अप्प नाइकाअग्गं। सुपं पाच आरोह उच्चार जग्गं ॥
धरै आप वीना सुरंसाज सारें। सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥
छं० ॥ ५१ ॥
धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए। रचे च्यार राहं सुभा सुब्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं। रचे मंडली राय आयास थानं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-तीन। (२) ए.-को.-चोवरं।
* ए. कृ. को.- में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत।

मनं सर्व मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। वयं विस्मयं वेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥

दया दीन चित्तं अभिलाप जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी सत्त वेली त्रितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक्क राजन्न तासं। कहा मोल पाचं कहो द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक्क पाचं सरीसं। कहा मोल पाचं न्टपं जोग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पाचं सुभासं॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्टे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्टे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दुहा ॥ काम कला तुट्ठिय न्टपति। सु ग्रह पवारी द्वार ॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ मह्ल भयौ न्टप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्टा दिसि [1]उच्चरिय । राय चामंड बीर वर ॥
वंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्हे । सीम कहै नह आजं ॥
कैमास वोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ वैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ वैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद वरनैति मझ्झ ॥
वुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्दै सु जुद्ध संग्राम ओीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । वंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तीन वंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम वैर बीर वंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय ।   (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। क्रित करै जुद्ध करनौ विसेस ॥
थल वटिय वीर मक्किक्षय हुजाव। रप्पंति सूर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥
सब सबर अरी चहु दिस नरिंद । तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंह काल सुभथान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥
तिन वरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज संडन सु वीय ॥
बंच्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल॥
देवास धीय देवास व्याह। मंड्यौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल वत्त चलै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै वत्त। संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह कच्च पिंड [1]संची सु वत्त। जै है सुजोग जोगाधि तत्त॥छं०॥१०॥
जै है सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो विनसि सार ॥
वापी विरष्य सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्व ऋगतिस्र जान ॥
छं० ॥ ११ ॥
छंडो न बीर देवा सु सुष्य। रष्यौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्ष ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन नें कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दद्धीच दीय बर ॥
गल्हां काज सरुष्ष। बज्र किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्ष।

गलहां काज नरिंद। वंस दुरजोध मान रषि ॥
गलहां काज सु धात। मान अदृत्ति भूंम लपि ॥
रष्षिहै नरन गलहां सुवर। गलहां र[illegible] न्टपति उप ॥
जयचंद वंध दल दल सकल। सवर [1]साइ किज्जै सरुप ॥छं०॥१३॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिंद मन। करै वनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं। सुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन।

त्रोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं। दरवार विराजत राज भरं ॥
चढ़ि चच्चर चंद पुंडीर कियं। सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥
छं० ॥ १५ ॥

न्टप लज्ज न्टपत्तिय सारँगयं। सभ पुज्जिन सामँत ता वरयं ॥
अतताइय अंग उतंग भरं। सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निढ्ढुर एक नरिंद समं। कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद वली। प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रप्पन छित्ति पजून भरं। तिन पुत्त वली वलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती। तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंत्रिय राज दरं। अरि अंग [3]उछाहन वीर वरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं। रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु षग्ग वली। नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
वर लंगरिराइ उंतग षलं। वय देहिय जानि सुवाहु वलं ॥छं०॥२०॥

(१) ए. कृ. को.-साइ। (२) ए. कृ. को.-परतंग्यान। (३) ए. कृ. को.-उछाहन।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंपय हथ्थ तनं॥
लरि लोह लुहानय कित्ति करं। अरि वाड्व धूर ज्यों पत्त [2]ढरं॥
छं० ॥ २१ ॥
भजि भोंह चंदेल सु षेल पगं। धर धूसन सुंमिय जंपि जगं॥
दिवराज सु वग्गरि बंध बियं। जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं॥
छं० ॥ २२ ॥
उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यों रोर फटंत पली॥
नरनाह सु कन्ह का कित्ति करौं। भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं॥
छं० ॥ २३ ॥
भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं। तिन कंकन बंक बियं अमयं॥
छं० ॥ २४ ॥
रज राम गुरं पग अस्स बली। जिन कित्ति दिसा दस बढ्ढि चली॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कांदल रुद्धि उठंत भ्रमं॥
छं० ॥ २५ ॥
कविचंद हकारि सु ग्रग्ग लियौ। भर भट्टिय भान भयंक बियौ॥
रघुवंसिय राम सुरंग बली। कनक्क जिन नाम नरिंद कली॥
छं० ॥ २६ ॥
बर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कांदल उठ्ठि रुधं सु जसं॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं। घरि द्वै भर उठ्ठिज बूंद भरं॥
छं० ॥ २७ ॥
भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद बरै॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं। ....॥
छं० ॥ २८ ॥
जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड चका बरत्यौ॥
पांवार सलष्ष सु पुत्त बली। न्रप जैत सजैत कि कित्ति कली॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक्क रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकानि।
(४) ए.-मंडिय।

सु चलै वर भाइ [1]दुभाइ भरं। तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्टप [2]धावरयं। जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम वरं। उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन [3]तूंअर नेत चिनेत बरं। परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयो जय सह पुंडीर बली। जिनकें भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग वली। चमरालिय कित्ति नर्यंद हली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अल्हनयं। भजि भारथ कुंभज किल्हनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति वली। वर चालुक चार नक्षत्र हली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ क्रन्न कुँवार न्टपं। तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय [4]छिन्निय छित्त रनं। सब सामंत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

हहकारि उभै न्रप पास लिए। समतम्मि सु मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै। तिन मैं सुप भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी। तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छत्र धर्यौ। कनकावलि मंडिय मंडि हर्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चली। प्रथिराज विराजत देह बली ॥
वर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं। सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तिन माहि विराजत राज तरं। सु मनों छबि सेरय भान फिरं ॥
वर सेंगर सूर कल्यान नमं। जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ।　(२) मो.-धीवरयं।　(३) ए. कृ. को.-तूँअर।
(४) ए. कृ. को.-छत्रिय।

जयचंद जँघारय नाहरयं। न्रप राज सु रप्पन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली। प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥

काठ केरिय सारंग सूर बली। प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं। छिति पत्ति कंगूरह सूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं। भर भारथ जुग्गिनि पाच करं।
गुरराज सु कन्द्दय जस्स जिसौ। मग वेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह सै सकसैन बरं। प्रथिराज चढ़ंतह वाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं। बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

झननंकत षग्ग फरी धरयं। भजि डंक ज्यौं डक्कत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं। जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै। जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हथनारि सुधारि कें कांक षगी। धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं। मँडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं। सु मनैं घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
छं ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह ब्रन्न कहै। बरषा रुव संत दै छब्बि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा ॥ जो बुल्लै सामंत सथ। तौ [1]चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ। अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-भो।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ संचह गुन ग्यान । धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु भ्रम्म [1]उवरत्त । वीर चट्टौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु वल्हुअ विदुप । तत्त सोई करजानं ॥
सा भ्रम्म त्रिया अग्या न्टपति । मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम । सवल वीर चल्लेत सँग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ वल । गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।

त्रोटक ॥ सोइ सज्जिय सूर नरिंद वलं । छिति धारन को छिति छच कलं ॥
मति मंच वरप्पय सूर वरं । धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥
आहत्त अहीर करै वलयं । सुरप्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै वलवीय अहत्त भरं । न्टप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥
हरसिंघ महावल वंधु वियौ । वरसिंघ वली अरि छच लियौ ॥
वर जद्दव जाम जुवान नरं । जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
नर नाहर टांक नरिंद नमं । तिहि कंठ अरी धर भ्रम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज वरं । मद मोष विछुट्टिय काल भरं ॥
छं० ॥ ५३ ॥
परषत्त सु पल्हन अल्हनयं । भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
वर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर भ्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त । (२) ए. कृ. को.-कंठय । (३) ए. कृ. को.-पंचमुष्षव वार ।

बर बीर कँठी षुरसान [1]रनं। हथ चीय अहुट्ठपती सुभनं॥
कंठीर कलंक्षत जैत वली। जिहि ओटत जंगल देस भली॥छं०॥५५॥

न्टप रूप नरिंदति वाहनयं। षुरसान दलंपिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। पित की पित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥

जनएस गुरेस सबंध वली। जिहि निद्दुर उप्पर पंप [2]पुली॥
परसंग पविच पविच छती। षुरसान दलं जिन जुद्ध मती॥
छं०॥५७॥

अवनीस उमाह तुरंग [3]तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥

महनंग महा मुर नेंन समं। तिन राज सु रष्षिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनों कल जोति सरीर वढ़ी॥
छं०॥५९॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत [4]मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी बिरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥

सत में षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निद्दुर स्हर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति स्हरं॥
जामदेव जद्दव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीयं रत्त [5]पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मझि मुझरत इक्क बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर वीर रस ॥
सद्धि भली नक्षत्त। अंग लग्गे सुभंत तस ॥
[2]राजस तम सातुक्क। साथ अग्गै अधिकारिय ॥
जथ्थ कथ्थ आरुह्यि। रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
जंगलू देस जंगल न्नपति। जग लेवै वर सूर पट ॥
षुरसान षान उप्पर चढ़िय। वर वीर रस वीर पट ॥ छं० ॥ ६३ ॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान वीर रस ॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस ॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह ॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह ॥
मन वच क्रम कह कह कह्यौ। अलप न सुर सद्दय सुघट ॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सद्धि महूरत चढ्ढिपट ॥ छं० ॥ ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

चोटक ॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिविंवं न्नपं। ससि राज इकं प्रति व्यंब पथं ॥
प्रतिव्यंबह मभ्भक्त इकंत उभै। चहुआनरु सामंत सूर सुभै ॥
छं० ॥ ६५ ॥
दिस राकय अकय थान वियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ ॥
सोइ लच्छि हयग्गय मंत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली ॥
छं० ॥ ६६ ॥
पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं ॥
सु विचें विच राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेवं किती ॥
छं० ॥ ६७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानकं रस"।
(२) मो.-राजत।　　(३) मो.-साधै।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क सुष। न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह बुले। वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते सूर तिहि रत्ति बर। ग्रेह सपत्ते वीर ॥
पंचमि बर वैसाष धुर। लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रेहे सस्सूरं। मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावहिसि रंगं। मनों [1]षलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ॥ ७० ॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम। वल दंतिय सजि सूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै। धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि वर। लिय कारन परिमान ॥
सूर उगै सत पच ज्यौ। ज्यौं भद्दव वल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुभ्रं बर बीर सु चोटक छंद। छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द। ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥ छं० ॥ ७३ ॥
षनंकिय संकर अंदुन अंद। जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार। दिसौ दिसि दिष्षहि ज्यौं जल धार ॥
छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अठ्ठय मेर। भये भयभीत भयानक मेर ॥
सुनै स्तुति छचिय सद्द निसान। दिसा षुरसान सु बढ्ढय षान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-षहह।

संडे मय मत्त [1]गहम्मह्राज । उठै वर अंकुर सुच्छ विराज ॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि । मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

[2]अपें प्रथिराज समप्पय वाज । तिनें दिपि पंतिय प्रव्वत लाज ॥
दुअं दुअ वंधि रकेवन जोर । चढ़े वर छिचिय सूर झकोर ॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयद्दल पंति सुभंतिय ठांनि । मनों वगपंति घनी घट वांनि ॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार । भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार ॥ छं० ॥ ७८
डहड्डुह वज्जय डक्कय मात । डलै तिन वीर गिरव्वर गात ॥
सु दिप्पन वांम फुरक्कय नैन । चढ्यौ जनु वीर परव्वत वैन ॥ छं० ॥ ७९ ॥
इसे दोउ वीर विराजत रिंघ । गुफा इक मझ्झ मनों दुअ सिंघ ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर । कही कविचंद सु उप्पम पूर ॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर । उठ्यौ तहां जित्त भयानक वीर ॥
लिपी लिष चित्तय दंपति वैन । मनों पलटै दिन चाचिग नैन ॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान । किधों चकई सुपलुक्कय मान ॥
भयौ मन वीरन वीर प्रमान । भयौ करुना रस तीय प्रमान ॥ छं० ॥ ८२ ॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल । मनों दुअ पास हलंत हिंडोल ॥
दोऊ मझ रप्पय सूर सनूर । भजै करुना रस काइर पूर ॥ छं० ॥ ८३ ॥
मिले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान । कहै कविचंद वषान वषान ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ स्वामि भ्रम्म सों [3]सुद्ध मन । ज्यौं [4]बांबी दिसि [5]सप्प ॥
म्रग विषांन ज्यों अरिन वर । जगि वीरा रस जप्प ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।

---

(१) मो.-गहम्मग । (२) क. को.-अपं । (३) ए. क. को.-जुद्द ।
(४) को.-वाबी । (५) ए. क. को.-सर्प ।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु बीर। जग्गि नयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान। गुफा वारुन सु दैत्य लिव ॥
कै [1]जग्यौ भसमास। दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत। बीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनी न नृपति किन निरति वर। किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥
बग्गं उपारि धार बलिय। अभिलाषह भारथ्थ श्रम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन।

अभिलाषह श्रम गर्व। भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत। सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सद्द सम सुमन। प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुवर राज चहुआन। करन उप्पर वर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी। रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग। दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार। चढ्यौ जनु इंद्र धनुष्षय धार ॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस। परक्खिय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ। कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर। रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनों कुत कुंतय बारय घुल्लि। गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥
करुना रस केलि क्रमीनह वीर। नच्यौ अदबुद्द स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर। दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान। सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जग्या। (२) ए. कृ. को.-छित्त। (३) मो.-छिपग।
(१) ए. कृ. को.-मघ्यय।

दया वर हीन सगप्पन नथ्यि। .... ॥
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि। तज्यौ तन मात उरग्गिय लच्छि॥
छं० ॥ ९२॥

पिन्नै सिर ईस पटक्किय जट्ट। भयौ तहां जन्म सु वीरय भट्ट॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार। पछै दछि दच्छिय दण्यि उचार॥
छं० ॥ ९३॥

इतं मिति मंत सु कंतिय राज। भयौ वर वीर भयानक साज॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ। वज्यौ रनतूर रवद्दय एछ॥
छं० ॥ ९४॥

मली जनु जंगम जो गवरीस। दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस॥
तज्यौ जहां मान लगी पिय कंध। नयौ रस संत सु मंतिय संध॥
छं० ॥ ९५॥

सु जाति जरा न्टप हक्कि प्रमान। चढ्यौ तिन वेर वली चहुआन॥
छं० ॥ ९६॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीबद्ध करना।

कवित्त ॥ चाहुआन वर वलिय। भार भारथ रस भिन्नौ॥
मधुर सुधर सिंधुरस। अंग चावद्दिसि छिन्नौ॥
सुवर सेन सामंत। सुवर वल वीर निनारे॥
मभ्भ मभ्भग्रह आरत। देव जनु जुद्ध हकारे॥
कुसमित्त जुद्ध देवह करन। रथ सुरत्थ हय हयति नर॥
सामंत सूर पुज्जै नहीं। वर कंदल 'उट्ठंति धर॥ छं० ॥ ९७॥

सामंतों की वीरता का वर्णन।

उरग विंद रवि उठै। सीस हक्कै धर नंचै॥
देवासुर संग्राम। देव पूजा देवंचै॥
इंद्र जुद्ध तारक। सोइ तत्तह अधिकारी॥
पंच पंच पंडव सु। भीम दुर्जोधन भारी॥

(१) मो.-उठंति।

गज मंत दंत कट्टै सु भृत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आहत मिति। नहिन म्लेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर वर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन न्निमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान वर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
षिन मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ भ्रम्म। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। हथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बद्दलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भृिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब भ्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जंजं बधै। तंतं बुद्धि पुरान बर ॥
न्विध्घात घात पत्तिय सु वर। सु हत काल निचरि सु नर ॥छं०॥१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि वंछौ मरन। भीर संकरैं निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सस्तगह ॥
अस्ति काज दद्धीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कै। चढ़हु भूमि घर दुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेहं । के के न काल संग्रहे हंतं ॥
　　मंची जा प्रथिराजं । रष्षे जा वीर सो सत्त्वं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
　　[1]ता भग्गा मन सूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसै ॥
　　अभिलापं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं ॥
　　वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा । तिनै धावतैं होइ मारुत्त पंगा ।
　　भमै भुंम अग्गै सुमं तीन संधै । मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १०५ ॥

　　पुजै पंच अंपी मनं पीन धावै । तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥
　　किधौं कैसपन्नं चलै चित्त भारी । किधौं चक्करी हथ्थ [3]आवत्त तारी॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १०६ ॥

　　किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । म्रगंराज कैसे उपम्माति लावै ॥
　　अगंपाइ दीसे मुषं मेह कारै । मनों दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १०७ ॥

　　धरे पाइ वाजी हढ़ंतं निभारै । मनों तार सौं तार बज्जै हकारै॥
　　तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे । मनों तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १०८ ॥

　　इसे वाजि सज्जे समप्पेति राजं । दिषै सूर सामंत हथ्थें सुपाजं ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

दूहा ॥ बाज राज न्रप [4]राज दिय । बिलसि विधान विधान ॥
　　तिन उप्पम कबिचंद कहि । का दिज्जै धपवान ॥ छं० ॥ ११० ॥

---

(१) मो.-ना ।　　　　(२) ए. कृ. को.-कल ।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत ।　　　　(४) ए.-राज ।

घोड़ो की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपै बान भारै, हकारे निनारै। दुरै अप्प छाया, ततै अग्गि ताया॥ छं० ॥ १११ ॥

धवै [1]अंठ भारी, मुकोटं निनारी। वरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥ छं० ॥ ११२ ॥

मद्दा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥ छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नवं डंड इद्धं, मनो डंड सिद्धं॥ छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर डुल्लैं, कवी कित्ति षुल्लै। मनों वाय कांडं, परी मझ्झ होडं॥ छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तें निनारे, मनों स्वामि सारे॥ छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु द्वै द्वै रकेवं, चढ़े वीर [3]वेवं ॥
सुरत्तान पासं, चल्यौ वीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ षल गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गै ॥
हय गय रथ नर सज्जि। वीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। वीर जै पत्त करारिय ॥
डमरू डहक्कि जुग्गिनि हसै। जिम जिम वंबर धज लसैं ॥
सामंत सूर चहुआन सौं। बीर बिदुरि सस्त्रह कसैं ॥ छं० ॥ ११९ ॥

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. कृ. को.-वेवं।

राजा की आज्ञा विना चावंडराय का आगे बढ़ जाना।

मेछ मस्सूरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी ॥
वीरा रस विद्धुरिय। लोह लग्गौ अधिकारी ॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ। अंपि आवै न अंपि पिन ॥
ज्यों नद्दव वन दिष्ट। चंपि चूवंत मंत घन ॥
रन हरषि वरप्पिय मुक्ति जिहि। धप्पि लोह कोहां करांस ॥
चावंडराइ दाहर तनौ। न्रप अग्या विन अग्र धंसि ॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना।

रा चावंड जैतसी। लोह आजानवाह वर ॥
रप्पे रन सुरतान। [1]मत्त लग्गे सुवीर भर ॥
पंच कोस न्रप छंडि। आप रुंध्या सुरतानं ॥
वज्र घाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहानं ॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर। उरसि लोह लग्गा लरन ॥
तत्तार पान षुरसानपति। अप्प मस्सूरति मरन मन ॥छं० ॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर वाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजंगी॥ षुरासान षानं सु तत्तार वीरं। मनों वज्र देषे सु वज्रं सरीरं ॥
महा वाहु वज्जी कढ़े वज्र हथ्थें। लगे अंग अंगं निरथ्थे निरथ्थें॥
छं० ॥ १२२ ॥
छुलिक्का सु बानं कमानेन साही। इसे सूर वेगं षलं लै [2]न्रिवाही ॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे। मनौं देषियै बीर रत्ते प्रकारे॥
छं० ॥ १२३ ॥

(१) मो.-मनह। (२) मो. नैत्रिबाही।

उरं काल काली जम दड्ढ कड्ढी। किधौ दंढ्ढ जम दढ्ढु जम कर विडड्ढी ॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥
छं० ॥ १२४ ॥

दुवं हिंदु मेच्छं तसव्वीति नंषी। सरै सट्ठि हज्जार आवृत लष्षी ॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्थ सारे ॥
नचै कंध बंधं कवंधं दुरंगी। मनों बीर आवृत भारथ्थ रंगी ॥
छं० ॥ १२६ ॥

इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा ॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग ॥
आइ साहि जग हजूरन। लयै सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्ज्यौ मिच्छ ॥
नर चित्तन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै ॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै ॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बस्त सह ॥
छिनक मध्य हर हरै। केल किर तष्ष क्रम्म इह ॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय ॥
अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय। आनि उतंग सु कंक किय ॥
छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों वावन वलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु॥
मीर ससंद ससंद। वान बहु बूंद वरषि घन॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन॥
प्रलैकाल हाल पिप्पिय निजरि। मनों मित्र हत्ती करन॥
छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला ॥ कोह लग्गे पलं, सार उट्ठै पलं। अंत तुट्टै रुलं, पग्ग वेली तुलं॥
छं० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल पलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं० ॥ १३३ ॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कलं, वज्जि कोलाहलं॥
छं० ॥ १३४ ॥
छिंछ उट्ठै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, हप्प सापा ढलं॥
छं० ॥ १३५ ॥
पंप पंषी वलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्धि हुंदै झरं॥
छं० ॥ १३६ ॥
जानि नग्गं परं, चंडि पत्रं [3]भरं। [4]मंति डक्कं डरं, भूत नच्चै परं॥
छं० ॥ १३७ ॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि नैरू रुरं। कंपि स्यारं नरं, सूर बढ्ढै बरं॥
छं० ॥ १३८ ॥
झझ्झार झारै रूरं, ... छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

---

(१) ए. कृ.को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मन्नि।

दूहा ॥ सार संत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि भ्रम्म सद्दै रनह। मुकति सु झारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कंपिप जिसि ॥
हय दल बल उच्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मध्य। कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत स्रूर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक वक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। कले कंक बक हीन जीवं सु लष्षं॥
षलं कंन्ह गोइंद्र कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥

बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों वीर भारथ्थ आहत्त रंगी॥
छं० ॥ १४३ ॥

लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंच्यौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षिये पेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥

हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

---

(१) मो--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥
तहन सुप्प दुप्पं निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान । वीर मत्ते चावद्दिसि ॥
तरल तुंग वजि जंग । वीर लग्गे सु वीर कसि ॥
जा दिष्षै सुरतान । नैन वड़वानल धारी ॥
प्रलय कारन करवान । प्रलय इन पग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्त्य रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहन वाहन विरद । साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विछ्छरहि । रोस उछ्छरहिं वीर क्रम ॥
वजहि पग्ग आहत्त । जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज । हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि साहाव भर । भर भर भिरि असिवर वजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा । निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रननंकय नागय वीर सुरं । मनों वीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छच दुहाइय छच धरं । सु मनों बरवा हवि वज्र झरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए. मो.-लजिय ।

छिति सोहत ओन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं ॥
होउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छच सुभै ॥
छं० ॥ १५१ ॥
सुमनों मधु माधव रीति इलै। सुजनो कृत कंकर वीर फुलै ॥
इक अंग विभंगन हथ्थ परै। सु मनों कल वीर कला दुसरै ॥
छं० ॥ १५२ ॥
मिति मत्त अट्टत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं ॥
छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ बरकि वीर भट सुभट। झुम्मि हकै चावद्दिसि ॥
इक इक आहत्त। वीर बरषंत मंत असि ॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि ॥
सार ताल वेताल। नंचि रन वीर डकारहि ॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि वीर लग्गे सु वर ॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर ॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्र भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर ॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी ॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी ॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तर्यौ ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तर्यौ ॥
छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन ॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आहतह तिन नैन ॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्टप अग्ग। सूर रोपे पग गढ्ढै ॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै ॥

लज्ज बंध संकरिय। वीर अंकुरिय दिट्ठ रन ॥
सार धार वज्जी कपाट। न्त्रिघात घुमत रन ॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह। जनु लुत्र लग्गत जेठ मद्दि ॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों। जनु वडवानल चंद कहि ॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिष्षे सुप्पय मच्छरयं। अरज दुवं सन्नाम अवनयं ॥
अछ्छरि वर कर इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं ॥ छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि ॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि ॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष वजि वाय तेज गति ॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन। बरन बरन छवि सिलह तन ॥
रन रोहि रच्यौ प्रथिराज मद्दि। गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ सुच्छीजं वर मछ्छरं। तं वटे अछ्छरी अंगं ॥
सोयं साध प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं ॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त ॥ कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी ॥
हरवल [3]पीप नरिंद। साहि बंधी बिय जोरी ॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै ॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै ॥
छत अछत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ ॥
सुरतान सूर आहत्त वर। धन्नि सुबर सामंत भुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए.-फरत। (२) ए. कृ. को.-गैन। (३) ए. कृ. को.-अप्प।

तन तरफत धर मिच्छ। वला छवि जानि नटक्कैं॥
मत्त दन्ति आरुहैं। दंत सौ दंत कटक्कैं॥
समर अमर करि वंदि। भये विस्लत पल चारिय॥
जहँ तहँ चंद पुंडीर। चंद ज्यौं रैनि उजारिय॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम। भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर॥
संभरिय सूर सुरतान दल। महन रंभ मच्यौ सु धर॥ छं० ॥१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना।

हनूफाल॥ इति हनूफालय छंद। कल विकाल काल क्षत चंद॥
भय निसा उदित प्रमान। चहुआन सेन सुथान॥ छं० ॥ १६३॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक। मनों मंडि बंधि चिराक॥ छं० ॥ १६४॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना।

कवित्त॥ करि चिराक छह सहस। सेन उभ्भै चावद्दिस॥
रत्तिवाह सम जुद्ध। बीर धावंत वीर रस॥
तेज चिराक रु सस्त्र। रत्त द्रिग तेज प्रमानं॥
सार धार निरधार। वेद छेदन गुन जानं॥
सारूक करक्के रंक पल। निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं॥
सामंत सूर इम उच्चरैं। सुवर बीर भारथ्थ नहिं॥ छं० ॥ १६५॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना।

अद्ध होत बर रत्ति। साहि गोरी धररुंध्यौ॥
तोंअर बर पाहार। कित्ति सा सिंधुह संध्यौ॥
सेत बंध बंध्यौति। सूर बंध्यौ रिन पाजं॥
जै जै जै उच्चार। धन्नि सामंत सु लाजं॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर। तीन वान पुंजान गय॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि। सुनि जंपै बर हयति हय॥छं०॥१६६॥

(१) ए. क. को. हारिय। (२) ए. कृ. को.-भर।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत सध्यान। पीप नें पन मन मंड्यौ ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि वंध्यौ ॥
सेत वंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान हूर सधि ॥
यों लिन्नों परिहार। वालि दस कंध कंप सधि ॥
रन छंडि हंडि धर मच्छि हुअ। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जपैं सुप धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिनें पंडियं पित्तपल्ल षग्ग अंगं॥
पऱ्यौ राव पज्जून पुचंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै अजंमेर राई। दुअं सेन जंपी सुपं कित्ति चाई॥
वधं जामदेवं वधों वीरभानं। लरी अच्छरी मझ्झ वीरं वरानं॥
छं० ॥ १६९ ॥

पऱ्यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं॥
पऱ्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गं सु उट्ठे कमंधं॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिछं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट वीर ॥
तिन जस जंपत का कबी। जिन करि जज्जर ग्रीर ॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान पग्गह पल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाव सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लद्धयौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उब्बरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इहं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चढ्ढई। धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर वज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गो धर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा अम्म धारि छची न्टपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कों। मुष अयन पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर। कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान। सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान। इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ। इक्क बंधे वस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ। मान भजि रूसन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज। षट्ट बरन सुष्षह रुगन ॥
चहुआन सूर संभरि धनी। तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥

अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्रप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंड्यौ न्रपति । आपेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सठ्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
वर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
वल संमर जो गट्ट । गाहि चहुआंन [3]जु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम वर न्रपति ॥
संभाग समर सुनयौ समर । समर वीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुवर वीर चिंतै न्रपति । वर वरनी दुति काज ॥
वर इंद्रावति सुंदरी । वरन तक्कि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छबि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
वर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग लोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । छाइ करि भाइह गाढ़ी ॥
[4]रूप तरंग अंकुरित । तुंग दोज करि काढ़ी ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केनेत, फितेक । (२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं । (४) ए. कृ. को.-रुअन अंग, अँग ।

ज्यों छिति कास जंप्यौ परित। अति सुदेह निम्मल भलकि।
संकुच सु कास कर [1]कलिय तिहि। [2]रिपु सुदेखि आयौ ललकि॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा ॥ स्रीफल दुजबर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्त्रपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ वय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बास॥
सारद सुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद सुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर सेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]ढुरि ढुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

---

(१) मो.-कर लीय। (२) ए. कृ. को.-फेरिपुं देख।
(३) मो.-करइ। (४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-किंहि किंहि। (६) ए. कृ. को.-भैरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप। वर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल। अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान। वय चंद [2]चढ़ल प्रमान ॥
सैसव जोवत एल। ज्यों पंथ पंथी लेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भोंह भँवर प्रमान। वै बुद्दि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग। सावक म्रग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
विय द्रिगन ओपम कोड़। सिस भृंग पंजन छोड़ ॥
वर वरन नासिक राज। मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिपा पतँग नसाव। ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल। झँप देत पंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
विय बाल जोवन सेव। ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद। ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद। .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल। मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर। मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह। मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेह। जा जनक न्टप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वंधि। ज्यों वृद्ध बाल विवंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान। ज्यौं सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर। चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह। सिङ्गार काम करेह ॥
लज्ज करे लज लजि छंडि। चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहौं वर नाइ। तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान। तप तुंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना।

(१) ए.-रूप। (२) मो.-चढ़त।

* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है। (३) ए. कृ. को.-प्रमान।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव। रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी। बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट। समर कग्गर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव। चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा। धर पद्धर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ वर। गढ़ उत्तरि [1]किरपाल लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर। गो मेलान नरिंद ॥
छंडि स्रूर सिंगार रस। मंडि वीर वर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन। सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून। बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन। सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर। सथ्थ दीनौं न्रप हामं ॥
आहत अत्तताई सुबर। रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निद्दुर सुबर। मुक्कलि जैसिंघ पप्पलिय ॥छं० ॥२३॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ। [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास संग। दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै। लैं चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई। कहिग कविय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

##ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

त्रोटक ॥ प्रथिराज चल्यौ सिर छत्र उपं। ससि कोटि रवी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं। घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बषान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

हय पप्पर वप्पर तेज [४]तुनं। किननंकहि [५]धक्कहि सेस धुनं॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं। घुरवान निसानन मेघ [६]भदं॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं। मनु भद्दव बीज उपंम धरं॥
*किरवान कमानन तान करं। हथनारि हवाइ कुहक्क वरं॥
छं०॥२८॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं। दुतियं कहि भारथ पारथ यं॥
छं०॥२९॥

(४) मो.-तुंमं। (५) ए.-धर्काहि। (६) मो.-नदं।

* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम॥ चढ्यौ न्त्रप वीर अनंदिय चंद। सु सुत्तियदाम पयंपय छंद॥
दए न्त्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट। मिले सव आइस जंग न रिष्ट॥
छं०॥३०॥
उड़ी पुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अठ्ठ न सुझ्झय [१]सान॥
वजे घन सद्द निसान सुहद्द। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द॥
छं०॥३१॥
[२]सुदे सतपत्र कमोदन घेरु। करे चतुरंगय संकिय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी। तिनकै वर कन्ह परे धुरसी॥
छं०॥३२॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों। किल कंपहि तुंड जसं वर यों॥
विफुरै वर सूर चिहूं दिसि यों। डरपै सुर पत्ति उरं वसि यों॥
छं०॥३३॥
फन फूंक फनंपति को विसरी। धरकें पय वज्जि पुरं दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों वर [३]पांति पगं उरझं॥
छं०॥३४॥
वर वज्जि तंदूर तहां तवलं। निसु नंन नवीनय वंस वलं॥
जु धरैं वर गौर [४]उछंग हरं। सु कहै वर कंतिन कंपि डरं॥
छं०॥३५॥

(१) मो.-भान। (२) ए. कृ. को.-सुदे। (३) ए. कृ. को.-पंषियते।
(४) मो.-उवग्ग।

जु बजावत [1]डौंरुअ डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं०॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चिचंगी परधान॥ छं०॥ ३७॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चिचंगी परधान॥
कहौ समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं०॥ ३८॥

कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी वीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चिचंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[2]जंम। हक्क उत्तर पद्धर चलि॥
गढ़ इत्तं दस कोस। समर उभ्भौ समरं मिलि॥ छं०॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चिचंगिय मंचि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चिचंगी चतुरंग। आइ अड्डौ करहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां॥
हम दैन षबर तुम मुक्कलिय। कहौं कही मुष मुष्ष रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कही वत्त परधान मुष॥ छं०॥ ४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि बरं।
(३) मो.-प्राति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

न्नप बुझ्झै चालुक्क । सेन कित्तक्क परमानं ॥
आइ ग्रह्यौ चिचंग । निरत दीनौ नन आनं ॥
ह्वार सुत्तर आरत्त । रीति रष्षी विधि जानं ॥
इन अग्गै चालुक्क । बेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ।

चौपाई ॥ करि अग्गे लीनौ परधानं । आतुर ह्वीं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं । समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ पावस रन प्रब्बाह । अब्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान । अब्भ बद्दरं उठि झांइय ॥
आलस [1]नींदय पीझ । सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुट्ठनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
श्रंगार रंभ ग्रेहं बसह । औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारन्न कित्ति औ काल मिसि । द्रवै इंद्र ह्वरह सुलव ॥छं०॥४३॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौं गुनाव गारडू । सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जझ्झारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंच मंने न । रसन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुब्ब दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि परि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुपीज ।

दुहुं निसान बजि ससुह। भूमि पुर कंपि हलाइय॥
बीर सिंघ आहुट्ठ। बीर चालुक मुष साहिय॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन बर बीर समाहिय॥
उत्तरिय मनों सामुद्द तहि। उदित दीह मंगल अरक॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि। अष्ट कुली बंछै सुरक॥ छं० ॥ ४५॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना।

दूहा॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह॥
दोउ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह॥ छं०॥ ४६॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परे बर बीर निसानन घाइ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क॥
छं०॥ ४७॥

अछादि अरुन्न न लुझत भन्न। कुरें किधों सोर कपी बर गल्ह॥
गहल्लर बैंन उचारत स्रोन। इहै जुधकार प्रकारय द्रोन॥
छं०॥ ४८॥

धरं गज आगस नीस अउड्ड। छुटे बर पाइक फूलय रुड्ड॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान। विचैं गुथि मोति कुहक (१)अचान॥
छं०॥ ४९॥

दुहूं बिच नग्ग सगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत॥
जु भाल अंकूर सु सुंदप बिंद। धरी हयनारि छतीसय चंद॥
छं०॥ ५०॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध॥
लरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दल्लि न काव॥
छं०॥ ५१॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में बर छीन सुरंग अनूप॥
छं०॥ ५२॥

(१) मो.-अवान।

पसरी वर क्रन्न सन्नाह न तीर । अचवै उत कालिय के रुचि षीर ॥
सजी चतुरंगन वग्ग वनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुक्कां चित्रंगपति । मिले दिट्ठि दुअ दौरि ॥
मनों पुब्ब पच्छिमहु तें । उड़ि डंवर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
[1]इत चंप्यौ चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर करन । बज्जि निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥

कुंडलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन वर । गज पंती हलि जुथ्थ ॥
मनों मल्ल आरूढ़ दौउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिष्षे ॥
दुहुन दिग अंकुरिय । पाज बंधन बल दिष्षे ॥
चंपि सेन चालुक्क । वीर भ्रम सों वर मिल्ले ॥
चाहुआन [2]वर सेन । ढुरीं पच्छिम दिसि ढिल्ले ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ [3]सब सामंत रु समर । वीर दच्छिन दिसि छंडिय ॥
चाहुआन हूसेन । गज्ज व्यूहं रचि मंडिय ॥
एक दंत हूसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
बड्डनय अंग आहुट्ठपति । मह्नन रंभ मच्चौ सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ घन घाइ घाइ अघघाइ सूर । सिंधु औ राग बज्जै करूर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क । मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-इन । (२) मो.-हुस्सेन । (३) को.-तब । (४) मो.-बुल्लै ।

नंचयौ ईस गौ दरिद् सीस। पष्पर उपट्टि घुंटै घुरीस ॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद् जानि लुंव ॥छं०॥५८॥
गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल। षेचर पपाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥
छं० ॥ ६० ॥

चमकंत दंत मध्यै क्रपान। मानों कि ऊक लग्यौ गिरान ॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा ॥ चालुक्कां परि सूर रन। सहस एक सुर सत्त ॥
चूक चिंत चूकौ चितन। छौ अछिज्ज विधि वत्त ॥ छं० ॥ ६२ ॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान ॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरह्हि। सेष जाम पल तीन ॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क वर। चिंपि सुभर प्रथिराज ॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज ॥ छं० ॥ ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्पं। मनों मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्पं॥
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई ॥
छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) ए. क्रु. को.- भर।

झरै सार अग्गी दझै टोप दझ्झं । मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही । धसी भारती कासमीरंति सोही ॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्यं गजे तं तबानं । ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं ॥
बजे बज्ज घाई उकत्तीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती ॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी । मनों राह सूरं बँटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुंधी धार मंती सुमंती उछारै । उतकंठ भेली जु रंभा विचारै ॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भीनं । मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पीनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना ।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छें परे । समर तिरच्छौ आइ॥
मानहुं षल हुत्तसनी । भई बीभछ निधाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

त्रिभंगी ॥ तिय बिय अरि संतं, बहु बलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी ।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिंदं, बर रंगी ॥
त्रिय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी ।
सामत भर सूरं, दिठ्ठ करूरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी ॥छं०॥७२ ॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर वानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं ।
ओडन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं ॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति हद्धं, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं ।
उर धरि चालुक्कं, सूर जहक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं ॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उठ्ठं ।
दंतं उष्बारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, अत छुट्टं ॥

(१) मो.-असि ।　　(२) ए. कृ. को--मुर ।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि बेहालं, चालुक झालं, बर सारी॥
छं०॥ ७४॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना॥

कवित्त॥ वीर बीर आरब्ब। चढ़िय बीरं तन हक्के॥
चावद्दिसि विद्दुरे। मोह माया न कसक्के॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्धं षिति लग्गे॥
कै छुट्टे मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ विब्भाइ परि॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि॥ छं०॥ ७५॥

भोलाराय के १०सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा॥ संझ सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस गाइ॥
तिय षवास परिगह न्टपति। सिर घुम्मै घट घाइ॥ छं०॥ ७६॥

कवित्त॥ पऱ्यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय॥
पऱ्यौ गौर केहरी। देह अजमेरी लग्गिय॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले। वर पंचानन और कवि॥
त्रिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि॥ छं०॥ ७७॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान भ्रम॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोऱ्यौ तन तोऱ्यौ॥
अस्त बस्त वज्री कपाट। दधीच ज्यों जोऱ्यौ॥

वर रंभ वरन उतकंठती । सूर हूर उत कंठ मिलि ॥
ढिल्लीव ढोल्ल जीरन जुगं । गल्ह वीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ।

दूहा ॥ निसि दिन घटिय तिसत्त वर । दल चहुआनन चीन्ह ॥
भिरि भोरा रायर रिनह । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना ।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ । गरुड़ समर गुर राज ॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि । विन सु गरव तजि लाज ॥ छं० ॥ ८० ॥
कवित्त ॥ षेत जीति चित्रंग । हथ्थ चढ्यौ चहुआनं ॥
के झोरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आनं ॥
केक किए परलोक । मुक्ति लब्भी जुग जानं ॥
पंच तत्त मिलि पंच । सार धारह लग्गानं ॥
चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
चालुक भीम पट्टन गयौ । करौ चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

चौपाई ॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी । जा लगि ससि सूरज नभ सष्षी॥
इह काया माया जिन रष्षी । अंत काल सोई जम भष्षी ॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ॥
नौतन अति उज्जल तनह । नीद न्रपति मन चोर ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं ।

जपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥
देत रुप छची प्रक्रति । दरसन तवही पान ॥ छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-गुर । (२) ए. कृ. को.-छत्री ।

कोटि लछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
सूर सुभर डरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त ॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लौं ॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लौं ॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर घुंदो ॥
हूं सार अडर डोंरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ॥ ८७ ॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह ॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह ॥ छं० ॥ ८८ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त ॥ जु कछु लिष्यौ लिलाट। सुष्ष अरु दुःष समंतह ॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुझ्झि चंद गुरराम तरु ॥
बरनी विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अरु ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा ॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम ॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों। दीनों भोरा भीम ॥ छं० ॥ ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार। सलप नंदन रचि गट्ठौ ॥
ता सत्थह चामंड। भीम भट्टी रचि ठट्ठौ ॥
महन सीह वर लरन। मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज। प्रात पिक्खिक्षय वर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कैं। भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में। अग्गि तिनक्का झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कड्ढी घनं। रत्ति अड्डी मनं, वीज कुद्दी घनं ॥
वीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं। हक्क मच्ची रनं, वाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छै चुनं। षग्ग भग्गं तनं, प्राह गंगं जनं ॥
संभ रुट्ठी मनं, तार चौसट्ठिनं। भूत प्रेतं तनं, भष्प दिन्नौं घनं ॥छं०॥९३॥
जानि सीलं रुधी, कव्वि ओपमसुधी। मंम भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत। पऱ्यौ पांवार रूपघन ॥
पऱ्यौ किल्ह चालुक्क। संधि चालुक्क हजूरन ॥
पऱ्यौ वीर बग्गरी। भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ। सिंघ रष्यौ षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल। दलमलि दल चालुक्क गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पष। चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥छं०॥९५॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल। लुथ्थि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]होंड़े परिय। तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौड़े।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [१]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। घिल्लिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक न पायौ ॥
[२]कांन्ह बैन [३]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मद्द सिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥छं०॥९७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। छोड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक्क षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर बिलझत [४]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर बिडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्पन गौ सूर तन ॥छं०॥९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं। परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

किए सूर कोटं न हल्लैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर, आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित्त [५]वाहं लजे सूर दिष्षं। तहां चंद कब्वी सु ओपम्म पिष्षं ॥
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनों बाल बद्दूपरे [६]पाइ अग्गी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

---

(१) ए.-ढुंढन। (२) मो.-कैन वनै संभलिय फेरि बर नीम धसायौ।
(३) ए.-सभंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-चाह। (६) को.-आइ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं। मनों [1]वीय सौवी दूषी भाग वट्टं ॥
उड़ैं काइरं हक्क हरि जीव चासं। उपंमा करं फुटै नैन पासं ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली कंठ [2]गढ़ि चित्त लाही। करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही॥
फुटै फेफरं पेट तारंग झुल्लै। मनौं नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए नाग सुष्षी गजं हड्ड पग्गी।पितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न वंची। मनौं इंद्र हथ्थं करं राम षंची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

[3]करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं। जकै सिंधु भारं जुरै जालु जोरं ॥
पयं जोर ऐसैं प्रतंगं चलायौ। भगंदत्त [4]छव्वी तहां सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध वंधं कमंधं निनारै। उपंमा तिनं की न ओपंम चारै ॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ। मनो भंगुरी रूप न्रपती दिषायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

समं पाज घट्टैं कितं साम काजं। तिते [5]ऊपरे सूर चढ़ि किति पाजं ॥
वड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी। भ्रिगं पल्ल की भंति ज्यों षाल ओगी॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढ़त दीह द्विप्पहर। परिग हज्जार पंच लुथि ॥
बान वचन भरि नरिंद। झारि उच्चारि देव धपि ॥
घट छह वर हज्जार। रुक्कि मंझै चहुआनं ॥
वर कट्टन चालुक्क। मत्ति कीनी [6]परिमानं ॥
सह सेन वीर आहुठि तहां। तौ पट्टनवै कट्टयौ ॥
उच्चयौ बंभ भट्टी विहर। धार धार अपु चट्टयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. कृ. को.-विंय पियं। (२) मो.-गहि। (३) ए. कृ. को.-गजं।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं। (५) ए. कृ. को.-उत्तरें। (६) मो.-परिवानं।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। झुक्झक्क धर रावर मंडिय ॥
रुक्कि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय ॥
परिगहिय सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय ॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि लिय विप्पहर ॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर ॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा ॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि ॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन षंडि ॥ छं० ॥ ११० ॥
बाव स्हर कोइ न भयौ। धनि चालुक्की सेन ॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त ॥ श्रेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में ॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में ॥
दै गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की ॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की ॥
दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी ॥
जोगिनी न्त्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी ॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा ॥ ढिल्ली न्त्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्त्रिघात सुदंद ॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद ॥छं०॥११३॥
जस धवलौ मन उज्जलौ। न्त्रिब्बौ पहुमि न होइ ॥
भूत भविच्छति व्रित्त मन। चिचनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

---

(१) मो.-सुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना।

पंडौ सुनि पठयौ सु न्रप। वंज्जि निसानन घाइ॥
वर इंद्रावति सुंदरी। विय वर करि परनाइ॥ छं०॥ ११५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्राथिराज विजय नाम वत्तीसमो प्रस्तावः॥३२॥

अथ इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट। दूर वंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति। सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रत रत्त विप होत। अम्रत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति। सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कट्ठ सों कट्ठ वर वंधियै। नारि नरन सों वाहियैं ॥
इह काज राज कविचंद सुनि। त्यों वरनी वर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया।

सुनि भीमंग पँवार। चढ़े प्रथिराज प्रपन्ने ॥
समर दिसा चालुक्क। [6]सजे चतुरंग सपन्ने ॥
धन्नि मगन तन आनि। कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद। दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]घर जाइ तौ। न्रप वर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए। लज्ज वंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना।

---

(१) ए. कृ. को.-तत। (२) ए. कृ. को.-तदिनां। (३) ए. कृ. को.-मति।
(४) ए. कृ. को.-रत्त अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै। (५) मो.-कंठ।
(६) मो.-सुजो। (७) ए. कृ. को.-पर। (८) ए. कृ. को.-दिप।

कहै जोइ बरदाइ। मंत कविचंद सु आमन ॥
मन वासौं मन मिल्लत। जियत कै कंठ सामन ॥
जो वासुर सुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं ॥
तौ भाविक जिह लेष। तिही ह्वैहै परिमानं ॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकह जानि गति ॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्ष दुहु। सत्य होइ परमान मति ॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा ॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ। जुध बंधन सुरतान ॥
कै जलद्धि बूड़वि मरै। अवर न [3]वंछौं प्रान ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त ॥ सषी कहै सुनि वत्त। सुतौ दानव कुल कहियै ॥
अवर जाति अनेक। राइ [4]गुर परनह लहियै ॥
करे कोन परसंग। पाइ अगमद घनसारं ॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं ॥
तो पित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच ॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुचीय ॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मद्धि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

कहै भीम कविचंद [१]सुन । स्वामि काल तुल अड्ड ॥
सेन सगप्पन रीत नह । तुम दानव कुल चड्ड ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद । मोहि घर वर अच्छिय ॥
सवा लाप मो ग्राम । ठाम संपति वहु लच्छिय ॥
विधि विधान न्निम्मान । कौन मिट्टै इह वत्तिय ॥
होनहार होइहै पुरुष । जंपै गति मत्तिय ॥
तुम कहो नाम वरदाइ वर । गुरूराज वंदे चरन ॥
ओछी सु वत्त कह्यौ कथन । एह सगप्पन विधि वरन ॥ छं० ॥ ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है ।

दूहा ॥ अहो भीम [२]सत्तह सुमति । तुम मतिमान प्रमान ॥
औसर तकि कीजै [३]जुगत । औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते ।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून । सुनौ पामर मतिहीना ॥
[४]अमत कियौ तुम मंत । बरन बरनी षग लीना ॥
तुम सहाव बलि बंधि । गर्व सिर उप्पर लीना ॥
गिनौं और तिल मत्त । कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
छत्तीन बंस छत्तीस कुल । सम समान गिनियै अवर ॥
घरु जाहु राज मुक्कौ बरन । करन व्याह उच्छाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो ।

(१) ए. कृ. को.-कहि । (२) ए. कृ. को.-सतिमत्ति ।
(३) को. कृ. ए.-जु रन । (४) मो.-अमन ।

जैतराव जम जैत। नैन लल्ले करि बोलै ॥
अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोलै ॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै ॥
लोक भाष बुझ्झी न। न्योंत वैरी को मिल्लै ॥
हम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कहृय मुष वत्तरिय ॥
सु विहान वरन थप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम ॥
अमत मत्त मंडौ मरन। इह सु कोन भ्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कबित्त ॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
[1]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ अब ॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ ॥
अस्ति वस्थ करि सिथल। म्रतक सम बर करि छंड्यौ ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त ॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी बत्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव [2]मिलि राम गुरु। लै कानै समझाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद । त्रीय काज रावन पंड्यौ ॥
 [1]वैरोचन न्रप नंद । मारि अप्पन अस मंड्यौ ॥
 कंस कान्ह सिसुपाल । काज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
 [2]ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
 सुर असुर नाग नर पंषि पसु । जीव जंत त्रिय काज भिरै ॥
 रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर । कहौ सु कीजै काम ॥
 जुद्ध जुरैं चहुआन सौं । ज्यों इल रष्पै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना ।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥
 इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिष्याइय ॥
 पछैं ही भज्जियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
 इंद्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
 सुनि भीम राज तत्तौ तमकि । गई बत्त बुझी सु तुम ॥
 हकारि जैत गुरुराम कवि । षग्ग व्याह न न करैं हम ॥छं०॥१९॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना ।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब । कारन दंद मति ठाम ॥
 जो बरनी बिन पछि फिरैं । न्रपति न मन्नै साम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन ।

कवित्त ॥ फिरि जानी पांवार । राम रघुवंस विचारी ॥
 जीवन जो उब्बरै । मरन केवल संचरी ॥

---

(१) ए.-वैरीचन, बैरीबन । (२) मो.-के बंधव रुकमना ।
(३) ए. कृ. को.-बर । (४) ए. कृ. को.-सन्नाम ।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी॥
स्वाम्भि भ्रम्म तिय तिथ्थ। मुकति संसो न विचारी॥
पांवार सुबल मालव न्टपति। बर समुंद जिम भारयौ॥
बर नीति कित्ति सुर वर असुर। सुगति मथन संभारयौ॥छं०॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को वित्त विचारिय॥
बर पट्टन दक्षिक्ष है। धेन लैहै हक्कारिय॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिक्षिहै पांवारय॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संम्हौं हक्कारिय॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावदिसि रुंधही॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्टप पट्टन धेन॥
कूक कहर बज्जिय विषम। चढ़िय भीम न्टप सेन॥ छं०॥ २३॥
उंच क्रंन अनमिष नयन। प्रफुल्लित पुच्छ सिरेन॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन॥ छं०॥ २४॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त॥ औसरि [1]बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै॥
बर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बद्दनवै॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। सूर मानव बर बज्जै॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। झगन हंकि झगपति बढ़िय॥ छं०॥२५॥

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सव।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

हय गय रथ चतुरंग। सज्जि साइक पाइक भर॥
आइ मिले मुषजेल। दुहुन कढ्ढिय असि वर वर॥
[1]तेग मार सिर झार। धुंम धुम्मर हर लुक्किय॥
पऱ्यौ घोर अंधियार। विछुरि निसि भ्रम चक चक्किय॥
को गिनै अपर पर को गिनै। लोह छोह छक्कै बरन॥
सामंत सूर जैतह वलिय। कहत चंद जुग्गति लरन॥ छं० ॥ २६ ॥

रघुवंसराय का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना।

वर सिप्रा नदि तट्ट। धाइ सामंत जु रुक्किय॥
रोकि सुष्प रघुबंस। धेन पज्जून सु हक्किय॥
दुतिय वीर वर टिके। भीस भारथ जिम लग्गिय॥
सूर विना प्रथिराज। धके जुरि पग्गन पग्गिय॥
मुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि। औसर पग कढ्ढिय लरन॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि वर। तिरटू झर लग्यौ झरन॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन।

मोतीदाम॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ। कला [2]ससि संपि जगन्नय पाउ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम। कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम॥
छं० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतरु भीम नरिंद। मच्यौ जुध जानि वृतासुर इंद्र॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड। परे भर बथ्थ मरोरत झुंड॥
छं० ॥ २९ ॥

कटकहि हड्डहि गूद करक। विछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक। उरझ्झत अंत सु पाइन तक॥छं०॥३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय।
(२) मो.-सति।

करक्कस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनच्चिय वेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं०॥ ३१॥
करें कर आवध दंड छतीस। तकै छल सांइय भ्रम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्द अलुद्द अपार॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुवार॥
छं०॥ ३३॥
दूहा॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान॥ छं०॥ ३४॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं०॥ ३५॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निक्कर्यौ पंचमो भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि महत चंद सो भासमान॥
छं०॥ ३६॥
मानों कि राह ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बढ्ढे बिसाल। मनु ससिअ डोर कढ्ढि चक्क लाल॥
छं०॥ ३७॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्क हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों द्दपंति पंषिय सजूह॥छं०॥३८॥
कढ्ढि इसी तेग धाइय पहार। मनु अमं इंद्र सज्यौ संभारि॥
विरचै जु सूर बाहै विहथ्थ। दिषि दूर चढ्ढि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं०॥ ३९॥
भरहरै सब्ब पाइल सुभार। रिन [1]रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं०॥ ४०॥

---

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।

† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

झक झक उझक्क वहल्ल दिपीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव॥
कट हित्त सूर जोधाइ सुक्कि। कढ़ंत बाल ज्यों बाल रुक्कि॥ छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन। जानिये बीय वयसंधि तेन॥
परि सहस सत्त दोउ सेन वीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर॥
छं०॥ ४२॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त॥ संझ हेत वहि सार। मार [2]करि तुट्टि सनह रिझ॥
सो ओपम कविचंद। अंग छुट्टे कि बाल पिझ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै॥
यों भर्‍यौ सेन सम वर सुवर। नन हार्‍यौ जित्यौ न कोइ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी। निस कढ्ढी वर वीर होइ॥
छं०॥ ४३॥

दूसरें दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

होत प्रात सामंत। पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय॥
मोती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय॥
वर हरिन्थ उथ्थट्ट। पत्ति मंडी [5]गुन राजै॥
[6]लाल रुप कविचंद। मद्धि कनइक दुति साजै॥
[7]नालीव रुप लीनो बरन। राम सुवर रघुवंस भिरि॥
कोदनि सुरंग पंती करिय। बीय सहस पुंडीर परि॥ छं०॥ ४४॥

युद्ध वर्णन।

मालती॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरै॥

(१) ए. कृ. को.-नीर। (२) मो.-कहि।
(३) मो.-ओट। (४) मो.-सुध। (५) ए. कृ. को.-गुर।
(६) ए. कृ. को.-लाज। (७) मो.-नालीच।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह झिल मिल, निक्करे ॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सवदन, वर भरे ॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार वजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कवि, मानयौ ॥
मनों बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निङ्वयं ॥
मनुं रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझ्झयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पल्लट्यौ पांवार। सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बीट्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ। दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी ॥
धनि सूर बीर सामंत हौ। [3]जुजर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा ॥ मीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

जो मति पच्छैं उप्पजै । सो मति पहिले होइ ॥
काज न विनसै अप्पनौ । दुज्ज न हँसे न कोइ ॥ छं० ॥ ५० ॥

आदर करि आने सु ग्रह । भगति जुगति वहु कीन ॥
जे भर घाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

पग विवाह भीसंग रुचि । वाजे वज्जन लग्गि ॥
मंगल मिलि अलि गावहीं । गोप गोप निस जग्गि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है ।

भुजंगी ॥ रची वेदिका वंस सोव्रन्न सोहै । जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै ॥
लगी वेद विप्रान सों [1]गान झांईं । रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांईं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं । घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं ॥
उड़ै वीर [2]गोधूरकं वास रेनं । करे भेरि भुंकार गज्जन्त गेनं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

चवै छंद वंदी ननं पार जानं । करे दान हेमं सु विद्या विनानं ॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं । तिनं लेपियं कग्गदं चाहुआनं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ लिपि कग्गद चहुआन दिसि । दिय पुत्री भीमानि ॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी । कलह कुसल बर वानि ॥ छं० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ।

नाराच ॥ कन्यौ सुन्हांन कामिनी । दिपंत मेघ दामिनी ॥
सिंगार षाडसं करे । सु हस्त दर्पनं धरे ॥ छं० ॥ ५७ ॥

वसन्न वासि वासनं । तिलक्क भाल [3]भासनं ॥
दुनैन ऐन अंजए । चलं चलंत षंजए ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) मो.-मान ।　　　(२) मो.-केदासु ।　　　(३) मो.-तासने ।

सुहंत श्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुक्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक जाति जालितं । धरंत पुप्फ मालितं ॥
झँकार हार नौपुरं । घमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्टिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० । ६१ ॥
कनक नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल वानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रुप सारदं । सरन्न रुप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा ॥ करि स्टँगार अलि अलिन सँग । रिम झिम झुंडन मंझ ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हथलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । मुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरीं । कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पतिव्रत सेवा सुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति लुप्पै (१)लुप्पै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो.-छप्पै ।

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना ।

वंदिन दान प्रवाह दिय । लिय सुंदरि जुध जीति ॥
दुहुं जस न्नम्मल छंद [2]गुन । पढ़न कविन इह रीति ॥ छं० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ धनि सामंत समथ्थ । जेन न्नप विन जुध जित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन जस किद्धि विदित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन बरनी वर संध्यौ ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन भीमंग [1]रन बंध्यौ ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति वर । ढिल्ली दिस पायान कर ॥
बैसाष मास अष्टमि सितह । कित्ति संचरिय देस पर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ।

ढिल्लिय पति सिनगार । हट्ट पट्टन की सोभा ॥
गौष गौष जारीन । दिष्षि त्रिय नर सुर लोभा ॥
भूंगल [3]भेरि नफेरि । नद्द नीसान म्रदंगा ॥
नाना करत संगीत । ताल सों ताल उपंगा ॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर । न्नप प्रवेस सुंदरि करि ॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ । प्रथक प्रथक परसंस करि ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दहेज वर्णन ।

च्यार अग्ग च्यालीस । मत्त अप्पे गजराजिय ॥
सौं तुरंग तिय अग्ग । बीस चव अप्पि सु पाजिय ॥
इक अमोल सुंदरी । सत्त तिय दासिय बिंटिय ॥
सबै सथ्थ सामंत । रहे भर करिय अमिंटिय ॥
सामंत करी प्रथिराज बिन । करै न को रवि चक्क तर ॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥ छं० ॥ ७३ ॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

---

(१) मो-गुर । (२) ए. कृ. को-न्नग । (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि ।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भीर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना ।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कवित्त ॥ सेषग्गाही सेन । दंड पलट्यौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगें रा गष्पर ॥
हवस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्पर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर मंगै मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लैं सुंदरि पच्छौ फिर्‍यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

---

(१) ए. कृ. को.-बीर ।
(२) ए. कृ. को.-चहुआन ।
(३) मो.-निगली ।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रस्सिय ॥
धूप दीप सुगंध। दीप दस दिसि रत जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साजं सु सवानं ॥
न्रप देपि अचंभ समानि मन। सुप आतुर पेषन महल ॥
आनिय सु सेज त्रिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७९ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देपि भूल्यौ न्रपति। रचिय विरंचि विहद्द ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पन्नौ। सपी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं सुप रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्रवल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
स्रृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान बिभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यो सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रव गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

---

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते ।

(चौंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ।

कवित्त ॥ किहि भेपत प्रथिराज । किहित भेपत चिहु पासं ॥
किहि भेपत दिसि विदिसि । कहौ मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह । कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद । देव गुरुराज विराजै ॥
सजि मान वीर चतुरंगिनी । कमल गहन सुरतान वर ॥
नव रस विलास जस रस सवाल। तपै तुंग चहुआन वर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू वन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ।

नीतराव पिचीय । भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ [1]ग्रह भेद । लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
वरष उभै षट मास । फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्टू वन प्रथिराज । वहुरि आपेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्यहन को । वर वराह वर पिल्लइय ॥
दैवान जोध चहुआन वर । भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू वन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ।

सत चीता द्वादसति । स्वांन अच्छे सु रंग दह ॥
वीय अग्ग च्यालीस । सीह वर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त म्रग अच्छ । सत्त दह अग्गति [2]पाजी ॥
आषेटकं प्रथिराज । वीर ओपम अति राजी ॥

(१) मो.-वर । (२) ए.-पाजी ।

उप्परति राय षट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से सलाह लेना।

मुक्कि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर षरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हुसेन सु सग्गे॥
इष्ट अत्त अवसान। दिय कग्गद लिषि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्ही षरिय॥
चालंत जेस लग्गत दिवस। झुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा॥ वेगि सूर सामंत सह। मिले जाइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं० ॥ ५ ॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रण सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर भंगै चहुआन॥ छं० ॥ ६ ॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि जानौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुस्सेन। साहि [4]जानौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कबहुं क घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दोसै फिरत। भावी गति दिष्षी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नही जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

(१) मो.-बुलाये। (२) मो.-सुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. जादौ।

अरे ढीठ वस्सीठ । कौन हाम्यौ को जित्यौ ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ । कौन वित्तग अप वित्यौ ॥
पंच तत्त पुत्तरी । पंच हथ्थन कर नच्चै ॥
अजै विजै गुन बंधि । चित्त तामस रस रच्चै ॥
बंछै जु सुप्प फल राजगति । बछ कम्तार सु नंन करै ॥
उच्चरै कित्ति छल ना रहै । तव लग्गै गल वल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै वार मैंने उसे बंदी किया ।

दूहा ॥ कै कोसां ढिल्ली धरा । कै कोसां गज्जान ॥
पंडा सौ [2]कर बंधिया । चहुआना [3]सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन वर । वर बंध्यौ सुरतान ॥
उट्ठाए वस्सीठ वर । वर बज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लहु पंच गुरं । पग पन्न हरे विष पत्त [4]वरं ॥
वर सुद्ध प्रयान हुलास छवी । कहि मोदक छंद प्रमान कवी ॥
छं० ॥ ११ ॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं । कवि दोउअ सेन उपम्म कियं ॥
[5]सुत षंजन ज्यौं बुधगत्ति पढ़ी । सति सीतल [6]वात प्रमान बढ़ी ॥
छं० ॥ १२ ॥
वर रत्त रषत्त सुरत्त वनं । तिन की छवि पावस सज्जि घनं ॥
सु वजे वर वीर निसान वजं । सु मनों घन पावस सज्जि गजं ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-विन । (२) ए. कृ. को.-वर । (३) ए. कृ. को.-पुरसान ।
(४) मो.-हरं । (५) मो.-सत । (६) ए. कृ. को.- वाल ।
* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसेन से अभिप्राय नहीं है वरन उसके पुत्र से तात्पर्य्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है ।

बजावत बीर जंजीरन सूर । कँपै सुर बीर पयालनपूर ॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विथ्थुरियं । सुदरी द्रग अठ्ठत धुंधरियं ॥
छं० ॥ १४ ॥

तिह ठौर रसं अप वंधव से । तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे ॥
बर जग्गत नेन सु मेन सुचें । तहां क्रूर नसे नर आइ नचें ॥
छं० ॥ १५ ॥

अम सूर तिनं अभिलाष रिनं । बर ग्रम्म बसं बर वंसु तनं ॥
कल किंचित संकर सूर दियं । बर बीर म्रजादन लाज लियं ॥
छं० ॥ १६ ॥

सहनाइय सिंधुअ अहरियं । तिन ठौर भयानक संचरियं ॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं । बर बीर अवाज दिसं बढियं ॥
छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

गाथा ॥ तं बीरं जल गंभीरं । आव यों उप्पटी सेनं ॥
गोरी दिसि चहुआनं । चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० ॥ १८ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना ।

कुंडलिया ॥ इह सु राज आतुर [1]षरिय । सुरतानह प्रथिराज ॥
भूमि भार कछु [2]बढ्यौ । सो उत्तारन [3]काज ॥
सो उत्तारन काज । परे आतुर दोउ दीनह ॥
तिन अर बस चर परे । को इन [4]छट्टै मति हीनह ॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [5]सुरहं । चक्कई चक मुक्कै नहीं ॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परै । दया न किज्जै मन इही ॥ छं० ॥ १९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-धरिय । (२) ए. कृ. को.-छंटयौ ।
(३) मो.-पार । (४) मो.-छंडे ।
(५) ए. कृ. को.-सुहर ।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल । दूत सपत्ते आइ ॥
घर चरित्त चहुआन दल । कहि साह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त ॥ नहिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥
वर इंद्रह दीसै न । मघल मंझौ सु दुहु निसि ॥
जवहीं हम संचरे । काल तवहीं दिसि पासं ॥
परत वाह लष्यंत । दिट्ठ देवन सुष वासं ॥
लच्छीन [2]ग्रीव वस वीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
लेलान कोस परपंच को । गौरी वै संम्हौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना ।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल । वंटि सेन सु विहान ॥
काइर भर सह उच्चरै । कहि वंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यो सु विहानं ॥
झुझ्झ रहैं कै [3]जाइ । जु काछु पत्तौ चहुआनं ॥
वरन मेच्छ वर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥
जय जानी अन चंप । पंच चतुरंग सु भेरी ॥
भुअ वीर रूप गोरी सु वर । मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम ॥
पलटयौ भेष देषत सयन । वर वज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना ॥ वर वज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।
उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान भय ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पुल । (२) ए. कृ. को.-त्रीय ।
(३) मो.-नीय । (४) मो.-तट ।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिग्गई।
गज असवारन सूर निब्रत्त सु लग्गई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरें लघु, बरन अच्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरइ भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चल्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति छोत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलक्कि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं ॥
रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुमंत अरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उडगन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कोंधत, अभ्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरवर बरुन बारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक्क, बनि सगथ पसु पुज्जवै ॥
प्रति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
चय लष्ष मीरति साह गोरिय, भार भुरुक्क भ्रलु भभ्भवै ॥
षुरसान षान अरक्क आरब, सज्जि सेन [5]सझंझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह। तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-उड्डन । (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्धता, छविद्ध ।
(३) मो.-झलकंत । (४) ए. पुज्जवै । (५) ए. कृ. को.-अंवझवै ।

जु सजे हय गोरियसाहि परे । तिन देषि रवी रथ के विसरे ॥
दिपि सेत तिनं उपमा सु करी । सु मनों नदि पूर छिली दुसरी ॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं । गुरु बंक पिपं मन कै चढ़तं ॥
वजि बाज कुह्र धर सद्द पुरं । सु मनों कठतार वजंत तुरं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ पगे । मनों सेत वेउरन भान पगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं । मनु उट्ठि किरन्न सु पाल परं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चंद वनी वनिकैं । सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं ॥
जग हव्य वनें हय के सिरयं । गलि प्रग्गत हेस द्रुमं वरयं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर पप्पर सोभ करैं तनयं । मनु अक्क अरक्क विचें घनयं ॥
तिनकी हर वाय फुलिंग सजै । सु कहैं कविचंद तुरंग लजै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

वुहु रैनन आसन जी डरयं । [2]मग मत्त मनों वहरें वनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी । हय नप्पत रागन सांस कढ़ी ॥
छं० ॥ ३६ ॥

विय वाय अरक्कन वंध चढ़ै । कविचंद पवन्नन वाद वढ़ै ॥
सु उड़ै नन धावत धूरि पुरं । गतिमान सुसील विसाल उरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंक्षत अश्वत आतुरयं । विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अपार अवद्ध परी । मनु गावहि इंदुन वंध धरी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पिय अत्तन साहि वरं । जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

---

(१) मो.-कविचंद ।　　　　(२) ए. कृ. को.-मन ।

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उट्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल [1]मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2]डम्मरी उड्डि आकास छाइ ॥
अचरनचरन गोरीस [3]साईं। सेंन चहुआन हथ्थें बनाई ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावद्दिसि अरुनग्ग ॥
मुष गोरी चहुआन भिरि। ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चौपाई ॥ समह्यौ रन चहुआन सपट्ठिय। वज्जिग वाय सुब्भिक्षन [4]नदि उट्ठिय ॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दों। सुब्भिक्ष न अंष कन्न सुनि नद्दों ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सम्हौ सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम। वैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। राहु ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहक मभ्भ घूघू वहक ॥
आकास मद्धि गज्यौ गयन। परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ ज्यों जगदीसह कान दै। तकसी रन किहुं कीन।
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें। भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

---

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए..समाईं। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य बजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीइ दीन हीनं न जुद्धे । सुपं मार मारं तिनं मान सद्धे ॥
परी आवधं छोड़ बज्जै निसानं । बजे हक्क हूरं दमामें न जानं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवधं हथ्थ सामंत सूरं । घुरं वै निसानं बजै जैत [1]पूरं ॥
काढ़े वे सनाहं झनक्के उनंगी । मनों आवधं हथ्थ बज्जै चिनंगी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं [2]मरक्क दंती । ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती ॥
फुरै हथ्थ जनं मुरक्की उरक्की । मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की ॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती । ग्रस्यौ राहु सूरं छुटै नभ्भ छुंती ॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै । सदं तीतरं जेम सों पच्छि गज्जै ॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै सीर गोरी पछै दै सभानं । भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं ॥
तुटै सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चैं । चलै रुद्रि धारं चिह्नं पास गच्छै ॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई । मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई ॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं । लगे धार धारं रजं रज्जकीसं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोहो परे बूंद पानी । ढुंढी लुथ्थि पावै न नद्दी वहानी ॥
मनं मोद लै सीस मुद्राह कीनी । .... ॥ छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-सूरं । (२) ए. कृ. को.-सरक दंती ।

उठं उर्द्ध सीसं उपमा सम्मूलं। मनो पावकं प्रलय धों श्रोन लज्जं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोप रीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का सामहने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क षनि सेन। सूर सामंत परष्षिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान षरक्किय॥
कर वार धारि सिष्पिरं करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिक्कि नंष्यौ हूै नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उज्जिय नाल चमंकि। मझ्झ धुंधर छबि लग्गिय॥
रबि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। वाग अजान बाह गहि॥

---

(१) मो.-वक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्पर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्यस्यौ । सूर वर सिंधु [1]सपन्नौ ।
सुकात तह मिलि सूर । स्याम रन श्रप्प अपन्नौ ॥
सापला सूर [2]सारंग ढहि । जुरि जुवान पंचाइनौ ॥
केहरौ गौर अजमेरपति । पऱ्यौ क्रुक्खि रन भाइनौ ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर । दिसि रत्ती धवलाइ ॥
सैसव में जुब्बन कछू । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना ।

कवित्त ॥ जाम निसा पाछली । सेन सज्जिय दोउ वीरं ॥
सामंता चहुआन । आनि गोरी कछमीरं ॥
भान पयानन भयौ । करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय ॥
ता पहिले पायान । जोध रन असुरन कढ्ढिय ॥
अदिहार वीर गोरी सुवर । चाहुआन दिन सुदिन घन ॥
करतार हथ्थ कित्ती कला । लरन मरन तकसीर नन ॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ।

भुजंगप्रयात ॥ पऱ्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी । चपी [3]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी ॥
तहां वाहुऱ्यो वीर वीरं नरिंदं । लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं ॥
छं० ॥ ६० ॥

अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी । फटी सेन गोरी सुरी सो तिरच्छी ॥
दोऊ दीन वाहै दोऊ हथ्थ लोहं । पऱ्यौ जानि वाराह पारद्धि रोहं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

कटे कंध वंधं कमंधं निनारे । मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे ॥
ननं अश्व चल्लैं चलैं हथ्थ रोजं । ननं चित्त चल्लै रवी रथ्थ दोजं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

(१) मो.-सयत्तौ । (२) मो.-सामंत । (३) ए. कृ. को.-राज ।

घनं अस्व फेरें चलै अस्ववाहं । तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं ॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहैं ज्यों कुलट्टं । चितं हत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

बरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्थं । चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई । मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई ॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई । मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि [1]हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं । करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं । दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुकती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना ।

दूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर । है गै भूमि भयान ॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों । परी बींटि चहुआन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ।

भुजंगी ॥ परी वींट गोरी सुरे मीर षानं । तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं । पऱ्यौ धाइ पावार भर सलष दिन्नं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ। तहां मीर मारुफ अग्गैं गुरायौ॥
घरी अद्ध झुझ्यौ करी छत्र धारं। बहै सब्ब सामंत विचि तौन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-हड्डूडड्डूड ।

तुटै आवधं मग्न अरि हथ्थ लग्गी । तहँ [illegible] [illegible] [1]गुर्ज्जन वाजी॥
गजं गहन प्राहार निट्टें ढहायौ। तबै [illegible] [illegible] [illegible] साह्यौ ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान । हथ्थ आप्पौ चहुआनं ॥
चामर छत्त रपत्त । तपत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै हुस्सेन । वीर [2]तुट्टे आहुट्टिय ॥
मान तुगं चहुआन । साहि मुष के बल षुट्टिय ॥
सभ्थान भान प्रथिराज तप । वर सनूर दिन दिन [3]चढ़े ॥
जस जोति मंत संभर धनिय । चंद बीज जिम वर बढ़ै ॥छं०॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३४ ॥

(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज। (२) ए. कृ. को.-पुटे। (३) मो.-बढ़े।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(पैंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात। आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों वचन। हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान। लेह में वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति। पल्ह पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै। दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
वरनी सु लच्छ लच्छी सहज। परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा। [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय। कै जीत्तौं न्रप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के वचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद। सबद उब्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान। मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज। तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचना अति सूर। तोइ का [7]भाठी कोपै।

---

(१) मो.-मिस। (२) मो.-भग्गै।
(३) मो.-दिसी। (४) ए. कृ. को.-भोट।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ। (६) ए, कृ. को.-जौ इचदा। (७) मो.-भावी।

हूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिर्‌यौ। कही राज सों बत्त ॥
तमकि तोन लीनौ न्रपति। मनों सुजोधन पथ्थ ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यौ ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
आहत झरत झारत परत। श्रोन धार [1]धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त ॥ षग वाहिय भिरि भान। अरिन अड्डर धर किन्नौं ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ ॥
रिझ्झरु लिंग उत मंग। अमिय विष जंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि असंध। नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) ए.-उर।

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ स्रम सिन्नाप गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्बर गान ॥
संकार काल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिट्ठह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। वरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
काहु त संस काहु अंस। हंस कहु रुक्ख दक्ख कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देपिय न जम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीप चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। सोप लभ्यौ सु रथं रवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे अंकुरन भान छवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हलत नीर काइर सुपन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥ छं० ॥ १० ॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नहीं मेट सकती।

तब कंगुर पालहंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन। सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

---

(१) मो.-भय। (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक। (४) मो.-उप कंठं। (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुरानन भगिचित टारि रथ मग्ग मुग्गली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है। (६) मो.-सह।

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी॥
[1]सोभति अनेक जानै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावी विगत्ति हों प्रकृति हौं। तो प्रधान भूठह कहै॥ छं०॥ ११॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भ्रमित गमत बरु आइय॥
भोटी न्रप कन्हा [2]पै आइय। काली कन्ह कि हंकि जगाइय॥
छं०॥ १२॥
तब कन्हा परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं०॥ १३॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मै शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं॥
स्वामि बचन किन्नौ परमानं। लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं॥
छं०॥ १४॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि॥
बर बंसी [3]ससियाल। पलह आयौ सु सेन सचि॥
लष्ष एक असवार। लष्ष दह पाइल भारी॥
अष्प सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उच्चारी॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा। सामंता कुंडल फिरिय॥ छं०॥१५॥

(१) ए. कृ. को. मो भति। (२) ए. कृ. को.-वै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

वर रघुवंस प्रधान। राज मंत्र्यौ विचारिय॥
बोलि वीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय॥
बाट घाट वन जूह। धरा पद्धर नद घाटं॥
अव्व जान न्त्रिमान। कोन पद्धर [1]वन वाटं॥
अगवान देहु नारेन वर। कछुक मंत जंपौ सु तुम॥
जालंधराज जंवू धनी। स्वामि अम्म [2]मंडहित हम॥ छं०॥ १६॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम वन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्त्रप अग्गै॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गै॥
अति सु विकट वन जूह। चढ़ै संग्राम न होई॥
अश्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई॥
वन विकट जूह परवत गुहा। वर वेहर वंकम विषम॥
दारुन्न भयानक अति सरल। वर प्रस्तर नहिं जल सुषम॥
छं०॥ १७॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी॥ वनं जा विषंमं विषं बाज कंटं॥ घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं। जिनै वास आसं लगे पंक मोरं॥
छं०॥ १८॥

घनं पामरं जाति बंधै धनंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै मनंकी॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं। [3]जितें सद्दया सद्द ता अंग मोरं॥
छं०॥ १९॥

(१) मो.-वर। (२) मो.-मंडहि न हम। (३) मो.-जिनैं।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। इकं इक्क पच्छै बिपं जंन जोरं ॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उठ्ठै। सुनै क्रन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै ॥
छं० ॥ २० ॥

इकं होइ राजं पथं सत्त [1]रुद्दै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्दै ॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं। ननं षग्ग मग्गं सधै इक तीरं ॥
छं० ॥ २१ ॥

न्रपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुबंस अरिसेन भानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ बीर ॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिल्लिय ॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय ॥
ताजी तुंग सु अथ्थि। जेन रुक्के बर बिय करि ॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि ॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर ॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ठ प्रथिराज बर ॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं ॥
लाज राज बिंटयौ। जानि पारस बिच चंदं ॥
अींय काज श्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रुंधै। (२) ए. कृ. को.-बंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रथानं। (४) ए.-खान।

स्वामि काज सामंत। वियौ धर मक्खव जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंवुत्र पुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंवु गढ़ चढ़्यौ काज। वोलहित वाम कौद्दहति ताज ॥
दाहिने म्रग्ग संमुह फुनिंद। नौरूप वोल वोलहित हद ॥
छं० ॥ २६ ॥
हंकरै सिंह कोद्दहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकारै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]वन्नर विरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न कन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत वाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय वाम आनंद कीन ॥छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गट्ट मथ्थ। चहुआन पिथ्थ रिक्क्षेव तथ्थ ॥
हाहुलराव दीनौ विरद्द। आनंद वज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मथ्थ ॥
* ताथें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्ले वंदन [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
वर प्रव्वत वैदेस सधि। वीर वजी रन वाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

(१) मो.-देव। (२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रत्थ, हथ्थ। (४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत। (६) मो.-सगुन।
* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्थ गौ गंठि थाल। अरि अंग षतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अट्ठार टंक षंचै कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति इत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गढ्ढ ओछंडि थान ॥छं०॥३५॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रथ्थ नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चढ्ढि। मंगलिक जानि वन्नौर कढ्ढि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
लुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चित्रसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै षंचि सास। मानहु कि रचि चित्रह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतर्‌यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चित्रहति साल रष्षीति बाल। नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दझझवै [3]वाहि मंदिरत्ति रिझिझ। चल्लै न पाइ मानं उलझिझ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-षाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे।
(३) मो.-नाहि।

देषंत सुमन गति भई पंग। रुट्ठई काम रति कोटि रंग॥
नठ्ठई उगति तिन देषि बाल। मानो कि रास मझ्झें गुपाल॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि। तब लगि दुजति सपन्न॥
एकल्ल रघुवंस ने। लै गढ़ सबर प्रपन्न॥ छं०॥ ४३॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वी-राज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त॥ सबै सूर सामंत। पलह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ॥
थप्पौ राम नरिंद। हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ॥
तुम रहियौ इन थान। जाइ कंगुर सँपत्तौ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज। राज सम्हौ प्रापत्तौ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल। धन समूह आइय सु धर॥
सुभ्भर सुधाइ तेरह परे। विय दाहिम्म नरिंद बर॥ छं०॥ ४४॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआनं॥
पऱ्यौ भान रघुबंस। बीर बंचे फुरमानं॥
माल्हन वास नरिंद। राज रष्यौ तिन थानं॥
वर बंध्या अरि साहि। षून कढ्यौ परवानं॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। बर रघुबंस बुलाइयौ॥
दिन देव दसमि बर भूमि बर। तदिन सु रंगन पाइयौ॥छं०॥४५॥

नियत तिथि पर व्याह होना।

(१) ए. कृ. को.-लिन्नौ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन। दिन पद्धरौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन वृत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु षंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिषत।

बर जंघन मृदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। अम्म काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। चम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥
दूहा ॥ आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे त्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-दिष्षी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ। सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ। भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम। हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी। काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार। रूप सिंगार स लीनी।
लष्यन वतीस लच्छी सहस। अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]वक्र विच। दिष्यि न कहु चक्रंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन।

नाग वेनि सुनि पीन। कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पद्म पच मनु। भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति। नाभि दछना द्रत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु। जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित। चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सत पच गंध मुष ससिय सम। नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-अवरि। (२) को.-चक्र। (३) मो.-सोभतं।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा ॥ बर बंसी [1]ससिपालं। चिंत्तं जस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [2]बद्धं। रिनथंभं [3]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर बीर सपत्तं। कग्गद हथ्थ दिए बर तत्तं ॥
हंसावति अप्पै बर [4]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त ॥ राजहव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्टी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्ती [5]अहुट्टी ॥
बर कग्गद [6]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडली। अस्स छची जिन भाजन ॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक रन। हक्कायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गढ़ौ करि साहि ॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई ॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकह अथंभह ॥
सब्ब जोग सहक्रम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपालं। (२) मो.-बढ्ढे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उम्भं।
(५) ए.-उहठीं। (६) ए. कृ. को.-बर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुनि वंसी ससिपाल । वीर पंचाइन कोप्यौ ।
　　सद्द मद्द गज जेमि । तमसि धीरज सम लोप्यौ ॥
　　रिनथंभह दिसि थंभ । दियौ वर वीर सिलानं ॥
　　गय हय दल चतुरंग । सजे तिन वेर प्रमानं ॥
　　वर वीर अग्ग वसीठं चलि । राजद्दौ संमुह दिसा ॥
　　परनाइ कुंअरि हंसावती । सु वर कोपि आयौ निसा ॥ छं० ॥ ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये ।

दूहा ॥ जस वेली रिनथंभ न्रप । फल पच्छैं न्रप आइ ॥
　　रा जद्दव सुरतान सौं । कहि वर जाइ सुधाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया ।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्षि रावनह । लंक तोरन कुल पोयौ ॥
　　कपट रष्षि दुरजोध । पग्ग पोहनि दल [2]गोयौ ॥
　　मंतहीन वर चंद । कियौ गुरवार सुहिल्लौ ॥
　　क्रम्म रष्षि रघुराइ । अजे जान्यौ न पहिल्लौ ॥
　　रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन । भिरन कहौ वर वीर सव ॥
　　ससिपाल वीर वंसी [4]विलस । हम देषै आयौ सु अव ॥ छं० ॥ १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ।

　　जीवन वलह विनोद । अलह नब्बी घन संगहि ॥
　　जीवन वलह विनोद । आस आसन्न असुर गहि ॥

(१) एं.-रषी ।　　(२) मो.-पोयौ ।
(३) एं. कृ. को.-रंसनं ।　　(४) मो.-विमलं ।

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै ॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन ॥छं०॥११॥

भानुराय यद्दव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा ॥ रा जद्दव बर भान नैं। बहु मंग्यौ बर हट्ट ॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। बर पंचाइन दल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त ॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाव। षान बंधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाव। सेई संचारिय ॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्परै। [1]थह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चढ्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्रं धस्यौ आनि पथ्थं ॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जैं तुरंगा ॥छं०॥१६॥

(१) ए. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरझ्झै, उरझै।

कहैं बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ। कहैं अस्व आठू रनंथंभ ढाहौ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं। उथौ छत्र सीसं कबी देषि गायं॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी। ग्रहं अट्ठ मानों ससी मेच्छ मंडी॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेर्‍यौ। मनों भावरी भान सुम्मेर फेर्‍यौ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना।

दूहा॥ घन घेर्‍यौ रिनंथंभ पर। लिषि ढिल्ली परवान॥
तब जद्दव रा भान ने। दिय कग्गद चहुआन॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त॥ रा जद्दव बीराधि। वीर गुज्जह अनुसर्‍यौ॥
हयदल पयदल गज। अरोहि रिनथँभ यौं अर्‍यौ॥
धंधेरा धंधेल। चंद ससिपालह वंसिय॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवंतं गंसिय॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी। षीची राव प्रसंग दुह॥
प्रारंभ करै संभरि धनी। जौरै वंध षुमान सह॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं। तिथि सातें चहुआन॥
समर सिंघ रावर दिसा। गुर जन मुक्यौ कान्ह॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना।

कवित्त॥ वर पंचाइन सबर। सबर बंसी ससिपालं॥
घेर्‍यौ तिन रनथंभ। सुबर जंपे वर कालं॥
मान बीर पुक्कार। धाइ आई ढिल्लीवै॥
अद्ध अद्ध पहु पंग। सथ्थ अड्डौ वर है वै॥

जोगिंदराव जग हथ्थ बर। महन रंभ उप्पर सबर ॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। [1]तुम आओ रचि सेन बर॥ छं० ॥ २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा ॥ चित्रंगी चतुरंग सजि। बर रनथंभ सु काज ॥
बर सहेट रावर समर। आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुँचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय ॥
अट्ठ दीह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [2]भानं ॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत मिसि देही दानं ॥
अग्रहन ग्रहन रिनथंभ सति। इह सुमिच आयौ पढ़न ॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। महन रंभ बध्यौ बढ़न ॥ छं० ॥ २६ ॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

---

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन ।

(२) ए. कृ. को.-मान । (३) ए. कृ. को. नाहि ।

सुनि कान्हा चहुआन। रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कढ्ढन। मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरपै न। सुवर पची वर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत। छच छल छांह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुवर। वेद भ्रम्म बंध्यौ चवैं ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग। हस्त मत्त वर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दस। रष्षे कान्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय। वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन। दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा।

चले कान्ह वर संग न्टप। समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंवक वज्जिहै। धरकि वीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन।

कवित्त ॥ घरी पंच वर सोम। दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि मंच। सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अद्ध चार भय ह्वर। फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्कयौ। छंड विय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर। महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै। सुबर बीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्य। जानै कि सरित सागर समथ्य ॥

---

(१) ए. कृ. को.-वर साहि, वर साई।
(२) ए. कृ. को.-वारिय।
(३) ए. कृ. को.-राजि।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गज्जिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुझ्झै न भान रज [2]मझ्झि सलीव। चंकीय चक्कवे चलि सु क्कीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु रक्कि अंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन रूझ्झ
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गज शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। वर बरन बीच सोहंत जाहि॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह। बोलंत सद्द कवि मधुर जीह।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुभ्भहि भसद्द बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के वाएं ओर पृथ्वीराज और दहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
बर दच्छिन समरंग। बीर जोगिंद प्रपत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीह। (४) मो.-मत्त।

कुंभ अंब डोलंत । हथ्थ बरनै रस माई ॥
चहुआन सेन चित्रंगपति । चावद्दिसि वर विड्डुरिय ॥
वर ढोह छंडि चंदेर न्रप । जुग्गिनि व्है सम्हौ भिरिय ॥ छं० ॥३९॥

दूहा ॥ उत चंपे चहुआन ने । इत चंपे चित्रंग ॥
मूंदि सास अरि सम दरी । जनु [1]चंप्यौ सु म्रदंग ॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त ॥ प्राची दिसि चहुआन । चढ्यौ पच्छिम चतुरंगी ॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ । बीच अरि फौज सु रंगी ॥
दुहूं सेन [3]समकंत । [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी ॥
मनु राका रवि उदै । अस्त होते रथभग्गी ॥
ससिपाल वीर वंसी [5]विमल । दुहुन वीच मन मेर हुअ ॥
पह मिलै षेह षग्गह हय्यौ । चवै चंद रवि दंद दुअ ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुर्यौ । जुद्ध पंचाइन मंड्यौ ॥
इक सपंष पग वीय । पेट रनथंभ सु छंड्यौ ॥
पीठि पंड पावार । सु वर ह्लऔ नष पंषं ॥
एक मुष्य वन वीर । धीर उभ्भौ विय मुष्यं ॥
न्रिम्मान वंभ वर पुंछ कवि । पुच्छ पाइ साधन समर ॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें । समर मोह भूल्यौ अमर ॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी ॥ मिले आइ [6]धायं सु आहुट्ठ राई । लगे वीर वथ्थै लगे लोह धाई ॥
कढ़ी वंक अस्सी ससी वीय गत्ती । बरै ज्वाल स्हरं मनों हव्वि तत्ती ॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-चंपी । (२) ए.-चतुरंग । (३) ए. कृ. को.-चमकंत । (४) ए. को.-नग, नगा । (५) ए. कृ. को.-बिसल । (६) ए. कृ. को.-घाई ।

करै हक्क सीसं महा मार मारं। धरं कित्ति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सक्क बीसं [1]तुरित्तं बषानं। तिनं सद्द अग्गैं दुरै वै निसानं॥
छं० ॥ ४४ ॥
धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं॥
लगै धार धारं धरक्कै विवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं॥
छं० ॥ ४५ ॥
कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनों ज्यों पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनों दंपती संजुधं की सुरत्तं॥
छं० ॥ ४६ ॥
परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्पियै बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड झारी॥
छं० ॥ ४७ ॥
जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]जरूरं। उड़ै रैंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव स्रोनी पलं भद्द जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं० ॥ ४८ ॥
तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्पं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं नफेरी सवद्दं॥छं०॥४९॥
बहैं षग्ग बानं मनों बग्ग पानं। रचै चित्त चक्रुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं० ॥ ५० ॥
[3]इलावार पूरं सरित्तान स्रोनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं॥
सुषं मेद पाटं सु घाटं घुमानं। भिरे भौर भारी सु अब्बे उमानं॥
छं० ॥ ५१ ॥
गहै नाग सुष्षी अरी जा उठायौ। मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहैं रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पर्‍यौ षग्ग षीची भरं चित्रकोटं। जलं पष्प मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुटिंत्। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

महादेव जुद्ध दिष्यौ मेस थानं। धनी चित्रकोट [1]धसी सेन जानं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुंद बल ॥
विचै समर रावर। नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उब्भारि। इतै सिंगनि धरि बानं ॥
छंडि निधक्क अरियान। उररि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन। हवि मुष रुष मुक्कै नहीं ॥
भर सुभर दार रष्षन सु वर। समर समर उभ्भौं पही ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम लरत्त बर समल। दिष्षि चहुआन कियौ बल ॥
बांम मुष्ष अरोहि। नीर असि झल्ल मुषह झल ॥
सौ सामंत छै सूर। सथ्थ प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट। षग्ग षल षंभ हलायौ ॥
जै जैत देत जै जै करहि। देव वीर आनँद बढ्यौ ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर। असि पहार धर भर चढ्यौ ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि। मिलिय राव प्रति मान ॥
समरसिंह रावर सु प्रति। चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

---

(१) ए. कृ. को.-मधी। (२) ए. कृ. को.-कीय।

*दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ॥ छं० ॥ ५८॥
मद्धि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम॥
समरसिंघ दछिछन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम॥ छं० ॥ ५९॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं।
सेंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, म्रग रारी॥
बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी॥छं०॥६०॥
गोरष्पन पाइय, कंठन लाइय, काढ़ि असि धाइय, बिरुझाई॥
धरि जोगद सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई॥
†बीरंग बिचारै, डक्क हकारै, मंच मारै, उब्भारै।
छं० ॥ ६१॥
अफ्फार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर सूरं॥
बर टोप सलेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हँसि हूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं॥
छं० ॥ ६२॥
बर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं, किल कालं।
‡नचि नारद पूरं, बजि रन तूरं, बरि बरि सूरं, धरि मालं॥

---

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिल सिला ठीक जँचता है।

(१) ए.-समनेंजरि। † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

कार ब्रन्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं॥
छं० ॥ ६३ ॥

चष छिंछत ओनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई।
कवि ओपम तासं, सूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना ।

कवित्त ॥ दस क्रम्मन अरि ठेल। मुरिय पंचाइन सेनं॥
वीर छक्क उत्तरी। मुत्ति भिरि रन रत नैनं॥
सुरस पियौ प्रथिराज। प्रगटि अंषिन जल झलकिय॥
पी अधरा रस पीन। प्रातसौ की मुष जक्किय॥
चहुआन सु वर सोरह परिग। समर सिंघ तेरह चिघट॥
ससिपाल वीर वंसी सुवर। सहस पंच लुथ्थय सुभट॥ छं० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।

दूहा ॥ निग्रह [1]नर बंछत न्नपति। अहि गवन्न सुष वान॥
पंच अनी करि षेत चढ़ि। षेत अरक्क चहुआन॥ छं० ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड। सोई सिंघार सूर बल॥
म्रत्त [3]कुलस तन जान। लभ्भ क्रित्तीति सुभट कल॥
जिहि मरन्न मन सूर। मरन जेही मन उत्तरि॥
पंच पंच पथ गोत्र। फिर न एकठ्ठे नर नर॥

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नवर.।
(२) ए. कृ को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है। पाठ भेद कुछ भी नहीं है।
(३) ए. कृ. को.-कुसक।

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्कि लग्गी नदिय॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुअ व्यापं लग्गंन दिय॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहै दीह॥ छं०॥ ६८॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया॥ पंच चिराकन मख्ख न्वप। सो सोभित जुग्गिंद॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]थह। लिय पारस मंडि चंद॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभित ससिपाल सु बंसिय॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बेंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै॥
कपट द्रोह-करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै॥ छं०॥ ६९॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कढ्ढि॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चकाव्यूह रचि ठढ्ढि॥ छं०॥ ७०॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय॥
मद सरक्क [5]तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह॥

---

(१) मो.-बर वीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) र. कृ. को.-पंग।
(५) ए.-विन।

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुहू लोह कढ्ढी विभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै [1]सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कढ्ढै, रसं रोस बढ्ढै। अँगं अंग गढ्ढै, कथं सूर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७२ ॥
असी अंच उढ्ढै, थटं थट्ट गढ्ढै। इकं सीस रढ्ढै, षगं सूर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। थुती रंभ पट्टै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सिरं अंग बढ्ढै, लोहं पच्छ कढ्ढै। करं किति मढ्ढै, वकं बीन नढ्ढै ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मुषं चंद पढ्ढै, ...। सिँघ सम्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥ छं० ॥ ७६ ॥
संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ ससरसिंघ दिष्यत सुबर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई॥ छं० ॥ ७९ ॥
भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझझाई धाइ, असी बंक झाई॥ छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-जु।

किरच्चं उड़ाई, ससी व्यंव पाई। सुतं [1]राति छाई, कवी कित्ति गाई॥
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्गि रासी, अवी अब्बि नासी। उयं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुद्धे ॥
असर [3]बंध चिचंग। बीर पंचाइन बद्धे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोह्यौ बिरुझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लद्ध नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लब्भि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्स। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतर अद्ध पहि ॥
[5]यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्हे जलथान लहि ॥छं०॥८५॥

---

(१) ए. कृ. को.-रारि। (२) मो.-सद्धे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मात्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति माननी। चंद जामिनि प्रति घट्टी॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]हथ नयन प्रगट्टी॥
हंस कला अवतरी। कुमुद वर फुल्लि समथ्थै॥
एक चिंत्त सोइ वाल। मीत संकर अस रथ्थै॥
तेहि वाल संग में पूहुय लिय। वरन वीर संगति जुवह॥
जाग्रत्त देवि वोलि न कछू। नवह देव नन मान वह॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा॥ *सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ वर वर नारि॥
वे वर गज्जि नरिंद तूं। हँसि हँसि पुच्छि कुंआरि॥ छं० ॥ ८७॥
एन वयन रुपह रवन। इन गुन इन उनमान॥
धीरत्तन पूजंत वर। सुनहु तौ कहूं प्रमान॥ छं० ॥ ८८॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल॥ सुनि सुवर वरनी रूप। तिहि चढ़न वै न्रप भूप॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह॥ छं० ॥ ८९॥
वय काम दिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान॥छं०॥९०॥

---

(१) मो.-गति। (२) मो.-हथ

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धनक वेदी काम । [1]द्रिग काल गौरभ वाम ॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ । देपंत काम वजाइ ॥ छं० ॥ ९१ ॥
बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित चढि साल ॥
चित हरुत्र गरुत्र सुहंत । गुर गरू होत पढ़ंत ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम जिम सु विघा आइ । तुछ भरत तुछ सरसाइ ॥
मति लघू अलघु प्रमान । [2]अंब निबंद समान ॥ छं० ॥ ९३ ॥
बर मत्त पिछली जीअ । तहां रसन [3]हीनति पीय ॥
गति हंस चढ़त सुभाइ । सुत बंटि [4]जसु अभिसाइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥
सैसब सु सुतन सुषाइ । जोवन्न रस सरसाइ ॥
तिसहूंत गजगति जानि । .... ॥ छं० ॥ ९५ ॥
जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
प्राचीय मुष रंग सूर । प्रगव्यौ सु काम करूर ॥ छं० ॥ ९६ ॥
बर बाल माहि सरुप । घट धरक कपट अनूप ॥
वय बाल [5]जोवत काज । किप कपट उत्तर लाज ॥ छं० ॥ ९७ ॥
मधु मधुर [6]अम्रत जानि । बेजियन सीषत बानि ॥
मति मत्ति बरनी षाइ । तहां बाल बेस [7]छिकाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।

कवित्त ॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति । सु वह श्रोतान वढ़ाइय ॥
तव लगि [9]भान नरिंद । बीर दुजराज पठाइय ॥
[10]वर दुजराज पठाय । रतन उर कीनौ अप्पी ॥

---

(१) ए. कृ. को.-द्रग का लगौ सुभ त्रांस । (२) मो.-अंब्र बिन्द समान ।
(३) मो.-हीनित । (४) मो.-अभि जनु माइ ।
(५) ए. कृ. को.-जोवन । (६) ए. कृ. को.-उंतम ।
(७) मो.-लुकाय । (८) मो.-उपति ।
(९) ए. कृ. को.-मान ।
(१०) ए. कृ. को.-" *हय हथ्थिय मनि मृत्त रतन उर किन्हो रष्षी* " ।

तिय पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भी दुज्जन वहिय॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

वर पंचाइन समर। दंड मुक्किय वर मुक्किय॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रक्किय॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लड्डिय॥
अम्रत भाग चिचंग। सेन हाला हल सड्डिय॥
वारुनी वीर अस्सिय सु भ्भर। अरिन पाइ जस रतन लिय॥
मह महन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस वर अप्प लिय॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का वारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा॥ तव लगि संतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ॥
वारू वन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ॥ छं० ॥ १०१॥

पृथ्वीराज के वारू वन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना।

कवित्त॥ वारु विरल वन न्रपति। राइ आषेटक सारिय॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि वेर विचारिय॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं॥
पिता वैर वहु बंध। हुऔ कर नार समानं॥
वर वैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ॥
वर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान वर संगयौ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा॥ बैर काज वर नंद सुत। वर बैरोचन हत्त॥
करि वसीठ माली सुतन। वैर पुव्व मन जित्त॥ छं० ॥ १०३॥

कवित्त ॥ सुनि मंत्रीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भंति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। क्रित्ति एक जुग जुग चलिय ॥छं०॥१०४॥
[1]क्रित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
क्रित्ति काज विक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
क्रित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
क्रित्ति काज बर सिवरि। [2]मध्थ कर कढ्ढि सु अप्पौ ॥
꠰꠰ रष्यंत [3]अचल गल्हां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। करन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाह्न सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव। मूल कढ्ढन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

---

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता बैर बहुवन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

꠰꠰ ए. कृ. को.-प्रतियों में "क्रित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "क्रित्ती काज विक्रम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना ।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक ने । [1]पाइक पाइक कीन ॥
　　ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै । करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
　　वरन राव रावन्न ढिंग । वर चालुक्क सु थान ॥
　　समर सिंघ चहुआन कौं । न्योतन को वलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना ।

कवित्त ॥ एक ग्रह विच वीच । सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
　　पंच घट्टि पंचास । बीर अंबी रज संचै ॥
　　तक्क लोह सह दीन । करै चालुक्क सु चल्लै ॥
　　आषेटक चहुआन । समर रावर वर मिल्लै ॥
　　भोजन्न भंति रस बीर वर । वर प्रवोध ग्रह दिसि चलिय ॥
　　मन तन्न मुष्प मिट्टै सघन । सुवर बीर संगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना ।

दूहा ॥ आज हनंदे पाप वर । ग्रह बड्डे वड़राइ ॥
　　समरसिंघ चहुआन मिलि । दुष्प हनंदे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष ।

　　बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै । भेद चूक तिन जानि ॥
　　घालि पिटारी उरग कौं । मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना ।

　　गाम वाम पैसत न्रपति । बन न्रप बोलत सद्द ॥

---

* इस प्रवन्ध में चालुक शब्द से सारग राय से ही अभिप्राय है ।

(१) को. मो.-धाइक ।　　(२) मो.-सन्नाहित ।

फेरि बीर दष्पिन भयौ। वैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरन वत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु संभ ग्रह ॥
ठाम ठाम लव सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार।। बिपन बर बर बन सुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर षवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक चिगट। समर काज उभ्भौ समर ॥छं०॥११५॥

दूहा ॥ तक्कि बक्कि उट्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मच्ची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कड्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्र कढ्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभ्भि सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बढ्ढी मन हस्सी ॥
कैधूं दुबढ्ढि बंदर सिरह। हलधर हल सिर झारयौ ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि असे।

तेग हथ्थ झकझोर । बीर लिन्नों सु हथ्थ [1]भरि ॥
दुतिय घात आघात । घाइ [2]अग्गा वर बाहै ॥
कमल पंति दंती । समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं । चीकट जल घट बूंद जिम ॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय । पत्र तरोवत अरिन तिम ॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना ।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करन्न सु दाह ॥
[3]हट्ट नंषि उचाइ अरि । ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना ।

मोतीदाम ॥ रन बीर रवद्द कहै कवि चंद । सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढ़ै वर आवध बज्जत तूर । उठे परसद्द महल्लन सूर ॥
छं० ॥ १२० ॥
नचै वर उट्ठि धरं धर सूर । करै हक देषि उससि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मद्धि । रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ ॥
छं० ॥ १२१ ॥
दिषी दिषि [4]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ । उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट । चलंत हैं विद्धि अगम्मनि वट्ट ॥
छं० ॥ १२२ ॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ । चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
वरं कुलटा छँडि छंडि सु केउ । झुझै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ ॥
छं० ॥ १२३ ॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ । चली वर नारि अमग्गन धाइ ॥
सरंतह भूपति भान कुंआर । करै मनु [7]वज्जय वज्र प्रहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि । (२) मो.-लग्गा ।
(३) मो.-हट्ट नंषिड । * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष । (४) मो.-सुकवि,कुक्कवि ।
(५) ए. को. मंत । (६) ए.- अपंजस । (७) मो.-वजूह ।

लरै भर चालुक चंपत घट्ट । सचीरह नारि अगंम सुभट्ट ॥
म्रिगं म्रिग लज्जन दच्छन जाइ । भजै क्रम सूर [1]चियं गय पाइ ॥
छं० ॥ १२५ ॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न । उड़ै वर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न ॥
सु उज्जल छोह चल्यौ रुधि छेदि । मनों जल गंग सु भारति भेदि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

तजै जर जम्म भिदै रवि जाइ । परै धर मुत्ति जु सूरन आइ ॥
॥ छं० ॥ १२७ ॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त ॥ बर वड़ गुज्जर राम । कूह वज्जिग वर धायौ ॥
पीलवान अरियान । [3]पील अरि पूर लगायौ ॥
नारिगोरि सा वात । तीर जल जोर सु वट्टी ॥
मीन रूप रघुवंस । पूर सम्हौ अरि चट्टी ॥
कल मलिनि कलिनि कलिकालन कल । लोह लहर सम्हौ हली ॥
अरि घरा फुट्टि वर [4]धार सों । सुमन लोह उड्डै मिली ॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ । [5]लुथ्थिय पर लुथ्थिय हुट्टिय ॥
न को जियत संचयौ । न को जुझ्झयौ विन षुट्टिय ॥
कोन जम सु जुझ्झवै । वैर मंगै सु पुव्व अब ॥
व्याज तत्त अप्पीय । मूल अप्पयौ कुटंव सब ॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ । नको षेत बिन मुक्कयौ ॥
संभाग बीर चहुआन कौ । सबै सथ्थ झोरी कियौ ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-"लोथि पर लोथ"।

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। वीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त वस्त अरु सस्त। टूक लब्भै न ढुंढ धर ॥
विहत वीच अरु पंड। एक [2]उग्गरि पँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुंढंत अस्ति न सुझ्झि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेद्यौ राह रुपह सु रवि। वरन वीर वैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पांवार पर। पहुर तीन तुच्यौ करन ॥
आच्चिज्ज सूर मंडल सुन्यौ। सहु सथ्थैं [4]वंध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिया ॥ मरन न लद्धौ तुंग तिहि। सव सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन वर जारन ॥
चूक मूकि चालुक्क। स्वामि कथ्यौ वर बारुन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो.-सत। (२) ए.-ठगरि। (३) मो.-रावन।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ। (५) ए. कृ. को.-कला। (६) मो.-हेसतथ्थान वंधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाड़ चालुक छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर वढ़ायौ ॥
षेल षग्ग पुंमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो पीची परसंग। राड़ तुल्लै दल लीनौ ॥
अंकुर्यौ अरिन रिनथंभ सौं। सजि जद्दव वीरन वलिय ॥
रवि राहु सस्सि संमुह गहन। जानि छर्छुदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संघ समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्धै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
त्रुट्टे तेरह [1]तुरँव। सथ्थ वंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हस्त बर वाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि षुमान चल्ल्यौ षलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ सुंदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि क्रूह। चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुरस। (२) ए. पीठ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन व्याह देना।

दूहा ॥ अमर बंध रष्यौ अमर। अगि दीनौ वर माल ॥
जस बेलो चतुरंग कौं। बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसवेली [1]वरिगौ चतुरंगी। चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी। सु धर फेरि चालुक न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि संदेह। सद्द सावद्द कवीयस ॥
पऱ्यौ वीर जद्दव। नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
गूड़राइ सचसलह। जुद्ध लोहं लरि वित्ते ॥
सुऱ्यौ सेन पुग्रहि। पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अप्प वीतक वित्यौ। बंधि चंदेल सज्जै सुहर ॥
आवद्ध वीर मत्तौ कहर। गही गल्ह बंधी सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

षुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना।

गाथा ॥ जित्ताराय षुमानं। निसानें सद्दयं धायं ॥
छुट्टा रन रनथंभं। षा षग्गे षीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ षीचीराइ हमीर अवन्निय। दोइ चहुआन घरम्म भवन्निय ॥
चालुकां सों चूक सवन्निय। दुत्तिय दीपंता निरवन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग में। राज विहंग गति कीनी ॥
मध्यदेश मालव नरिंद। हंसध्वज भीनौ ॥
नीलध्वज कर धरिग। विप्र वंदन संपन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को. षरिगो। (२) ए. कृ. को.-सवीयस। (३) कृ. अप्पांह।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ ॥
सत पच लगन लभ्भह भरिय। घरिय अठ्ठ तेरह तिनह ॥
रनथंभ सेज संचरि न्नपति। करिय अवधि ताकरि रलह ॥
छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा ॥ आगम बीर बसंत कौ। रन जित्ते जुधवान ॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि व्याहे चहुआन ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा ॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सब्बं ॥
बय रुष सुष अंकुरियं। सा मिलयं वंकुरी मुच्छं ॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा ॥ मुच्छ रवन्निय राजसुष। बर बंधिग सुरतान ॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक ॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरुनीं बरु जानय ॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भरु कित्ति लही चहुआनय ॥
छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुट्ठिय ॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संभ्रय गानकला कल सथ्थिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन ॥
उद्दिम मेन उदार सुधारिय। [1]न्नज्जय रूप सरूप सुरारिय ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ श्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन त्रिविध तन लग्ग ॥
बापी कूप [2]तड़ाक द्रुष। विधि ब्रंनन कवि लग्ग ॥ छं० ॥ १४८ ॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोषे से झांकना।

(१.) ए. कृ. को.-नूयज्जय, नूयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती । सुनि श्रोतान सुरुष्य ॥
वर दिष्टा नन मानियै । वेला लग्गि गवष्य ॥ छं० ॥ १४९ ॥

सुनि आयौ चहुआन अप । गुरुजन बंध्यौ जानि ॥
तत्र मति सुंदरि चिंतवै । भेदक गौंप वषान ॥ छं० ॥ १५० ॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ पंथ वाल पिय झंकि । सुभ्रित विंटियं सु राजै ॥
मनों चंद उड़गन विचाल । सेरह चढ़ि भाजै ॥
सुनिय श्रवन दै सैन । अलिन अलिमैन सरोजं ॥
रति मच्छर मति काम । जानि अच्छरि सुर सोजं ॥
धावंत वेस अंकुरित वपु । वसि सैसव तिन वेस धुरि ॥
श्रोतान सुष्य दिष्टान धनि । यह कहि चलि सैसव वहुरि ॥
छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ प्रथम वत्त श्रोतान सुनि । सुष पै दिषहि सलोइ ॥
सच्च वात झूठी चवौ । तव जिय सुष्य न होइ ॥ छं० ॥ १५२ ॥

सुनि श्रोतान सु सन्निय । दिषि दिष्टांत सचीय ॥
वीज चंद पूरन्न जिम । वधै कला मनि जीय ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी ।

वर वेहरि देषी न्टपति । गौ न्त्रिप न्त्रिपवर यान ॥
वालु सुअंवर काज कौं । वर वज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १५४ ॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ।

आभूषन भूपन न्त्रपति । वैसँधि कहि न कविंद ॥
कवि ञनन इह लग्गि त्रिय । ज्यों वृद्धत लघु चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन ।

कवित्त ॥ वर भूषन तजि वाल । सुवर मज्जन आरंभिय ॥
सोइ छवि वर दिष्षनह । कोटि [1]ओपम पारंभिय ॥

(१) मो.-उपमा ।

बर सैसव बर चंपि। कंपि चिंहु कोद झपायौ ॥
सो ओपम कविचंद। जौन्ह बूड़त नल धायौ ॥
बालपन बीर बर मित्र पन। रवि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
बय बाल [1]उबीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन ॥
बाल घरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम ॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
लटिं भिंजि बार रही लपटाइ। मनौ द्रिढ़ सुक्र लग्यौ ससि आइ ॥
छं० ॥ १५८ ॥

वि ओपम दै बरनै कबिराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
छं० ॥ १५९ ॥

जु राहय चास पियै विष सोम। द्रवै सुष चंदह मत्तह भोम ॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि ॥
छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच ॥ कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं ॥
सुगंध केस पासयौ। बिहथ्थ हथ्थ भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उपम्म जीस साधयौ। बिरंचि लेष बाधयौ ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी सराह दो लरे ॥
मनीस वाल साच ज्यौं । कि कान्ह कालि नाच ज्यौं ॥छं०॥१६३॥
षरी नवैन कथ्थयौ । जु कन्ह कालि मथ्थयौ ॥
तिलक्क भाल्ल भासयौ । भलक्क काल साचयौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिथ्थराज आसयौ ॥
च्यसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [2]बाढ़यौ । सुराह कंपि [3]ठाठयौ ॥
सु पट्टि वाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नेन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [4]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम विंव उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
हलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥
अम्रत्त तार विच्छुरी । दु चंद अग्ग निक्करी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
विभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न विंव जानयं । सु चंदवी प्रमानयं ॥
त्रिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [5]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीरु राह छंडि कैं । असंन वैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि ईस दीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं चिअंग जित्तयौ । जु सुक्क बग्ग पंतयौ ॥
कि काम वीर भंजयौ । दहत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम ईस [6]कुचयौ । अनंग नीति रच्चयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु । (२) मो.-बाढ़को । (३) मो..ठाढ़को ।
(४) ए. कृ. को.-संक ।

(५) मो.-लुम्भई । (६) ए.-चक्कयौ ।

उरज्ज पच्च काम कौ। लिषै जोवंत वाम कौ ॥
कटी अलप्पता ग्रही। मनों कि रिद्धि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
कि सोभ दै न्नपं रही। तुला कि दंडिका कही ॥
रुलंत छुद्र घंटिका। सदंत सद्द दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जु जेहरी जराइ की। घुरंत नद्द पाइ की ॥
नितंब अद्ध तुंबियं। प्रवाल रंग [1]घुम्बियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
कि काम रथ्थ चक्कए। चलंत एड़ि वक्कए ॥
उलट्टि रंभ जंघनं। करी सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
उपंम रंग राजही। जलज्ज भांति साजही ॥
बसन्न सेत बन्नयं। उपम्म कव्वि भन्नयं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
मनों कि दीय अभयं। सुभंत मध्य रंभयं ॥
दसन्न जोति दामिनी। मनों अनंग भामिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
सुगत्ति हंस लीनयं। सिंगार सोभ कीनयं ॥
झंकार झंजनं झनं। मनों कि सोर भद्दनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
सु कासमीर रंगयं। जु एड़ि जावकं लयं ॥
मनों कि हंस सावकं। चलै विद्रुम्म भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
[2]जरित्त मुद्रका नगं। सु जोति अंगुली लगं ॥
जुवास रास चासयं। मनों हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
[3]दिपंति नष्ष बीसयं। रवी ससी सुरीसयं ॥
नव ग्रहीय पुच्छिया। उपम्म कव्वि बंच्छिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
जु चंद राह षेदि कै। कि हस्त चंद भेदि कै ॥
उभै तिषट्ट भूषनं। सजंत मेटि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चलंत वाम कोड़यं। तजंत हंस होड़यं ॥
उमग्गि प्रिथ्थि देषनं। अलीन मभ्भ पेषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
सु सैसवं लगंत रष्षि। मुक्कियं दरस्स दिष्षि ॥
॥ छं० ॥ १८७ ॥

(१) मो.- षुम्भियं,को.-पुब्बियं। (२) मो.-जरिंत। (३) मो.-दियत्त।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कौकिल जोइ। अवजंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसन्न। वनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होड़ सुजानि ॥
नौ ग्रहिअ पुंचिय हथ्थ। उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
वर एड़ि मंडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़। गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
वर चरन लगि चिंपयान। पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ। वे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
वव लग्गी सैसव रष्षि। मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ वर कुंकुम सव सथ्थ रंगि। वहु सथ [3]न्टप वर सथ्थ ॥
सो ओपम वर राज लहि। कवि वरनन लहि कथ्थ ॥
कवि वरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थें ॥
मन ससितर काम की। प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रत रवि ससि रूप। एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ। पंच प्रथिराज देव वर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मंडप में प्रवेश।

दूहा ॥ वंदन वर आयौ न्टपति। तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-यान। (२) मो.-कहन। (३) मो.-उप।
(४) मो.-कै सुभूत ससि रूप।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुद्ध तट वर अन रुक्की ॥
रद्दै न्रपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
षंचन पप चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली। नंषत बर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस [3]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु बर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। महुर महुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिठ्ठ वर कमल में। कै मकरंद झुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ बर अंचल सोमेस चित। बंधि बीर बर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम कह्यौ। सो बर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा। (३) मो.-मानी।
(२) ए. कृ. को.-पिय।

कवित्त ॥ वैनि नाग लुट्टयौ। वदन ससि राका लुथ्यौ ॥
नैन पदम पंषुरिय। कुंभ कुच नारिंग छुथ्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज। हंस गति [1]सारंग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत। कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक वरन। दसन बीज दुज नास वर ॥
सेना समग्र एकत करिय। काम राज [2]जीतन सुधर ॥छं०॥२०१॥

दूहा ॥ कवि लघु लघु वत्ती कही। उकति चंद नन छेव ॥
मनों जनक वंदन कवन। जानु कि वंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत। चूक सब सेन सु दिष्षिय ॥
पट दस वर सामंत। मदन केवल मन लिष्षिय ॥
पंत निसुरत्ति समूह। जूह दैयान सु धाइय ॥
मार मार [3]उचरंत। मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि। तिन अरि तन तिन वर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध। सुवर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे। काफरं विद्धरे, लोह मची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥

पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं। कढ्ढियं पंजरं, नंष्पि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

सूर बथ्थं परं, मोह मोहं परं। कूक बज्जी घरं, लोह वडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सारद।   (२) मो.-जीपन।

* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २२० में खुलती है।

(३) ए. कृ. को.-उचंत, उच्चंत।

अग्ग उड्डी झरं, वीर बाजं ढरं। श्रोन रतं [1]धरं, अंत आलुझ्झरं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

दूर जा उध्धरं, रारि उग्गं जरं। लज्ज पन्न परं, लोह लोहं करं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि अद्धी वरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा झरं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मझ्झ रोसं ररं। सान्नि सामं नरं, घाइ घुम्में घरं ॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध सझ्झैं रह्यौ। रहे सु जैत कु आर ॥
है मुक्कि सामंत गौ। उप्पर मेर पहार ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी अहसारी ॥
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी ॥
अर्द्ध चंद्र महमूंदि। अर्द्ध षुरसान षान करि ॥
मध्य भाग रुस्तम्म। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि ॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर ॥
चिंगंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [4]बंधव अमर ॥छं०॥२१२ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

चोटक ॥ सारंग चढ्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं ॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की ॥
छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुघ्घर पष्प रनं। ठननंकहि आइ प्रसद्द घनं ॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुघ्घुर रेनिय अस्स घटै ॥
छं० ॥ २१४ ॥

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चाक्किय"।

तमके तम तेज पहार उठे। वहुरे विधु पावस अभ्भ बुठे ॥
कविचंद सु अंसुय [1]साव धरे। चय [2]नेत्त जु गंग समीर षरे ॥
छं० ॥ २१५ ॥

दोउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी ॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उट्ठि ढाल चहुआन वर। वढ़ि अवाज परवान ॥
सुनि वरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे वर थान ॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होनें पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ धुअ मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि ॥
घरी अद्ध वजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि ॥
जुद्ध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्टे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत है वै वर लुट्टे ॥
प्रथिराज वीर रावर समर। मिलि [3]नषित्र पति ग्रहन गिरि ॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन वार अट्ठंग गिरि ॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवाल हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी ॥
[4]एक लष्ष प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी ॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी ॥
समर सिंघ रावर। नरिंद झोरी करि डारी ॥
वज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै लुट्टि दल ॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छत्र रषत्त तल ॥ छं० ॥ २१९ ॥

---

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-“ एक लष्ष पम्मर प्रमांन ” ए. कृ. को.-एक लष्ष पष्षर प्रमांन।
(५) मो.-“ बिन सुरतान सु लुट्टि छल ”।

पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुग्रहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सव्व सामंतन मन्ने॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने॥
नैन चैल नन बैन। हीन सुषन्न काढ़ि दोउ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोउ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर॥
चिंचंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस॥ छं०॥ २२१॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त॥ तब चिचंग [3]नरेस। पिक्खवि नंष्यौ बर पट्टौ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर॥
हम आहुट्ट मझ्झामि। स्वामि कहिजे सु [4]उंच बर॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ.-पाय।

(२) छंन्द २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चंद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्द।

(६) कृ.-चीतौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना।

दूहा ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति। गौ ढिल्लिय न्नप छेह ॥
मास वीय वित्ते न्नपति। मतौ मंडि न्नप रह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना।

विमल विलोकन कोक रस। सोक हरन सुष सत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलप्रभ। विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं। सुपं मूल विष्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

सयं मोह मंडं सु वंदीन दानं। हयं हेम हड्डं पताका सु थानं ॥
[1]सु अंपं च सोभा स सोभा स मंचं। [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं। सुराया विहंगं सु पुची प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रथंमं अलीनं। मनों मत्त मातंग [3]वंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

सचं अंकुसं हेट हेटं चलावै। दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं। फिरे जानि वाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाइं। कवी केलि कंठे थकी सच स्याइं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं। काला केलि बढ्ढी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सद्दान सेजं। सदा स्वेद षेदं हुऔ प्रात हेजं॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३० ॥

---

(१) क. को.-सुपं। (२) मो.-" छय द्रुत्तिय छंन्द छम्माय तंत्रं।
(३) मो.-बन्धे।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय। सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय। [2]हइय हय हयइ यथा [3]हह ॥
सहिय सेज कह कहिय। चंपि चिंचनिय सन्न थह ॥
कामंध अंध मुद्दह वृषभ। भ्रमन भ्रमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह। अगह मुगद्धन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय हत्तन मुगधनिय। रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]म्रग रथिय। निसि न्रिम्मल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कामंध ॥ न्रिम्मली नेह नासा। दिष्ट एन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संवची ॥
†पुस्तका पढ़ि विस्तरी। कथा गाथा प्रेम बिस्तरी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कंडक निस्तरी। हास विलास सुस्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद। (२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजमृगेंद्रं चन्द्रकातंप्रमाथी।
विकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं।
कुमुद वन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु मानिनीमानमर्द्दी।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

मुरिल्ल ॥ वंछय चंद चकोरत राजन। [1]हंसनि हंस उदै भयौ साजन ॥
विहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय। कनक जेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा। विसनी पत्त वलाकरे हथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्नं। परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना।

झिल्ली झिंगुर खरी। गायन पुचीय ललित लुभ्भरियं ॥
पहुकिय षंष [3]सु हासं। झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुक्करियं। मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही। पुक्कारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना।

पंपट करि करतारं। हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बढ्ढय अंकुरियं। कुक्कडयं [4]कंठ कलायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर। [5]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं। गावै एकंतं चित्त सलाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति। (२) ए.-आहुट्टिय। (३) ए. कृ. को.-सहासं।
(४) मो.-कंठक। (५) ए. कृ. को.-"अचलिय नेह से सहिए"।
(६) ए. कृ. को.-रसरह।

छे मौनं करि कोकिलयं । जलधर सम रह कंठ [1]उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे । विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरौ [2]संपगे । होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तीयं । अवलर रत्त [3]काम लब्भाइं ॥ छं० ॥ २४५ ॥
गाहा नंक्किय तत्ती । सदालं नूपुरं उरवा ॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं । भूतं जुथ्यांइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६ ॥
जोई छविना वेनं । रचया सि महिला न रूप मह कमले ॥
तां नंचिय सु वियोगे । निमहं सुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे ।

पीय आरंभत चियये । चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पतौ । मा पिमं [6]विहमं धामं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
अजा [7]सन्न जो होजा । कंठायं पयो हरं फलयं ॥
दीहंते सय लष्यं । हसनं रस नाय स बकियं होइं ॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ । उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई । दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥
कवित्त ॥ रयनि पंच संकुलित । पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि पग्ग । मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[8]मिलत चतुर इक रीय । अतुर ग्रह ग्रहं [9]दहुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त । नष अष [10]बष्य बल ॥
आरति सोइ दइता विछुरि । पार [11]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात पतिहत प्रथम पहु । नवति चित्त आचंभ लहि ॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ।

(१) ए. कृ. को.-उचंती । (२) ए.-संष । (३) ए. कृ. को.-कान ।
(४) ए. कृ. को.-"निद अंकुरं ए वित्त" । (५) ए. कृ. को.-वितायं ।
(६) मो.-बंदयं । (७) ए. कृ. को.-सानंजं ।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है ।
(८) मो.-माचित । (९) ए. कृ. को.-दुदुर ।
(१०) मो.-चष्य । (११) मो.-समुद्रिन ।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय। पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव द्रुग्ग देवास। [2]वास मुद्दत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर ध्रम्म। क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ। प्रीति पीची चौहानह ॥
चित्रंग राइ रावर रमिय। [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अब्भरिय। अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि। चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह वरष दस। दिवस त्रिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

(१) ए.-संसानिय।
(२) मो.-वास मुद्दंत नवल्लिय।
(३) ए. कृ. को.-देवराज।
(४) मो.-कवि छंद।

अथ पहाड़राय सम्यौ लिष्यते।

(सैंतीसवां समय।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा।

दूहा॥ दुज सम दुजी सु उच्चरिय। ससि निसि उज्जल देस॥
किम तूंअर पाहार पहु। गहिय सु असुर नरेस॥ छं०॥ १॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है।

कवित्त॥ संवत सर च्यालीस। मास मधु पष्प अम्मघुर॥
चनिय दीह अहरुन्न। उदित रवि व्यंब वरन तर॥
अलिय आल आलोल। गरुअ [1]गज्ज [2]विसम्म गन॥
रस रसाल मंजरि। तमाल पल्लव कमल्ल मन॥
साहाब दीन सुरतान भर। आनि द्वार ठट्ठौ सु वर॥
अष्पै ततार षुरसान षां। कहा पवरि चहुआन घर॥ छं०॥ २॥

तत्तार खां का उत्तर देना।

गाथा॥ उच्चरि षान ततारं। अरि वरजोर अतर अत्तारं॥
सामंत सूर सभारं। मत्त अमित समित जमक्कारं॥ छं०॥ ३॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना।

भुजंगी॥ कहै साह साहाब तत्तारषानं। रचौ मंडली मंडि दीवान थानं॥

---

(१) मो.-गज्ज। (२) र. क. को.-विसंग मन।

अरी [1]षान दिष्यौ वरं आसमानं। [2]करौ कूच सेना प्रकासंत भानं ॥
छं० ॥ ४ ॥

दलं लष्य तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं कित्ति स्रूरं ॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत वैताल मत्ते मदूरं ॥
छं० ॥ ५ ॥

हलाहूम्म झंकार हुंकार भारौ। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारौ ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोर नंचै न छाया ॥
छं० ॥ ६ ॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं ॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं ॥
छं० ॥ ७ ॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे ॥
छं० ॥ ८ ॥

असं वेस कंपी ढुरी चौर सज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं ॥
छं० ॥ ९ ॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं ॥
बनै अच्छरी कच्छि विस्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं ॥
छं० ॥ १० ॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रुपं ॥
अनी कोर आकार आकृत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पथो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११ ॥

---

(१) ए क. को.-पान। (२) मों.-करौ कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. क. को.-विमानं विमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

महो मंडि माया रहै लोपि मालं। पिले [1]पग्ग अग्गं बलं बोलि ताल्लं॥
नवं नद्द नीसान [2]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [3]कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२ ॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ [4]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब ॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आव ॥ छं० ॥ १३ ॥
अरुन बरुन उद्दित अरुन। वढ़ि प्राची रुचि [5]रूप ॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप ॥ छं० ॥ १४ ॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर वर अरुन। वंदि साहाव साहि चढ़ि ॥
दिसि प्राची दष्षिनं [6]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि ॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल ॥
गमन सेन उड़ि रेन। गैंन [7]रवि पत्त धुंध इल ॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [8]परिग ॥
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग ॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात ॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात ॥ छं० ॥ १६ ॥

अरिल्ल ॥ मिले मेच्छ मंडल भर भीरं। अतुलित पान घान संधीरं ॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि [9]बढ़ौ थिर कर कंठीरं ॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-भेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रचि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थटौ थट्ठौ।

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेंन कंपि दिसान ॥
पहु ओर कीरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]वाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनसूर सेर हुजाव। जिन दान षग जम आव ॥
[2]महमंद कस्सन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ज्यंद जस्सन धीर। तेजम्म षान गँभीर ॥
वेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतस मीर। सारुफ सेर गँभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥
॥ छं ॥ २४ ॥

सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनौं सेन हिँदवान। ऐन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिन्न अरि भीर। हक्कि हक्कौं षग [4]षंधौं ॥

(१) मो.-वाजीद। (२) ए.-महमूंद।
(३) ए. संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ. को.-बन्धौं।

गज वाज साजि ऊथल पथल्ल । पल अंदुन भंजौं [1]भरन ॥
भुअ भाप भिस्त मंकोद रन । कै [2]घोरह जीवन धरन ॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन ।

पद्धरी ॥ पुरसान पान कहि सुनि ततार । संची सु वत्त जंपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज हिंदू अकार । वर मंच सेन रच्यौ [3]विपार ॥
छं० ॥ २७ ॥
वुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि । तम छतें जुद्ध [4]किम साह संकि ॥
संग्रह्यौ सेनपति हिंदुराज । वंधों अपारि पल षग्ग वाज ॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब । तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब ॥
॥ छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज । एन सीस हयवीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ । कालू से रनमीर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पद्धरी ॥ पुनि अष्पि साहि निसुरत्ति वैन । सुरतान आन भरकान [5]नैन ॥
कुहि वाज तेन चालंत पब्ब । भीषंग कंपि है ग्रब्ब सब्ब ॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न वार । [6]अल्लह सुआल ऐसी विचारि ॥
विन साह तेज बढ़्ढैं सु ग्रब्ब । इर्ष्यै न ताहि अल्लह अदब्ब ॥छं०॥३२॥
मनो न संक चहुआन सूर । वंधव सुमंत्र भर मंच पूर ॥
वेलू विलाइ नदि वंधि वारि । विन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥
छं० ॥ ३३ ॥
* हिंदू सहस्स दस सामसंद । दल गैन लेस तन तेक कंद ॥
बुल्लाइ वैनपति समर मंड । वंचै विचार सु विहान चंड ॥
छं० ३४ ॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना ।

(१) ए. कृ. को.-सरम । (२) ए. कृ. को.-घोराहि । (३) ए. कृ. को.-त्रिचार ।
(४) मो.-क्यों । (५) मो.-दैन । (६) ए. कृ.-अलहस्सुआल ।
* ए. कृ. को.- "हिन्दु सु हद सोमेस नंद । लग्गे न लेस तन तेक कंद" ।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं। मंडे पत्रीय बीर पत्रायं ॥
अप्पित पान प्रमानं। कथ्थी गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय। दिय सु पत्र तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ अम्मान सों। सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के बीसा रुढं। वर साहाव ढिल्लीय ग्रासं ॥
बरति संच मष किन्नं। गज्जीय मद्द भद्द नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव। करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन। बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [3]पष्प पूरन क्रमिग। पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर अम्मान कर। वर [4]म्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धर्म्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पत्री अम्मानं। पानं गहि पाइ नाइ वर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं। सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर। हायथ [5]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर। आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धर्म्मायन का दरवार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पत्री अम्मन बाचि कैं देहु। बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी। पत्री सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) ए. कृ. बुल्लवि। (२) मो.-साह। (३) मो.-पथ्थ।
(४) ए. कृ. को.-मंगै। (५) ए. को. हीय।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम घरतें सौगंध कीनी। नाते भ्रम्म दुह्व हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। तातें वैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम वजिहैं [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिव का सांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में वंध्या अहंकार। मरदां भ्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि भारथ्या वेती। मरद मरै तव निपजै षेती ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदां षेती पग मरन। [3]अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा फच्चा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंवरा। अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायिन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्री इह कहि सु कर। करि सलाम तिय वार ॥
साहिव तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुनि मंत्री न्टप अप्पि सम। वंचि पत्त तिन वार ॥
कंच कूंच पंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सम सामंतन राज ॥
वात परठ्ठिय सव भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरथ आयौ सु अप्प [5]पर ॥
साज वाज मय मत्त। षग्ग वर भर उब्भारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गो। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-वल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंव रन॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु चर॥
सिंधु साहँ गज गाह। पग्ग षंडौ पल षित्तह॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ असर॥
ज्यों मान व्योम आरुढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्य दल बल गज बाजन॥
चामर छत्र रषत्त निसानं। मनु घनघोर दिसान दिसानं॥
छं०॥५३॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

त्रोटक॥ चढ़ि राज महा भर सेंन भरं। उडि षेह षुरं रुकि सूर करं॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [6]कौतिग भूत बेताल वरं॥
छं०॥५४॥

सुष छंद सु चंद बरं पठियं। [4]सुष जुग्गिनि अंग वियौ गठियं॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं॥
छं०॥५५॥

तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्षिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५६॥

---

(१) ए. कृ. को.-लागस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कौतिक।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चढ्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [1]दुसे। मेच्छ पीर फर सेन ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसठ्ठ गैन गोसायं ॥
हर हरषे हारायं। जुद्ध सज्जाइ दो दसा दीनं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [2]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ वीरां रस भीन ॥ छं० ॥ ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर पान सव। पति पुच्छी इह वत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल ॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। वाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं ॥
चढ्यौ साहि संमर करि रूरं। अरुन बरुन मिलि तथ्य [3]सनूरं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा ॥ ढलकि ढाल बहुरंग बर। [4]गुरत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज ॥ छं० ॥ ६३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरतम चढ़ि गजराज"।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन ।

भुजंगी ॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्केति [1]हूरं । धमक्के धरा, नाग नीसान[2]पूरं ॥
किलक्के सुभैरुं, वजे वाज तूरं । झलक्कैं सुनेजा धरा [3]धूम धूरं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरक्के वितालं, वजै तार तालं । करै कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू । वकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिंदू ॥
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेंन सेनं, टगी लग्गि [4]नैंनं । वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं । रची अट्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

मुषं अग्ग मंनें, षुरासान अन्नी । भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठन्नी ॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे । दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं । गुरं गौर तारं, फरी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जगं जोरं, हुओ वीर सोरं । घनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ भर सहाव सज्जिय अनी । जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुल्लित वीर सुष । काइर कंपत अंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह वद्ध होने का वर्णन ।

भुजंगी ॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं । बढ़ी वेद साषी चढ़ी जाग रूरं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै । करं क्रत षग्गं सु पट्टे चमक्के ॥
छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए.-निसानं । (२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं ।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं" । (४) मो.-गैनं ।

घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंडि राजं । गजं बाजि रोहं हथन्नार साजं॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्हं किवारं । सतं तथ्य सामंत सेनं सवारं॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू [4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंझौ पगं [6]पंडि जीसं । फिरैं वेक ढालं [7]ढुरैं नागरीसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पंच पंचास संगी विराजं॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं । इलं लेप नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान वज्जं । सवद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्धं सु लज्जं॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी। कथी व्यास भारथ्थ सा आज वन्नी॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड वंध्यौ वधे आप अग्गे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय ग्गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हक्कि तेज असि बेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो.-फौजं । (२) ए. कृ. को.-मधं । (३) ए. कृ. को.-दिसा ।
(४) मो.-अईस । (५) मो.-"रसं शङ्कर मंडि षग षांडे जीसं" ।
(६) ए. कृ. को.-षंड । (७) ए. कृ. को.-ढले, ढलैं ।
(८) ए. कृ. को.-मयं । (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं ।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि ।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड पर हर। मत्त वहुत सुरत्त भरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल सूरिज्ज धीरन ॥
रुंड चढ्ढिय रचि थर हरि। रत्त जुग्गिनि पच पिय भरि ॥छं०॥८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
सिद्ध सूरन बीर जुरि जुरि। .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय। विचलि थल दिग परै ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय ॥ छं० ॥ ८२ ॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। श्रोन तुच्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि झुझ्झत संध्या सपत। सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह सूझत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। वहसि बढ़ी [1]सु तुरंग ॥
वहसि बढ़ि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं। वक्र कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कवित्त ॥ उदय भान पायान । कोर दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [1]नर आररिय । सद्द पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हयनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अग्रान ॥
हिंदुअ मीर सुड्डक हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेंछं अनी एक मेकं । [2]वजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच[3]सत्ती चवै [4] सिंध नद्दं । अवै श्रोन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं । सतं [5] सेत नीलं जलंजात संगं ॥
उठं पच[6]डंडूर सर सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
वितालं वितालं रजें ताल मेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ वेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [7]तिभ्भ अग्गं बढ़े षग्ग षग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) मो.-"वजे षग्ग चोरं जेतो झत्ततेकं" ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी । (४) मो.-सिद्ध ।
(५) मो.-सेल । (६) ए.-डेंडूर । (७) ए. कृ. को.-तिल्ल ।

जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संग [1]सूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ बान भान । परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड[2]कैरू परे मक्खि जुद्धं । सही सच, काथ्यी पगं बढ्ढि उद्धं ।
कवीचंद कथ्थी कुरष्येत हेतं । इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कबित्त ॥ नेत बंधि हिंदू । नरिंदं सामंत मत्तभर ॥
मीर भार असरार । सवें ढाहे सु सद्धि सर ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कथ्थ सुभ्भै जिम कथ्थिय ॥
सु कविचंद बरदाइ । एम कथ्थिय रन बत्तिय ॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट । तेक तानि नंचिय करस ॥
चहुआन राइ सुरतान दल । न्रत्य बीर मंड्यौ सरस ॥ छं० ९४ ॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर । नच्चिय नंच बिन पैर ॥
चाहुआन सुरतान रिन । रचे न्रत्य बर बैर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्रत्य बर बैर [3]हिंदू रु मीरं । म्रदुमंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं । करें न्रत्य भूतं रचें और कोरं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं । भ्रमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि व्योमं । छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ें रत्त गुल्लाल फूले सु [4]फागं । पलं पग्ग कूचं समं माल लागं॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगें पग्ग पत्तं सु पेरंत मानं ॥छं०॥९८॥

(१) मो.-सूनं । (२) ए. कृ. को.-केरं ।
(३) मो.-हिन्दू समीरं । (४) ए. कृ. को.-कागं ।

कटै अद्ध सीसं वहै रत्तजालं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिझ्झि भानं ॥
सुरं लट्ठि नद्दं चवै सुप्प गानं। फिरैं जुद्ध जोधं वहै मोह वानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

वढ़े मांस प्रासाद भूतं असूरं। रतं पानि डारं तकै सूर नूरं ॥
लरै रत्त रूपं कच' कुंच वासं। विधिं छित्ति राजी रसं रंग रासं ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं विना सीस केलं। मनों अग्ग फागं जगे न्त्रत्य षेलं ॥
पगं घंटि नाना कटे रुंड सेषं। इभं रूढ़ सट्ठी लिनें नारि देषं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

वकै मत्त हालाहलं पग्ग पंडे। जिसे राम रन मझ्झ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका वाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव वड्डिय नाटिका। पग्ग कड्डी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावँड रा जैतसी। राइ पज्जून [1]कनक्कह ॥
मीर षान भर पंच। पग्ग वड्डए तननंकह ॥
वपु वेद चन्द वानी विमल। विढुरि पग्ग पल्ल षेत वढ़ि ॥
कोंवल सु कड्डि [2]सुरतान दल। लिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कढ्यौ सुरतान दल। दधि केवल मन वड्डि ॥
मीर षान मारूफ दल। बीर विमानन चड्डि ॥
वीर विमानन चड्डि। दिष्ट वड्डी वारह परि ॥
भर चंदेल विरंम। षेत झोरी सुमोंह भर ॥
गय नंगचंद अम्रत झरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
विम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमक्कह। (२) मो.-षुरसान, षुरसांन।

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मथ्यो सुरतानय सेन पयार । लई जस कीरति चंद सुचार ॥
परे रन मज्झ चंदेल सुचाइ । परे बहु घान सुघाइ अघाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पत्यौ धर बाहर [1]राइति साल । धरद्धर षग्गन तुट्टिय ताल ॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल । धकद्धक काइर छत्ति विसाल ॥
छं० ॥ १०६ ॥

झुकि झझुकि तुंडन अड्ड कमड्ड । मनों हरि चक्कन केतन बड्ड ॥
पत्यौ घन [2]घाव सु वीरमदेव । हयग्गय विड्डिय छच अनेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बिनों सिर नंचत मीर कमंध । हये हय नाग नरब्भर संध ॥
लयौ धर सीस सुत्यौ असि साइ । हनैं लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

[3]हए लगि पंचल षिस्सन घाइ । ....
[4]पत्यौ पीरोज सु रावन नंद । करे [5]नय कोतिग सूरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानं । लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरद सुमंच [6]विभीर । लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात । दिय छवि छंछ बढ़ी हबिपात ॥
[7]रजे रति आगम राव वसंत । नगम्मनि जंग परे बर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-राय विसाल ।
(२) मो.-घाय ।
(३) ए. कृ. को.-हनैं, हने ।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज"
(५) ए. कृ. को.-जय ।
(६) ए. कृ. को.-विमीर ।
(७) मो.-रतें ।

गही तरवार किपानि सु स्वारि । नर्वातय बाहस अंत उतारि ॥
परयौ तन बाज सु हाजसपान । रचे गज इंद्र सु 'ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कन्यौ मन सूर तिलक्तिल पग्ग । उड़े रिन 'पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गैवर रूप । छयौ मम सीस धरद्धर भूप ॥छं०॥११३॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ । गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥
.... । .... छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई ।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर । हय गय घाइ अघाइ ॥
'मुंड रुंड मुंडन भरत । रत्त भाकि भुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना ।

भिरि तूंअर लिय वग्ग भरि । हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन घाइ संसुप 'समर । लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का वल और पराक्रम वर्णन ।

घाइ घाइ तन छाइ छिति । रत्त छिंछ उछरंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि । लग्गि 'जसन गज अंत ॥छं०॥११७॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त । धरत कर कुंत जंत अरि ॥
गजन वाज धर ढारि । धरनि वर रत्त जुथ्थ परि ॥
भग्गि मीर काइर कनंक । हिय पत्त 'मुच्छि 'द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान । दिष्षि भर सुभर पानि कढ़ ॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय । भरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल । जै जै जै सुर उच्चरिय ॥छं०॥११८॥

---

(१) मो.-ब्रह्म सुधान । (२) मो.- पातरि ।
(३) ए. कृ. को.-मुंड । (४) ए.-ससन, कृ. को..सरन । (५) मो.-जमुन ।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि । (७) मो.-द्रग ।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर। समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि। ससि जिम सद्धि पिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग। झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि। धक्क बज्जिय भर इक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि। झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल। मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि। बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी। रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदोत आरनि। सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर। घाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥१२१॥
श्रोन द्रोन प्रवाह थरहर। अंत अंतन अंत झर हर ॥
[1]तार तान बिताल करि करि। तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय। अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय। दिष्षि देव बिमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय। [2]बिकल मुष ह्वै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय। [4]बिचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) मो.-तार बितान बिताल कर कर। (२) ए. कृ. को.-बिमल।
(३) ए. कृ.को.-निकरि। (४) ए.-बिमल।

वीर वहुरि विशेष वानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन सूर दिसान थानय। सोक कोक [1]अलोक आनय॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर सुप सस्त्र लग्गिय। दमकि दिसि दिसि पग्ग नग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दन्नन दोन कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नपत पित्त सुहत्त फिरि फिरि। मप्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम वहत धार स। भँवर पंपिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

भौंका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन वीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवँर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ वाज सनमुप आइ॥छं०॥१२९॥

डारिय तेग सिर करि पीज। *गिर पर जनु कि करकिय वीज॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैवर गिरत निक्करि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राह पहार। गैंवर दिष्पि है कँध डारि॥
भावरीं भग्गि जव्व मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुस्लमान सेना का घबरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सव। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राह ससि वक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जाति।

* मो.-गिर पर जानु करंकिय वीन-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय वीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठो में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरिस।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु। करत उच्चार सार सुष ॥
अछि अच्छरि वर इच्छ। विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि वर [1]तुंड चंड सँग ॥
श्रोन छोनि छय छंछ। गुंज गन देन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ धाइ घट सघन परि। हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी। वार भ्रगु वर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ठ प्रम्मान। वट्टे षट रित्त मद्द झर ॥
कोटिक द्रव्य न्नप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति वेली अमर। सुभत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥

(१) ए. कृ. को.-तंड।
(२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिख्यते ।

(अड़तीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै । है षुर पग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्नप । कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै । तहां बोले विप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान विचारिय राज । रची विधि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पवित्त । [5]सुभ्रम्मय भ्रम्म तहां विपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र विराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥

सुबाहन बीर बली कुनि तथ्य । तिने कलि भ्रम्मन दूजि यकथ्थ ॥
तहां गुर राज [7]विराजत तांम । तिदिष्ट बचिष्ट मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी । (२) ए. कृ. को.-होम जग्य ।
(३) ए. कृ. को.-बुध । (४) मो.-देवनी ।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय धूम नहीं चियचित। (६) ए. कृ. को.-इन्द, इंन्द्र । (७) गो.-त्रिरामत ।

सु और अनेक महाभर मंझ। अमंत क्रमंत [1]सयन्तिय संझ ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन।

साटक। मु'दी मुष्य कमोद हंसति कला, चक्कीय [2]चक्क'चितं।
चंदं किरन कढ़'त पोइन पिमं, भानं कला छीनयं॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्य' च भोगं भवं।
[3]निद्रा वस्य [4]जगत्त भत्त जनयं, वा जग्य कामी नरं॥ छं०॥ ७॥

चोटक॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं। विछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं॥
†जु पयो धिम तत्त मझ' सुरबी। सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [5]जबी॥
छं०॥ ८॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं। सु मनों लगि पारसियं पढ़नं॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं। कुलटा बसि छैल रसं किमिदं॥
छं०॥ ९॥

विरही जन दिष्टि सु धाम ढुरी। उलटैं बसि डोरि ज्यौं चंग उरि॥
बजी बर देवल झल्लर झूर। तिसं घरु सिंगिय सिद्धन पूर॥छं०॥१०॥
[6]कपी मुग धापिय केलि कठौर। मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर॥
छबि दीपक दारन जोति जगै। जनु दंपति नैन सुभे उमगै॥
छं०॥ ११॥

जु लगीं धुअ घुंमर रैनन मंडि। चलैं क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि॥
‡जुरसे रस चामर सीस इसे। दिषि दीपक जोति पतंग जिसे॥
छं०॥ १२॥

विरहा उर झारिय केलि करी। इन दाहिय देहरु प्रीति धरी॥
विरही चिय मुष्य सु दुष्य [8]सदं। कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं॥
छं०॥ १३॥

---

(१) ए. कृ. को-सपन्निय। (२) मो.चक्कीचितं। (३) मो.-निद्रया।
(४) ए. कृ. को.-जगंत। *ए. कृ. को.-"कग्नि चक्क सु चक्किय"।
† ए. कृ. को.-जु पयोध पतंत भझ सुरबी। (५) मो.-बची।
(६) मो.-किपि। (७) ए. कृ. को.-पिम।
‡ ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर सीदक से"। (८) ए. कृ. को.-मुदं।

जु संजोगय भोग सुपं सरसे । सु कमोदिन चंद फुले दरसे ॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं । जु वए मनु काम के बीज भुवं ॥
छं० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना ।

दूहा ॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ । गइ जामिनि जुग जाम ॥
ग्रहन समय दिषि होतही । जमुन पधारे [1]ताम ॥ छं० ॥ १५ ॥

वरुण के वीरों का जाग्रत होना ।

स्नानं जंको नौ न्रपति । जल रक्षा जगि वीर ॥
[2]हक्कारे संमुष उठे । मंगन जुद्ध [3]सरीर ॥ छं० ॥ १६ ॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे ।

ए विन वस्त्र रु सस्त्र विन । हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तंदुल जव पुहप कर । वरन दूत उठि रोस ॥ छं० ॥ १७॥

वीरों का गहरे जल में शब्द करना ।

अति प्रचंड गहराइ गल । गल गज्जे वल वीर ॥
स्याम वरन भय भीत दिषि । धीरन छुट्टै धीर ॥ छं० ॥ १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ अति उतंग बज्जंग । उदित उर जोति रत्त द्रिग ॥
अरुन रुधिर नष अधर । बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग ॥
दसन ऊंच सिर केस । वेस भय भग्गिय पासं ॥
अति उनाह अम दाह । कौन मंडै जुध आसं ॥
कल कलह बचन किलकंत सुर । सुर बाजत जनु धुनि धमनि ॥

(१) मो.- बाम ।　　(२) ए. कृ.- को.-हहकारे ।
(३) ए. कृ. को.-संमीर ।

रुम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतों का ग्राव पर चला जाना।

दूहा ॥ सुभट दिष्य करि क्रोध उर। भये भयानक सूर॥
सस्त्र हथ्थ दिष्षे नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुप्प फल सुबन॥
बजत घात आघात। फुरत अवसान वीर तन॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी॥
[3]जोग ग्यान चय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोविदह॥
इत्तनी वत्त अवसान मिलि। मनहु मंच जनु गुन भिदह॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पचारिय॥
अंग अंग संग्रहहिं। इक्क इक्कत अधिकारिय॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कव भार झरन्निय॥
कब्बहूं मेघ [6]उट्ठे सुजल। कबहिं करन ग्रावह बरष॥
उच्चरहिं बैन बहु वीर वर। बिरचि कबहु बुल्लैं हरष॥ छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुमूढ़। (२) ए. कृ. को.-मति।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्"। इसका तात्पर्य डेल्टा से है।

(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।

(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो.-वुट्ठे।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना।

कबहु सस्त्र सर परहिं। कबहु डक्कें डक्कारिहिं॥
तीन लोक तन [1]हकहिं। बकहिं वीरन वक्कारहिं॥
अकल कलह बल करहिं। समहि संग्राम सुधारहिं॥
अजुत जंग उद्धरहिं। *कलह बल धार उधारहिं॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं। गिरहिं परहिं उट्ठहिं लरहिं॥
सोमेस सूर संक न [2]गनहिं। विरचि गाल गल बल करहिं॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना।

हम सु भयंकर बल अभूत। सुभटन [3]हक्कारिहिं॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान। कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं॥
हम समुद्र प्रम्मान। डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं॥
देषी सुनी [6]न कोइ। सोइ ब्रह मंडल गावहिं॥
छिन काम धाम तजि वाम सुष। आइ सपत्त जमुनि निसि॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं। नीर रमें तिख खेइ धसि॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना।

दूहा॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन। गैन गुंज जल फार॥
मामहु भारथ अंत कौ। भार उतारन हार॥ छं० ॥ २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना।

कवित्त॥ काल संक अहुरहि। तार बज्जत प्रहार सुर॥
जम्मुन [8]जल अंदोल। बीर बोलंत बीर गुर॥

---

(१) मो.-तक्कँहि। * कृ. को.-कबहि वीरन वक्कारहिं। (२) मो.-गिनाहिं।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय। (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान।
(५) मो.-प्रवानहि। को.-प्रवाहिहि। (६)-न होइ। (७) मो.-एह कहे। (८) मो.-सजन।

कलह केलि सम केलि। ठेलि कढ़ै चावद्दिसि ॥
एक ग्राव वरषंत। एक फारंत नष्ष कसि ॥
परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर विषम [1]अपि ॥
बर बीर धीर धष्षे लरन। फहु पट्टत न्त्रप सोम [2]लषि ॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरों का बल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी ॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]वढ़ै रजपूत जोर ॥
वढ्ढै [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार ॥छं० ॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार॥
छं० ॥ २८ ॥
वर भरहिं करहिं लत्तननि हाइ। *वज्जंत बज्र जनु विषम घाइ ॥
रन रह वहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन ॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन न्त्रिमल करूर ॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥
तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा ॥ ज्यौं सैसब में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यौं निसि मध्यह अरुन कर। उद्दित दिसा [8]लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
*रत्ति रही वर विलगि बर। ज्यौं ससि कोरह राह ॥
हरि डढ्ढै बाराह धर। कै हरि चंपत राह ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पिंषि। (२) ए. कृ. को.-लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वढ्ढे। (५) मो.-मुगल।
* मो.-वज्र लेत हथ्थ जम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-कव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर वीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ म्रतक समानति म्रतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोहिप्पं न्रप राज तात निजयं। वीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्ध तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय सुष्प ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्प ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्नी जमं पै [6]कहाया ॥
जगं अंधकूपं सु दीपक गन्नी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करन्नी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-प्रान। (२) ए. कृ. को.-सो दिष्षं।
(३) ए. कृ. को.-हाली। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तद्गुरं। (५) मो.-सूरिज्ज।
(६) ए. कृ.को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

महा भ्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी ॥
छं० ॥ ३० ॥

त्रयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम सूरं जलं मुक्ति धारा। तुही नब्भ मातंग नर लोग सारा ॥
तुहीं साधवी मात नष्यं समानी। तुहो तारनं लोक त्रै लोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल वेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तुही [3]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक द्वारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप राषंत आलं
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विस्व रूपं तुहि विस्व माया। तुहीं तारनं जन्न संसार आया॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत सूरं ॥
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी अकारी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि थप्पिय ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"। (३) मो.-मद्दंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प। (५) ए.-आत्रार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

मिल्ली जाइ [1]झल संग। गंग सागर अवधारिय ॥
ता सोमेसर रोग। दोष दोपह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन। करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि न्रप मूरछा। प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]वंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनै अर्द्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं विस्मत [5]अस्तंतरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंपी वरं [6]सुद्धयं ॥
सुष्यं दुष्यय मध्य वृच्छ तवयं सापास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त हन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकअय संतोष दोष तिगुना अस्थाय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूतं आभूत वर्ष सु सतं आयुर्बलं अदभुतं ॥
तेषा अर्द्धं निसा गतं रवि उभै बाल्यं च वृद्धे गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुने [7]संभार निस्तारयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय। भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब। जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंध्रव मंत्र सुइष्ट [8]जिय। आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]वरुन दोष तन ताप गय। उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जल गंग। (२) ए. कृ- को.-त्वमे। (३) ए.-सरसी।
(४) ए. कृ. को.-सबदं। (५) ए. कृ. को.-नर। (६) मो.सुठयं।
(७) मो.-संसार। (८) ए. कृ. को.-हुअ। (९) ए. कृ. को.-वरन।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि जाइ । जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ । निसि समय बरुन तन धरिय पाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ । पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ । उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किन्नह पराइ । भए सुद्ध पाय गए तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

दूहा ॥ बरुन दोष मेंथ्यौ सुप्रथु । ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम न्टप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ ।
(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ । (३) ए. कृ. को.-फुलाइ ।

अथ सोमवध समयो लिप्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति वर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तम [1]अंतर वल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्षै इलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रपै डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेत्त । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम पगन पेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राह केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । वुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
वुल्लाइ सब्ब मर इक्क ठौर । चढ़िवाइ वेगि वर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गट्ठ । इम लेउ भूमि षल षग्ग वट्टि ॥छं०॥६॥

---

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-काल्यंद ।
(४) ए. कृ. को.-षेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भील जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करौं हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कट्ठीं नरिंद। रानिंग राज वर ॥
चौरा सिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान। वीर सारँग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्गयौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुब्ब बैर साल्यौ हियैं ॥
केतीक वत्त संभरि धरा। रहै रंग चचर कियैं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं केलि कलहंतं। सल्लै सूल षग्ग [2]मग्गायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोली राव रानिंग। बोलि चौरासिम भानं ॥
स्यामा स्याम नरिंद। भीर कट्ठी रन थानं ॥
अति उदार अति रूप। भूप साइं रन रष्षन ॥
चाहुआन बरसिंह। [3]पिक्ष्यौ वड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुवर बैर कट्ठौ विषम ॥
आरध्य कथ्थ भावै भवन। सुभर मुत्ति लभ्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय वर। जुग जोग [4]नह लभ्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अभ्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग कौ सोन जोनं ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.,"तंकेलि कुलहंता" । (२) ए. कृ. को.-मग्गाइं ।
(३) मो.-पिक्ष्यौ । (४) ए. कृ. को.-नहिं ।

करै कोन जसजोति जोत्यं प्रकारं। गनै कोन वेनू सु गंगा प्रकारं॥
गिनै कोन तारक्क ते [1]तेज भोरं। लरै कोन चालुक्क सो जुद्ध सोरै॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना।

गाथा ॥ फट्टे पुडु फुरमानं। धाये धराजित्त जिताइं॥
इम जुट्टे सब सेनं। ज्यों खू नीर वट्टि सरताइं॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य।

विअष्परी ॥ जुट्टे दल पहु पंग [2]अपारं। हैगै वर भर लभ्भि न सारं॥
वनै हयं पय पंप समानं। पह भूमी जनु पंप उड़ानं॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं। भद्दव वद्दल जानि समीरं॥
दिपियै सूर नूर पह पूरं। संध्या सागर [3]नूर करूरं॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल संग मल्हारे। धावैं धर पग पाहर कारे॥
कच्छे कच्छै वंधै डोरी। चंदन खोरि पिलै जनु होरी॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लैं कोई। विचरै लरै जानि जम दोई॥
पाइक पग पिन्नै जनु नट्ठं। पंडा कड्ढि वढ़े गज [4]दट्ठं॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी विन तिन लोह न छिज्जै। धार अनी कर वर ठेलिज्जै॥
चंचल अश्वह [5]नंषत सूरं। सूर तेज जिन मुष्य सनूरं॥ छं० ॥ १९ ॥
वंकी भोंह भयंकर नैनं। फूली वंवर लग्गे गैनं॥
रत्ते [6]स्वामि ध्रम्म रस रंगं। जोग जुगति मन चढ्ढत जंगं॥
छं० ॥ २० ॥
नेह न देह न माया ग्रेहं। चिंतत सदा ब्रह्म मन लेहं॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं। सुभ्भत सेन मनों सुभ्र गंगं॥ छं॥ २१ ॥
गड्ढ परे न्रप गाहत गड्ढं। जिन वाराह मोथ रस दड्ढं॥

---

(१) मो.-मेत्र। (२) ए. कृ. को.-प्रपारं। (३) ए. कृ. को.-सूर।
(४) मो.-वढ्ढं, वट्ठं। (५) मो.-जनुंषत। (६) मो.-साम।

औगुन अंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रत्ते षग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसह्नं दिसि दारुन दल बट्टं। ज्यों धुर वद्दल भद्दव चट्टं॥छं०॥ २३॥

सिलह सज्जि बट्टे बल वंकं। रीछ लँगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥छं०॥ २४॥

अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरूं भट्ट तत्त वुधि जानं॥
वंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब वंधि रु छंडे॥ छं०॥ २५॥

सांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं०॥ २६॥

लीने भीम संग चव मंची। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंची॥
सुर्ग मृत्यु, पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं०॥ २७॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। वर सिघंन आकार॥ छं०॥ २८॥

ए बुलाइ चालुक्क वर। मंची भोरा राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज॥ छं०॥ २९॥

[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। वोलिय भीम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंची मंच तब। सुनि भीमंग सुदेव॥
धरती वर पर अप्पनी। सेत न कीजै [7]छेव॥ छं०॥ ३१॥

---

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौ।
(५) मो.-व्रत। (६) ए. कृ. को.-न्यंद। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण ।

साटक ॥ भूमीनं धर ध्रम्म क्रम्म [1]निरतं, वंध्यो वधें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस म्रगया, नित्तं वज्रं कारनं ॥
केकइयं भुअ काज रामय वनं, दसरथ्थ मंगे वरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, स्ने हाययं भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना ।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ । आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रपह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरन प्रभु कोवाह ॥
जा जीवन आरंभ । कित्ति सा ध्रम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह । तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि । अच्छित सती समान ॥
चावद्दिसि नष्पै निडर । वौ लभ्भै [4]सिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना ।

सुनत मंत चल्लिय न्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु वद्दल पह उन्नए । दिठ्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं । [6]ज्वाला मलि [7]ज्वालाह कत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी । है हिलन्न हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं० ॥ ३६ ॥

---

(१) मो.-सरसं ।　　(२) मो.-काज ।
(३) मो.-सर ।　　(४) ए. कृ. को.-पिम ।
(५) ए. कृ. को.-भमंग ।　　(६) मो.-क्षाला ।
(७) मो.-क्षालाह ।　　(८) ए. कृ. को.-लग्गी ।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि वीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै सूरतं वीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उठ्यौ छत्र छिति राज सिर। त्रिषत वीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियैं। ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंत्र मंत्रिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना।

आनिअ [2]अख्रित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न ॥
पुव्व बैर सोक्षित्ति कौ। झिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥

पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रक्रत्त ॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहैं। तौ भारथ्थ सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सली मिली कज्जल वरन। भेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गें गज पंति ॥छं०॥४२॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुब्भर डुल्लियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाहही ॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही ॥छं०॥४३॥

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनति।

गज बहत सद्दद [1]मनहुँ घन भद छुट्टि छिंछन उभ्भरै ॥
पग जोरि मोरि मरोरि सुर जनु द्दिष्षि सुरपति लुभ्भरै ॥
वनि पीलवाननि ढाल हालनि वलिय वैरष साजही ॥
मनुं सिपर गिरि वर काम अंगन छत्र चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत वज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड़ सन्नत सिपर गिर रद झल्लही ॥
दल सुष्प मंडिय नेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमह मभ्भक्ष सोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
दर संगि वाजिय सिलह संजिय [2]वहै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत । रोह रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस । संग सामंत सुराजं ॥
पीची राव प्रसंग । जाम जद्दौं घट भारिय ॥
देवराज वग्गरिय । भान भट्टी पल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाह [3]पग्गार भर । वलिय राव वलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्पि कैमास सँग । कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ।

दूहा ॥ जिन कंठन ढिल्ली नयर । ते रष्षे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरह । कलह न [4]इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) मो.-मनल । (२) मो.-वहौ ।
(३) ए. कृ. को.-पागार । (४) ए. कृ. को.-इछत ।

सुनत पुकारह छोह छकि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चट्ठे हयन। बिंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर जानत जंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्ववैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग काल मल्लि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोझत्ती बर बैर। बहुरि हालाहल मच्चौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। लेष लंघै को रच्चौ ॥
करि [2]न्हान दान इष्टं सु जप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय वयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संघन कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बद्धौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ। धुअ प्रमान पय [3]डड षरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उब्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर बिचार। सजि चढ़े बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आउ। (२) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

*धरा धरा कंपिय भार। .... ॥
चढ़ि गाढ़ चालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुयान॥ छं० ॥ ५४॥
सुनि श्रवन संभरि राज। वर वज्जि [2]विजयत दाज॥
तन [3]त्रविधि तूल तरंग। विधि मंडि वीर विभंग॥ छं० ॥ ५५॥
दल देषि सूर सुरंग। उर होत अरियन पंग॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माध नूत तमाल॥ छं० ॥ ५६॥
छुटि अचग अच्छतुपार। पाहार फारि प्रहारि॥
उल्लि हत्त तिल्लिय सेन। मनों राम लंका लेन॥ छं० ॥ ५७॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन।

कवित्त॥ त्रिविध साज वज्जिय। अवाज भेरी कोकिल सुर॥
भवर झुंड झंकार। नौर मोरह ढुरंत वर॥
वर वसंत सम वीर। नच्चि तोपार त्रिभंगिय॥
[4]रन रत्तौ सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरपि सूर वज्जिय करस॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज विन। सुभर कंक मंडिय सरस॥ छं०॥ ५८॥

युद्ध आरंभ होना।

दूहा॥ सुवर वीर मंड्यौ समर। रन उतंग सोमेस॥
दै दुवाह [5]दुज्जन घरी। घरी सु अक्क नरेस॥ छं० ॥ ५९॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान।

कवित्त॥ जा दिन जीव रु जम्म। क्रम्मता दिज जम पच्छै॥
सुष्य दुष्य जय अजय। लोभ माया नन सुच्छै॥

---

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छ० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े वीर सुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है। (२) मो.-विजयसु। (३) ए. कृ. को.-त्रिधि। (४) को. कृ.-नर, ए.-मर। (५) ए. कृ.-दुज्जर्न।

काल कलह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरुद्धौ ॥
[1]सुगति मग्ग सुझ्झै न। ग्यान अंतह किन सुद्धौ ॥
प्रतिव्यंब अंब अंवह जुगति। भुगति क्रम्म सह उद्धरै ॥
केवल सु ब्रह्म [2]पिचिय तनह। कन्ह कंक जौ सुद्धरै ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। *नर निरदोष सदोष ॥
संभरवै [3]संमर सुमति। न्टप लगि सुमत जमोष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय ॥
सुमरि साह इक देव। द्रुवन दल देषि [4]दपट्टिय ॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना ॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरीठ भयन्ना ॥
फूलह सु धार धर कन्ह वर। कार पर छुट्टिय छह घरिय ॥
पग सठ्ठि नठ्ठि भीमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय ॥छं०॥६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजास्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ काल चंपि वर चंपि कल। नर निर्घोष निसान ॥
सुबर बीर हिंदुअ सयन। वर बीरा रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

†कलाकल ॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस वियं ॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं ॥
छं० ॥ ६४ ॥
झमकंत सु दंतन अस्सि झरी। जनु विज्जुलि पष्पत मेघ परी ॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगद्दि पनं ॥छं०॥६५॥

(१) क्रु. को.-मुकाति, ए.-सुकाति। (२) ए. कृ. को.-छत्री। (३) ए.-संभर।
*ए. कृ. को.-नर निर घोस दोष। (४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-रुपट्टिय।
(५) मो.-नौ रस में। (६) मो.-सज्जि।
†इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं।

बजि [1]डौरुअ डक्क निसान पुरं । जनु बीर जगावत बीर उरं ॥
दुअ सेन बजं असियो बरषी । नचि जुग्गनि पप्पर लै हरषी ॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुझार झरै । बहुर्यौ नन पंजर आय परै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर भगर जिम पेल्ल । ठेल मेल्लन सम ठिल्लहिं ॥
इक धुकात धर तुट्टि । * इक वल्लन गल मिल्लहिं ॥
इक कमंध उठंत । इक अंतन आलुक्भहिं ॥
इक हथ्थ [3]पग झरहिं । टिक्कि पग [4]पग विन झुभ्भहिं ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु । रन रवन्न [6]छिन्निन कर्यौ ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर । इम सु जुद्ध कन्हह [7]भिर्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप ।

किन्न दंति विन दंत । सुभट सीसन विन किन्निय ॥
हय किन्निय विन नरनि । सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]पुड्डा विन किय काल । वाल वर विगरिन दिष्पिय ॥
पल्ल हारिय पल्ल पूर । सूर कान्हा भय भिष्पिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल । सचल सस्त्र मह संझरिय ॥
मदमत्त गंध सहियों [9]ढुरिय । मनों वाय इच्छह गुरिय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि । हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो संभरि सोमेस वर । सो कीनी पहिचान ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-डरुअ ।   (२) मो.-जिनैं ।
* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहि ।
(३) ए. कृ. को.-पग ।   (४) मो.-पग ।   (५) ए. कृ. को.-तरफंत ।
(६) ए. कृ. को.-छत्री ।   (७) ए. कृ. को.-लर्यौ ।   (८) ए.. पुधा, कृ.-पुदया ।
(९) मो.-ढुरत ।   (१०) ए. कृ. को. आधारिय ।
(११) ए. कृ. को. से भंखे सोमेस वर ।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। वृद्ध वय कामति सोचन ॥
[2]पुच बिना बिन बंध। बल सु बंध्यौ भीमंदे ॥
सार सुक्कत आरद्ध। सुष्प लष्पं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। * नय तरत्त रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥ छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥ छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय निघाइ। † मऱ्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हाऱ्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ ॥

---

(१) मो.-भ्रम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरनी सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुऱ्यो कौमर आहुट्टिय"।

छह घरी श्रोन अनिवर उर्यो। धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह स जुत। ¹छलि वलि वीर वलिष्ट वलि ॥ छं ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन।

सिल्लि रिद्ध विघ्युरिय। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल वढ़ि चलिय। मरन मन किंकन जुट्टिय ॥
कलमल्ल सिर वढ़ि गुरिय। नयन अलि वास सु वासिय ॥
जंघ ²मगर कर मीन। कच्छ पुप्फरि पग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच। अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन। भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि। वहत सार असरार ॥
*मानों जालुग अंत कौ। आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर। ढाहि ³दीनै ⁴वरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव। जमल भग्गा ⁵तरु कान्है ॥
वे सराप नारद प्रमान। दरसन हर लद्धिय ॥
दून तमंग उत्तरै। सार कट्ठे वर वद्धिय ॥
न्त्रिघघात घात मत्तौ कलह।असुर सुरन मत्तौ ⁶महन ॥
कट्ठै सुरत्त कित्तिय सुभट। सु कविचंद ⁷कित्तौ कहन ॥छं०॥८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध।

भुजंगी ॥ वजे वीर वीरं सु सारं पनक्कैं। महा मुक्ति वत्ते सु वीरं रनक्कै ॥
गजे वीर वद्दं करन्नाल सद्दं। सनाहं ससूरं वढ़ै सार हद्दं ॥छं०॥८१॥
नचै जंग रंगं ततथ्थे तथंगं। ⁸लचै रंक चित्तं मनं सूर ⁹पंगं ॥
वढै वंक कंकं ससंकौ धरानं। नगं नग्ग जुट्टे अमग्गं परानं ॥छं०॥८२॥

---

(१) ए. कृ. को.-वलि। (२) ए. कृ. को.-मकर।
* ए. कृ. को.-मनो जोग जुगति को। (३) ए. कृ. को.-दीनौ।
(४) ए. कृ. को.-वर। (५) मो.-तर। (६) ए.-सहन।
(७) मो.-कीरति। (८) ए. कृ. को.-जंगं।
(९) ए. कृ. को.-चलै।

ठलकंत घंटं रनक्के नफेरी। मथा मोह दोपन्न सूरन्न [1]नेरी॥
धरं धार ढौरै ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्र फेरैं कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्यिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्यौ॥
[2]ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी झर रुप्यौ॥
बिरचे कि [3]महिष बलबंड बल। दल [4]चमूह चवदंत हुअ॥
न्त्रप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्षेति दुव॥ छं०॥ ८४॥

रसावला॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं॥
छं०॥ ८५॥

करें केलि कंकी, धुते लज्ज पंकी। करूरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं०॥ ८६॥

पियैं लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूनें, फिरं अश्व सूनें॥
छं०॥ ८७॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रत्त धारे॥
छं०॥ ८८॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं॥
छं०॥ ८९॥

दुअं मुष्ष लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति सूरं॥
छं०॥ ९०॥

वहै श्रोन धारं, झरैं [6]झिन्न तारं। .... छं०॥ ९१॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तसु। (३) ए. कृ. को.-वलष।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं। ज्यों मत्त ¹दुरद रोस रंगाइं ॥
गज्जैं धर पुर पुट्टे। तक्कैं घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना।

दूहा ॥ अंमर धर पन्नग असुर। पिषि सह रष्पित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्पि क्रम। सुमन स ²वृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट। पिलैं कि पन्नग रुंच ॥
विस भोए डंविस सवल। ³सगति नहीं जुग ⁴जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष वलभद्र का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ वाम अंग सजि संग। वन्निय वलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत। सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह। घंट घूंघर घनघोरं ॥
वष्पर पष्पर जीन। मार दद्दुर दल रोरं ॥
गज गाज वाजि नीसान धुनि। अति उब्भर दल जोर वर ॥
वजि लाग राग सिंधू स धुनि। करन सु उथल ⁵पत्थलधर ॥छं०॥९५॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे वढ़ना।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय। सजि सारंगी आइ ॥
पिभिर षेत घन घाइ मिलि। जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के वहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

---

(१) मो.-मनयं रोसं। (२) मो.-द्रष्टिय।
(३) मो. सकति, । (४) ए.-तंत्र। (५) मो.-पथ्थ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं। वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है। कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं कसूरं करारे। छुटै वान कम्मान करि वार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघात वीरं। फिरै रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों सूर सीसं पसे चंद तारे॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अग्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ षंडेव जानं॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों धनं कूटकंती॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वारुंत भूपाल भूपं॥
जिनं कछ्छ वच्चं धरं ध्रम्म धारै। तिनं भ्रज्ञियं षग्ग अरि सस्त्र भारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं ध्रम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। हत्त अनुड्डिय सार॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसर अरि भार॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर षल चूरं॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह साहूरं॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं॥

(१) ए. कृ. को.-सारं। (२) मो.-तीरं।

जो वंडं करवान कर्णित दलं, अज्जेल आयातयं ॥
श्री वीरं चहुआन वानति वलं, चालुक्क संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ वढ़े वान चहुआन चालुक्क षेतं। मह्ना मंच विद्या गुरं सुक्र जेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद वर्षा [1]प्रहारं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

वजी भेरि भंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत विज्जू करन्नाल सादं ॥
छुटी वान जंची उड़ी गेन अग्गी। [2]महादेव वीरं चषं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संमाल वेताल श्रीरं ॥
नचें न्रत्य नीसान नारद्द धाई। चढ़ी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्य गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्याल [3]ष्यालं विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंच्चाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [4]तवल दारं दुवं विरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं ॥
दुअं सूर पूतं दुअं [5]कस्य पाए। दुअं दंद दारुन्न वाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार वट्टे व रानं ॥
दुवं सैन स्याही जलं वद्दलानं। दुअं गज्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रहत्तीय वेरा अचंती करारी ॥
[6]सरं जाल भालं भिदै जंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-पहारं। (२) ए. कृ. को.-महावीर देवं।
(३) को.-पत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तल्व।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

तुटै हड्ड संसं धरंगं अभंती। गद्दै अंत गिद्धी गयनं भमंती॥
उछै छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं वृष्ट बंधूक पूजं [1]जुतंगं॥
छं० ॥ ११२ ॥

छुटें मझ्झ सझ्झं नरं केक कच्चे। लरें जंग हथ्थं बिना केक रच्चे॥
उड़ै षुप्परी षग्ग झारैं करारी। मनों चंद सूरं दधी पूज धारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघ्घाइ घट घूम लुट्टैं। [2]तिनं जम्म म्रनं क्रमं बंध छुट्टै॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमे॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुत्ति कै भूम त्यारे॥
कहैं कव्वि वष्षान किं वर्नि तेनं। फलै [3]कृष्पि पच्छं मरनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ। सार मत्तौ झोलाहल॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पस्सु, पंषिन कोलाहल॥
धर परंत ढुरि धरनि। उत्त संगत्तिहि कारहि॥
झर झरंत षग्गाह। बीर डंकिनि ढक्कारहि॥
सहि मच्चि सहूरत मरन रन। सद्द जाइ जय सुर करिय॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

हय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ सम्मानं॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [4]सु रारै॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन षिलहि॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋष्षि। (४) मो.-सुसारै।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों की संख्या कथन।

वाजि नंपि सोमेस। सहस वर द्रक्क प्रमानं॥
[1]तिन मध कहि पंचास। वीर भारथ भरि पानं॥
तीन तीस पट परे। पन्यौ सोमेसर पेतं॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। कंक बंध्यौ सिर नेतं॥
लभ्भौ सु सुगति अद्‌भुत जुगति। हंस हंकि हंसह मिल्यौ॥
सोमेस करी सोमेस गति। पंच तत्त पंचह मिल्यौ॥ छं०॥ ११८॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना।

दूहा॥ जुझ्झि पन्यौ सोमेस धर। डोला चालुक राय॥
दुहूं सेन झरि धर परे। वजी वत्त पग चाइ॥ छं०॥ ११९॥
नए भृत्य न्रप रिष्पि के। ज्यों फिरि करिहैं झुझ्झ॥
चतुरानन चिंता भई। नर भारथ्थ अबुझ्झ॥ छं०॥ १२०॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली।

गाथा॥ जा [2]मुक्ति जोगिंद। कालं काइ भ्रम्म भ्रमाइं॥
सा मुत्ती सोमेसं। द्रक्क छिने लभ्भियं राजा॥ छं०॥ १२१॥
भूमी भरंत भरयं। कलयं कर कव्वि कव्वेवं॥
जै जै जंपि जगत्तं। है है नभ्भ सह सुर यायं॥ छं०॥ १२२॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना।

कवित्त॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। भूमि सिज्जा अवधारिय॥
तात काज तिन पिंड। दान षोडस विचारिय॥
भइ मह सह्यौ। राज गति अग्र प्रकारं॥

(१) मो.-तिन मध सु पंचास।　　　　(२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुक्ति।

द्वादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संथारं॥
विन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान जनमंत नर॥छं०॥१२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अठ्ठ सहस दिय धेंन।। *तब प्रथ्थी विधि धारिय॥
हेम स्रृंग षुर हेम। तौल द्वादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि नान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात वैर संग्रहन। लेन प्रथिराज विचारं॥
घ्रत मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुव्रत बीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिके। कढ़ौ तात उद्रह सुषम॥ छं०॥१२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात वैरह विनान॥
राजिंदु द्दष्टि रग तेत नेन। वध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥ छं॥१२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहैं न्रपति। वैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्धह काज॥ छं०॥१२६॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि बिप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्ष जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-सुष्ष। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं । कान्ह बिदम जानैं सुमति ॥
सामंत सूर सोमह करन । सुविधि सूर मंडी सुभति ॥ छं० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ राज विप्र बोलि सुद्दत । जजन सुजग्य पवित्र ॥
तब कोइ पुज्जै नहै । क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना ।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरबार बार । [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत [3]रत्ति प्रयमीत जोग । जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव । तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देपेति विप्र दान विधि प्रकार । जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

मद्धि मगन मंडि नहिं निकट फंद । दिप्पंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग । अप्पैं सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज । सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम दक्ष । अप्पैं सु दान मानह विसिक्ष ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]भक्ति प्रथिराज किन्न । बर वीर धीर साधंत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना ।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि । निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिप्पा जहां ध्रम्म सुत । करि अभिषेक न्रपान ॥ छं ॥ १३४ ॥

(१) कृ.-साधन । (२) ए. कृ. को.-सार ।
(३) ए. कृ. को.-रत । (४) कृ. ए.-देन । (५) मो. को.-आसन ।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद । (७) को.-भंति ।

अमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर नच्यौ। अमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। सति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु विंव सु विंवर रंभ डरं ॥
चिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु व्रनन कित्ति करं ॥
तमको तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देपत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककन्न नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज सग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं ॥
छं० ॥ १३८ ॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारै ॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय सुत्ति गसं ॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति ॥
संसार भेद आभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रकृति साधत [7]सुरति ॥छं०॥१४१॥

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगी द्रपंगीति वाले। इक मोल अमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला विसालाति धारैं। मयंका मुषी कंठ [1]कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि। न्वप जैं जै प्रथिराज ॥
मनों इंदु सुरपुर गहन। उदै करैं मनु साज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ स पते तिन महल। जहँ सामंत नरिंद ॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि। मनों इंद्रानी इंद्र ॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्वपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे। मनों कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी। मनों जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे। मनों मेनिका रंभ आषे अषारे ॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै। बने कोन ह्वन्नंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दैं। सब सामंतन सथ्थ ॥
जस जा हथ्थन बिप्प के। भौ कामिनिति समथ्थ ॥ छं० ॥ १४७ ॥

गाथा ॥ उभै राम बर सूरं। सामंतं सत्त षट दूनं ॥
ता अप्पन प्रथिराजं। चौ अग्गा लच्छि संग्रामं ॥ छं० ॥ १४८ ॥

ईच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं। दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं। मनो देवता जीव के जग्य जत्तं ॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय। दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अग्गह सुभ संत करि। तापछ सुभ्भर और ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक ।

कवित्त ॥ कियौ तिलक बर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनों भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छत्र। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल व्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कबिचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥३९॥

अथ पज्जून छौंगा नाम प्रस्ताव लिख्यते*।

(चालीसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना।

दूहा॥ †सुनि कगद प्रथिराज जब। वध्यौ भीम सोमेस॥
आतुर परि आयौ जहां। दिल्लि देस नरेस॥ छं०॥ १॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन।

दूहा॥ कित्ति कला कूरंभ बल। कहत चंद वरदाय॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय। जाइ सु भोरा राइ॥ छं०॥ २॥
सुनी राज प्रथिराज ने। झाला रानिंग सूय॥
विरद बुलावै महवली। छौंगा सज्यौ सधूय॥ छं०॥ ३॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कवित॥ छौंगा सा सिर छत्र। सीस बंध्यौ पज्जूनं॥
जस जयपत्त जु आनि। करै परसन सह [1]जनं॥
अप्पातें घर रैठि। रीस कीनी चालुक्का॥
हीय षटक्के साल। बात संभरि बालुक्का॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों। अप्पानौ दल टारियौ॥
पज्जून मल्लयसी बीर वर। करन कूच उच्चारयौ॥ छं०॥ ४॥

---

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छौगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है।

† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है।

(१) ए. कृ. को.-दूनं।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं। सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिंगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
किये कूच पर कूच। काल घेर्‍यौ कि कूट गिर ॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं ॥
उदधि मझि जिम अनिल। जलधि लंका गढ़ जानं ॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय। हक्कार्‍यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जी परै न [3]भत्ति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छची उठी भोमि भोरं ॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क यानं। अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं ॥
छं० ॥ ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै। सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै ॥
इकं चित्त दुष्टं [4]निजा साइ मानैं। इसे बीर कूरंभ रैवान जानै ॥
छं० ॥ ९ ॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरब्बार आयं ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जित्ति।
(३) ए. कृ. को.-मित्ति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै। झाला रानिंग सथ्थ॥
छौंगा बीर महाबली। बर बीरा रस कथ्थ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त॥ चंपि काल पज्जून। बीर भोरा भीमंदे॥
कै आयौ उप्परै। फुट्टि पायाल सबद्दे॥
सकल सेन चमक्यौ। बीर भोरा उठि जग्यौ॥
मलसीह मुष काल। हाल सम [1]व्याल सु [2]भग्यौ॥
[3]बक्कार बीर छौंगा गह्यौ। सिर मंडन लिय हथ्थ धरि॥
आए सु सीस पज्जून करि। समर बाल बीरं सुबरि॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जान।

दूहा॥ लै छौंगा बर [4]बीर चलि। चावक भूल्यौ हथ्थ॥
सात कोस ते बाहुर्‌यौ। बर वीरा रस कथ्थ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मझ्झ ते। लै आयौ फिरि धीर॥
ता पाछें बाहर चढ्यौ। दल चालुकी बीर॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी॥ चढ़े पच्छ चालुक सो सज्जि सेनं। हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं॥
सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं। छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं॥
छं० ॥ १५ ॥
बजै घाइ अघघाइ गज्जै हवाई। बजै आवधं मझ्झ आवद्ध झाई॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे। परे रंग जंगं मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सार सारं चिनंगीस उट्ठे। मनो झिंगनं भद्दवं रैंनि वुट्ठे॥
घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं। परै अट्ठदह बीर कूरंभ पत्तं॥छं०॥१७॥

* ए. कृ. को.-"षिझ्झी विमान चिढ्ढयो"। (१) ए. कृ. को.-व्यालह।
(२) ए. कृ. को.-लग्यौ। (३) ए.-चक्कार। (४) ए.-वालि।

परे सहस चालुक्क दै बान बीरं। तहां इत्तनै भान अस्तं मं नीरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मलैसीह पज्जून रा। दस दिसि कित्ति अवाज ॥
दै छौंगा भोरा फिय्यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कनै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि ॥
घटि चालुक [4]बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥
मलैसिंह रालिंग सुत। सुब्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पय्यौ। ज्यौं तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥
*पज्जुन राइ महाबली। मलैसिंह धर यारि ॥
छौंगा लै पाछे फिय्यौ। सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

---

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ। (४) मो.-वधि। (५) ए. कृ. को.-तवी। *छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जैचंद के उभाड़ने से वालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ [1]वालुक्का हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥
सास भेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त ॥ आइ षवरि चहुआन । [2]सु दल वालुक्कराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस । साह साहाव बैर कजि ॥
लष्य दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिरु कारी कढ़िय । समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध वालुक कमध । [4]कहें कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है ।

चालुक्का परि राइ । बीर वज्जे नीसानं ॥
सकल सूर सामंत । षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सवर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरँभ को दलै । नृपति इह तथ्य उच्चारिय ॥
जो चियन बस्य नन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का । (२) मो.-"सुवर चालुक्का राह सजं ।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि । (४) मो. कहौ कान चढ़ै ।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा ॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय [1]साज ॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की पशंसा करना।

कवित्त ॥ सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान वर ॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क चंपि धर ॥
परमारह कामधज्ज। बीर परिहारय भट्टिय ॥
सकल सूर बर नटे। काल चंपै मति घट्टिय ॥
पज्जूनराइ षग अग्गरौ। करै नाम निरमल सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर ॥
छं० ॥ ५ ॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहत धनुद्धर ॥
*जो मह नह पूअंत। जोग षल षंडन सब्बर ॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ आस असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि ॥
चालुकराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को. बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को. दिष्षै।
(४) ए. कृ. को. नजरि। * मो. प्रति-जोगन पुज्जै जोग षल षंडन बीर।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल । कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल । ते सजि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना ।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइं । स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं ॥
मिलि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं । गई हक्क चहुआन सुरतान मानं ॥
छं० ॥ ८ ॥
बजै दुंदुभी देव देवं सु थानं । भयौ मुष्ष कूरंभ चितं स भानं ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना ।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग बर । बगसि राज तब बाज ॥
लिय कूरँभ कुल उज्जले । सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना ।

कवित्त ॥ [2]षग्ग बंधि कूरंभ । आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र । तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर । सिंघ पाल्हन्न सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ । संग लीने भर सारं ॥
चित स्वामिध्रंम सो अरि भिरन । लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि । बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन । पावस सक्र समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून [3]भर । सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं । कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं ॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं । मनों केवलं अंग बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जूटं । (२) कृ. को.-षगा । (३) मो.-परि

चढ्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिठी दिट्ठ दिट्ठी मनों बेद गायं ॥
चढ्यौ राइ पज्जून छत्तं सुधारे। बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे ॥
छं० ॥ १४ ॥

द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं ॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं ॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा ॥ तिथि पंचमि रवि वार वर। छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक ॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं वरं ॥
जित्ते तं सुरतान मान सरसं, आवृत्त बानं बिषं ॥
भूयो बाल भुआल भारथ क्रतं, क्षण्णो धरा धट्टियं ॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर ॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत ॥ छं० ॥ १८ ॥
तहां हुए सगुन ए सुध्र रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप ॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। बामह सुबीय सारस सुभाय ॥
छं० ॥ १९ ॥

उत्तरै तार देवीति वार। डहकंत सद्द जुग्गिनिय भार ॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान ॥ छं० ॥ २० ॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर ॥
तबै राइ चालुक्क बर। आइ [4]सँपत्तौ तीर ॥ छं० ॥ २१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मुकति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-वद्धे, कृ.-वंदै। (४) ए. कृ. को.-संपत्तौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ सँपत्ते सूर भर। सुरताना कमधज्ज॥
कूरंभह पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज॥ छं०॥ २२॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन।

पद्धरी॥ दुअ दीन हिंदु संमुहु प्रमान। चालुक राइ अरि मलन भान॥
चहुआन सूर रबि जेम बीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर॥
छं०॥ २३॥
कूरम्म दान षग रूप दीन। असान जान रज रूप कीन॥
छं०॥ २४॥

दूहा॥ करिग सेन संमुष सुबर। गरूड़ व्यूह किय बीर॥
लरन मरन भारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर॥ छं०॥ २५॥
[१]ग्रिद्ध व्यूह कूरंभ करि। नाग व्यूह सुरतान॥
षा ततार षुरसान पति। मंडि फौज मैदान॥ छं०॥ २६॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त॥ [२]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय॥
भट्टी सेन विषम्म। पिंड पावं अधिकारिय॥
जानु होइ पुंडीर। नष्य उर मंस अंस करि॥
चंच अंष सुभ जीह। बीर कूरंभ [३]पयद्धरि॥
[४]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [५]लहि लोहानौ [६]ठौर बर॥
छवह [७]मुजीक पज्जून सह। दौरि पऱ्यौ बलिभद्र बर॥ छं०॥ २७॥

युद्ध की तिथि।

घरिय सत्त दिन रह्यौ। बार नौमीति सुक्र बर॥
पंच बीस आवट्टि। *यट्टि लोथं सुबंधि यर॥

(१) मो.-गरुड़। (२) मो.-पंग। (३) ए. कृ. को.-राइ धरि।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह। (५) ए. लरि। (६) मो.-मीठि। (७) मो.-मुनीक।
*ए. कृ.- को.-"लुथ्थि पर लुथ्थि बंधि थर"।

कूरम्भह षग झारि। सार भारथ्थ सु किन्नौ ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टंकार सु झिन्नौ ॥
आचार चारु राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [1]सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं। देवांनां कुरु पांडवो ॥
कूरम्भ राइ समो बीरं। नं भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि थ्रष्ट। इष्ट बलिभद्र अमरिय ॥
बलिय तप्प कूरंभ। सार साहित्त घुम्मरिय ॥
यों पजून दल मल्यौ। सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज। सगित मझ्झह झुकि ग्राहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट। करिय एम कूरंभ घट ॥
सुघ्घाट आइ कुघ्घाट किय। सुभट घाइ भारथ्थ [2]थट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि। ते अंगन दिष्षाइ ॥
रुधि सुक्कै कद्दम हुए। हय तरंग सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुड्ड सुचालुक राइ तहँ। च्यार बंध परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ बर। उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त ॥ उप्पारिग पज्जून। वीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु। घाव [3]सठ्ठ तन धारिग ॥
परि पंचाइन कन्ह। जैत जैसिंह जुवानं ॥
हिंदु बीर दभ्भज्ञान। मेच्छ गड्डन परिमानं ॥

(१) मो.-अमर। (२) ए.-तट।
(३) ए. कृ. को.-सठे।

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौ ॥
जस जैत लियौ कूरंभ [२]रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा।

दूहा ॥ *आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकताळीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥४१॥

(१) ए. कृ. को.-नर।   * छन्द ३४ मो.-प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ सज्जन [1]चिंत चंदह कर्यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है वर [3]विसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक वेद जोजन प्रमान । थटे * संघल क्रत पाइय ॥
साज लष्य तन लष्य । सकल वल कोरि सजाइय ॥
धानुक्क धार सत अठ्ठ चलि । कारन निध्ध जाचह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जसन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[6]गज घंटन चंवाल । भेरि सहनाइय वज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । पुरन चियलोक [7]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
श्रृंगारिय गढ़ हट्ट । [8]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

---

(१) मो.-चित्त । (२) मो.-पैं । (३) ए. कृ. को.-विलास ।
(४) ए. कृ. को.-बारुनह । (५) मो.-समथ्थह ।
*पाठ अधिक है । (७) मो.-घज । (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय ।
(९) मो.-मनो इन्द्र थान विसिष्षिय ।

बजि चंब वंब वज्जन बहुल। मन उच्छाह भिप दान दिय॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [1]तथ्थ डेरा करिय॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा॥ गिरवर भूंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर॥ छं०॥ ४॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर वर॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्पयौ॥
छतीस वंस मद्दिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्पयौ॥ छं०॥ ५॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइव। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ्ढि पाषान मद्दि। गिरि कंदर इक रिष्य॥
मुहु अग्ग सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य॥ छं०॥ ७॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त॥ नगर अजोध्या न्रपति। नाम कीरत्ति धवल्लं॥
सर जसुरि तातट्ट। रमत सिक्कार सयल्लं॥
तानि बान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय॥
तरफंरत अवलोकि। श्रोन घन धार अवंतिय॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट मद्दि तप तपत॥ छं०॥८॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्थ। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्यंत मो.-प्रति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि । सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
स्रुनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्ष । उठि चलिय मिलन मारग गवष्ष ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ । तड़िता कि तेज तारक दिषाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्ष गिरि झंप पात । पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिथ्थ अस्नान दान । कोटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं०॥११॥

अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ । अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल । आइ गिरि कंदर ष्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स । भंजि ऋँग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कंति चमकंत । जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत । जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्ष अंस्रु ढरत । पंस्रुरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि । गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥छं०॥१३॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि । श्रवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर । कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें । मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
ग्रभवंती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना ।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल । बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन । अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रुप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति । विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) कृ.-पोह ।

नरकंध रथ्थ के आरुहिय। ढंकि छब्बि मनों अंब जल॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद। मोघ निरषि मनुराज थल॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छब्बि वस्त्रंग। मड्डि माला मुत्तिय मनि॥
सीतारामी सहस। कनक थारी सत बीजनि॥
अगर पान अड़सट्ठ। रजक पालिका पठाइय॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारँग [1]मुह गाइय॥
सुक्कलिय प्रथा कवि थान कहं। भरन भार अभ्रन भरिय॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सपियन आदर करिय॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा ॥ दिय बहोरि न्रप नगर कों। प्रिथ आसीस पढ़ाइ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]कूप कल नाइ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि। चंद दंद तन मेटि॥ छं० ॥ १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल ॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं॥
छं० ॥ २० ॥

[3]लोह कुंड रच्चे सुर सच्ची। कुरछन झारि दियंत सु षिच्ची॥
मनों ओपमा में छबि [4]रच्ची। जेवैं बरन अठारह जच्ची॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेंवै सब परिगह परिवारिय॥
छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए.-सुह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो..लहो। (४) मो.-मेछ ते रंची।

केसर अगर धौरि सब किद्धिय। पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय ॥
हथ्थी है मोती नग विद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज दै तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय। जो चित्रंग भत्य सम राइय॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्पासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा ॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पीर॥
पंथ एक पष्पह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त ॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिठ्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अँग अंगन॥
गजत पिठ्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्य पर॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हाटक मंडप छत्र लहि। मुत्तिय [2]पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मझ। कल मष कट्टत काल॥ छं० ॥ २८ ॥
फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्षि प्रमान॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान॥ छं० ॥ २९ ॥

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल। (२) ए.-वंतिय, पंतिय।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला ॥ तुझं देह हट्टी, तुझं मान वट्टी। तुझं वीर दट्टी, तुझं थान थट्टी॥ छं० ॥ ३० ॥

तुझं लोक पालं, तुझं जालमालं। तुझं भाल भालं, तुझं दिग्गपालं॥ छं० ॥ ३१ ॥

तुझं देस रष्षी, तुझं भीर भष्षी। तुझं द्रोप रष्षी, तुझं सर्ग सष्षी॥ छं० ॥ ३२ ॥

तुझं तीन रष्षी, तुझं ब्रह्म लष्षी। तुझं पंग रोही, तुझं गोप मोही॥ छं० ॥ ३३ ॥

तुझं सच्च दोही, तुझं सत्र सोही। तुझं सिद्धि तूही, तुझं रिद्धि सोही॥ छं० ॥ ३४ ॥

तुझं सर्व अंडं, तुझं तीन कुंडं। तुझं षित्त [1]षंडं, तुझं थार मुंडं॥ छं० ॥ ३५ ॥

तुझं ग्यान गट्टं, तुझं रंभ थट्टं,। कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं॥ छं०॥३६॥

दूहा ॥ हरिहर वच सच वारि बर। पुर धरि सिर पर इंद॥
मनुँ गुर तरु फर भार नमि। झलमलि हलि गोविंद ॥छं०॥३७॥

देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी। नमो तुं नमो तुंज संसार सारी॥
नमो तुं अभष्षी नमो बीज भष्षी। नमो रिष्य पूजंत सज्जंत सष्षी॥ छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई। नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई॥
नमो लंत जालं त्रिकालंत राई। नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई॥ छं० ॥ ३९ ॥

*नमो ससिपालं अकालं अभष्षी। नमो कालजन्मं न कालं न सष्षी॥
नमो एक भग्नी भरत्तार पंचं। नमो कोरि कोरं करत्तार संचं॥ छं० ॥ ४० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंडं। (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ्झ, तुझे। (३) ए. कृ. को. गिरज्जा।
* मो.-नमो ससि पालं अकालेत राई। नमो काल जमन कालं नसाई॥

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानीं। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो कित्ति तुं मंच तुं गीत गानीं। नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१॥

नमो विश्व तुं भिस्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अट्ठ्रानी॥
छं० ॥ ४२॥

नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्दं। नमो भुंड मुंडं तुही पारि सद्दं॥
छं० ॥ ४३॥

नमो पत्र तुं छत्र तुं छित्ति धारीं। नमो वृद्ध तुं वृक्ष तुं अध्य हारी॥
नमो रूपतु रंग तु राग [1]रत्ती। नमो भील तु भाव तु सील [2]सत्ती॥
छं० ॥ ४४॥

नमो भ्रत्त तु वृत्त तु वारु वानी। नमो चंद चंडी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा॥ करि असतुति ससतुति सुवर। होम हवन हरि नाम॥
सोवन तुला सु साज वर। करि सुभट्ट सुचि काम॥ छं० ॥ ४६॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्थिय [3]द्रब दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहिं दिवावहिं॥
ते दूरवारह चढ्ढि। न्याय हय पिट्ठ दगावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]भूलत तर वर॥
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-संगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-घर।
(४) ए. कृ. को.-अनत अनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनों मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं। (५) ए.-झूमत, को.-भूलत।

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]पेरिरंत नर ॥छं॥४८॥
भद्र भेषनह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न भ्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आहू अंष परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम ॥
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर बंदि बद्द। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाष लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रवल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
विप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बादह पऱ्यौ ॥
अन्नेक चीर हूपरु फिरंग। मनों मेर कंठै भऱ्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दारह।

*"कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९. छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है.।

(३) ए. कृ. को.-बाहन।

पलक बिबिध घन भार । रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि । दान चुक्कत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि । किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान । रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कड्ढै मुषह । सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन । कबि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन ।

अर्द्ध नराच ॥ बजान बज्जयं घनं । सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं । समुद्दयं पटा भरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]म्रगयंद कै गजं बरं । .... ॥
हलं मलं हयं गयं । नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं । सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि मानयं । नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं । इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं । .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं । परीस रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संमयं । अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं । .... ॥
अरुढ़ काम रध्ययं । सु उत्तरी समथ्थयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना ।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग । जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय । मनंहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में । हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति । भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कगजं गरं ।　　　　(२) मो.-सुधा ।

किनक जान भोरा कह्यौ। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समष्षन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपष्षन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय ॥
घल दुट्ठ भट्ट आयौ वरै। करि भुझझौ मंचह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन षेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। वेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बधिय। चंद जानौ वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझझौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥छं०॥६५॥
दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
वत्त घत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अप्पिय द्रव कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) मो. सलष्षन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह अप्पियं इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिय। प्रथु किय कित्ति अपार ॥
जगद्देवह भोरा भनिय। [1]काह सु कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना।

सोमेसर किन बधिय। सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय। किद्ध किन आबू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस। वह सु दिल्ली विरदा मै ॥
कूष पीर आदरै। धाम उदरे व्रत धामै ॥
वागुरिन वृत्त अवतार गनि। भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ। कलि प्रगटिय मनु सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी। च्यार हंडी [2]रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाब। सुइ सूंपी तुर [3]तानिय ॥
इक राइ परमार। सधर सिर वानग जित्यौ ॥
करन मंद चालुक्क। दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर। सु इह बत्त जुग सब क[illegible]य ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि। एक राइ तुम उद्धरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दस लष्वन भष्वन करै। प्रथु सामत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन। तब सिर छत्र उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परें। दरियापति दस लष्य ॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर। सित्त सूर पति भष्य ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ।

कवित्त ॥ दइय सीष जगद्देव। जाहु तुम लै आओ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत। तदिन पिष्षौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर। पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) को.-कवि। (२) ए. कृ. को.-रंधानिग। (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग।
(४) ए. कृ.-मूग्ग।

मेछ मिलै षट षंड। परम [1]उतमंग जुध जुरहैं॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम करै॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै॥ छं०॥ ७२॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा॥ आइ सु भोर चंद ग्रह। हय गय नर भर भार॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार॥ छं०॥ ७३॥
देषिय डेरा भीम न्टप। उच्चै ग्रह आवास॥
गौष पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [2]रास॥ छं०॥ ७४॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमंग॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग॥ छं०॥ ७५॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धो विषंड। अन्नेक दीप वाहन उतंड॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर॥छं०॥७६॥
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष॥
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अन्नेक माल॥
छं०॥ ७७॥
तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सभ्भ गुज्जर नरेस॥
मझि दीप रोम राहब कुसाव। संजाल दीप प्रति काल आव॥
छं०॥ ७८॥
गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन झुझ्झ दझ्झि आसिष्ष बीर॥
हय मुष्ष ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]देक॥
छं०॥ ७९॥

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन अरोहि लीने असंष। प्रति पान पुरातन लह्य पंष ॥
अवतार सेस लीनौ अवनि। इन भंति चंद्र कवि करि तवन्नि ॥
छं० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त ॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदाज सु दिड्डिय ॥
बाद [1]बद्दि देवंग। सुपन पिष्षिय मन सिड्डिय ॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय ॥
थूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय ॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय ॥
नट्टी जु सषी उपजी अनल। सुरस वंचि नंचौ कलिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥
अरिल्ल ॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं ॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि भ्रत्त है गैं पति चलियं ॥
चंद मंत्र पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा ॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन षुर षेह ॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह ॥ छं० ॥ ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ षरि गजनेस ॥
कूच कूच मग चंद षरि। पहुंच्यौ घर दानेस ॥ छं० ॥ ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४२॥

(१) मो.-छंद।

अथ कैमास जुद्ध लिख्यते ।

(तेंतालीसवां समय ।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहावं । अप्पिय समह षान तत्तारं ॥
अग पुरसान विचारं । संमर समुप राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १ ॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तारं । अरि अति जोर सूर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं । षट्ट दिसि मंत साह साहावं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन ।

हनूफाल ॥ वर मंच किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिल्लिय चिंत । षट्टूअ दिसि मन पंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त हर च्यालीस । बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्य [1]अस असवार । बानैत सहस चिकार ॥
पयदल सु लष्य प्रचंड । चय सहस मद गल झंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदभि बज्जि । भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । षह षेह रुंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो..लष ।

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रवि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आव ॥ छं० ॥ ८ ॥

हनूफाल ॥ उलठ्यौ कि साइर आव। सम चढ़े षान नवाव ॥
तत्तार संच सु प्रौढ़। षुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। वर लाल षान [4]नहन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा ॥ उतरि साह वर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोले षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार वर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहैं साहि के दार सम। कहौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
ष्टस्माइन काइथ सुकर। इह लिष्षी अरदास ॥
आषेटक षेलन न्रपति। मन किय पट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक्क दस दिसि न्रपति। चढ़ि चल्लौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय वत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित सुरतान ॥
[9]गुज्ज महल सब बोलिकै। बैठे करन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) मो.-रति। (२) मो.-सूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुसन्न। (४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-चाइ। (६) ए.-मंनि। (७) ए. कृ. को.-सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

पद्धरी ॥ साहाब कहैं तात्तार षान। उपजै सुमंच अष्षौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय। कैमास आन कीनी सहाय ॥
छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत। झुभ्भंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आषैति वार। सम लालषान हस्सन हकार ॥छं०॥१९॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति। साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस। कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥छं०॥२०॥
सामंत कितक बल्ल सूर कौन। लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल्ल [3]अछेह। देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥
छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आनें सु राज। हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥छं०॥२२॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान मुष। बंध्या जोर सहाब ॥
रह षट्ट दिसि चल्लियैं। उलट कि साइर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस। चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाब। [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार। तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच। [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर। काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ। ढिंग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ। सजि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं। दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. कृ. को.-अछेक। (४) ए. कृ. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यौं। (६) मो.-सत्तह। (७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

बेर बेर आवंत इह। मानै मेछ न संधि ॥
उरह लीन प्रथिराज को। आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुनत बचन कैमास के। कही राव चावंड ॥
आन राज चहुआन पिथ। हौं मारौं गज झुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनि संभरि नृप मौज दिय। हैवर सहस मँगाइ ॥
मनि मोती सोव्रन रजक। हसती [1]सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
गैवर दस हय सात सै। दिय कैमासह राइ ॥
तुरी तीन सै बीज गति। दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतो के नाम कथन।

भुजंगी ॥ चल्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं। चढ़े लष्प [2]पावं समं सूर साजं ॥
चलै मुष्प अग्गै सुहथ्थी हजूरं। मनो प्रब्बतं भिरन मद भरत पूरं ॥
छं० ॥ ३० ॥
चल्यौ मंच कैमास सा काम अग्गै। वियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै
जूचल्यौ लंगरीराइ रन्न जंगं। सकं राइ गोइंद सा काम अंगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
*चल्यौ चच कन्हा नरं नाह रन्नं। चले बीर पामार तेजं तिनन्नं ॥
†बरं बीर नर सिंघ हर सिंघ दोऊ। भरं राम वड़ गुज्जरं कनक सोऊ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरन्नं। चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं दरन्नं ॥
नरं निद्दुरं सूर कमधज्ज रायं। चल्यौ बघ्घ बघ्घेल रन जुरन चायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम।

भुजंगी ॥ चल्यौ तमकि षुरसान साहाब भानं।
चली फौज तत्तार षुरसान षानं ॥
वरं रुस्तमं षान [3]आषूब मानं।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं ॥ छं० ॥ ३४ ॥

(१) मो.-सत्त अनाइ। (२) मो.-एकं।
* ए.कृ.को-चल्यौ सथ्थ काका नरनाह कन्हं। † ए. कृ. को.-बरं बीर हरसिंह बरसिंह दोऊ।
(३) मो.-आकूब।

द्विपैं पान दरियाव दरिया सजानं। लुप्यौ अस्व [1]पुर षेह रवि आसमानं॥
चल्यौ पप्परं धार पति पान षानं। उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूपान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गप्परं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥
चल्यौ [3]पतिक मारुफषां सो अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी [4]पठानं॥
चल्यौ हव्वसी एक हव्वीवषानं। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥
चल्यौ ग्यास दीचस्त गरुअत्त पानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना ।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन। दोउ समद समान॥
उत साहिब षुरसान कौ। इत संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन ।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्य राजं॥
वरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौंसद्ध बैरत्त वानं॥छं०॥४०॥
षरौ फौज में सीस सुविहान छचं। तिनं देषतें कंपड़ै चित्त सचं॥
तहां धारि हथनारि कमनेत पचं। ....॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त वैरष्ष की वंनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥
तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। विना राइ चहुआन को सहै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो.-पुर हेवरं। (२) ए. कृ. को.-आगंम। (३) ए.कृ.को.-मलिक।
(४) ए.को.-प्रमानं। (५) ए.कृ.को.-"हलें रत्त चौरं सवै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि सूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मद्ध ॥
सुनि अवाज संसार। लष्य चयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्य पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ वर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥छं०॥४४॥
दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षवरि चहुआन। मंत्रि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्जौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडभ्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू धरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड महा भर ॥
तुम कुलीन वर लज्ज। लज्ज मो तुमह कंध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज वड्डै ॥
कहै ताम कैमास। राज दिन सुध लै चड्डै ॥
इह कहिय घाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज चल्यौ रबि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥छं०॥४७॥

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[1]सर नाम ॥
सुनी षबरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षबर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिपि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षबरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सनमुष मंडै [2]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिपि लिपि तहां सुब्भर ॥
मन्नी सु वत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग जंग [3]नृप नाह नर। कन्ह कंक अग्गें धरिय ॥छं०॥५०॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [4]सजी मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभैं पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत भै मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहां कन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [6]तीसरी फौज बाजिच वाजे॥
सहस पंच असवार गैहै सु पंचं। सहस पंच [7]मालैं सहै लोह अंचं॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं॥

---

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पब्र। (३) मो.-नर नाह नृप।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ. को.-चाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले याकै।

बरं पंच हथ्थी सहस पंच वाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भंलै पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥
सजी पंचमी फौज पामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभे पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त वर पंच [2]ठहुं॥
छं० ॥ ५४ ॥
इसी पंच फौजै चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाब को सहै तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चल्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छत्र [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब तब। सजि आयौ चहुआन॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ सुभै गोरियं जंग ठट्टौ गुमानं। उभै लष्ष वाजं सु तथ्यं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले लरै लोह पानं। .... ॥ छं० ॥ ५७ ॥
अढ़ी सहस मैमत्त मद भ्भर प्रनारं। दुजी ओपमा भ्भिरत भ्भिरना प्रहारं॥
भलै मीर देषे दिये देढ़ [4]लष्षं। इमं चढ्ढियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥
तियं फौज षुरसान षां चढ्ढि तेजं। उभै लष्ष असवार वर बाज मेजं॥
उभै लष्ष कमनैत हथनारि हथ्थं। सजे फौज नौहथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥
बनी फौज चौथी चल्यौ षान षानं। सुअं षान षंधार बर विरद वानं॥
दुअं लष्ष असवार पल्ले दुलष्षं। अढ़ी सहस हथ्थी कमन्नैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥
असी सहस असवार कारव लह[5] सेनं। सबै अंग सन्नाह विन दोइ नैनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चलै लष्ष दै जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बट्ट।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-लष्षें, भष्षें। (५) ए. कृ.-सहेनं,-को.-काव सनेहं।

सजी पंचमी फौज बनि इंन एवं । गुरं गप्परं पग्ग कट्टै रनेवं ॥
वली मरद कंमाल या वधं सथ्यं । लियै सकत मनसातकी गुर्ज हथ्यं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

सजे लष्य द्वै सुभट करि लोह सारं । तहां देषि पाइद्दलं दुष्य जारं ॥
तहा पंच हज्जार गट्टै गयन्नं । सजी पंचयं फौज सा [1]इंद्र व्रन्नं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना ।

दूहा ॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै । प्रथीराज कहि वात ॥
चौकी चढ़ि चक्रह कटक । दल अरियन करि घात ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥ चढ़िय सुचक्र सेन चहुआनं । सुवर सूर जोधा परिमानं ॥
उत सज्ज्यौ चक्रह सुरतानं । दीसै फौज मनों दधि पानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्र रच्यौ सुरतानं । प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं ॥
परी पवरि कहियौ परिमानं । पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर ॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कटी किरवान कसी ।
मय मत्त सुमंत, पढ़े वर पंत । सहस द्वै सूर, सहस्स असी ॥
दस सट्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसी ।
वर वान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी ॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन ।

कवित्त ॥ ग्यारह सै च्यालीस । सोम ग्यारसि बदि चंतह ॥
भए साह चहुआन । [5]लरन ठाढ़े बनि षेतह ॥
पंच फौज सुरतान । पंच चहुआन बनाइय ॥
दानव देव समान । ज्वान लरनं रिन धाइय ॥

(१) मो.-सावून्न इन्दं ।　　(२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच द्वै ।
(३) मो.-सुरतानं ।　　(४) मो.-पय्यदार ।　　(५) मो.-मरन ।

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। वीर कहर चच्चर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिष्फि लग्गे दुअं भूप छिची ॥
छं० ॥ ६९ ॥

समं कन्ह षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह षुरयंन सुझ्झंत भानं ॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥

चढ्यौ कोपि परचंड परमार जैतं। उतै गष्परं झाम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै अत्य चहुआन सुरतान आनं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तहां कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लाजं ॥
इकं एक सेलंत कढ्ढंत कोपं। इकं एक जमदढ्ढ करि सेइ धोपं ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इकं एक फरसी सु कढ्ढंत हथ्थं। इकं एक गुरजं लरै सूर वथ्थं ॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी जुरंता। इकं एक सूरं उठैं भू[2] भिरंता ॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम द्वै लरैं। हिंदू तुरक न्नघात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै स्रोन छंछं जरे जानि [3]डुंडं ॥
इकं सूर सेलं करं कढ्ढि तेगं। *इकं हथ्थ कम्मान संचत्त वेगं ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इकं इक्क हथियार बिन लात घातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं ॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तिमिति भानं। इकं जम्मदढ्ढं लरैं लै जुवानं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

---

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-झुंडं।
*मो.-"इकं अस्व कीनं रिनं वायु वेगं।"

इकं वीर वर वीर वैठे [1]विमानं। इकं क्रूर क्रूरं निरष्यंत पानं ॥
इमं जाम द्वै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]वाज गजराज नरराज गाढ़े ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त ॥ घेर्‍यौ न्टप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ ॥
जंग करै चामंड। परिग गज भ्रुंडन जुट्टौ ॥
वाग लेइ वगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ ॥
करन कढ्ढि करिवार। दंत सम भसुँड सु तुट्टौ ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड सुप। रुप किन्निय सुरतानं [3]तन ॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ कलह राइ चामंड [4]करि। इह मार्‍यौ गजराज ॥
साह गहन कों मन कर्‍यौ। चढ्यौ [5]हांस लै वाज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग ॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग ॥
जहां हक्यौ तहां भिर्‍यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय ॥
पग्ग ताल वाजंत। सीव तरवर वन तुट्टिय ॥
[6]कतरीय पुरप गय घर मुरिग। चंद वरद्दिय इम भन्यौ ॥
भाजंत भीर तुष्पार चढ़ि। चौंडराव चावक हन्यौ ॥ छं० ॥ ८० ॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब ॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गहौ तुम षूब ॥ छं० ॥ ८१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुमानं।   (२) मो. राज।
(३) मो.-नन।   (४) ए. कृ. को.-काहि।
(५) मो.-हंस।   (६) ए. कृ. को.-कसरी।

कवित्त ॥ षूब षान तहां लाल। बान बरषंत वीर पर ॥
हद्द मरद्द मारुफ। [1]नेज फेरंत कहर कर ॥
हसन षान सेहथ्थ। षग्ग वाहंत सीस पर ॥
कढ्ढि कटारिय जंग। अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर। दाहिम्मै कीनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ वर। कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल षान दुअ बान। तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि हय अंग। एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ। जंघ [2]हय उर महि भिद्दिय ॥
हसन षान तरवारि। मारि द्वै घा मुष किद्धिय ॥
आकूब कटारी कढ्ढि कर। घल्लिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम। भगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना।

दूहा ॥ च्यारि षान चामंड इक। एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अप्प दाहिम्म कौ। भिऱ्यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग। [3]अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रीस। सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब। षूब जस लियौ लोह लरि ॥
हसन मारि कट्टारि। पारि मारूफ मुऱ्यौ धर ॥
मारूफ मुऱ्यौ उछऱ्यौ हसन। आकूबह सिर धर पऱ्यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय। लाल षान रन बिफ्फुऱ्यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खां का वर्णन।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग। [4]लाल बरन हय अंग ॥
लाल सीस सिंधुर धजा। लाल षान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेज। (२) मो.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-इह। (४) ए. कृ. को.-अंग।

कवित्त ॥ लाल वरन वानैत। षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
पान पान किय घाउ। कंध कटि गिर्‌यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड। बिरचि फिरि वीर पचार्‌यौ ॥
गहिय तेग षां लाल। अग्ग न्रप धरनि पछार्‌यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय। केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकथ्थ सुनौ हिंदू तुरक। जै जै सुर नारद [1]करहिं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि। सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम वल। रन ठढ्ढौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप।

कवित्त ॥ रन ठढ्ढौ चामंड। मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[2]हयह चढ़ायौ आइ। वहुरि मुष वचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध। इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[3]तो विन जग सब धंध। अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि वाज आज संग्राम में। राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूव से। षल षंडे ते अंग वर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर। [4]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठढ्ढौ इक षिनक रन। करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तव। तुम मेरे वड़ भ्रात ॥
क्यों षिची देषै षरै। कलि न अमर इह [5]गात ॥
कलि न अमर इह गात। बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हक्कारि। बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मचाइ। तबहि गज्जन पति [6]ग्रहिहै ॥
लरत किंत्ति होइ तुरत। तुरक हिंदू सब [7]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) मो.-कहिय। (२) मो.-हयनि।
(३) मो.-"तो बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ।" (४) ए. कृ. को.-रक्त।
(५) मो.-घात। (६) ए. कृ. को. ग्रहियै। (७) ए. कृ. को.-कहियै।

कैमास का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज षां। जाज षान महबूब ॥
मान म्रदन कैमास कौ। लगि षुरसानह पूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि की बत्त। सत्त सव मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]अस्मान। बान कस्मान प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार। हक्क मंची तहां टेर्‍यौ ॥
जबरजंग नीसान। मनहुं वद्दल घन घेर्‍यौ ॥
जिम पथ्थबान कर वेग गहि। च्यार्‍यौ कैमासह लगे ॥
दिष्षेव सबल संग्राम भर। ब्रह्म जोग निंदह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥
नीर मीर [2]सक सस्त्र। मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान। बान वाहंत पथ्थ जिम ॥
जाज षान दुअ बान। तानि मार्‍यौति पर्‍यौ धम ॥
तप्पि बाज सहबाज। मरद [3]महबूब सुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन महि। जाइ जुर्‍यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंची सरिस। लरत घाव दुअ घरिय श्रम ॥छं०॥९४॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना।

भुजंगी ॥ धरियजुद्ध द्वै षरिय बितीमध्यानं। जुरेज्वान हथ्थं सुबथ्थं जुधानं॥
दलं दोई बीरं बरं जुद्धवानं। धकं धक्क हक्कंत षेतं सु ढानं ॥छं०॥९५॥
वहै सस्त्र अस्मान कस्मान बानं। गिरैं तथ्थ हिंदू तुरक्कं अघानं ॥
करै स्हर स्हरं सु घावं क्रपानं। इकं तेग लग्गे सु ठट्ठे [4]घुमानं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
मनों घुम्माई ध्यानं जोगिंद बानं। लरै स्हर सामंत जो जाउ मानं॥
जुरै जंम रंगं सु ठट्ठै गुमानं। तहा मंचि कैमास महबूब षानं॥छं०॥९७॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं। इसे सुभ्भियै तथ्यलै षग्ग पानं॥

---

(१) मो.-असमान। (२) मो.-सब।
(३) मो.-महमूद। (४) मो.-गुमानं।

घनं घाव वज्जंत सो द्वै समानं। जुरे ताज सो वाज सम जुद्ध ठानं॥
छं० ॥ ९८ ॥

जुरे च्यार पानं सु षावंड [1]मानं। जुरै अंग अंगं करै अप्प [2]मानं॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं। .... छं० ॥ ९९ ॥

रुप्यौ मंच महनून दुअ जुद्ध थट्टं। तिनं वाहियं उअर नह तेग तुट्टं॥
तवै थरहरे काइरं कंपि नट्ठं। तहां ताज षां षान रायंत पुट्ठं॥
छं० ॥ १०० ॥

दलं देवता जुद्ध देषे विमानं। तहां देव निवरंत अच्छरीय गानं॥
तहां चौसठी वारत भरि पच चल्ली। तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥

तहां स्वांमि कामं [3]लरै हिंदु मीरं। इमं सस्त्र वस्त्रं षुटे तीर तीरं॥
तहां मल्ल जिम लरैं वलवंत श्रीरं। .... छं० ॥ १०२ ॥

तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं॥
तिसे दरसियं सूर दंतं दँतानं। तहां हथ्थजोरं सु हत्थी हतानं॥
छं० ॥ १०३ ॥

सुभै ठाम ठामं परे तुरक भुंडं। तहां हद्द हिंदू भये षंड षंडं॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड। .... छं० ॥ १०४ ॥

तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं। तहां केस कुस दंत वगपंति मानं॥
तहां भोर ज्यों भँवर हथ्थं करारं। तहां कंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥

तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं। तहां तीसरी नदिय वहिपाद्य ऐनं॥
तहां श्रोन की सरित जल पूर भल्ली। तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मंगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामंड सम। किय सहाव वर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-समानं। (२) ए. कृ. को.-पानं। (३) मो.-लहै षग्ग वीरं।

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ घरिय दोइ बर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे॥
मंचि मिया महबूब। [1]जंग से अंग निहट्टे॥
परिय मीर [2]सिर मार। भार दुअ भुज वर पिल्लै॥
घायत्तन घन घुंसि। चाय पिची षग षिल्लै॥
षग षेल खेल महबूब सिर। कैमासह कर टारियौ॥
तकि बाज षान बल [3]चंड करि। गहि गिरदान पछारियौ॥
छं० ॥ १०८॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज घाव घन॥
पहुंचि जाज परिहार। धार मीरन सिर बड्डिय॥
रन जित्यौ दाहिम्म। कित्ति पहुमी पर चड्डिय॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक॥
सुनि बत्त साह संमुह अरिय। जनु असि वर उग्गयौ अरक॥
छं० ॥ १०९॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला॥ मत्त मत्तं लरी, म्रेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, सूरिमा संभरी॥
छं० ॥ ११०॥
काइरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्षं बरी, तेन धीरं धरी॥
छं० ॥ १११॥
षग्ग षग्गें जुरी, सस्त्र कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी॥
छं० ॥ ११२॥
ईस मालं धरी, [4]ग्रम्म जालंधरीं। राइ चामंडरी, जैत लड्डी घरी॥
छं० ॥ ११३॥

(१) ए. कृ. को.-जंम। (२) मो.-पर।
(३) ए. कृ. को.-षंड। (४) ए. कृ. को.-ढिल्या।

तेग लग्गी तरी, म्लेच्छ अभ्भंतरी। मीर छुट्टे धरी, साहि ढिल्ल्यौ करी॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलंत। मीर हक्कंत प्रबल दल ॥
षां ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सबल बल ॥
चक्रसेन चहुआन। लोह वाहंत आय षल ॥
नर हय गय गुंजार। लोह लग्गंत हयद्दल ॥
असि मार धार आकास उड़ि। उट्ठि जुरंत कमंध रिन ॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिपंड पंडे [1]करिन ॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना।

तब सहाव सुरतान। बान कंमान कोपि धरि ॥
अलूषान आलंम। सार बहि [2]कढ़ी सु षुप्परि ॥
चक्रसेन सिर षंडि। कियौ दह भरे लोह लरि ॥
षां ततार रुस्तंम। षांन षुरसान रहै डरि ॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। सूर नूर सामंत सुष ॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुष ॥ छं०॥११६॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रुष लरत। करत अंग अँग मार ॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकबान प्रहारिय ॥
एक बान चामंड। लग्गि भुज दंड सुहारिय ॥
दुतिय बान सिर बहिग। चक्रसेनह सिर संधे ॥
सुकर कढ्ढि अप बान। षंचि बसतर [3]सम संधे ॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि। बिजल षान वगसी बह्यौ ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जै जैं कह्यौ ॥ छं० ॥११८॥

---

(१) मो. किरन, करन। (२) ए. मो.-कढ्ढि।
(३) ए. कृ.-सस।

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ घाइन पारिय॥
चक्रसेन षग वहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि क्रपान कासिम्म। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टैति मीर तिहि साह रिन। छच धार छचिय षगन॥
दाहिम्म जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं० ॥११९॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय घाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पर्यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिर्यौ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंगोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सचह बरस सपन्न। राय बाहर कौ जायौ॥
कलिजुग जस बिस्तरिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मारयौ मीर [5]जद्दव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

(१) मो.-लगन। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौ।
(३) ए. कृ. को.-रत रिन्यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार।
(५) ए. कृ. को.-जब दल।

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधवार ॥
समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥

भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन वेर वीरं । जुरे संभरी साहि सिरदार श्रीरं ॥
नरं काइरं झम्मखे भग्ग भीरं । चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥

तहां च्यारि वंधौ भए एक सूरं । लगे मंच कैमास दिष्षै करूरं ॥
लगे वान कंमान फुट्टै परारं । कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

तहां राग मारू वजै तवल तूरं । घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्क चूरं । तहां हूर रंभा वरै वरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे । तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान घर । वंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के । मेटि प्रवल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना।

कवित्त ॥ मेटि प्रवल दल पूर । साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
वाज राज चामंड । मंचि वंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि वाहि कैमास । पीत वाने विच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड । तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
कट्टिय सु सुंड गज दंत सम । गिरत गज्ज साहाव धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सद्द अमर ॥छं०॥१२८॥

चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं । साह सहाव ग्रह्यौ कैमासं ॥
सचह षान परे चिहु पासं । जै जै सबद भयौ आयासं ॥छं०॥१२९॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार । डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंची सुरतान । बंधि बिय राज पास गय ॥

दिष्षि न्रपति साहाब। तास अप्पन हिय डरयौ ॥
किय हुकम्म चहुआन। आनि सुष्यासन धरयौ ॥
न्रप जीति चल्यौ दिल्ली पुरह। उप्पाऱ्यौ चामंड वर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां। उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना।

उप्पारिग चहुआन। राज बंधव सु चक्कधर ॥
रामकिन्न गहिलोत। बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ। बीर कैमास अलुज्झिय ॥
सामल सेषा टांक। नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्परि षेत सामंत षट। पट्टपुर भारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत। रहे षेत कंदल करिग ॥छं०॥१३१॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा।

दूहा ॥ जे भग्गे तेऊ मरे। तिन कुल लाइय षेह ॥
भिरे सु नर गय जोति मिलि। बसे अमरपुर तेह ॥छं०॥१३२॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बांट देना।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज। दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ। बाज हज्जार अट्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज। दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज। सुभर उप्पारि संक्ष रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह। बड्डाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय। चंद अष्षि कीरति अमर ॥छं०॥१३३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षटू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४३॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग न्रप । नित्त पटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु, बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता वैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल स्रोन सम । पियै सचु, अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्धि रन ॥
हरि हरि सुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्प चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंम [1]षित्रीय । करे संताप तात कहां ॥
पग धार पंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सम । आवूवै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के वचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुत्र ॥
कितक बत्त चालुक्क । किम सु ऋंगमय जुद्ध तुत्र ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पन ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) मो.-छत्रिय ।

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा ॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय। पुनि सु पिंड दै तात ॥
सहस धेन संकलप करि। ग्रंथौ कथ्य व्रतांत ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहु सामंत सूर [1]सम ॥
जो निरमान भवस्य। सोई संपजै क्रंमक्रम ॥
जदिन भीम संग्रह्यौ। सोम उग्रह्यौ तदिन रन ॥
जोगिनि बीर बेताल। करौं संतुष्ट [2]चपति तिन ॥
घृत छंडि पाद्य बंधन तजिय। सजिय अप्प संभरि दिसह ॥
अवतार भूत दानव प्रबल। अगनि अंग प्रज्वलि रिसह ॥छं०॥६॥

गाथा ॥ जाइ संपते सूरं। ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं ॥
पिष्पिय नैरवि रूपं। भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिको की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहना।

दूहा ॥ भूमि सयन प्रथिराज करि। निसा बिहानी निट्ठ ॥
[4]अरुन समै उद्योत हौं। मंडि सभा सुभ बिट्ठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

पद्धरी ॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ। [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ ॥
कर जोरि सभा सब उठ्ठ ताह। नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि॥छं०॥९॥
चष पटी रहत जिन रत्ति दीह। बज्जंग अंग [7]संगर्‍यौ सीह ॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै घट्ट घुम्मि। तब बीर सूर सोमेस भुम्मि ॥
छं० ॥ १० ॥

---

(१) मो.-सव। (२) मो.-नृपति।
(३) ए. कृ. को.-सहयं। (४) मो.-असन।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत। (६) ए. कृ. को.-सज्जंत।
(७) ए. कृ. को.-संकर्‍यौं।

फुनि आइ जाम जद्दव नरिंद। जमनेस भेस वज्रंग ज्यंद ॥
वलिभद्र आइ कूरंभ देव। वहु भंति भूय जिन करत सेव ॥छं०॥११॥
पुंडीर आइ तहां चंद वीर। सम इष्ट इष्ट स्रृंगार श्रीर ॥
अतताइ आइ चहुआन चंड। जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

लंगरी राव तहां वैठि आइ। जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ। पर भूम झूम देयंत दाउ ॥ छं० ॥१३॥
लघु दिग्घ सूर सामंत सब्ब। वैठे जु आइ [1]दरवार तब्ब ॥
फुनि चंद चंड वरदाइ आय। जिन प्रसन देव द्रुग्गा सदाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही [2]सब्बहि सुनाइ। सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरौ गुज्जर नरिंद। पनि पोदि [3]काढ़ौ चालुक कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमाल वत्त भीमंग कीन। जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनी गर्भ कढ्ढौं नरीन। प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥१६॥
जहां जहां निसंक वंके सवास। पनि पोदि डारि दीजैं अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सव। बोलिय जोतिगराइ ॥
सद्धि महूरत चढ्ढियै। जिम अग्गै [4]जीताइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्षिय लगन। धरी महूरत जोइ ॥
इन समयै जो सज्जियै। सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्का-र्यौ जगजोति न्रप। कहौ महूरत सद्धि ॥
जीति होइ सद्धौं वयर। सिंचो अग्गि समद्धि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो.-दरबार। (२) मो.-सब्बन।
(३) ए.-चढ़ौं। (४) ए. कृ. को.-जैपाय।

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम । भोम पंचम अधिकारिय ॥
राह बीर अष्टमो । वक्र सत्तम सुद्धारिय ॥
जंगम थावर धरिय । हलिय तिन नाम सेन भर ॥
कहै विप्र प्रथिराज । राज पंचम पंचम गुर ॥
[१]मन काम होइ सो किज्जियै । अरि जित्तह पद्धर दिवस ॥
पिट्ठीय पवन रष्षै सहन । तौन बसाइय काल वस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिय । चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन । तौ तन भग्गै षग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति । राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन । बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्ष आरुहहि । लष्ष लष्षन षग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन । पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[२]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय । एक बत्त संमुह मँडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ । तौ हथ्थह पचौ छँडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना ।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन न्रप । पर धरती सकबंध ॥
असम समै साहस [३]हसह । हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चल्लिय सज्ज्यौ सयन । बोल्लि भ्रत्य प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै । बट्ठि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर साज । बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजे जिति विजैपाल । सोइ राजन जस [४]छज्जिय ॥
तर उतंग इल [५]मूल । भूप [६]बल्लिय चित चढ्ढिय ॥
जय जय जय उच्चार । देव दानव नर पढ्ढिय ॥
सामंत गत्ति साध्रम्म धर । उद्धारंन बर बैर षल ॥
चहुआन सज्जि चालुक पर । बीर बीर बढ्ढे [७]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

---

(१) मो.-मम । (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर । (३) मो.-करान ।
(४) ए. कृ. को.-सज्जिय । (५) ए. कृ. को.-रूप ।
(६) ए.-चाल्लिय । (७) ए.-सकल ।

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मानं । वितीतं जाम भज्जयो नथ्यं ॥
अरूनोदय चहुआनं । म्रगया आइ पच्छिमं थानं ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सा मृगया चहुआन । राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न । राज एकंग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि वीर । भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहूं दिसिन संभरिय । सेन सज्जी मति भोगं ॥
जित्त तित्त फौजन हलिय । चलिय सूर सामंत बर ॥
संपत्त जाइ चहुआन कों । निढ्ढुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निढ्ढुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निढ्ढुर मन संजुरि सयन । मिलिय आन प्रथिराज्ज ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उल्लटिय । कै चित्रकूट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर । घन घुंमर बरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जिया । बढ्यौ स्रवंनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज प्रथिराज सेन । कपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय म्रजाद । दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥
चर चरत चरित जंगल नरेस । बढ़ि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब षबरि कही भीमंग जाइ । सज्जि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सामंत नाथ सामंत जोर । बढ्ढे कि जानि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह । अलभंग जंग बढ्ढे बलेह ॥छं०॥३३॥
इत तज्यौ पान चहुआन राइ । चिंतै सु चित्त बल विषम घाइ ॥

(१) मो.-ज्यों ।　　(२) मो.-तेन, बलेन ।

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंड्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [1]अभंग। अप अप्प विहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरो षग्ग पल विषम घाइ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनी दूत। [2]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फरकंत बांह थरकंत कंध। चष [3]चढ़ि कपाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुलाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन करन सांज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ्ढि आए नरेस ॥छं०॥३७॥
दुअ सहस षान तेजी पठान। हथनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्पर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस ढ्रेड़ सोरठ्ठ ठाट। तिन सहस विषम अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेंच कोली करूर। कमनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग॥
चढ़ि मचि [4]मुकुंद कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठ्ठवार कठ्ठी नरिंद। तिन सचु, सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिग्घ और को गने देस। इतने कटक्क आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [5]गुरज षंड। जनु [6]जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मो.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चरि। (४) मो.-कुंद।
(५) ए. कृ को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

दूहा ॥ चढ़े देषि चालुक्क दल। वहुरे संभरि दूत ॥
भेष दिगंवर दुति तनह। जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गनिका कविचंद की। ठग विद्या परवीन ॥
दूत धूत अनभूत मन। नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ संमुष पिष्पिय राजं। वुल्ले वयन सुहित्त सुभाजं ॥
चढ़ि चालुक्की गाजं। नर भर समुद उलटि जनु पाजं ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्ष सेना सकल। अकल कलीनह जाइ ॥
इक्क सहस मद गज करी। दिष्पिय जानि वलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ इम भंजो भीमंग। जुद्ध जौ माहिं जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय। दंग जरि जात सघन घन ॥
इम भंजो भीमंग। भीम कुरुनंद पछारिय ॥
यों भंजो भीमंग। सगति महिषा सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भीमंग सम। अगनि तेज वायं हिता ॥
प्रथिराज नाम तद्दिन धरौं। उदर फारि कढ्ढों पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चल्लिय। करिय पंति भर साज ॥
चावद्दिसि वन विंटि कै। मद्धि संपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय। पग पंती मन मझझह जग्गिय ॥
जमुन विहड़ विंटिय वहु वंके। भालि सिंह वाराहन हंके ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन वन में पड़ाव पड़ना।

दूहा ॥ जमुन वंड वंके विषम। हंकत पत्तिय संझ ॥
जो जहां हुतौ सो तहां। हुअ डेरा वन मंझ ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]वढ़ि हुते। उत्तरि संध्या सूर ॥
अन्न पान पहुंच्यौ सकल। कहा नीरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनों पचमं। * मो.-मुरिल्ल।
(२) ए. कृ. को.-चढ़े।

हुक्कम नकीबत कह फिरै। डेरा डेरा गाहि॥
जो जिय जा ढिग निक्करै। राज न षिज्जै ताहि॥ छं० ॥ ५२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुभित सब्ब सेनायं॥
पासं न्टप कयमासं। सो सुत्तं षग्ग बंधाइं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं बीरं॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नट्ठियं कालं॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ राज पास कैमास। कन्ह कनक्क सब्बूरा॥
सबर सूर पांमार। जैत साहिब अब्बूरा॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति षंडं॥
सारंग सूर कूरंभ बलि। बर पहार तूंअर सुभर॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर बीर पर॥ छं० ॥ ५५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। बत्त आषेट विचारिय॥
सुनौ सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय॥
जंत जीव जग्गै न। तंत क्रम सिद्ध न होई॥
पुब्ब श्रवन संभव्यो। निगम [4]जंपे बर लोई॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सद्द सुनि॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुबर सगुन बज्जै सु धुनि॥
छं० ॥ ५६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा।

---

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्टियं।

(३) ए. कृ. को.-सकल।

* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीराति पंडं"।

(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुबन।

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिंती चहुआनं। वर सासत्ति सद्द सुनि कार्नं ॥
घरी अद्ध अद्धं निरमानं। कहै वीर कन्हा चहुआनं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ प्रात प्रगट वत्ती कहिय। आगम चिंति प्रमान ॥
सुनर काल वित्ती घरिय। कलह परै परथान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ श्रवनं [1]सुनि सामंतं। रत्तं आचिज्ज मत्तयं [2]युद्धं ॥
आगम होइ प्रमानं। भूकंपं [3]पकयं पंडं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

मुरिल्ल ॥ कालं सुचंपि कालं कराल। इन सगुन सूर आवृत्त ताल ॥
आसुझ्झ सुझ्झ नंजिय प्रकार। वर वीर भीर विस्तार भार ॥
छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग सूर सामंत सव। कहि आगम सत काज ॥
सिंघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
जिहित सूर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
सोई सगुन ए सद्धियै। काल न चंपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सवेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

अरुन उदै जग्गे नृपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
सरन कमल थल भरन मुप। फूलै आनद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भानं। विसत वसंमति अभ्भत थानं ॥
को चंपै कै मरन जरूरं। यों मत मंत विमंत करूरं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चढ़ि पति घट्टि सु सब्ब रसालं। अर वरि वीर अरं वरि भालं ॥
जिते सगुन दिषि रत्ति प्रमानं। तिते कहे चक्रित चहुआनं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ संभरि रा संभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
कछु सगुन्न निसि उच्चर्यौ। सुनहु सु जंपहु काज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुर। (२) ए. कृ. को.-सूर। (३) मो.-कीनयं।

कहै सब्ब पयलग्गि भर। भर निहचै सामंत ॥
जु कछु राज दिष्यौ नयन। जंपि झंपि वर कंत ॥ छं० ॥ ६७ ॥
गाथा ॥ सो संघौ निसि सद्दं। वद्दे कान्ह तीनयो सद्दं ॥
नं जानय किंमानं। परिमानं किंनयं होइं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक ॥ दिन सद्द सगुन्नन मद्द घरी। कलहंत विपमति बीर भरी ॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं। घरि एक घरी महि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
भय [1]उत्त भयानक बीर भटं। कलहंत कलेवर बीर घटं ॥
छं० ॥ ७० ॥
दूहा। कलह कलेवर बीर घट। सगुन सु छत्तिय पान ॥
सुबर राज बद्धै विषम। देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्यौ नयन। न को मरत दिष्पान ॥
मात गरभ आवन [2]गमन। कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम। जस अपजस लभ [4]हानि ॥
जिन जिन जुरि धर नष्षयौ। सो दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥
सो दुरजोधन जोधवर। सग्गुन बंधिय पान ॥
सुई अग्र नन भूमि दिय। बर भारथ्थ प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना।

गाथा ॥ बर भारथ्थ प्रमानं। जानं जुद्धाय बीतयौ घटयं ॥
अट्टत छत्तं चारौ। सगुनानं लभ्भियं पारें ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मुरिल्ल ॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि सूरं। सुघट घटय जमुना जल पूरं ॥
पथ इंदय अवत्ति पति सूरं। मयति काल विग्यानति सूरं ॥छं०॥७६॥
दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति। भयति भयंतर जुद्ध ॥
कानन बीर सु हक्कयौ। सुबर बीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अत्य। (२) ए. कृ. को.-जनम।
(३) मो.-बन्धौ। (४) ए. कृ. को.-भांन।

बन हंकन न्टप हुकम भय । जहँ तहँ गज्जत सूर ॥
तबल तूल चंबक चहिय । कह नीरे कह दूर ॥ छं० ॥ ७८ ॥
घुंघर गज घंटानि धुनि । हय गय हस मह लच्छ ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय । कानन हांकिय पच्छ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना ।

कवित्त ॥ छुटत तीर चिंहु पष्ष । सद्द बज्यौ सु सूर घन ॥
सिंह सद्द पर सद्द । बज्जि पर सद्द मत्त प्रन ॥
रद विमद्द गज भद्दग । बान भग्गे मन आररि ॥
हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट लग्गे पति गाररि ॥
गौम्रत्त भृत पंचाप नय । कानन पति कानन भुकिय ॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय । जत्ति काल कालह बकिय ॥छं०॥८०॥

दूहा ॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित । सिंघनि सिसु यह प्रथ्य ॥
काल नाग नागिन जग्यौ । बर बीरां रस हथ्य ॥ छं० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन ।

पद्धरी ॥ भाल्यौ सु सिंघ इक षेल वार । हूतौ सु मद्ध कंदर लवार ॥
लद्धी सु वास नर निकट जानि । ग्रज्ज्यौ सु गर्ज्ज नभ घोर वानि॥
छं० ॥ ८२ ॥
पुच्छिय पटक्कि मंडिय सु सीस । वक्कारि उंच सिर दुदस दीस ॥
छुट्टंत झाल जुगनेन दीस । चाटंत मुच्छ रिस अधिक हीस ॥छं०॥८३॥
तिष्षे सु जोर जमदट्ठ वंत । फट्टंत धरनि हथ्थल तुरंत ॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुषार । देषंत दंत जनु काल धार ॥
छं० ॥ ८४ ॥
सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्य । लीनौ सु घेरि सामंत सथ्य ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना ।

कवित्त ॥ झपटि लपटि जनु अग्ग । कन्ह दिसि किन्न लटक्किय ॥

अतुल पाइ बल अतुल। अग्गि जलु जग्गि भटक्किय ॥
जाजुल्लित गंभीर। गरुअ सद्दअ उच्चारिय ॥
छाइ छाइ आरिष्ट। राज हक्कम बंक्कारिय ॥
असवार चूकि चप्पौति हय। करि वुंडल कम्मान रजि ॥
नर नाह वाह अवसान फवि। परिय बथ्थ नर अस्व तजि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्ह जुग जानि प्रलै वर ॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह [1]जम जोध अडर डर ॥
कंध कष तिन चंपि। कन्ह कढ्ढिय कट्टारिय ॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय ॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्डु मंस नस झूर हुअ ॥
जय जय सु सद्द षह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंघह सूर। कन्ह जंगह चहुआनं ॥
भयौ नूर मुष सूर। सगुन लद्धौ परिमानं ॥
उट्ठांइ सेन सजि राज। गुज्ज बुझ्झी न मझूरति ॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति ॥
आकास मध्य तारा तुटै। यों तुट्टौ अरि सेन पर ॥
कल मलत सेस काइर कंपत। कीजहि उज्जर जारि धर ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी बीरता की प्रशंसा।

गाथा ॥ सूरं किरन प्रकारं। सारं मार जुद्ध मय मत्तं ॥
कै देवत्त विछुट्टा। कै [2]जुट्टा कालयं करनी ॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

---

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामंत। मत्त मत्ते जनु चल्लिय॥
[1]सो चौसट्ठि हजार। भार भारथ वै हल्लिय॥
चामर छत्र रषत्त। छच दीनौं सिर कन्ह॥
छुट्टियि पट्टिय अंषि। बिरद नरनाह जिनन्ह॥
सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ। अग्ग फौज प्रथिराज बर॥
पचछली फौज निद्दुर बलिय। ता पच्छैं पंमार भर॥ छं०॥ ९०॥

दूहा॥ कूच कूच जिम जिम चले। तिम तिम छंडत मोह॥
ज्यों [2]बंच्यौ दुज राज ने। तिथि पचानह सोह॥ छं०॥ ९१॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन सूर। दैवत्त वाह दुज्जन करूर॥
गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास। दल बढ़ैं राज जंगल सु चास॥ छं० ॥९२॥
कलमलिय काय कंकह कठोर। *सारथ्थ किस सम राज जोर॥
करि गिरद सेन सज्जी सभंति। मानों कि भांति किरनाल पंति॥
छं० ॥ ९३॥

कलमलित कमठ भर पिट्ठ भूमि। सल सलित सेस सामंत भूमि॥
हलमलत ग्राव बंके मेवास। षल भलत पंषि सम सहि न चास॥
छं० ॥ ९४॥

चल मलत रैन सुझ्झै न पंथ। झल मलत सूर जनु समय अंथ॥
नल टलत चित्त काइर सु संक। गल बलत सूर जनु कप्पि लंक॥
छं० ॥ ९५॥

नल कलत अस्व रह बल सु चाल। तल फलत ढाल हिरनाल फाल॥
दल हलत जानि सरिता सपूर। झलहलत छौल साइर हिलूर॥
छं० ॥ ९६॥

थल जलत इक्क मिलि कीच उट्ठि। मिलि चलित संसि सामंत सुट्ठि॥
फल फलित मरन बंछत जिन्हैं न। कल कलत चंद कबि बल तिन्हैं न॥
छं० ॥ ९७॥

(१) मो. सौ, कृ.-सीं। (२) मो.-बन्ध्यौ। * मो.-"सारथ्य कि सूर सम राज जोर"।

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक *चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अहो चंद चंदह मरन। दिन दिन 'सल्लै दुष्ष ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम। मंगै वैर समुष्प ॥ छं० ॥ ९८ ॥
*ले चल्लौ न्रप भीम कौं। चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पषधरी। इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ९९ ॥
कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ। करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न। अपन झुझ्झै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय। भीम सम संभरि वारं ॥
तात बैर संग्रहन। वचन तत्ते उच्चारं ॥
गज भाट सुभर घट भंजि तुअ। सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं। तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान। बरषि घन अम्रत धारं ॥
बालमीक पीयूष। सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत। आनि बब्बर पताल मनि ॥
वेद व्यास भारथ्थ। सकल छोहनि दीपक बनि ॥
चहुआन कहाइय चंदकर। पिता वैर कज इह बयन ॥
*चालक्क भीम उन सम सुनहु। तुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह। गरै जारी जंजारह ॥
नीसरनी कुद्दाल। दीप अंकुस आधारह ॥

(१) ए. कृ. को.-चल्लै।

* चुल्लू==स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड में चिन्नू चुन्नू भी कहते हैं। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त मो. प्रति में नहीं है।

काल्ह रूस संग्रहै । गयौ चालुक दरबारह ॥
इह अचंभ जन देषि । मिल्यौ पेषन संसारह ॥
भेज्यौ सु भीम भोरा सुभर । कहिय बत्ति संभरि वयन ॥
हौ भट्ट चट्ट बोलहु कयन । कहा इहै डंबर सयन ॥ छं० ॥ १०२ ॥
इन जाल संग्रहो । जाम जल भीतर पड़यौ ॥
इन नीसरनी ग्रहो । जाम आकासह चढ़यौ ॥
इन कुद्दालैं पनौ । जास पायाल पनट्ठौ ॥
इन दीपक संग्रहौ । जाम अंधारैं नट्ठौ ॥
इन अंकुस असिवसि करों । इन चिस्लूल हनि हनि सिरों ॥
जगमगैं जोति जग उप्परैं । तोडर प्रथम नरिंदरैं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे ।

जाल ज्वाल करि भसम । करस नीसरनी कट्टौं ।
घन भंजों कुद्दाल । दीप कर पवन झपट्टौं ॥
अंकुस अंकुर मोडि । तिनह चस्लूल संकोड़ों ॥
हनन कहै ता हनौं । जोति जग मच्छर मोड़ों ॥
हौं भीम भीम कंदल करों । मो डर डंक अचंभ नर ॥
मम करइ ग्रब्ब धरि लज्ज अब । वित्तक पुब्ब परचि पर ॥ छं० ॥ १०४ ॥
रे डंदर [1]विड्डाल । कोइ कारन भिर मच्चौ ॥
रे गिद्धिन सिर हंस । दैव जोगह सिर नच्चौ ॥
रे म्रग वघ सँग्राम । लरै वर अप्पन आयौ ॥
रे अप्पह सो समर । करै मंडुक जस पायौ ॥
आचंभ ब्रह्म गति वह नहीं । बार बार तुहि सिष्पियै ॥
प्रज्जरै झार तरवर गिरह । का दीपक लै दिष्पियै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बैन बाद सो करै । होइ भट्टह कौ जायौ ॥
गारि रारि सो भिरै । जेन रस षष्प न पायौ ॥
हथ्थ वथ्थ सो भिरै । घरह धन बंधव [2]बट्टैं ॥
इह सोमेसर बैर । लेहु अप्पन सिर सट्टैं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बिड्डाउ । (२) ए.-बद्धै ।

तुम कहौ जाइ संभरि बयन। इन डिंभन डिंभरु डरै ॥
संचर्यौ दरक हक्कै चरत। [1]सज्ज फटक्कै निक्करै ॥ छं० ॥ १०६ ॥

चन्द का भीमदेव के दरबार से कुपित होकर चला आना।

दूहा ॥ चंद मंद मन आतुरह। उठ्यौ रत्त करि नेंन ॥
फिरि पहुंच्यौ न्टप पिथ्थ पै। कहैं चरक्का वेंन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त ॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे ॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे ॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हौ आयौ ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मीड़ि बर पुंछ जगायौ ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। करिय सेन चतुरंग भर ॥
सो दिट्ठ दिट्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]वाद मनो न उर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

जगदेव वचन।

कहु मिसरे छेड़यौ। राउ गुज्जरी नरेसर ॥
दीबो जाल कुदाल। कहमि वह सह आडंबर ॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्यन ॥
चामँड रा कहां गयौ। बहुत राथा बर दष्यन ॥
कह मिसरे कन्ह विप्पनौ। जग्गदेव संचौ चविय ॥
वंभन हय या दिड्ड धर। कह मिसरें संभरि धनिय ॥ छं० ॥ १०९ ॥

चन्द वचन।

वार बार षेलयौ। सरस वत्तडिया गुज्जर ॥
अब विगत्ति [3]लभ्भिहै। [4]मिरच चव्वै ज्यों गज्जर ॥

(१) मो.-"क्यों छज्ज फट्टकै निक्कारै"। (२) ए. कृ. को.-झुठ।
(३) ए कृ. को.-लग्गे है। (४) मो.-मिरच चढ्ढे ज्यों गज्जर।

तूंअंनि राव मजाम। जिके रन अंगन जित्ता ॥
इन संभरिवै राव। कोड़ि सै सहस विघत्ता ॥
भेद्यौ नहीं गुर अष्षरौ। कविय वयन संम्हौ सरै ॥
कर नहीं मंच बीछिय तनौं। घत्त हथ्थ सप्पा हरै ॥ छं० ॥ ११० ॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा ॥ सुनि सु बेंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमंग ॥
आयौ न्रप चहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त ॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्ढुर कर धारिय ॥
सकल सूर सामंत। जुद्ध मग्गह अधिकारिय ॥
आदि राज पहु आदि। आदि सम जुद्ध समंडौ ॥
दैव काल संग्रहौ। बलह भारथ जिम पंडौ ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज ॥
एकंग अंग जंगह अटल। करन जुरौ सामंत सज ॥ छं० ॥ ११२ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निझ्झर सामंत। जूह जंगन दल मंडन ॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम षंडन ॥
इक्क उभत जुध उद्ध। इक्क गज दंत उषारहि ॥
इक कमंध उठि लरहि। इक्क रुधि बीर बकारहि ॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल ॥
बड़ बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल ॥ छं० ॥ ११३ ॥

निढ्ढुर का कन्ह राय की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ बालप्पन जोवन विरध। [2]रन रत्तौ जोधार ॥
कन्ह दलन अरि मंडइय। नन तिनुका करि डार ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-अंचल। (२) ए. कृ. को.-नर।

जिन अंपिन भर पट रहै। सोइ छुट्टै द्वै ठाम॥
कै सज्या वामा रमत। कै छुट्टत संग्रास॥ छं०॥ ११५॥
जे वंके विरदन वहै। नरन नाह जग जप्प॥
कै भारथ भीपम सुभट। कै रामायन कप्प॥ छं०॥ ११६॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना।

अमुल्ल माल मुत्तिय सजल। मोल लप्प गुन मान॥
अप उरते उत्तारि न्रप। दीनी निढ्ढुर दान॥ छं०॥ ११७॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना।

कवित्त॥ हालाहल उर झाल। माल मुत्तिय दुति राजै॥
रवि कंठह जनु गंग॥ ईस जनु सीस विराजै॥
सुभर निडर रठ्ठौर। वज्जि नीसान गराजै॥
जैसै बज्जत डंक। बीर बढ्ढत वल ताजै॥
मंडई मरन मन अरि कलन। चलन चित्त मन अटल हुअ॥
सब सेन मध्य इम राजई। षह मग्गह ज्यों जानि धुअ॥ छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना।

दूहा॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप। [1]पाव पवंग परठ्ठि॥
लेइ नहीं मन संझ मल। निठ्ठ चढ़ाईय हठ्ठि॥ छं०॥ ११९॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना।

कन्ह कहैं न्रप जंगल। मोहि सजीवन भिठ्ठ॥
सोम अरिन तन सह्यौ। पंजर हंस न नठ्ठ॥ छं०॥ १२०॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना।

कवित्त॥ एक समें सुग्रीव। चिया न रष्षिय अप्प बल॥
एक समै द्रुज्जोध। करन रष्षे न जित्ति षल॥

(१) ए. कृ. को.-पाट। (२) मो.-भीमंग।

एक लसैं श्री राम । सीय वनवास अरिन ग्रहि ॥
एक लसैं पंडवन । चीर रष्यौ न द्रोपद्दह ॥
तुम कान्ह कंक अकलंक कहि । इष्ट रूप हम सव जपहिं ॥
तुम तेज अंपि देपत नयन । मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥
दूहा ॥ निद्दुर कन्ह प्रमोधि इम । सोलंकी सीमंग ॥
सुनि आए धाए दुसह । दल दारुन भीमंग ॥ छं० ॥ १२२ ॥

सेना का सज कर आगे बढ़ना ।

गाथा ॥ जाइ संपते स्हूरं । पट्टन सेनाय मंड भारथ्यं ॥
तातं वैर प्रमानं । वड्डे वीराइ वीर पल याइं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना ।

दूहा ॥ दिपादिपी दुअ सेन भय । नारि गोर गहरानि ॥
कुहकवान आघात उठि । उड़िय अग्गि असमान ॥ छं० ॥ १२४ ॥
अग्ग पच्छ वाजू वियन । दल मंडै दुअ राइ ॥
तत्त तुरी जे तत भरे । असि कड्डै घन घाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन ।

कुंडलिया ॥ फिरत तुरी चालुक्क रन । वर रष्पै चिहु कोंन ॥
नस चंपै न सु ढिल्लवै । ज्यों वंदर को छोंन ॥
ज्यों वंदर को छोंन । मुष्प भंजै नन पंचै ॥
तेज तुरी नष्पते । जानि आसन मन संचै ॥
राग समंचै वाग । सीर लष्पै पति हेरै ॥
लिषिय चित्र असवार । मत्त मत्ते हय फेरै ॥ छं० ॥ १२६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध ।

दूहा ॥ कढ़त वैर वंकम विषम । विषम ज्वाल छिति सार ॥

सार सरीरन झेल नह। भए [1]निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥१२७॥

रसावला ॥ [2]मिले वीर भट्टं, सुरंग सुघट्टं। हयी हथ्थ छुट्टं, नरं सूर लुट्टं॥ छं० ॥ १२८ ॥

मनों लागि नट्टं, झरैं हड्ड फट्टं। मनों काढ [3]कंठ, बहै तेग तट्टं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दद्धि मट्टं, षगं गे उहट्टं ॥ छं० ॥ १३० ॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं ॥ छं० ॥ १३१ ॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै बट्ट बट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत झट्टं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

मनों कंद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥ छं० ॥ १३३ ॥

मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल बट्टं। मनों चट्ट अट्टं, लगौ तीर तट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥ छं० ॥ १३५ ॥

[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगे गैन घट्टं, बहै सुर्ग वट्टं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती स लुट्टं। [6]रिनं षत्त फटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा ॥ पट्ट छुट्टत कन्ह चष। षल धारा धर बज्जि ॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ इत सु कन्ह चहुआन। उतह सारँग मकवाना ॥
बल बढ्ढ बल बंड। जानि कंठीर लोहाना ॥

(१) मो.-तिचित्त। (२) मो.-जुरे। (३) ए. कृ. को. कढ्ढं।
(४) को.-वरं,मो.-रवं। (५) मो.-हट्टं। (६) मो.-रिषं।

कर कट्ठे करिवारि। भार ठिल्लिय भर भारी ॥
स्वामिधर्म सुद्दरै। बार वृत्ती सु करारी ॥
लिष्षे जु अंक विधि कंक जिहि। आनि सपत्तिय सो धरिय ॥
अदभूत रुद्र रस विस्तऱ्यौ। सु कविचंद छंदह धरिय ॥छं०॥१३९॥

मकवान का माराजाना।

दूहा ॥ षत फट्टे सारंग ने। रस जस कन्हा वंत ॥
[1]झुक्कि पऱ्यौ मकवान रिन। गल गज्जे सामंत ॥ छं० ॥ १४० ॥

सामंतों का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा।

रंडरि धर [2]सारंग की। परत पहुमि मकवान ॥
सूर सु गज्जै जंगली। भै भग्गौ अरियान ॥ छं० ॥ १४१ ॥
सिद्धि न लब्भै सिद्धि जै। ते लद्धी सामंत ॥
छाया माया मोह बिन। विमन सुमन धावंत ॥ छं० ॥ १४२ ॥
कवित्त ॥ द्रुमति तजत बर अंत। रत्त चच्चर सौं झारन ॥
अप्प अप्प संग्रहै। पार दुज्जनन उतारन ॥
सार मुगति संग्रहै। जियन सुपनो करि जानै ॥
राति दिष्षि जंजाल। प्रात पीछे न पछानैं ॥
यों जानि सूर सद्धत रनह। बन सु अग्गि जनु वाय बसि ॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन। दोष न लग्गे जोर जस ॥छं०॥१४३॥
गाथा ॥ उट्ठय आवत झारं। धारं पाहार पंति सुभटायं ॥
घहर घोष घन भट्टं। यों बरषंत बीर बंकायं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ बहुरि न हंसा पंजरह। जे पंजर तुटि धार ॥
हंस उड़ा जब [3]नट्टयौ। पंजर सार असार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
कवित्त ॥ पहर एक भर भरह। टोप असिवर वर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन साल। सूर सामंत न भज्जिय ॥

(१) मो.-झुझि। (२) ए. कृ. को.-चालूक।
(३) ए. कृ. को.-लट्टयौ।

हय हय हय उच्चार । घाय घायल घट गज्जिय ॥
चह चह चवंक बज्जिय । तुट्टि पाइक बिन तज्जिय ॥
रोस रसि वसिय सामँत रसिय । अयुत युद्ध उद्धह गतिय ॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत । कहत धन्य राजन रतिय ॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की सरित सारिताओं से उपमा वर्णन ।

गाथा ॥ साभर मती सरित्तं । गुज्जर षंडेव धार धारायं ॥
दुअ तट रुधिर उपट्टं । वहै प्रवाह हथ्थियं बाजं ॥ छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ हथ्थि वाजि नर भर बहत । सिंघनि धुनि गरजंत ॥
एक घरी अदभूत रस । रुद्र भयो विससंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥

मोतीदाम ॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर । तजै भव मोह भजै षग भीर॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह । परें रन में ज्युँ मदंध गवार ॥
छं० ॥ १४९ ॥

उठै धर श्रोनिय छिछ उतंग । सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग ॥
उड़ै घन सार झनंकत षग्ग । मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग ॥
छं० ॥ १५० ॥

भनंत कि भौंर कि तीरन तार । विठं तजि पंकज फुट्टत फार ॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन । लियौ तिन तात सुवैर वलेन ॥
छं० ॥ १५१ ॥

इसे रन रंग सुभैत सुढार । मनों मय मत्त परे बिकरार ॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार । उड़ै जनु झिंगन भद्दव पार ॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि । रहै रन राज फवज्ज सु सज्ज ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ षिझि षीची परसंग । समुद अरि ग्रहन कि गस्सिय ॥
बड़वानल बलिबंड । षग्ग षोहनि दल षस्सिय॥
बढ़त सेन तेंइ जरहि । पढ़त जनु भस्म कुढ़ी हुय ॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकत ।

जहं तहं जंगल सूर। कढ्ढि मुष सकै न आन कुय ॥
कर पत्र मंच जुग्गिनि जगहि। रजि पलहारिय षुद्द विन ॥
चमरैत बैत जनु किंसु बन। इम तन रज्जिय सोभ तिन ॥ छं० ॥ १५४ ॥
षिझ्झि नरिंद हय नंषि। बज्जि षुरतार कंपि भुअ ॥
अष्ट सु चल [1]दस विचल। कंपि संपात पात हुअ ॥
उठिय [2]मुष्ष मुछ्छ बंक। सीस लग्यौ असमानं ॥
पंषि जान पावै न। करहि कुंडल कंमानं ॥
घरि एक घावि बिभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्च्यौ कलह ॥
तिन सद्द सिंभ सिंभासनह। उघरि बीर दिष्यौ पलह ॥ छं० ॥ १५५ ॥

गाथा ॥ यों कुट्टे सुर सारं। घावं घड़य घन सु लोहारं ॥
भद्रं सूर प्रकारं। आभद्रं द्रुज्जनो ग्रेहं ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक ॥ आभद्रं बर ग्रेह दुज्जन वरं, भद्रं न्नपं राजयं।
जे भग्गा सामंत बीर बसुधा, तत्तेव जीवंतयं ॥
भग्गा सनेय बीर चालुक रनं, मुत्ती वरं मुक्कयं ॥
अंती अंत सु अंत अंतरु [3]रतं, जुत्ती तुमंतं करी ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा ॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्य ॥
दिव देवासुर उच्चरै। धन्न सु छचिय हथ्य ॥ छं० ॥ १५८ ॥
सूर हथ्य हथ्यिय ग्रहिग। चरत भान आनंद ॥
सूरज मंडल [3]भेदिते। जोति जगत्ति न इंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥
घट [4]घट्टै लुट्टै मुगति। छिति छुट्टै रति चाव ॥
यों मत मत्त रत्त रन। ज्यों बलि वावन पाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गाथा ॥ वामन दिड्ड सु पावं। [5]ईसं जच्चि मुवींयं सहयं ॥
एकक पाइक सूरं। सो जित्ते तीनयं लोकं ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए. कृ. को.-दल। (२) ए. कृ. को.-मुछछ भुव। (३) मो.-रन।
(४) मो.-मेदिकै। (५) मो.-घुटै।

स्वामिभ्रम्म सुध मत्तं। सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मी॥
धीरं धीर अधीरं। धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिघ्घं॥ छं०॥ १६२॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन।

चोटक॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी। जु [1]बजे जनु देवय दिव्य धुनी॥
रनकावत षग्गत हथ्थ करैं। मनु वीर जगावत वीर उरैं॥
छं०॥ १६३॥
गहि चच्चरसी चवरंग रजं। मनों भद्दव बद्दल मद्द गजं॥
सपरै गज कंक करंन भरं। सु उड़ै जनु पंतिय पंष भरं॥
छं०॥॥ १६४॥
भननंकय बीरति बीर सयं। स नचै जनु रुद्रय बीर हयं॥
ततथे ततथुंगय सार रजी। उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी॥
छं०॥ १६५॥
पल में पल वित्तय पंच उड़ै। वहु-यौ नन कालय बीर वुड़ै॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रसी। सु उड़ै जनु सार सपत्ति वसी॥
छं०॥ १६६॥
मय मंत सु मंति न दंति यता। भजि वीर डरावन साज हिता॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं। झननंकहि षग्ग सुमग्ग घनं॥
छं०॥ १६७॥
दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं। सु बढ़ै तनु विजुल हथ्थ काढ़ै॥
॥ छं०॥ १६८॥
दूहा॥ बढ़ि विज्जल सथ हत्ति कर। गुर घर घंमति वाउ॥
देव दिषै देवत रिझै। धनि सामंत सु घाउ॥ छं०॥ १६९॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है।

गाथा॥ तब कैमास सु जुद्धं। बुधं किन्न तीनयो वारं॥
आहत्त हत्तिय चायं। न चायं नेह नारियं बीरं॥ छं०॥ १७०॥
बंचै सुगत्ति [2]न बंचै। बंचै स्वामित्त जुद्धनो बरयं॥
सा घट घट भौ थिरयं। जंगम जुत्ताय थावरं बीरं॥ छं०॥ १७१॥

(१) मो.-वने। (२) मो.-सु।

चौपाइ ॥ थिर थावर जंगम नह तीरं । वज्रंगी धर वज्र सरीरं ॥
वज्र घाइ आघात न छुट्टैं । फिरि फिरि मुक्त रास करि लुट्टै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालूक वर । घटिय सेन चहुआन ॥
दुहुं मभ्भै कोविद ज्यौं । धर छंडै नह थान ॥ छं० ॥ १७३ ॥

चौपाइ ॥ धूम्र धूम्र थानय नन छंडै । भान संभ्म संभ्मया गुन पंडै ॥
कैवर रत्त अट्टतत चाई । कैवर सूर परे घन घाई ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ वजहि घाव घरियार जिम । राइन दोउ सेंन ॥
चालुक्क चोहान रिन । भयौ भयानक गैंन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना ।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ । वजी कल कूह सु वज्जन हाथ ॥
ढहै गज गुंजत रोस चिकार । परें हय तुट्टि अदभ्भुत रारि ॥
छं० ॥ १७६ ॥

जहां तहां संग फुटै धर पार । वहै सर ओन कि जावक धार ॥
भई सिर छाह कमानन तीर । फुटै धर पंजर धुक्कि गहीर ॥
छं० ॥ १७७ ॥

भयानक भेप भयं असकंक । थलप्पल रुद्धि मची जनु पंक ॥
अदभ्भुत कंक विरच्चिय वीर । काढ़ी अस कोह भरक्किय भीर ॥
छं० ॥ १७८ ॥

उतें न्रप भीम इतें [1]चहुआन । गही कर नागनि सी असि [2]पान ॥
[3]घनहिन भीम रह्यौ घट जंत । सु आनि कें आज [4]पहूंचिय अंत ॥
छं० ॥ १७९ ॥

करौं धर रंडरि गुज्जर देस । हकारिय भीम भयानक भेस ॥
हहंकिय भीम न पावहि जानि । [5]बिठाउन सोमह सुर्ग ढिगान ॥
छं० ॥ १८० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-प्राथिराज ।　(२) ए. कृ. को.-साज ।
(३) ए. कृ.को.-घनहन ।　(४) मो.-सिपंत ।　(५) मो.-बैठे ऊत ।

पचारिय कन्ह सु पिथ्थ पछाय। हनै किन सूरन निक्करि जाइ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही अस कंध जनेउ उतारि॥
छं० ॥ १८१ ॥

धुकंत सु घावं कियौ भर भीम। सु रेंषसि सेष वही असि हीम॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही घर अच्छरि अच्छ विमान॥
छं० ॥ १८२ ॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह झूलि॥
जितं तित उट्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत॥
छं० ॥ १८३ ॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेष बकंत बरन्न॥
कमंध करंत जितंतित घाइ। हनंत फरंत कि भूत विलाइ॥
छं० ॥ १८४ ॥

जितं तित घाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छक्कि कि छक्कि गमार॥
जितं तित तर्फत लुथ्थि चिहार। [3]जलं मझि डारि कै मीन कहार॥
छं० ॥ १८५ ॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि॥
जितं तित घाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत वारी कल रीस॥
छं० ॥ १८६ ॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव दर्याव मझाइ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत॥
छं० ॥ १८७ ॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनयंच सबद्दय बाज॥
जपै सुर चारन गंध्रब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट॥
छं० ॥ १८८ ॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर केव॥
॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-ललं।

कन्ह की तलवार की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ निग्गि मभ्भ पग धार । बीय जग्यौं ससि सोभै ॥
कै नव वधु नप पित्त । काम आकार चलोभै ॥
मरम बीर कत्तरी । दिसा वर तिलक पुब्ब दर ॥
कै कुंची शृंगार । बहुरि सोभै ओपम धर ॥
सोभंत चंद की कला नभ । कल कलंक सोभै न तन ॥
ढुंढ्यौ जु षेत सामंत नैं । बुभ्यौ राज तासंस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना ।

दूहा ॥ लियौ वैर चहुआन न्रप । बजि निरघोष सु घाव ॥
चावद्दिसि सेना फिरी । बर बीरां रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतो की प्रशंसा ।

बीरां रस बर वढ़िय भर । घट्टिय घट तन पंत ॥
जंस तजत जोगिनि सुजस । धनि सामंत सु मंति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जी कज्ज मरिज्जैं । उदरं वृत्त पाव घन घड़यं ॥
कठिन क्रप्प कलहंतं । मरनं पच्छ निपज्जै साइं ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तवै वेतालं । रन रंगेव रच्चियं काली ॥
पलहारी पल पूरं । छरं छूर बरन बरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का वंद होना ।

संभ सपत्तय सूरं । भेषं भयान भंतियं क्रूरं ॥
करुन बीर रस पूरं । नूरं दुअ सेन दिष्पाइं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं । सब सामंत [1]पट सूर ॥
धाइ रहे घट घाइ सों । भयौ प्रात बर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच । मुक्कि अलि [2]भ्रम तक सारस ॥
[3]गय तारक फटि तिमर । चंद भग्यौ गुन पारस ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सत । (२) ए. कृ. को.-भूमन । (३) ए. कृ. को.-गंत ।

देव क्रम्म उघघरहि । बीर बर क्रम्म सुनिज्जह ॥
सोर चक्र तिय तजिय । नयन घुघ्घू रस भिज्जह ॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नभ । बजिग देव धुनि संष धुर ॥
भय भान पनान न उघऱ्यौ । करहि [1]रोर द्रुम पष्ष तर ॥छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिव्यंब । तिमर तोरन किरनिय तम ॥
उग्गि किरन वर भान । देव बंदहि सु सेव क्रम ॥
कमल पानि सारथ्थ । अरुन संभारति रष्षै ॥
जमुन तात जम तात । करन कंचन कर बरषै ॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद । अरून बरुन तारक चर्साह ॥
सामंत सूर दरसन दिषिय । पाप धरम तन बसि लसहि ॥छं०॥१९८॥

मुरिल्ल ॥ के विगया महि मंडल सूरं । पग षंडे बर बीर सपूरं ॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं । वढ्ढी किंत्ति जित्ति मनमथ्थं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढी गईं ।

कवित्त ॥ भिरिग सूर सामंत । लुथ्थि पर लुथ्थि अलुट्टिय ॥
सघन घाव पम्मार । बीर बीरां रस जुट्टिय ॥
[2]बढ़वि सेन दोउ बीर । षेत छंड्यौ न बीर दुहुं ॥
उतर क्षुम्भि भारथ्थ । सार नंष्यौति सार मुह ॥
बय ध्यान मान सम स्याम दिष । किय कीरत्ति अचल कलह ॥
सामंत सूर सम सूरतन । कवि सु चंद जंपै बलह ॥ छं० ॥ २०० ॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ो की संख्या ।

डेढ हजार तुरंग । परे रन बीर बीर भट ॥
अद्व सहस हथ्थी प्रमान । आरुहिय मेघ घट ॥
पंच सहस षरि लुथ्थि । दंत सौं अंत अलुझ्झिय ॥
दइय काल संग्रहै । लिषे बिन कोइ न भुझ्झिय ॥
द्वै घरी श्रोन बरषंत धर । पति पहार घर डोलयौ ॥
सामंत सूर स्वामित्त पति । जीभ चंद जस बोलयौ ॥ छं० ॥ २०१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रोम । (२) ए. कृ. को.-चढ़वि ।

संसार की असारता का वर्णन ।

है संसार प्रमान । सुपन सोभै सु वस्त सव ॥
दिष्टमान निनसिहै । मोह वंध्यौ सु काल अव ॥
काल कत्य पटीक । आज वंध्यो नर ग्रे ही ॥
दया देह संभवैं । दया वंधै तिन देही ॥
सामंत सूर साध्म्म धनि । सज्जिय भज्जिय जानियै ॥
संसार असत आसत्त गति । इहै तत्त करि मानियै ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ वँध्यौ भीम जव राज प्रथि । वैर लियौ पगवाहि ॥
दोहित संजम सूर कौ । कीनौ कचरा राइ ॥ छं० ॥ २०३ ॥

दस वंदर कचरा दिये । दियौ चमर छत्र साज ॥
चौरासी वंदर मद्दै । और रपै प्रथिराज ॥ छं० ॥ २०४ ॥

भोम दई दीनों तिलक । लीनो कचरा संग ॥
*प्रथीराज दिल्ली चले । काढ़ि वैर अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना ।

कवित्त ॥ तात वैर संग्रह्यौ । जीति जैपत्त सु लिन्नौ ॥
ढीली पत्तौ राज । किति संसार स भिन्नौ ॥
न्त्रिप संधव [1]सो उदर । सोइ सामंतनि रष्पिय ॥
एक [2]मग्ग उग्रहै । एक मग्गह रस भष्पिय ॥
पंचमी दिवस रवि वार वर । इंद्र जोग तहां वरति तिथ ॥
दिन चढ़ै राज प्रथिराज जय । जै हय गय नर भर समथ ॥छं०॥२०६॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग वधो नाम चौंवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४४ ॥

---

* छन्द २०३ से २०५ तक मो.-प्रति में नहीं है ।
(१) मो.-जो । (२) ए. कृ. को.-मघा ।

अथ संयोगिता पूर्व जन्म प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैंतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन।

दूहा ॥ कहै चंडि सुरपति सुनहि। धरनि [1]अघावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्थ [2]व्रुध। रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति वर चवै। सुनहु वर चंड दंड सुर ॥
रामायन रन वह। राम रावेन भान [4]भुर ॥
[5]धर सुष्षै क्यों [6]रहै। कहन हर हार तार गर ॥
स्रूर समर सुर धष्षि। अष्षि जन पष्षि तष्षि कर ॥
धक धार सार करिबार कर। मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अचंभ चव मंस चर। रुधिर केम अचिपत परिय ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ कर जोरैं सुर राज सों। कहत असंभम वात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति। कौन श्रोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध।

सिर स्यंदन लोचन अलग। घोरन अनि जग घोर ॥
वरषि वीर रस बहुल सर। सोसि सार रत धोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतंक।

हनूफाल ॥ हक हकि देव अदेव। धर कंपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कठ्ठ करूर। अत कजत काइर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-अघावहि। (२) मो.-वृध। (३) मो.-सच्च सुमति।
(४) मो.-सुर। (५) मो.- तुम। (६) मो.-रहौं।

बलि मध्य बीर करूर। जग षग्ग लग्गि [1]गरूर॥
पथ पथ्थ अंमर सूर। दह दिग्ग सुष्षम [2]नूर॥ छं० ॥ ६ ॥
चवअंत अंत नमंत। छुय लोक चामर जंत॥
विम्मान [3]मानिय रूढ़। [4]अंबरन रच्चिय गूढ़॥ छं० ॥ ७ ॥
छत [5]विछति [6]रघु लछिराय। रथ निगछ सुर हय चाय॥
भाल भयंक जाम अतंक। सेन सु भूमि सेन पतंक॥ छं० ॥ ८ ॥
बातन तात तेज अपान। उपट उपट्टि दोन सु घान॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग। गो परिवान दग्गि पतंग॥ छं० ॥ ९ ॥
सुर सुर राज सोच दिवांन। जय जय अच्छि कच्छि विमान॥
॥ छं० ॥ १० ॥

मुरिल्ल॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर। रेनि ऐनि अक बद्दिय संमर॥
संमर अंमर [7]कोतिक जच्छिन। छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि॥
छं० ॥ ११ ॥

गीता मालची॥ सुजिरंत सुमिरिय मंच सूरध उरध हंकह धक्कयं॥
*किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किल्लय कल्लयं॥
बक [8]बकय डोंरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं॥
झलमलत भाल विसाल विधु बर अंब रालक अंमरं॥ छं० ॥ १२ ॥
जट विकट तट जल उछत हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं॥
[9]चव अग्ग सट्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं॥
धुअ इंद जीति सभीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं॥
उड़ि अस्त्र अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरधर छाइयं॥छं०॥१३॥
बिनि रंग अच्छरि व्योम व्योमनि ताल बाल बितालयं॥
सुर अवत श्रम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं॥
छं० ॥ १४ ॥

(१) ए. कृ. को.-करूर। (२) ए. कृ. को.-तूर। (३) मों.-मानिन।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन। (५) ए. कृ. को.-विछाकि।
(६) ए.-रषु। (७) ए. कृ. को.-कोतक।
*मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किलयति कल्लयं।
(८) ए. कृ. को.-बहुय। (९) ए..अब।

कवित्त ॥ पज्जलिंदग चवरंग । छत्त रत छिंठ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ । चाइ नक्क कोप रंग वर ॥
निसचर वन चर चमर । अरिन लग्गे अरि [1]घाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस । पाइ कर कंजन छाइन ॥
अरि इंद्रजीत भय भीत हुँ । भूत भंति तंडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अंजुल पहुय । लच्छि राइ सूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढ़ि [2]चढ़ि गूढ़ मंच अमंच । छक्कि सु हक्क चक्किय वंत ॥
नत नुत्त चाप सु दुष्प । सरसाइ भू भरतिष्प ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिन्हल मेन्न [3]सवान । वल्लि सुप उरवि सेज सजान ॥
वेस निसंक स्यंदन रुढ़ । वंकवि कूल रासिव रूढ़ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कंपिय कोपि कंप करूर । नागति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत । किंनर नाद नारद केत ॥छं०॥१८॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव । त्रिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप । निकट निकंठ काटत जाप ॥छं०॥१९॥
आसन असन अनल [4]गरूत । रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत । सोपन करहु घोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राघव धरन [5]प्रपन प्रचाल । पग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि भ्रद्दि गन वान । जय जय चवत सेवग थान ॥छं०॥२१॥

दूहा ॥ तजी तूक्क भजि भजि सरै । भजि भजि रघुपति रूढ़ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि । छिन इक गुनपति गूढ़ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसंक स्यंदन सु । वंक काल कंक तंग लुपि ॥
चढ़िय देव मंडल मरुत्त । आवन्न धूप धुपि ॥
क्रप्प गोप गहि गोप । डारि जरन्न अंग लगि ॥

(१) ए. को.-धाइय, छाइय । (२) मो.-वढ़ि । (३) ए. कृ. को.-तिवान ।
(४) मो. गत रूत । (५) ए. कृ. को.-प्रसन ।
(६) ए. कृ. को.-भाति । (७) मो.-सिरनि ।
(८) मो.-निकसि संक ।

भाष साप म्रग संकु। सेन भुमि सेन प्रान दग्गिं॥
जय जयति सद्द नारद चवत। कर किन्नर तारच्छि भज्जि॥
तज्जि पासि पास तन दर विकार। कहि रघुपति [1]जम चित्त रज्जि॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन।

दूहा॥ भज्जि ताप तन मानि मन। बाल व्याल उड़ि सेन॥
सोषि स्रोन तद्दिन सरनि। रह्यौ राज बिनु चेन॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि राइ भर पंच मिलि। मंडि सरस धनुबानं॥
इंद्रजीत भर अवनि परि। छयौ अमर असमान॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्जी दस मुष दरनि। भय मंदोदरि बाम॥
जाइ जगावहु कुंभ कहुं। हनै रिपुन घन जाम॥ छं० ॥ २६ ॥
उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर। करि जग्गत घन रीस॥
सुर किंनर धुनि सबद बर। पिष्पहु पग्गन सीस॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथा॥ दानं प्रमद प्रमादं। परयं भर कुंभ बद्धि लासायं॥
सम गुच्छन धर धारं। चढ़ि चढ़ि अटन रटन [2]रित जेयं॥
छं० ॥ २८ ।

विज्जुमाल॥ किलकि किलकि कूक। बज्ज दनु गन भूक॥
तजि बद्द बध्यन थूर। भज्जि सुरगन भूर॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कलंक। चिहूं दिग्ग बर नंक॥
मुरि [3]मुरि मेर षंड। जुर छरि जूर मंडि॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय सूर। मिल कहक वित्तूर॥
दह दिग्ग जगि अग्य। बर मंस रम लग्य॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत। रमत सुरेस सूत॥
चव चव [4]सद्धि ताल। भवति भल कराल॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुम। (२) ए. कृ. को.-जित।
(३) ए. कृ. को.-मर। (४) ए. कृ. को.-साद्धि।

[1]कुपिन कुंभक रप्पि । गरुअ गर्ह गरपि ॥
घेइ घेइ पुर नाद । वितल उछित साद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
प्रगटि [2]दानव दल्ल । प्रलय सम अस मल्ल ॥
गह्वर धुन पान । रीस रघु असमान ॥ छं० ॥ ३४ ॥
रिन तत नित्त पंच । तनकि तनकि रंच ॥
उड़ि भर भुज भूर । तरसि [3]मध वतूर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
पच्छ छिन छिनवांन । करि रघुराय रंन ॥
जरध मूरध पंड । मरि कुंभ राइ दंड ॥ छं० ॥ ३६ ॥
समर अंमर ऐन । अवत चवत चैंन ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ पन्यौ कुंभ धरनी सु धर । पंड पंड तन तेह ॥
मानों प्रवल सनूर ढरि । चढ़ि पंछी नल छेह ॥ छं० ॥ ३८ ॥
सजि डंवर घन सीस पर । सज स्यंदन [4]पर षेह ॥
चढ़ि दससिर रघुपति विहसि । रहसि वढ़ी रन केह ॥ छं० ॥ ३९ ॥
हल्ल हल्ल सेनन चर चरन । उड़ि आडंवर धूरि ॥
वजे तूर वनचर चमू । देव पंचजन पूर ॥ छं० ॥ ४० ॥

राम रावण का युद्ध ।

गीतामालची ॥ मीसह नहि निसान स्यंदन सेन अंकुरि सेनयं ॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनयं ॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी ॥
[5]नग नाग नागिनि पच्च पच्चन मत्त मत्तन [6]वच्छनी ॥ छं० ॥ ४१ ॥
किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तंडवं ॥
डव डवरू डोरुँअ करह किन्नर करत कुंडल षंडवं ॥
मिलि दैत्य वंस अदैत्य अंसह संधि सिंधुर नद्दयं ॥
गन गिद्धि अंबर छाइ पच्छिन डंकि डंकि नरद्दयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन तुनकि चामर चाप चंपिय ताप कंपिय तिप्पुरं ॥

---

(१) मो.-कुपित । (२) ए. कृ. को.-दानव । (३) मो.-सम चल नूर ।
(४) ए. कृ. को.-षन । (५) ए. कृ. को.-गन ।
(६) ए. कृ. को.-चच्छनी ।

तर तरकि चिकुट चक्क चक्किय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्क स्यंदन चूर चामर षेर चच्चर षंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर घन वर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातक स्रोन नील अकासयं ॥
जनु जून वृज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि सूर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल पित्त पंचर बढ़ि बर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोषि सर लिग रह्यौ राज अभष्पयं ॥
सुरपत्ति सुष अग संडि जंपिय रास रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल व्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लग्गी बार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से सांई सिरह। तूं किम रही अधप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र वर मंच ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढबि ढुरि ढुंढि अमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली बयर। दलन दुअन बाड़ षेद ॥
रुंड मुंड षंडन षलन। विधि वंधी बदि बेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिष। मंडि मुंड उर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय बयर। भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्व। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनी बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह किंत्तिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को.-सायक। (२) ए. कृ. को.-धीमरं।

चाहुआन कमधज्ज । बीर बिग्रह जग्गारौ ॥
करि कीर रूप कनवज गयौ । उभय दिवस दिष्षिय पुरिय ॥
बंभनिय मदन अंगन सु तरु । निसि निवास तहां उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

श्लोक ॥ सतयुगे काशिकादुर्गे । त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावासं । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गंधर्व की स्त्री का उससे संयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गंध्रव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]बर । नाथ कथा समुझाय ॥
संजोगिय अवतार कहि । न्रप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।

राज पुत्रि उतपत्त सुनि । इह अच्छरि अवतार ॥
[3]सुमन श्राप म्रत लोक महिं । हूरन करन संहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचंद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।

सुकी सुनै सुक उच्चरै । पुब्ब [4]संजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छऱ्यौ । जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।

चोपाई ॥ जटा बीर शंकर सिव थानं । गिरिजा गहिर गंग परिमानं॥
साधत रिष्षि तहां जर नाम । गइ दस इंद्र हन्यौ तिन कामं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जंघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रमं ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-रस । (२) ए. कृ. को.-जम ।
(३) ए. कृ. को.-सुमत । (४) मो.-संजोग ।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्ती यह अभ्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं० ॥ ५८॥

कवित्त ॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तड़ाग। भ्रम भए कटाच्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रंह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ बर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि ॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता लोंग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं० ॥ ६० ॥

जीवनि सु मुत्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
षंचन कितक्कि कुचि दृष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं० ॥ ६१ ॥

दिठि दिठ्ठ टरिय नह नेन चास। चक्कोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नेन नह चेन अंग। विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग॥
छं० ॥ ६२ ॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पल्लय समान मन नेन भिंटि। फुथ्यौ सु दूध मनु छाछ छंटि॥
छं० ॥ ६३ ॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं० ॥ ६४ ॥

(१) मो.-तहां। (२) ए. कृ. को.-सूप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

साटक ॥ जा जीवंत पसार पार सुमती, रत्तं हरी ध्यानयं ॥
षिमया कामय चित्त सित्त षिमया, षिमया रसं [१]हृद्वयं ॥
सा सुपनंतर दीह रत्ते मुषं, प्रानंपि षिमया रुषं ॥
ना सुझ्झै बिय ध्यान [२]पन्नर [३]रुषं, षिमयाय षिमया मुषं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

परंतु ऋषि का पुनः अपने मन को साधकर वदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना ।

गाथा ॥ षिमया सुष मय भ्रमियं । रमयाइ अंग कीटयो मनयं ॥
चित्त न जिन लषि भुअंगं । सो भिद्दव काम वामाइं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥ प्रथम तित्थ अड़सट्ठि । न्हाय बद्री [४]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि चपत । छुधा निद्रा चस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि । पंचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
बरषा काल प्रचंड । [५]मेघ धारह बपु [६]बहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि । कर अंगुष्ट नर देव हरि ॥
सत बरष ध्यान लग्गै भयौ । जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना ।

दूहा ॥ तप बल कंपत सुभर भुअ । रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुस्त तेज द्रिग सिथल हुअ । लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तब चिंतिय सुरराज मन । का विचिच वर वाम ॥
आदि अंत सोधिय सकल । अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भृष्ट करें ।

---

(१) मो.-वृज्जयं ।　(२) कृ.-पडर ।
(३) ए. कृ. को.-दृग ।　(४) ए. कृ. को.-पति ।
(५) ए. कृ. को.-मेय ।　(६) ए. कृ. को.-सहयौ ।

बोलि घृताची मेनिका। रंभ उरबसी रूप ॥
जानि सुकेस तिलोत्तमा। मंजुघोष सुनि भूप ॥ छं० ॥ ७० ॥
अति आदर आदर कियौ। कह्यौ आप इह बैन ॥
छलह सुमंतन जाइ के। रहै राज सुष चैन ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन।

गाथा ॥ नयनं नलिन नवीनं। गवनं गयं मत्त तुलायं ॥
बैनं पर भ्रत दीनं। झीनं कट्टि म्रगं राजेसं ॥ छं० ॥ ७२ ॥
अर्य्या ॥ *सपंत सुर गान निपुना। न्रत्य कला कोटि आलया मानं ॥
तार तरलेव भ्रमरी। भ्रमरी भ्रमरी सय सयसं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना।

कवित्त ॥ भो आयसि सुरराज। मंजुघोषा सुनि बत्तिय ॥
म्रत्य लोक में जाहु। सुमति छल छलौ तुरत्तिय ॥
दुसह तेज को सहै। मोहि आसन डर डुल्लिय ॥
सेस संकि कलमलिय। नैन तिय तालिय षुल्लिय ॥
जल षंचि सुरन हिय दुष्ष धरि। नहिन सु रस उड़गन भुअन ॥
तप ताप देव सब कलमलत। सुकाज काज रष्षहि दुअन ॥
छं० ॥ ७४ ॥
दूहा ॥ षग षगपति आसन ग्रह्यौ। गए बित्ति बहु काल ॥
रंभ षिमा सम रूप धरि। आय [1]सपत्ती ताल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानि बैन सुरराज लिय। नरपुर पत्तिय आइ ॥
जहं ताली लग्गी सुमति। तहं नूपुर बज्जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन।

अच्छरि अठ्ठ विमान [2]बनि। कुसुम समान सरीर ॥
नग जगमग अँग अँग सुबनि। कनक प्रभा दुति चीर ॥ छं० ॥७७॥

---

*छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है।

(१) ए. कृ. को.-संपतौ। (२) ए. कृ. को.-रचि।

नराज ॥ बनी विमान कामिनी। मनों दिपंत दामिनी ॥
दुती उपंम लोभयं। कि इंद्र चाप सोभयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरंबसी सु केसयं। तिलोत्तमा सुदेसयं ॥
सु मंजघोष रंभयं। घृताचि मेनका सुयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी। मनों कि अष्ट मोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासयं। विगास कौल भासयं ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भोंरहो। कि कौंल भौंर भोरहो ॥
तिहाइ भाइ ठानहो। जुगिंद चित्त [1]भानहो ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहीं। सकेलि सुद्ध सारहीं ॥
विलास नेन लग्गवै। तिमुन्छि काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी। सु कौंल माल सोहनी ॥
चवंत बेन माधुरी। न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलयं। कुकी कुकेकि केलयं ॥
सुभाय वास अंग की। सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी। मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत मुष्ष ठट्टियं। प्रवान पान [3]पट्टियं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिषत मैंन लग्गयं। जिहाज जोग भग्गयं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर। ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उघ्घरिय। अच्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हंसै। [4]रहैं रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय। फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौं न छरौं तौ देव डर। रिषि तप जप्प प्रचंड ॥
[5]दुहुं विधि संकत कामिनी। श्राप ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-तानहीं। (२) ए. कृ. को.-भंग।
(३) ए. कृ. को.-ठट्ठियं।
(४) मो.-रह रिषि भाय रिसाय। (५) मो.-दादु विधि संक न सामिंन।

उलटि गई सुर घरनि घर। देवन देव बुलाइ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। आप ताप डर पाइ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंभ प्रगट्टिय आन॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति॥
मूल पवन द्रिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति॥
बंक नाल जल षंचि। [1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम समूलिय॥
तब मारग सुज्यौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन॥
सुनि तार सु बज्जै करन बिन। सद्द स्वाद छंडिय त्रिगुन॥छं०॥९२॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि॥
कमल अमल उघ्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि॥
त्रिकुटिय ताटंक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय॥
रिष्षि सवद्द श्रवन्न। नद्द अनहद्द सु वज्जिय॥
अधमुष ऊरध चरन करि। गति पत्तिय मंडल गगन॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रच्यौ सु धुनि मझ्झह गगन॥
छं० ॥ ९३ ॥

बाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा॥ जंच मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार॥
करत राग श्रीराग सुर। कर वर बज्जत तार॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टुवात माठा धुआ। गीत प्रबंध प्रवीन॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन॥छं०॥९५॥

---

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कमर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर। (३) ए. कृ. को.-उघटन।

श्लोक ॥ [1]मृदंगी दंडिका ताली। धुरधुरी स्तुति काहली ॥
गीत राग प्रबंधं च। अष्टांगं नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना।

दूहा ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ। भग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चक्रित करि सोच मन। इह अपुब्ब कहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत। भई ध्यानगति पंग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय। षुल्लिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कह्यि रिष्ष सुर अप्छरी। कन्या गंध्रब जक्ष ॥
कै नागिनि जनमी कुअरि। तो सिव [2]रष्या रक्ष ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना।

कामातुर चिय कर ग्रह्यौ। तप जप छंडिय आस ॥
[3]हँसि छुड़ाइ कर तड़ित मन। गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परंतु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना।

छिन इक धर मूरछि पर्‍यौ। चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ग्यान मन आनि कै। मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धर्‍यौ। हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन। बरष सित कियौ तेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति। नींद निसि नसिय इंद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ। बंधि दृढ़ पवन उरध बस ॥
पीवंत वाम दक्षिन मुचै। कुंभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ। गह्यौ पंथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मो.-मृदंकी। (२) मो.-रछ्या।
(३) ए. कृ. को.-सहि। (४) ए. कृ. को.-अधीर।

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष सिष बरनहु ताहि ॥
जा दिष्षन मुनि मन टर्‌यौ। रह्यौ टगट्टग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक ॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्रानने ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मध्यं छीन म्रगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए ॥
सिंभे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने ससी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए ॥
नष पंति कंतिय सुत्तए। जनु चंद अद्धत जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरति नूपुर बज्जए। कलहंस सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरव गयंदए। छबि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक बिसानयं। रँग रंग बंदन सानयं ॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं ॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं ॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं ॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥
त्रलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥११०॥
उर उरज़ जलज बिराजही। कलधूत श्रीफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं। इक होत जोजन वासियं ॥छं०॥१११॥
गर लज़ति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनुं कमल बसि अलि धामए॥छं०॥११२॥

---

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।

बलि पुहप तिलक सु नासिका । जनु कीर [1]चुंच प्रहासिका ॥
तिन मुत्ति बेसर सोभए । ससि सुक्र मिलि रसि लोभए ॥छं०॥११३॥
तस नयन षंजन कंजए । सुरराज सुर मन रंजए ॥
चाटंक नग जर जगमगै । विय चक्र करि ससि पर जगै ॥छं० ॥११४॥
बिय भौंह बंकित अंकुरी । जनु धनुक कामति [2]संकुरी ॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ । [3]रविचंद मिलि रस आइ कौ ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन बेनियं । जनु ग्रसित अहि ससि ऐनयं ॥
सित दिव्य अंमर अंमरं । नह मलिन होत अडंवरं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
अंगवास [4]आस सुगंधयं । संग चलत मधुव्रत संगयं ॥
सम उदधि मथि कीनौ हरी । फटि फेन प्रगटित सुंदरी ॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य्य की प्रशंसा ।

मालिनी ॥ हरित कनक कांतिं कापि चंपेव गोरीं ।
रसित पद्म गंधा फुल्ल राजीव नेंचा ॥
उरज जलज सोभा [5]नभिकोसं सरोजं ।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहंसी ॥ छं० ॥ ११८ ॥

दूहा ॥ कामालय सो संदरी । जिम अरि अग्गि अनंग ॥
विधि विधान मति चुक्कयौ । कियै मेन रन अंग ॥ छं० ॥ ११९ ॥

मालिनी ॥ अधर मधुर बिंबं, कंठ कलयंठ रावे ।
दलित दलक भ्रमरे, भ्रिंग भ्रुकुटीय भावे ॥
तिल सुमन समानं, नासिका सोभयंती ।
कलित दसन कुंदं, पूर्न चद्राननं च ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है ।

दूहा ॥ न्याय छुऱ्यौ मुनि रूप इन । सुरति प्रीय चिय आहि ॥
जा मोहै सुर नर असुर । रहै ब्रह्म [6]सुष चाहि ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-हंस । (२) ए. कृ. को.-संहरी । (३) ए. कृ. को.-रचि ।
(४) ए. कृ. को.-सास । (५) ए. कृ. को.-नासिका । (६) मो.-सुष ।

कवित्त ॥ इनह काज सुर धरत। सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध। पर हनत स्वामि रन ॥
भरत पच जुग्गिनि समत्त। रति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्ष पल भवत। पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरच्चि करतें समर। तब लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय। वरत वरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥
दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि। मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत। उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना।

कवित्त ॥ तीय धर्यौ तन जोग। श्रवन मुद्रा सु [1]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति। न्हाय जलु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंधि। दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ। जोग जंगम सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै। बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै। रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥
दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि। निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डँवरू डहडह्यौ। अंवर सब सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग। गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास। [2]मयन नह चतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म। [3]पहरि अँग अंग दिगंवर ॥
नह गनेस षट बदन। पुच गननंदि अंग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक ससि। व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन चिशूल चिपुरारि षल। नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-फटिक। (२) ए. कृ. को.-नयन। (३) मो.-पहिर अंग अंगनि वर।

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना ।

बहु आदर आदरिय । [1]अरघ आतिथि तिहि दिन्नौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट । कष्ट बहु तप करि किन्नौ ॥
डुलिग इंद्र रबि चंद्र । इंद्र सुर लोकह मानिय ॥
मो अग्गै कर जोरि । देव सब तजत गुमानिय ॥
तग्गह सु ग्यान मन उप्पज्यौ । देव दुषी करि सुष लह्यौ ॥
चिदनंद ब्रह्मपद अनुसरिय । धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन ।

दूहा ॥ मात गरभ आवागमन । मेटि [3]भ्रमन संसार ॥
ज्यों कंचन कंचन मिलैं । पय पय मझ्झ संचार ॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सों कहौं । निरगुन गुन विस्तार ॥
बरन्यौ वपु बैराट हरि । जा मुनि लहैं न पार ॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी ॥ कहौं ग्यान मंतं सुमंतं विचारौ । गहौं अद्ध मूलं उरद्धं संचारौ ॥
धरौं ध्यान नासा चिदानंद रूपं । त्रिकुट्टी [4]त्रिलोकी स्वयं जोतिरूपं॥
छं० ॥ १३० ॥
पियों बंकनालं चढ़ै दंड मेरें । सुनै सद्द अनहद्द अनहत्त टेरें ॥
धुनी अंतरं जोति जानौ गियानी । जपै मंत्र हंसं सु सोहंविनानी॥
छं० ॥ १३१ ॥
सरं नाभि मूलं सरोजं प्रकासै । दलं अष्ट [5]पद्मं तहां सो उहासै ॥
तपत्तं कनक्कं चरन्नं [6]झलक्कै । दसं अंगुलं नालि हिरदै ढलक्कै ॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिमं पुष्फ कल्ली तिमं कंज फूलै । करै जोग उद्धं धरै वाय मूलै ॥
तहां देव अंगुष्ट मानंत वासै । धरै अष्ट वाहं बसै देव बासै ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.-अरध । (२) मो.-गगनं । (३) ए. कृ. को.-विभ्रमन ।
(४) मो.-त्रलोकं । (५) मो.-संतं । (६) ए.-चलक्कै ।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्रान देवं। रहै मध्य भानं अलष्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं। ससी मध्य अग्नी रहैं रूप रत्तं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तासें विराजै। तहां पिठ्ठ सिंघासनं देव साजै ॥
रतन्नं जरे वज्र [1]कोटीस कोटी। तहां देव नाराइनी जोति मोटी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]भ्रगं लछ्छिनं वक्ष कौस्तुभ्भ सोहै। धरै चक्र पद्मं गदा कंवु रोहै ॥
धरैं [3]पानि पग्गं धनुं [4]वान सल्लं। इसौ ध्यान दिष्यौ महा जोग वल्लं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी। महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासी ॥
तहां सूर कोटी ससी कोटि सीतं। वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

[5]क्रितं सेत ब्रनं [6]अरक्तं सु चेता। जुगं द्वापरं पीत कलि कृष्ण [7]त्रेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं। रहै आप आपं गुरुं पच्छि थानं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं। अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रूपं निरूपं अरूपं समथ्थं। रहै [8]सास भैवास करि देह रुथ्थं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप बैराट गुर जौ बतायौ। जिसौ अरजुनं कृष्ण भारथ [9]सुनायौ ॥
महाकास सीसं चरंनं पतालं। कढ़ी नाभि सुर्गं दिसा बाहु पालं ॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इभ्भं। गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं ॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी। कहै देव वेदं [12]न जानंत जानी ॥
छं० ॥ १४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-श्रियं। (३) ए. कृ. को.-सांग।
(४) ए. कृ. को.-मुसल्लं। (५) ए. कृ. को.-प्रभा।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तुं। (७) मो.-त्रेता।
(८) ए. कृ. को.-साम। (९) ए. कृ. को.-वनायौ।
(१०) ए. कृ. को. सूर। (११) ए. कृ. को.-बाहु। (१२) ए. कृ. को.-जनानं न।

जगै रैंनि दीहं महा जोग जोगी। विराटं सरूपं कहै भोग्य भोगी॥
निराकार आकार दोऊ विमायौ। कहै देव औतार गुर जो बतायौ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना।

दूहा॥ मन मानै सोई भजहु। कष्ट तजहु तुम देह॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै। उर मेटहु संदेह॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि घर बसै। मनो ग्यान-मन ईस॥
गरभ दोष मेटहु प्रबल। उर धरि ध्यान जगीस॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

दूहा॥ कहै ब्रह्म अवतार दस। धरे भगत हित काज॥
रूप रूप अति दैत्य दलि। द्रुपद सुता रषि लाज॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त॥ मच्छ कच्छ बाराह। अप्प नरसिंह रूप किय॥
वामन बलि छलि दान। राम छिति छत्र छीन लिय॥
लंकपती संहर्यौ। उभय बलदेव हलायुध॥
दयापाल प्रभु बुद्ध। रहे धरि ध्यान निरायुध॥
कलि अंत कलंकी अवतरहि। सत्य ध्रम्म रष्षन सकल॥
करि सरस रास राधा रमन। मवन ग्यान ब्रह्मह अकल॥छं०॥१४६॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो।

दूहा॥ कपट ग्यान मुष उच्चरे। मन छल धूत अधूत॥
कपट रुप कंठीर कर। चरन चित्त अवधूत॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल संध्यौ तिनह। भै बिन प्रीति न होइ॥
हर छल तजि हर रूप करि। मान प्रगट्टिय सोइ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन।

कवित्त॥ पीत बरन कजलीय। छोह आरोह सरप जनु॥
दसन सु तिष्ष कुदाल। नयन बिय वज्र धर्यौ तनु॥
बज्र बंक अंकुस गयंद। नष कुंभ विदारन॥

उर्द्ध केस कग सह। गरब दंती [1]दल गारन ॥
धर पटकि पुंछ मुंछाल छल। पीठ दिठ्ठ अवधू पर्‍यौ ॥
भय भीति कंपि कामिनि कुटिल। धाय विप्र अंकह भर्‍यौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना।

दूहा ॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि। सर सरोज हति काम ॥
रोमंचित अँग अँग सिथल। मन मोह्यो सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥
दिष्षत अप्छरि अष्ट उन। रह्यौ नैन मन लाइ ॥
देह भुलानो नेह कै। और न सूझै काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥
भ्रमन भयानक सुपन छल। सिंघन अवधू संग ॥
जानिक पंष परेवना। करि डँवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥
कामजारि सिव भसम किय। कर विभूत रति सोक ॥
भोग भुगति रति सुंदरी। द्रिढ़ नह जोग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं।

गाथा ॥ वनिता वदंत विप्पं। जोगं जुगति [2]केन कस्मायं ॥
स्यामा सनेह रमनं। जनमं फल पुन्न दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना।

दूहा ॥ चित्त चल्यो मन डंगमग्यो। रच्यो रूप रस रंग ॥
आनि पहुंतो जरज रिषि। दही भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना।

अरिल्ल ॥ पहर एक पर निठ्ठ। जगाइय अप्प गुर ॥
भौ लज्जा लवलीन। विचारत अप्प उर ॥
जाइ सु पत्तो तात। सु नैनन भेदयौ ॥
भेथ्यो अंगन अंग। अनंगह षेदयौ ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दूहा ॥ देषि तात परदच्छ फिरि। भय लज्जा लवलीन ॥
षिमा अरथ तप रंभ कै। काम कामना भीन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो.-लग्गरन। (२) मो.-कवन।

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना।

पहचानी रिषि सुंदरी। कुस गहि कीनौ दाप ॥
भ्रगुटि बंक रिस नेन रत। दिय अच्छरी सराप ॥ छं० ॥ १५८ ॥
हम रिष्षीसर बन बसत। रसह न जाने एक ॥
कंद भषत तन कष्ट करि। लेइ आप इक मेक ॥ छं० ॥ १५९ ॥

सुमंत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल। भाल भ्रकुटी दिषि तातह ॥
गयौ बदन कुमिलाइ। जानि दीपक लषि प्रातह ॥
पुच कवन तप तप्यौ। भयौ वसि काम वाम रत ॥
इनहि आप करों भस्म। कवन छंडैष तोहि हित ॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि। रंभ अरंभ न कछु रह्यौ ॥
सम अग्नि रूप दिष्षौस रिषि। तबह आप रंभह कह्यौ ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन।

कलह [1]करतही डहि कुबुधि। कलहंतर कहि एह ॥
पुहची भार उतारनह। जनमि पंग कै ग्रेह ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कवित्त ॥ [2]एम छल्यौ चयवार। रोस करि आप आप दिय ॥
म्रत्य लोक अवतार। नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
इन अवधू मन छल्यौ। सुष्षनन लहहि चीय तन ॥
पित पति कुल संहरहि। पीय तो हथ्य रहै जिन ॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल। उअर जुन्हाइय पुच छल ॥
संजोग नाम प्रथिराज बर। दुअ सुमार अनभंग दल ॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना।

दूहा ॥ श्रवन सुने रंभह डरिय। रही जोर कर दोइ ॥

(१) ए.कृ. को.-करनाहि। (२) ए.-एक।

अब सांई अपराध मुहि। मुगति कहो कब होइ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप साइर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पालै सु ध्रम्म रिषि क्रम्म जोग। चै काल क्रम्म षट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]व्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष भय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुम्मिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह बर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन चयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ। (२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ। (४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि घात सुर उच्चरिय ॥
जानेन काल त्रिमान गति। तिन विधान विधि संचरिय ॥छं०॥१६९॥

विष्णु का सनत्कुमरों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जंपि आभम्म। इंद्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक्क। सनंद सनातन [1]न्यानिय ॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनंदन देव। [2]मुनी व्रत आदि भिमानिय ॥
ए कुंअर पंच पंचौ हटकि। पंच बाल पंचौ प्रकति ॥
रिषि बर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति ॥
छं० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ हटकि सु अग्र प्रमानं। अज्ञानं साध दारूनो बरयं ॥
ज्यों रिषि नाम समथ्थी। तामसयं द्वार पालकं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

माटक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उद्यापितं बुद्बुदौ ॥
नारेपं नासेष उच्चत ननं, दीर्घं न रुपं [3]वरं ॥
नंमाया चलयं बलति किरिया, एकस्य जोती तहं ॥
बैकुंठं गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ मापत्ते रिषि थान तिन। दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्धौ करतार ॥ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पद्धरी ॥ पाधरी छंद बरनंत मुभ्झ। [4]बस्वरन बीर कल बरन रुभ्झ ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससियाल दंत [5]बकह विधार ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह्ह मंडि। अवतार किष्ण गोकुलह छंडि ॥
तिन काज किष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन ॥
छं० ॥ १७५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-न्यारी। (२) ए. कृ. को.-मुनि। (३) मो.-परं।
(४) ए. कृ. को.-बलबीर बीर कल बलन रुझ्झ। (५) मो.-चक्रह।

अवतार दुतिय चयबर विरोध। राजस्व जग्य सुत भ्रम्म सोध॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसस्स। हरिमेव कुस्स विय बंध [1]गस्स॥
छं०॥ १७६॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न॥
छायान घाम [2]नन सस्त्र [3]घाय। सिव को प्रसाद लीनौं [4]सुचाय॥
छं०॥ १७७॥

भरभरिय भार वर पच काज। रामहति राम जंपै विराज॥
छं०॥ १७८॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुअ [5]विजुद्ध किय देव॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक षंभ प्रति सेव॥ छं०॥ १७९॥

गाथा॥ सो षिष्भियं प्रहलादं। किं थंभं सभ्भयौ भनई॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं भारं॥ छं०॥ १८०॥

दूहा॥ थंभ भार फुट्यौ सुबर। लष हति घाम न छाह॥
बर सिंघासन बैठि कै। बर बैकुंठह जांह॥ छं०॥ १८१॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हत्तौ कर्नयं॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं॥
जंहस्रौ धर धार उप्पम कवी, चक्रौय चक्रं फिरं॥ छं०॥ १८२॥

गाथा॥ यों उड्डा कपि कांक। प्रब तर गाम प्रस्थरं लोयं॥
जिम घर सराय थानं। उड्डै सा भाजनं मुक्ति॥ छं०॥ १८३॥

दूहा॥ यों उड्डी लंका सुधर। चिया बैर प्रतिपाल॥
हर बंदे गोबिंद कथ। बर बैकुंठह हाल॥ छं०॥ १८४॥

---

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु।
(६) मो.-विधं। (७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसंगिनं।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना ।

चौपाई ॥ सो बोलिय इंद्रह परदारं । हरि रुक्यौ तिय देव संसारं ॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति बर कीनिय । चरन सुरज बर सीस सु दीनिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुहीं देवता देवतं विष्णु रूपं । किते इंद्र कोटं नचैं कोटि रूपं ॥
नचें कोटि ब्रह्मं रबिं कोटि तेजं । ससी कोटि सीतं सुधा राज सेजं॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि जं कोटि से दुष्ट ढाहे । किते कोटि कंदर्प्प लावन्य लाहे॥
किते कोठि सामुद्र मज्जाद दिद्धिं । किते कोटि कलपं तरं मुक्ति सिद्धं॥
छं० ॥ १८७ ॥

वलं कोटि पोनं द्रिगं कोति भारी । तुहीं तारनं तेज संसार सारी ॥
तुही विष्णु माया अमायात तूहीं । तुहीं रत्ति दीहं तुही तेज जूही॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुहीं तू तुही सर्व भूतं । तुहीं आदि अंतं तुहीं मध्य हूतं॥
जहां हूं न हूं तूं तहां तूं न नाहीं । गनों हूं न देही रहै तूं समाहीं॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुंही ताप संताप [1]आत्ताप तूंही । कह्यौ इंद्र लग्यौ चरनं समूंही ॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना ।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सों । पय लग्यौ त्रय देव ॥
हरिचरनन छुंडै नहीं । लोहरु चंमक भेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

स्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य । कोटि देव महावरं ॥
इंद्र ध्यान समो सिंघो । [2]पंचाननस्य राजयं ॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना ।

(१) ए. कृ. को.-अत्तातु, अतात । (२) मो.-पजाननस्य ।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन। अट्ठ परी संग साज ॥
हाहा हूहू संग सजि। ए गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥

चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं। इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं। नचै गुन अच्छरि अच्छरि काजं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

रचै बर इंद्रति इंद्रह [1]साज । .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार। जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १९५ ॥

षिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार। तजै चय देव कह्यौ इँद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार। भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १९६ ॥

पतंन पतंन कह्यौ तियवार। परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १९७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन्न मुक्कै न हरि। रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ। छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १९८ ॥

गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं। सुद्धारं कब्बयं होई ॥
तो पत्ती प्राकारं। इद्रं चरन कब्ब सेवाइं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनौज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग। पुचि बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कनवज्ज प्रमान। गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई। गँग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय। आप सुध्यौ गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तदिन। तिय सराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न। तदिन महूरत बर लइग ॥ छं० ॥ २०० ॥

(१) ए. कृ. को.-काज।

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना।

कनवज्जह कामधज्ज। राज विजपाल राज वर ॥
हय गय नर वर भीर। सकल किय सेन जित्त पर ॥
वीर धीर वर सगुन। भार उद्धार महामति ॥
मत्तिराम चितविद्य। वीय [1]रंमाधि राज रति ॥
संचर्‍यौ सेन सजि विजै नग। सकल जीति भर राज धर ॥
सुरवस्य दिस्य न्नप संग किय। क्रम्यौ [2]देस दक्षिन सुधर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम वंस राजाधिराज। सुकंद देव प्रभु ॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक मय मग्गि न्रयन नभु ॥
तीस लष्प तोषार। लष्प गेंवर गल गर्ज्जहिं ॥
दसह लष्प पयदल्लह। पुलत दस छचति रज्जहिं ॥
दिव दिवस रीति मंचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह ॥
दिगविजय करन विजपाल न्नप। सपत कोस भिर्‍यौ तिनह॥
छं० ॥ २०२ ॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयंदहु ॥
धन असंप घन मुत्ति। [3]रतन घट समुनि मन्नदहु ॥
सौ प्रजंक रजकंति। कोटि दस पाट पटंवर ॥
दिय पुत्री सु विसाल। दासि सें [4]सत्त अडंवर ॥
परयी सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग ॥
वर सवर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग ॥
छं० ॥ २०३ ॥

(१) ए. कृ. को.-रमादि। (२) मो.-देह स दच्छिन।
(३) ए. कृ. को.-रतन समुनि धन मनिंदह। (४) ए. कृ. को.-सपत।

दूहा ॥ अति सु ललित्त सरूप विय । रमहित राजन संग ॥
इक्क थार भोजन करहिं । अति सुष न्त्रपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलँगति बंधि न्त्रप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्त्रप । सेत समुद्द सऋोट ॥ छं० ॥ २०६ ॥
नराज । करन्न नाट संकला यनेक भूप राजनं ॥
समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरंग जीति संषिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गँभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नठ्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं [1]मवल्ल मुष्य चंद्रकास नठ्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पठ्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुग्रच्छते प्रकार साध काम कग्गलं मिलं ।
अधंम भ्रम्म सद्द भूमि पंग राज संषिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥
कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोव्रन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्रित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । तट्ट लग्गे भग्गे षल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थी मद सब्बल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुबर । मोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना।

(१) ए. कृ. को.-मवील ।

दूहा ॥ सेत्तुंजा डेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुत्तिय दिव्य [1]नग । लै पैलगि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुजाब संजाबरी । दस षट बानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सौपकिय । रिध दीनी नव निद्ध ॥छं०॥२१२॥

कवित्त ॥ भोरा कुअर सु भेट । सिंघ लग्यौ तट सागर ॥
लाष दोय बाजी वितंड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्ष तोषार । पंति कनवज्ज प्रमानं ॥
लष सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भानं ॥
जलथान जाइ धूलग्गि रह । रह्यौ एक बड़वानलह ॥
चहुआन देस तष्षह सुधर । पंच षंड कनवज्ज पह ॥छं०॥२१३॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहारं । जित्तवि सकल राइ किय संगे ॥
पुर कनवज्ज संपत्ते । बज्जन बहुल बज्जि आनंदं ॥छं०॥२१४॥

दूहा ॥ मंडि जग्य विजपाल न्रप । भूपन तुंग विनास ॥
जय जयचंद विरद्द, बर । हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचंद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि । चंद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुष बरस दुअठ्ठ प्रमानं । ता उर आनि संजोगिन थानं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ घटि वढ़ि कलह न अनुसरै । पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति । चंद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥

कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति । राज गवरी गुर बंध्यौ ॥
जिनं जुन्हाइय चंद । अष्ट पर्वत वित नंध्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-गन ।
(२) ए. कृ. को.-अतिहास । (३) मो.-सौति ।

जिनं जुन्हाइय चंद। तुंग तिरुहन विप्रानय ॥
जिनं जुन्हाइय चंद्र। कंठ कंठेर सु बानय ॥
जयचंद जुन्हाइय पंगुरै। असी लष्ष हैवर [1]परिग ॥
जयचंद जुन्हाइय राज वर। वरनिय अरधंगह धरिग ॥छं०॥२१८॥

दूहा ॥ पुव्वकथा संजोग की। कही चंद बरदाइ ॥
पंग घरह जुन्हाइ उर। आनि प्रगट्टिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परिग।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा क संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुन्न कथा संजोग की। कहत चंद वरदाइ ॥
सुनत सुगंध्रव गंध्रवी। अति आनंद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम संयोग संजोग विधि। कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ। तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराप पिमा अवतारं। जरित रिष्य हरद्वार सुधारं ॥
तिन सिष सिष्पि छिमाहत लिन्नौ। मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* संवत ११३६ में संयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह सै च्यालीस चव। पंग राज दृढ़ मंडि ॥
वर पंचम ससि तीय ग्रह। जनम संयोग विपंड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्त्रिमल पूरन उग्यौ। निसि निरमल अति रूप ।
न्त्रिप न्त्रिप कन्या व्याहता। मरन अदब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जंजं वालत पढ़ै गुन। तंतं वढ्ढति काम ॥
सिंद्धि [2]विभंतर तिय सहज। लछि लच्छिन विस्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तत्त रस लिन्नौं ।   (२) ए. कृ. को.-त्रिपंतर ।

* छन्द ४ के अंत में विखण्ड शब्द "संवत ११३६" की सूचना देता है—यथा (वि = दो + खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग—विखण्ड = संयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् संवत् ११४४ में राजा पंग ने राजसूययज्ञ आरम्भ किया ।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना । और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना ।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह । घरिय सो बढ़ै स सुंदरि ॥
और बढ़ै इक मास । पाप बढ्ढै रस गुंदरि ॥
मास बढ़ै षटमास । रित्त बढ्ढै सु बरष बर ॥
बरष बढ़ै सुंदरी । होइ षट मध्य बरष भर ॥
पूरंन बाल षट विय बरष । नव मासह दिन पंच बर ॥
ता दिंनह बाल संजोग उर । मदन वृद्ध मंडिय [1]सुधर ॥ छं० ॥ ७ ॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना ।

इह संजोइय राज । पुत्ति बत्तीसह लच्छिन ॥
रची विधाता काम । धाम कर अप्प विचच्छिन्न ॥
छाजै छचिय गौष । [2]गुमट कलसा छवि छाजिय ॥
करिय रास आवास । सरस रस रंग विराजिय ॥
तिन चित्रसाल चित्रत सुरंग । मनसिज आगम अंग अँग ॥
मन आस वास बसि मंदिरह । प्रथम दीप दीनौ सुरंग ॥ छं० ॥ ८ ॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई ।

दूहा ॥ उड़गन सम सहचरि सकल । उड़पति राजकुमारि ॥
नव रस आए देह धरि । कोन चिया अनुहारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन ।

हनूफाल ॥ संजोगि नाम सुजान । जिन तात बिजय किआनि ॥
इह लच्छिनेव बतीस । इह पच्छ छत्त बिदीस ॥ छं० ॥ १० ॥
इह उंच ग्रंह समान । भुअ राहनी व्रत आनि ॥
इन पानि बर चहुआन । जिन बंधिलिय सुरतान ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) मो.-सुघर । (२) ए.-मुगट ।

इन काज राजसू जग्य। मिलि राइ सहस विभग्य॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति श्रोनित भूप॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप राचत देव। इन इंद्र वधु अह मेव॥
इन सुरन षोड़स दीन। इकतीस लच्छन मीन॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ रुद्र माल विसेष। पर कलह कामिनि लेष॥
इन संबन्यौ बहु राज। भिरि सहस छचिय [1]छाज॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान। रवि कोटि उग्गिय जान॥
मिलि छच छचन धाह। सोइ छांह मंडय बाह॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि साति [2]सत्तत काज। रन पानि बर भृत आज॥
इन कलह कामिनि नाम। संसार समनह वाम॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र। [3]ज्यों रुषमिनी रु गोविंद॥
दुज दुजन दुर्जन लाग। सुक सुनत श्रवन विभाग॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छच विभंग। रुधि भिन्न षोनिय अंग॥
परि लष्य छचिय जुद्ध। इन बरह कित्ति असुद्ध॥ छं० ॥१८॥
छिति छच बंधन व्याह। तिहि सुघर मंडल धाह॥
वर मिलन बेस विरूप। चढ़ि चलन मनमथ भूप॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह। दुअ नयर मंगल [5]धाह॥
षट भाष भाषन जान। संजोग जोवन पान॥ छं० ॥ २० ॥
बँधि षंड राज सुराज। कनवज्ज राजन साज॥
धम्मारि काम विलास। संजोग रूप प्रहास॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग। सुनि श्रवन भव अनुराग॥
चित विलषि उलषि कुमारि। लगि पढ़न केलि धमारि॥ छं० ॥२२॥
अस ससिर रिति अत्तीति। पति तात ग्रह छिति जीति॥
संजोगि वारिय मंडि। दुज दुजन गंध्रव छंडि॥ छं० ॥ २३ ॥
उअ मेह [6]मोर मराल। पप्पीप सद्द सराल॥
उअ दष्य अंबर मंडि। मधु माधुरी सुव छंडि॥ छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो.-काज। (२) ए.-संतन।
(३) ए. कृ. को.-ज्यों रुषमनी रू गुविन्द। (४) ए. कृ. को.-लार।
(५) ए. कृ. को.-धार। (६) ए. कृ. को.-मोह।

इह लग्गि केलि अहार। तिअ ताल तेह सहार॥
इह केतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिन षंडि॥ छं० ॥ २५॥
इय चंद एह प्रहास। घट एह मध्य दुवास॥
कनवज्ज राजन मभ्भि। दिस षंड राइ सु मभ्भि॥ छं० ॥ २६॥
स्लोक॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं० ॥ २७॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा॥ सुअ संयोग [1]समुष्ष सुष। दिष्ष सभोजन राइ॥
अति हित नित नित्तह करै। तिय रयनी न विहाइ॥ छं० ॥ २८॥
सुअट्ठ आरि अपनी करै। सरै न सीषह तात॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात॥ छं० ॥ २९॥
नेवज पुप्फ सुगंध रस। बज्जन सद्द सुढार॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार॥ छं० ॥ ३०॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धर्‍यौ देव पंचमि संजोग॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धर्‍यो देव राजन सु मत्ति॥
छं० ॥ ३१॥
दूहा॥ अति विचित्र मंडप सुरँग। अंगन [2]सस सहकार॥
अध सु लाल कूंअरि पढ़त। सद्रिस प्रतंम सु मारि॥ छं० ॥ ३२॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप॥ छं० ॥ ३३॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप॥
जिन जिन भेद अभेद गति। जं जं मंडहि धूप॥ छं० ॥ ३४॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।
(१) को.-संमुष्ष सुख। (२) ए.-तस।

अरिल्ल ॥ य लज्जा सों लज्जहि बाल । दिगंबर पत्त गुन चाल ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग । वस्त्र रचै नहिं राचै जोग ॥छं०॥३५॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन ।

दूहा ॥ सो रष्षी सुंदरि सु विधि । मदन दृष्टि दिय हथ्थ ॥
सो कीनी मदनं सुदृष्टि । अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्य । मदन कीनी भँति दृढ्ढह ॥
जोग जिहाजन जाइ । ताहि जल मढ्ढित [1]सढ्ढह ॥
अति भय मिंत्तिय बाल । रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन पट धरैं । देव बधू दिपि लाजति ॥
आरंभ अंबता धाम मधि । अति विसुद्ध चिहु पास सपि ॥
संजीव जोग जंगम [2]सवैं । तप सुतप्प मध्या सु लिपि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना ।

दूहा ॥ लय लग्गिय भग्गीय गुन । अति सुंदर तिन साथ ॥
एक मत्त दस अग्गरिय । विनय पढ़ावत गाथ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पंचत अग्गरी । राज कन्य रज रूप ॥
तिन मध्ये मध्यात में । काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें द्वै दुजन बर । पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि । आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना ।

आय सपत्तिय बाल बर । वेदिषि चष सह बाल ॥
मानौ रस अलि अलिनि कौ । लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सद्धिय । (२) ए. कृ.-वसे ।

पढ़ि संजोग सजोग हत। विजय सु देवह दाव॥
चक्कह चक्क सु वेन बस। दिषि संजोग अनहाव॥ छं०॥ ४२
जाम एक निसि पच्छिली। दुजनिय दुजवर पुच्छि॥
प्रात अप्प घर दिसि उड़ै। जे लच्छिन कहि अच्छि॥ छं०॥ ४३॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना।

कवित्त॥ इन लच्छिन सुनि बाल। न्रिपति करि रुधिर प्रकारह॥
बहु छत्रिय जुझ्झिहैं। रुंड हरि हार अधारह॥
गिद्ध सिद्ध वेताल। करै क्रत्यह कोलाहल॥
इह लच्छिन सुनि सच्च। वाल लच्छित जिन चाहल॥
संजोग फूल फल नन दियन। ए कन्या जिम प्रथम तिम॥
कलहंत राज छची सुबर। भविस बात होवै सु तिम॥ छं०॥ ४४॥

दूहा॥ तिन कारनहों जक्ष गुन। भुगति मुगति सह देन॥
सो कन्या पहुपग कै। आय सपत्तिय मेन॥ छं०॥ ४५॥
जयति जग्य संजोग बर। दिषि अंगन लष चार॥
एक अलष्षन भिन्नहै। सो कलहंतर साल॥ छं०॥ ४६॥
कलहंतरि सुंदरिय बर। [1]अति उतंग छिति रूप॥
तिन समान दुज पिष्प कै। मदन लभ्भ तन भूप॥ छं०॥ ४७॥

गीतामालची॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं।
लहु गुरु सुमंडित अगन छंडित, दूह गाह, समुद्दरं॥
सक [2]सगन संचित, अगन बंचित, जगन मगन, प्रबंधयं॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहचल, छंदयं॥ छं०॥ ४८॥
छिति छच बंधति, चित्त वित्त, सु नगन निंधति, अंभयं॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष षटक सु संचयं॥ छं०॥ ४९॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, अप्पि जोगय, भोगयं॥
इन काल विद्धं सब्ब सिद्धं, एक दोष संजोगयं॥

(१) को.-मूल। (२) को.-लगन।

मय मंत मंतिय, कांम कंतिय, विज्ज जंतिय उच्चयं ॥
जं कहै अच्छरि, पढ़ै तच्छिर, लिषै नच्छिर, मंडियं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पाषान लीहं, दीह तीहं, काम सीहं, विच्छुरै ॥
कवि करै कित्तिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय, उच्चरै ॥
छं० ॥ ५१ ॥

संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय। ग्रेह हिंडोल संजोगिय ॥
कनक डंड परचंड। इंद्र इंद्रिय बर जोइय ॥
परहि लत्त हिंडोल। दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक षंभ पर काम। चंद चकडोल फिराइय ॥
लग्गें नितंब बेनिउ [1]बढ़ि। सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही। कामय [2]वग्गी कर गही ॥ छं० ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥ षुत्त अंब कदंब कुरंगा। तै किरपल पछै अनभंगा ॥
चक्रित बत्त सुनि बाल प्रकारं। सह सुंदरि सोभत सिरदारं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पंग बर व्याह क्रत। बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन। त्यों समुझै गुन चाह ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पंग। देव दक्षिन देवग्रह ॥
मेनहीन माननी। हीन उपजै अरंभ कह ॥
मनमोहन मोहनी। निगम करि बत्त प्रकारं ॥
आसमान इष्षियै। नाग नर सुर नहिं [3]भारं ॥
अष्षौ उमाह मंगलविनय। ध्रम्म सकल जिम सुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तिय सुबर। विधि विधान निरमान गति ॥
छं० ॥ ५५ ॥

(१) ए. कृ.-बेनी उव्रटि। (२) ए. को.-काम अवंगी। (३) ए.-नारं।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ।

बचनिका॥ मदन वृद्ध बंभनी संजोगिता कों विनय मंगल
पढ़ावति हौ सु कैसो विनय मंगल॥

दूहा॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल। सुकल सु जुवति चरित्त॥
बिनय विनय बंभनि कहै। बिनय सु मंगल वृत्त॥छं०॥५६॥
*मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति। सुबर बसीकर चित्त॥
सुनि विचित्र बाला विनय। श्रवन सवद्दिन चित्त॥ छं०॥ ५७॥

विनय मंगल की भूमिका॥

त्रोटका॥ प्रथमं उठि प्रात सुषं दरसं। उतमंग सुअंग पयं परसं॥
विनया गुन तुच्छ विभच्छ मनं। हरहं जय काम सु ताम मनं॥
छं०॥ ५८॥
ग्रह गामिय रैनि परप्परसं। प्रगटी तय भावन ताम रसं॥
द्रिग द्रप्पन लैह बदन्न [2]हसं। प्रति प्रीतय चारु चषं दरसं॥
छं०॥ ५९॥
भय कामिनि काम मनं हतलौ। सिषि नासिष पानि कुअद्रत जौ॥
मन वृत्ति सु गत्ति मनं गहनं। रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं॥
छं०॥ ६०॥
जिरुयं जिय रस्स रसं रसनं। भय भीर उवृत्त पयं बसनं॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं। जह ईजह दिष्टित हीय [3]ससं॥
छं०॥ ६१॥
भुगतं बर अंन वरं विनयं। प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं॥
भव रूप चिरूप तनं लहनं। अनि ईस नसीस समं वहनं॥छं०॥६२॥
अनि पूज न जाप न ईसगनं। पति पूज मनोरथ लभ्भि मनं॥
पिय दिष्षहि दिष्षि मुगद्ध मनं। वय बढ्ढिय ताम सुकाम बनं॥
छं०॥ ६३॥
वसनं रुचि पीय सुकीय घरं। तन मंडन भूषत ताम करं॥

---

(१) ए.-सुद्ध। *यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है।
(२) ए. कृ. को.-इसं। (३) मो.-सरसं।

गहनं रस सार श्रृंगार बनं। गति गंठिय ग्रंथ सु काम मनं॥
छं० ॥ ६४ ॥

इति गत्ति चरित्त जुधाम धरं। सु जितै त्रिय कंत अधीन करं॥
छं० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन।

दूहा ॥ जो बनाय बनिता बनिय। सषी न मंगल माल॥
सषि आग्रह मानै नहीं। पिय छंडै ततकाल॥ छं० ॥ ६६ ॥
उव निस बस दूती ग्रहन। [1]सषिन विलंब न बग्ग॥
पियन पियहि अंतह करन। करहित सुभग [2]अभग्ग॥ छं० ॥ ६७ ॥
धं धीरज विरहै बनह। आतमेछ अप सिद्ध॥
तं तन मन मान न धरहि। करै सु कामह विद्ध॥ छं० ॥ ६८ ॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना।

मुरिल्ल ॥ तूं धनयं मनयं तुअ [3]मत्तिय। तूं हियय जियय तुअ गत्तिय॥
तूं बरयं धरयं तुअ तत्तिय। तूं पियय नियय निज रत्तिय॥छं०॥६९॥
तूं ग्रहयं नरयं नय नत्तिय। तूं गनयं जपयं जक जत्तिय॥
तूं सहयं वसयं घन घत्तिय। तूं दियय छियय छवि हत्तिय॥
छं० ॥ ७० ॥

तूं सहयं दुहयं दुह कत्तिय। तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय॥
तूं तपयं अपयं अप नत्तिय। तूं सथयं नथयं सथ सत्तिय॥
छं० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना।

कवित्त ॥ विलसि भाइ भामिनिय। जाम जामनिय प्रमानहि॥
विलसि काम कामिनिय। ताम तामिनिय प्रमानहि॥
हों सुबंभ बंभनिय। रंभ रंभान सिषावन॥
अवन मूढ़ मन मूढ़। रूढ़ रंजन गहि दावन॥

(१) मो.-सखिय। (२) मो.-अभंग। (३) ए. कृ. को.-मुत्तिय।

तन तुंग द्रुग्ग उग्रह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [1]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन त्रिषान त्रिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल बिना। भुगति बिन शंकर धारी॥
मुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल दृथारी॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि न्त्रिमान ग्यान बिन॥
कित्ति न कर बिन लहिय। छित्ति बिन सस्त्र लहिय किन॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष ग्रसिन तन॥
[2]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि॥
छं० ॥ ७३॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा॥ [3]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार॥
सवरिय अंब [4]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [5]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार॥ छं०॥ ७५॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक॥ मानं भंजन नेहमान [6]न्त्रगुना, सज्जन्न सा दुर्ज्जनं॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नस्यं बुरं॥
इक्कं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लघुं॥ छं०॥ ७६॥

दूहा॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [7]सूल॥ छं०॥ ७७॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनइ। (२) ए. कृ. को.-सारसा।
(३) ए. कृ. को. निकर। (४) ए. कृ. को.-ांत।
(५) मो.-त्रिनय सार सुक्कीय दिषि। (६) मो.-त्रगुना। (७) मो.-मूल।

विनय का गौरव ।

एक विनय गरुअंत गुन । अव्वह विनयंति सार ॥
सीतल मान सु जंपियै । तौ वन दर्भै [1]तुसार ॥ छं० ॥ ७८ ॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन ।

विनय महा रस भंतिगुन । अवगुन विनय न कोइ ॥
जोगीसर विनय जु पढ़ै । सुगति सलभ्भै सोइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥
विनय नहीं जौ पंषियन । तरु नहिं दोष दियंत ॥
फल चष्पै पत्तइ हतें । मानय गुनय गहंत ॥ छं० ॥ ८० ॥
एकै विनय सभग्ग गुन । तजत न विनय अरिष्ट ॥
जाने घर सूना हुआ । भोइ नता करि मिष्ट ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मो पुच्छै जौ सुंदरी । तौ जिन तजै सुरंग ॥
जिम जिम विनय अभ्यासिहै । तिम तिम पिय मनपंग ॥छं० ॥८२॥

कवित्त ॥ विनय देव रंजिये । विनय वहु विद्य देइ गुर ॥
विनय द्रव्य लहि सेव । विनय विष तजै अप्प सुर ॥
विनय दत्त अदतार । विनय भरतार हार उर ॥
विनय करह करतार । विनै संसार सार सुर ॥
वय चढ़त चढ़ै विनया सुबर । सब शृंगारति भार वपु ॥
बंभनिय भनै संजोग सुनि । विनय बिना सब आर तपु ॥छं०॥८३॥

चौपाई ॥ बंभनियं भनियं संजोई । वयसंध्या सु सुधा बुधि भोई ॥
तूं सक सौतिन पिय बसि होई । विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही ॥
छं० ॥ ८४ ॥

दूहा ॥ विनय उचारन चाचु मुष । दिष्षिय सारन सार ॥
कामत्तन सुद्धै सगुन । कंत करै उरहार ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चंद्रायन ॥ काम धरा धरकंत सुरत्तौ । तब संजोगिनी बोल अहित्तौ ॥
[2]अच्छिर छंद सु चंद विरत्तौ । सक्करया पय मुष्पह पित्तौ॥छं०॥८६॥

---

(१) ए. कृ. को.-तुषार । (२) ए. कृ. को.-अछिर छंद सुछन्द सु वित्तौ ।

गाथा ॥ सुष पित्तौ पति रोगै । लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
जंतुर पये सुबाले । कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान ।

कवित्त ॥ एक काल सुंदरी । दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सद्दयौ । एक वनिया विचारी ॥
जिन चय किन्नौ मान । सुष्य तिन देह न लद्धौ ॥
अंतकाल संग्रहै । चित्त तल मोह विलुद्धौ ॥
जामंति अंति सा गत्ति हुई । ता मत्ती सारन [1]सुबर ॥
ऊरद्ध नरक बहु भोगि कै । जम्म लब्भ पसु पंषि [2]तर ॥ छं० ॥ ८८ ॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता ।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस । सुष लद्धौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसी । बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ ज्यौं बिन दीपक ग्रेह । जीव बिन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिहून । कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्या बिन रजपूत । बुद्धि विनु भोग न जानिय ॥
वेद बिना बर विप्र । करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [3]सुंदरि अधम । कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विनयौ बड़ौ । लहै विनयमंगल सुसुष ॥ छं० ॥ ९० ॥

विनयहीन स्त्री समाज़ में सुशोभित नहीं होती ।

गाथा ॥ [4]बेदयौ वंचितं विप्रं । भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब जंजार सु जानं । जुन्हाई नेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तं तू विनय बिहूंनी । युं दिट्ठाइ सुंदरी तनयं ॥
यो [5]वासंतति काल । पत्तं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनर । (२) ए. कृ. को.-तन ।
(३) ए. कृ. को.-सुघर । (४) ए. कृ. को.-बेदया वंचित विप्पौ ।
(५) मो.-यौ बासंत सुकालं ।

दूहा ॥ वह लज्जा कहि जात त्रिय । तन मंडन अवसान ॥
[1]काल बसंत रु वाल ग्रह । सो मतिमंत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन ।

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय बंध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निकाल । विनय संसार सूर [2]अब ॥
विनय विना संसार । पलक लब्भै न सुष्य तनु ॥
जहां जाइ सो रिष्य । ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
रूप रीति विनय लग्गी रवनि । विनय उचारन चार रस ॥
विनय विना सुंदरि इसौ । सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुन्नन द्दिनन ॥
तौ पलै प्रतिपाल । विनय सु हृदय बंधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाय जस साप ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै । तिम लब्भै अभिलाप ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार । मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति । विनय विन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उच्चार । पार कढ्ढन रस होई ॥
गुनवंत निगुन संग्गुन अगुन । विनय विना तन बालयौ ॥
गुन विना धनुष क्रम विन सुफल । [4]उब्भर मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी । तिन पंनन प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गाथा ॥ बाले विनयंति सारं । देहं मध्य तत्त ज्यौ जीवं ॥
त्यों जीवं सुष देही । विनय विना बालयं नेहं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बंभनि कहै । पढ़न सुपंग कुंआरि ॥
वलह बस्सि दूजैं सुबल । तौ बसि वलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

(१) मो.-काल बसैं तरु बालग्रह । (२) मो.-रस, कृ. को.-सब ।
(३) मो.-तस । (४) ए. कृ. को.-उज्जर मढ़ ।

प्रथम सुरस हथ्थे अपन। तो हथ्थे अप पीव ॥
सुनि संजोग संजोग है। जोव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्ष संजोग। पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग। तीय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय सजोग। अप्प छाडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग। दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी। बढ़ी मत्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडिं मान क्रिमबीय चिय। तो ग्रह जोवन संचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कीनी कंत। विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै। सुष्ष तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल। सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अम्रत संग्रहौ। मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन क्यौं। बिनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय। विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं। अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
षट नवरस दुभ्र सद्दें। गारुड़ विना मंच साझरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सथ्थ जस जीव। विनय भोगवन सुष्ष वर ॥
विनय देन रसधान। विनय आचरन अम्रत धर ॥
अद्ध रयनि अंतरै। विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै। मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुक्कै न तूं। सुनहिं सुकी सुक अवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन। दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पच्यौ संजोग सुभ। तन मैं विनय सुभंत ॥
ज्यौं जल बलि जलहीं जियै। विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त ।

चंद्रायन ॥ सुनि संजोग सिषावन सावन संझरिय ।
हीय हितानिय पीर न पावै बंझरिय ॥
गुर [1]गुज्ज नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ ।
अच्छिर अध्थ प्रमान विराजत मझझ धुअ ॥ छं० ॥ १०७ ॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना ।

मुरिल्ल ॥ सु धरता तर रत्तिर रत्तिय । दुज्ज दुजानौ वत्तर मत्तिय ॥
प्रोग प्रियं रज राजन मंडिय । जीहा जाम उभै षट [2]षंडिय ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना ।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय । मार माननिय मनोवसि ॥
कामपाल संजोग । विनय मंगलति पढ़ति रस ॥
तहाँ सहारंतर एक । अंग अंगन घन मौरिय ॥
सुक पिक पंषि असंष । बसहि वासर निसि घोरिय ॥
इक वार दुजी दुज सों कहै । सुनहि न पुब्ब अपुब्ब कथ ॥
उतकंठ बधै मन उल्लसै । रहहि नींद आवै [3]सुनत ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दुज का उत्तर ।

दूहा ॥ दुज फुनि दुजि सों उच्चरिग । कहि राजन बर बत्त ॥
जोग भोग जुद्धह जुरन । करन सु कारन हित्त ॥ छं० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक राव संभरीय । दुतिय जोगिनि पुर भूपति ॥
तेज मौज अजमेर । उअर उद्दारति मूरति ॥
बान मध्य वय मध्य । मध्य मह महि तंन सोचन ॥

(१) ए. कृ. को.-गुज्झंनन ।
(२) मो.-घट पंडिय ।
(३) ए. कृ. को.-सुनत ।

छिति छितान धर अम्म। आम धर हिय रति रोचन॥
छचि देव देव मंडल सभा। इक इक अप्पि अपंडलिय॥
सुरतान बंधि पुरसान रति। मंत अपंड सुदंड लिय॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना।

दूहा॥ सुनत कथा अछिवत्तरी। गइ रत्तरी विहाय॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभल्यौ। जिहि सुप श्रवन सुहाय॥ छं०॥ ११२॥
होत प्रात तब पठन तजि। धाइ हिंडोरन आइ॥
इह चरित्त दुज टेपि कै। पहु जुग्गिनिपुर जाइ॥ छं०॥ ११३॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४६॥

अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैंतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन हृद्द ग्रह वंभनिय । पढ़न कुँआरिक हृंद ॥
वार वार लोकन करहि । जिम नछिन विच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
वालप्पन अप्पान सुष । सुप्प कि क्कल मेंन ॥
सुभर श्रवन सापिन करहि । ढुरि ढुरि पुच्छत नेंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]स्लोक ॥ मात्त च पंग ग्रेहं । जग्य [2]जापय होमनं ॥
तच वंधं दंड देहा । राजा मध्य महावत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उड़ि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित संभरी हतथान । वर मंच इष्ट संमान ॥
पते सुढिल्लिय थान । अपभेद किय परिमांन ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज मुक्कयौ सार ॥
दिपि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्घ अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उड़ि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

---

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए.-जायं । (३) को.-कृ.-पिथ्थिह ।

कवित्त ॥ कहैं सु दुज दुजनीय । सुनौ संभरि न्रप राजं ॥
तीन लोक हम गवन । भवन दिष्ये हम साजं ॥
जं हम दिष्पय एक । तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन वंभनिय ग्रेह । नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव । अवर सोभ तिन ससुद वन ॥
आकास मझि जिम उडगनिन । चंद विराजै मनों सुवन ॥छं०॥८॥

दूहा ॥ मदन चरित्त सु वंभनिय । मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बत्त कनवज्ज पुर । पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥

गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्पं । सिष्पं भेदाइ दुप्पनो जीवी ॥
दुष्पं संभरि राइं । कहियं आज आगमं नीरं ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै । सुष भरि दिष्पी नाहि ॥
दुष्प संभरिय अनूरँग । वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ट । मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
मिलि नषत्त भंजनं । नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार । कह्यौ रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाह । होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति । विधि अनेक रनंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट । संत सुमंत सु विस्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन ।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्रप । जनम पत्रिका बाल ॥
जन्म सुषादी उद्धरिय । को यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ । दुज्ज दुजराज कवथ्थै ॥
मंगल बुध गुरु सक्क । सन्नि सोमार चवथ्थै ॥
केइंद्री गुर केत । राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन नछित्त दुज कहै । देव जगि पंगह ढारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि । काम गनं गुन विस्तरिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग महि । बर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥

स्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो चैव । राहकेतं नक्षत्रया ॥
पंगानी च जया पुत्री । मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना।

दूहा ॥ इह कहंत षट मास गय। लिपि अंकूरा बाल ॥
पच्छ दीय वर काढ़ि कै। लिपि जनमोति रसाल ॥ छं० ॥ १६ ॥

विनय मंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना।

पद्धरी ॥ लिपि छंद वंध जनमोति ताम। तिहि दीह धर्‍यौ वर वाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज ।जानियै वीर वाला विराज ॥
छं० ॥ १७ ॥

तन त्रिगुन भए देवत्त लाज। आवंत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढ़न जंपन सुबाल। मंगलति विलय मंगल विसाल ॥
छं० ॥ १८ ॥

अनंगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन।

इह पढ़हि वाल अप ग्रेह थान। ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
वरजै न कोइ मंची प्रमान। जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छं० ॥ १९ ॥

सिंगार संग अनगेस राज। पायौ न पुच फल नीठ साज ॥
सत्तरिरू सत्त वर्षह रसाल। पयौ सुदीह अनं सु काल ॥छं०॥२०॥
आना नरिंद तस वंस राज। चिंत्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चिंतिय अचिंत मनि मित्त मित्त। जंघार भीम ओड़न विअत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

अनगेस ईस अनगेत पुज्ज। लिषि भोज बंध प्रारंभ कज्ज ॥
छं० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता कथ्थ कथि। सोधि सु बंधव वीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन। को साधंन सरीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना।

चोटक ॥ मय मंत गुरू दस हार पयौ। सह कंकन चामर तीन नयौ ॥
षट हाटक चोटक छंद बली। सु कही कविचंद उपंग भली ॥छं०॥२४॥

जिन ठौर बरंजत मंच पथं। नन मानिय राज कथा न कथं ॥
भिरि भंजय रंजय प्रज्ज सबै। जिन जाइ सु तिथ्थ अनंग अबै ॥
छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लच्छि सुलंत मनं। उपजै तिम मद्धि विकार सनं ॥
क्रत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ देवतयं ॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई। कागद लिपि प्रोहित्त बधाई ॥
तब राजंन सुनत लै लग्गी। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गी ॥ छं० ॥ २७ ॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदेना।

भुजंगी ॥ लबं चित्त चिंता सुचिंता विचारी। ननं मंच मानै गुरं धीर कारी ॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं नीर बीरं लघू दिव्य पानं ॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं वंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं ॥
भलक्के भँगूरं लिषे पेषि हथ्थं। हितं राज अंगं अनंगेस पुत्तं ॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरब्बर काज ॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगन बाज ॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सोच सुवृत्त। राज पत्तौ सु धाम न्रप ॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिप्पयौ रजक अप ॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्कि चल्ल्यौ सु तिथ्थ भ्रम ॥
हेवर चीर रतंन। गयो बदरी सुवृत्त क्रम ॥
यों मिले सब्ब परिगह न्रपति। ज्यों जल झर बोहिथ्थ फटि ॥
दिसि दिसा च्यार अचरिज्ज बर। बजि निसान नीसान घटि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगंगं । चामर सराल मालती पहुयं ॥
ता अंवीय प्रमानं । उज्जल कित्तीय सोमजा सूरं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं में सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना ।

अति कित्ती अति उज्जली । वरने वा चंद्यो कव्वी ॥
जानिज्जै परिमानं । राजानं संमयो नथ्यिं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मंडल न्रप देषि कै । चंद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चंद सरद्द कौ । संग उड़ग्गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दै दुज्जनि दुज उत्तरह । दुद्ध रूप चमकंत ॥
कोइ कहै प्रतिव्यंव है । को कहै प्रीति अनंत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन ।

कवित्त ॥ चंद वदनि म्रगनयनि । भोंह असित को वंड वनि ॥
गंग मंग तरलति तरंग । वैनी भुअंग वनि ॥
कीर नास अगु दिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लंक श्रीफल अपीन । चंपक वरनं तन ॥
इच्छति भ्रतार प्रथिराज तुहि । अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह वरष पदंमिनी । हंस गमनि पिष्पहु न्रपति ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयःसंधि अवस्था होती है उसका वर्णन ।

दूहा ॥ तिहि तन वन न्रप सों कहै । दुहुं अंतर सिसु वेस ॥
जुव्वन तन उद्दिम कियौ । वालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥

वालप्पन तन मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों वसंत तरु पल्लवन । इछ उठ्ठन अंकूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

वय वालत्तन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह । आभा उद्दित जोर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उछाह हिम संधि ॥
यों सिस जुव्वन अंकुरिय। कछु जुव्वन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर मैं। राति दिवस संक्रांति।
यों जुव्वन सैसव समय। आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर ॥
त्यौं सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्रम क्रम वनिता सु वय। सैसव मध्य रहंत ॥
सीतकाल रवि तेज ससि। घामरु छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कविचंद ॥
पाव उठै तर छांह छवि। षोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति जंग सैसव सुबय। इह दिष्षिय उनमान ॥
मानों बाल बिदेस पिय। आगम सुनि फुलिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥
गाथा ॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्येय सोभियं सारं ॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उच्चयं होइं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
दूहा ॥ यों सैसव जुव्वन समय। विधि वर कीन प्रकार ॥
ज्यों हथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम ॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राहु रेह बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अह संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥
जुव्वनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै निडर ताइ॥छं०॥४९॥
सैसव सुससिर रितुराज थान। मानहिँ बसंत जुव्वन न आन ॥
अनमंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कटक्क सिसिरह वसंत ॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नेन नचै नवाय। आवंत जुवन जनु करि बधाय ॥
जिम सीत मंद सुगंध वाय। कछु सकुच एम बर करहि पाइ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

जुब्बन नवत्त सिसु सरिर मंद। विरही सँजोग रस दुक्षनि छंद॥
मीन मन्न संत मद्दि सुनि वसंत। जुब्बन उछाह सिसु सिसर जंत॥
छं०॥ ५२॥

अंकुरिन पत्त गहुरित डार। सिसु मध्य स्याम ज्यों सोमि सार॥
पिय ओर पिया जिम दिष्षि लुक्कि। सिसु मध्य वेल द्रुम आइ ढुक्कि॥
छं०॥ ५३॥

उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ। जिम मैंन मोज जुब्बन सउट्ठ॥
कलयंठ कंठ रप्पै संवारि। मिलिहै बसंत करिहै धमारि॥छं०॥५४॥

चिय तरस पुच्छ उट्ठीय कोर। जल मीन जाल ज्यों हलत डोर॥
सुक्कलित वाय तरु हलत छीन। त्यों काम तेज चलि नेन मीन॥
छं०॥ ५५॥

संजोगि अंग जोवन चढ़ंत। तहं उट्ठि ससिर आयौ वसंत॥
वयभोग वुद्धि सुंदरि सलज्ज। रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज॥
छं०॥ ५६॥

दूहा॥ जनम सुष्य जोवन जई। उई सु सैसव ठार॥
संभरि न्वप संभरि धनी। तनह सु भौ रति मार॥ छं०॥ ५७॥
सजि सुपंग राजा सुभर। दिसि दिसि जित्तन वान॥
उभै दिसा वर मंच जित। अट्ठदिसा भर षान॥ छं०॥ ५८॥

संयोगिता की बड़ी बाहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त॥ एक सु पुचिय पंग। दीय दक्षिन सु देव ग्रह॥
मान हीन माननिय। रूप उप्पम रंभा कहि॥
सुवर काम रति वाम। मनों फेरिय सो आनिय॥
कमल अनूपम काज। कछू ओपम मन मानिय॥
लच्छन वतीस वयसंधि इह। सो ओपम अग कथ्थयौ॥
चढ़नह सुमनमथ चित्त रथ। चढ़न मत्ति चित रथ्थयौ॥
छं०॥ ५९॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी॥ संजोग संधि जोवन प्रवेस। चितमंडि सुनौ संभरि नरेस॥

श्रीषंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु करी कर मरदि गल॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नष्ष आवै न कब्बि। तिन पड़ी छोड़ मयुषन सरब्ब ॥
इक अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकन तेज द्रप्पन सु मुत्ति ॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग झलकत सु रूर। मनु रत्त रंग कंचन कि चूर ॥
ओपम्म नष्ष फिरि कहि उपाइ। कन्नैर कली फूलंत राइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत बाम। अँभ श्रोन षंभ सोवन्न वाम ॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै श्रोन रंग ॥
छं० ॥ ६३ ॥

नित्तंब तुंग इन भाइ कब्बि। धरि चक्र सँवारि दुज बाम रब्बि ॥
नित्तंब भाग उत्तंग छंड । मनु तुरत काम धरि जंक दंड ॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान मुट्ठीत घट्टि। बैनी ढलक्क दीसंत पुट्ठि ॥
चिंतै सुकब्बि ओपंम ओर । नागिनि सु हेम षंभह सुजोर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विलार ॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार ॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग ॥
जोवन प्रसंग इह रूप हद्द । छुर करी हरी मुक्कै मसद्द ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान मत्ति। जब लग्गि आन सैसव किरत्ति ॥
अधबीच बात हम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे चिवलीय चाह। बैठोति चंद आसनति राह ॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद जंग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनुं अगर चंद मिलि संग कीन॥
मधु मधुर वानि सद सहति रंग। कलयंठ कंठ कोकीन संघ॥
छं० ॥ ७० ॥

वर दसन पंति दुति यों सुभाइ। मोइक्क चंद जुब्बन बनाइ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवन त्रिघघात पाइ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सुंदरि बदन्न इनौ बनाइ। मानों रथ्थरवि दीपह मनाइ॥
कहां लगि कहों चहुआन बाम। सैसव सुबाल कंपैति काम॥
छं० ॥ ७२ ॥

अंबुज नयन्न मधुकर सचित्त। षंजन चकोर चमक्कंत चित्त॥
वैनीति साल सोभैं विसाल। मनों अरध उरग चढ़ि कनक साल॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ इह सुनि न्रपति नरिंद दिन। भय ओतान सुराग॥
तव लगि पंग नरिंद कौ। बाजे बाजन लाग॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्कै राज॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरिच चिंतै मनह। सोई रूपक [1]राइ॥
न्रिप अग्गै हर बंधि कै। कल कनवज्जह जाइ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ भय अनंग न्रप अंग। श्रवन ओतान सु बढ्ढिय॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दड्ढिय॥
मध्य हिय न छिन टरहि। श्रवन मन नैंन निरष्षै॥
चित्त गयंदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्षै॥
संभरि सुवत्त संभरि न्रपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। दढ़िय श्रोतान काल न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रष्योति मद्धि मन॥
फिरै संजोगिश्र पास। और रस मुक्किलि राजं॥
देउं द्रव्य मन वंछि। जाइ एसुधै चिय आजं॥
दुज चलै उछि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्ते बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुनिय॥छं०॥७८॥

सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सबद्द उच्चै कहै। कब कहि नीचं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तब करि उंचे लैन॥ छं० ॥ ७९॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंग कुमारि॥
कोन देस को भेस बलि। क्यों आवन सु विचार॥ छं० ॥ ८०॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। षुरसान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं० ॥ ८१॥
बर तेज ओज जमजोर जोर। अरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द॥
छं० ॥ ८२॥
इह जोग बीर सुर्वी न बीर। बेधत्त सत्त बर एक तीर॥
कनवज्ज रीति बजि जेय कंध। इह धक्कि राज सह होइ [1]निंध॥
छं० ॥ ८३॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए.-निद्द।

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मी सुतं ॥
वाने पार्थिव भूपति ससुद्दिता, मानेषु दुर्योधनं ॥
तेजे सूर समं ससी अमिगुनं, सत् विक्रमो विक्रमं ॥
इंद्रो दान सुशोभनो सुरतरू । कामी रमावल्लभं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
वढ़ि आनंद सु छंद नन । सुनिग रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा अलिय जु श्रवन । द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोवन विचै । वाल वसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुंदरि दुजि वयन । कही जु कथ्थ सँवारि ॥
वरनन सुनि प्रथिराज कौ । भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥
असन सेन सोभा तजी । सुनित श्रवन्न कुंआरि ॥
मन मिलिवे की रुचि वढ़ी । और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गाथा । अमिए अंमिय वचने । रचने वाल ध्यान प्रथिराजं
गोलक डुलै न थानं । जानै लिप्पि चित्रयं चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान । सुनी सुनि मान कथा चहुआन ॥
इकं इक वत्त सवै न्रप पाइ । सवैं चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सकंविय विक्रम ज्यों परमान । सतं सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
वलद्दै वाह सहस्सयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥
विधिं विधि भागति पूरन तेज । ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचंद समान । वलवुद्धि साइर ज्यों उनमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥
रसं रज राजत जोति प्रकार । भयंकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंक्रत पालग पंचव जोति। तिनं मति एक अमंतिय कोति॥
छं० ॥ ९४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज। करी कबिचंद सु ओपम साज॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर। तिनै बर विद्र बरष्पत नीर॥
छं० ॥ ९५ ॥

धराधर हिंम सुतं लछिराज। उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय काज॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा ॥ या समान जौ राज होय। तौ कहियै प्रति जोति॥
ना समान चहुआन कौ। तौ कहि ओपम कोति॥ छं० ॥ ९७ ॥
कंत सुकंति सु दिष्षि इम। दुहु ओतान बढ़ाय॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल। व्रत्त अव्रत्त समाय॥ छं० ॥ ९८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ सीय लीय व्रत राम। सुव्रत नलराज दमंती॥
सिव व्रत लीनो सिवा। कृष्ण व्रत रुकमनि कंती॥
व्रत ज्यों काली धर्‍यौ। बीर बाहन शंकर बर॥
ज्यौं व्रत लिय व्रतभान। भान पत्ती सुमंत वर॥
व्रत लियौ देव देवत न्रपत। व्रत सँयोगि चहुआन वर॥
बर बरौं एक एकह सु व्रत। कै चहुआन बिसान नर॥छं०॥९९॥
मन अभिलाष सु राज। बरन सुंदरी भइय मति॥
जौ तन मध्यें सास। मोहि संभरिय नाथ पति॥
कै कुआंर पन मरौं। धरौं फिरि अंग पहुमि पर॥
तौ राजा प्रथिराज। आन मन इंछ नहीं बर॥
इम चिंत चित्त कुंअरी सु व्रत। रही भोइ मन मोन अहि॥
कलहंत बीज महि मंडि दुज। अप्प सपत्ते ग्रेह कहि॥छं०॥१००॥

दूहा ॥ यों व्रत लीनौ सुंदरी। ज्यों दमयंती पुब्ब॥
कै हथलेवौ पिय करौं। कै जल मध्यें दुब्ब॥ छं० ॥ १०१ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ त्रिय पंगानि कुमारि सुमार सुमार तजि ।
घरी पहर दिन राति रहै गुन पिथ्थ भजि ॥
भेदं भंजै और जोर मन में लजिहि ।
लषि पुच्छहि त्रिय वत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत। मधु माधव वल मंडि ॥
भार अष्टदस वेल तरु। पत्र पुरातन छंडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मंजरि धरिय। परिमल प्रगटि सुवास ॥
छत्र रुचिर छवि काम जनु। अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥

पद्धरी ॥ आगम वसंत तरु पत्र डार। उठि किसल नइय रँग रत्त धार ॥
अंकुरित पत्र गहरति डार। लहलहति जंग अट्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

मधुपुंज गुंज कमलनि अधीन। जनु काम कोक संगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार। विरहिनी दीन दंपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कलरव करंत षग द्रुमति रोर। निसि वीति सिसिर रतिराज भोर ॥
त्रिय पुरुष चषनि रुचि अनँग वड्डि। दंपति अनंग विरहिनी जड्डि ॥
छं० ॥ १०७ ॥

इम अवनि राजरित गवन कीन। नव मुग्ध मध्य कंतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायंत नारि। मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥

तन भरति रत्त रँग पीत पानि। हिय मोद प्रगट तन धरत जान ॥
इम हुअ वसंत आगम अवन्नि। मदमत्त करिय जनु गवन वन्नि ॥
छं० ॥ १०९ ॥

मसि भींज दिननि पिय तन बनंग। अवतार अवनि जनु धरि अनंग ॥

सुष हर्ष गंड मंडल प्रकास। फरकंत अधर मधु रस विलास॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन मंडि। बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि॥
मधुमास सुक्ल निसि रुचिर चंद। बहि गंधपवन छवि सीत मंद॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसर अंच देह। कलमलिय ज्वलिय वनिता सनेह॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन। सुभ सोभ बाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ। जल्लैव इक्क अँग पवन पाइ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल। निरषंत नयन सोभा बिसाल॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन।

दूहा॥ उपबन घन बद्दल बरन। सीत पवन द्रुम जाल॥
चित्तरेष बल्लिय बिटप। अवलंबि ताल तमाल॥ छं० ॥ ११४ ॥

तरु तल जल उज्जल अमल। टपकात फल रस भार॥
कुंज कुंज विगसत बसन। तन वढ़ि धात अपार॥ छं० ॥ ११५ ॥

पतत पत्त नहिं धर रहत। बानक बान उजास॥
चंद जोति जल बानि बनि। होड़ होत रस भास॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त॥ फलन भार नमि साष। जीभ रस स्वाद विवस षट॥
सुमन सघन वरषंत। गीत संगीत कोक रट॥
बँधि चहबच्चनि नीर। छब्बि छचन रंग धानिय॥
मंडित मंडप गौष। सुभग सालनि छवि न्यारिय॥
संभरिय राव बैठक बनक। कनक अलक कंचन पुरिय॥
प्रथिराज सुदित मादक तनह। बाज राज नंच्यौ तुरिय॥ छं० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना।

कढ्ढि धरनि षुरतार। भारु भर सेस ससंकिय॥
उढ्ढि नाल असमान। उग्गि आकास चंद बिय॥
पत पंषिय भर हरिग। अंग थर हरिग रष्षि कन॥

इक्क अवन झंकरिग । कठिन वाविपान अप्प तन ॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि । विफरि अंग तूरिय सु रहिय ॥
सोमेस सूर चहुआन सुअ । तास कित्ति चंदह कहिय ॥छं०॥११८॥

वाग गिरद वर कोट । तास दरवान हुकम किय ॥
एकाकी हम रमत । कोइ न आवंन लहै विय ॥
वैठि दरह दरवान । जानि जमदंड हथ्थ धरि ॥
पिथ्थ कारह कम्मान । टंक पचीस जीर जुर ॥
लग्गे सु फिरन द्रुम द्रुम निकट । जषनी जष दरसन भयौ ॥
देषंत सोभ षुल्लिय नयन । मैंन रत्ति आनँग ठयौ ॥ छं० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप ।

दिष्षि जष्प प्रथनाथ । हाथ जुग जोरि नवनि किय ॥
कवन काज इत अवन । नाम तुम कवन पुरुष चिय ॥
जप्प नाम दुष दवन । नाम रवनी रस वल्लिय ॥
नाटिक विविध विचित्र । करन आगम रस रल्लिय ॥
सिर नाइ पिथ्थ कीनिय नवनि । कछू मोहि अग्या कहौ ॥
सू गंध धूप मिष्टान फल । करौं प्रगट वन पुर लहौ ॥ छं० ॥ १२० ।

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई वड़े राजा हो ।

दूहा ॥ कहिय जष्प प्रथिराज सम । बानक इक्क अनूप ॥
दुरि पिष्यो द्रुम सघन तर । तुम कोइ भूप अनूप ॥ छं० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना ।

पद्धरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन । सूगंध धूप रस कल रसीन ॥
आवत्त वस्त लग्गै न वार । जहं तहँति आनि कीजै अमार ॥
छं० ॥ १२२ ॥

मुष होत हुकम सेवक प्रवीन । सब वस्त आनि अम्मार कीन ॥
भरि कनक कुंड बर कासमीर । म्रिगमद जवादि अनपार भीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कपूर वालस तहं धरिय आलि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान ॥
केतकि कमल्ल केवर कुसुम्म। मालती बेल जाती सुरम्म ॥छं०॥१२४॥

चंपक्क फूल पडुर अपार। जहं तहँति आनि किन्नै कुमार ॥
तंबोल तच्च बानक अनंत। बुध विविध जाहि भूलत गनंत ॥
छं० ॥ १२५ ॥

दारिम्म दाप केला रसीन। अघरोट नासपाती नवीन ॥
नारियर पिंड पज्जूर आनि। बिज्जौर और फल दिविध वानि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

घृत दुग्ध मिश्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर ॥
किय बिदा सब्ब सेवक्क बहोरि। दुरि बैठि पिथ्थ इक दृच्छ ओर ॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा ॥ निमष होत गंध्रव्व इक। संग नाटिक्क आरंभ ॥
तंतिताल बीना म्रदंग। सँग अच्छरि लिय रंभ ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी ॥ कुमकुमनि नीर कर सुघ पषारि। अचवंत अमिय बर गंगधार ॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तंबोल बरनि कपूरषंड। फुनि कछे न्रित्य नाटक्क मंडि ॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच हथ्थन धरंत ॥
छं० ॥ १३० ॥

कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म षंडि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

जब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारह नाद तंती अधीन ॥
रस सरस हास बरन्यौ न जाइ। सुभ कर्म्म धर्म्म सुत्र सोम पाइ ॥
छं० ॥ १३२ ॥

नाटक्क उट्ठि फुनि बैठि देव। करि भोग भोज मिष्टान सेव ॥
हुअ नपति अंन कपूर संडि। तंबोल तच कर बिरा पंडि ॥
छं० ॥ १३३ ॥

मन मध्य बहुरि इक रह्यौ जप्पि। तिहि सध्य इक गंध्रब्ब इप्प ॥
तिहि कह्यौ जप्प रस रह्यौ आज। इह कवन आनि सब सँचिय साज ॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जप्प जिहि क्रत्त काम। सोमेस पुच प्रथिराज नाम ॥
गंध्रब्ब कही सुष प्रसन होइ। इक देउ मंच तन अभय सोइ ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जप्प लीन प्रथिराज ताहि। मन मुदित अंग सुष रहे चाहि ॥
गंध्रब्ब मंच दीनौ स धीस। सिर धारि हथ्थ दीनी असीस ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जप्प बहुरे अकास। तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास ॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४७ ॥

अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अड़तालिसवां समय।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजे जाना।

कवित्त ॥ राज रजज सब काम। करें राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु ऊंच। अन्न कामह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म। वाज गज क्रम परिहारं ॥
देस देस फुरमान। दिए पहुपंग अपारं ॥
संची सुमंत मति वंधि करि। सर्व्व देस फौजें फटी ॥
वर कित्ति करन जुग जुग लगै। इह कामंध जैचंद घटी ॥छं०॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन।

नराज ॥ हियंत सोधि राजह्न जुराज जग्गि जोगयं।
सवत्त राज सामदंड भेदि वंध भोगयं ॥
सु दान मान अप्पि पान दैवयं न वोधयं ॥
सवर्त्त वत्तमान रे अनेक निद्धि सोधयं ॥ छं० ॥ २ ॥
सुवन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठयं।
रजक्क भार कोटि एक धातु भार नाठयं ॥
तुरंग भार लापए गजेंद्र ग्रेह लष्पयं।
कपूर कासमीरयं अनेक भार सष्पयं ॥ छं० ॥ ३ ॥
पटंबरं स अंबरं सुगंध धूप डंबरं।
सद्दत्त लाप च्यारि वा सदासि [1]नेस अंतरं ॥
सुमंत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न संतरं ॥
.... ॥ छं० ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए.-नेम।

षटानु अंस भाग विप्र संस्फने सुपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दोंन वेद वाल अप्पयं ।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
विचारि वीर राजस्त्र जयंति [1]जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेंवर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय । जहां विविध विधि [2]भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छ सो ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्रप डंच मति । रहै सु रष्यौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥
गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । बज्जाए दीह दसहांई ॥
विप्फुरें जास कित्ती । तेगया न विगया हुंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल । चढ़वि है वै अभंग भर ॥
मुगत माल द्रगपाल । जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग । जग्य करनह अधिकारे ॥
चिहुं तेज चक्क ससि काल ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार माल न्टप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥
गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि। (२) ए.-जोग।

पद्धरी ॥ उच्चरै वीर पहुपंगराइ। हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
सुक्कलै दूत वर मंच काज। मातुलह वंस प्रथिराज राज ॥ छं० १२॥
छिंद्र न जानि गुरु गुरुञ्च पत्ति। चिचंग राइ साहसह हत्त ॥
धर धरनि वंटि विभ्भाइ लच्छि। जानै सु राज जिन तजो गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
वंधौ समेत जिन वलह भूमि। वरपै सुगाज ताम्मस [1]अतूमि ॥
वर मिलै आइ पहुपंग पाइ। ढिल्ली समेत सोरों लगाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
अप्पैज भूमि तुम सेव जाइ। .... ॥
जिम जिम सु वमौ तुम चित चढ़ंत। तिम तिम सु दान पंगहु वढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर पेद जिन करौ चित्त। अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त ॥
को करै पंग सों वल प्रमान। दिष्यौ न तीन लोकह निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अव अमित मंत इह तत्त जानि। गुरुवत्त तत्त मंची सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि रु परधान तब्ब। पहुपंग राइ वर हुकम सब्ब॥ छं० ॥ १७ ॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा ।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क। इक्कि वंसह निरधारिय ॥
आदि वंस कमधज्ज। वरन छचिय अधिकारिय ॥
तुम संभरि चहुआन। वसौ अजमेरति वीरं ॥
पंग देस सब भूमि। मंगै सो अद्ध उरीरं ॥
यों कियौ मंत ग्रह अप्प वर। सुमति बोलि परधान न्वप ॥
छिति मत्ति छिति्त जीपन धरा। सुवर सूर साहस सु तप ॥ छं० ॥ १८ ॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करनें से मना करना ।

(१) ए. अनूमि ।

पद्धरी ॥ थप्पै सुभट्ट राजह्न पंग। नर हरै पाप करवत्त गंग ॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलैति बेद। तन करै न्निमल अघ करै छेद ॥
छं० ॥ १९ ॥

ग्रह ग्रहन हेम कलि कलि सु नारि। मानों कि सूर ससि किन्न तार॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत बसि बरुन आइ ॥
छं० ॥ २० ॥

ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान। कैलास सिषर प्रतपै सुभान ॥
ग्रह ग्रहन गौष रष्पत बनाइ। कैलास डरह ससि अघ धाइ ॥
छं० ॥ २१ ॥

ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ। कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ ॥
*कलि अंत यथ्थ कमधज्ज राइ। .... छं० ॥ २२ ॥

सतपतौ सील धर भ्रस्स चाव। सुनि रोस कियौ पहु पंग राव॥
मागधहु सूत बंदनि बुलाव। .... छं० ॥ २३ ॥

पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब। हम बंस जग्य किहि कियौ पुब्ब॥
जिहि बंस जग्य नन होइ राज। भुगतौ न भूप सुष सर समाज॥
छं० ॥ २४ ॥

तुम बंस भए कमधज्ज सूर। कीनौ सु राज राजस्स भूर ॥
तब बंस भयौ बाहन नरिंद। अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद ॥
छं० ॥ २५ ॥

तुम बंस भयौ पूरूर [१]रूर। रथ च्यारि चक्क जिहि जीति सूर॥
सतसिंधु सूर जिह रथ्थ चील्ह। तुम बंस भयौ न्टप राज नील॥
छं० ॥ २६ ॥

तुम बंस भयौ नलराइ अंद। नैषद्ध हार हौं धर्‍यौ बंध ॥
षट चक्र भए कमधज्ज आदि। किन्नौ नरिंद जिह बरुन बाद ॥
छं० ॥ २७ ॥

जीमूत धर्‍यौ जिहि चक्र सीस। संसार कित्ति कीनी ज़गीस ॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अंश खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है।

(१) सूर।

को कहै पंग सों दुष्ट [1]आय । संडै सुजग्य निहचैत राय ॥
छं० ॥ २८ ॥

वारुन्न भूमि हय गय अनग्ग । परठंत पुन्न राजसू जग्ग ॥
सोधिग पुरान वलि वंस वीर । भूगोल लिषित दिष्षित सहीर ॥
छं० ॥ २९ ॥

छिति छत्र बंध राजन समान । जित्तेति सकल हय गय प्रमान ॥
पुच्छै सुमंत परधान तग्ग । अब करहु जग्य जिम चलहि कग्ग ॥
छं० ॥ ३० ॥

उत्तर सदीन मंत्री सुजानि । कलिजुग्ग नाहि विय जुग प्रमान ॥
करि ध्रम्म देव देवल अनेव । षोडसा दान दिन देहु देव ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सो सीप मानि न्रप पंग जीव । कलिजुग्ग नहीं अर्जुन सु भीव ॥
स्रुक्कि पंगराव मंत्री समान । लहु लोह अग्ग बोलहु अयान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना ।

दूहा ॥ पंग वचन मंत्रीस उर । मन भिट्यौ न प्रमान ॥
ज्यौं सायक फुट्टै नहीं । गुरु पथ्थर परजान ॥ छं० ॥ ३३ ॥
पंग परठ्ठिय जग्य जव । बत्त विविध धर वज्जि ॥
वर बंभन दिन धरहु सुभ । लगन महूरत रज्जि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना ।

मानि हुकम पहुपंग कौ । चलि मंत्री बुधि बीर ॥
कै साधै चहुआन कों । कै धर बंटै धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज वचन सेवक सुभ्रम । तत्व वचन करि जानि ॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा । संभरि वै परिमान ॥ छं० ॥ ३६ ॥
भुजंगी ॥ संभारियं राज चित्तं पुनीतं । जहा साधियं मंच मंत्री अनीतं ॥

(१) ए.-अग्राह ।

मनं वृत्त जान्यौ व्रितं बंक सूरं । मनौं साधनं वृत्त संसार चूरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

त्रिपं भ्रम्म जानैं इसे सूर पांचौ । मनौं पंग देही दुती अंग सांचौ ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना ।

दूहा ॥ मुक्कलि धर पत्ते न्रपति । दूत सु भ्रम्म सुचार ॥
मनौं पंग देही दुती । सुबरि वुद्धि उद्धार ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना ।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज । करिय आदर अधिकारिय ॥
देव भगति परमान । देव जिम जचत सु चारिय ॥
वर मिष्टान सु पान । मध्य अम्रत फल धारिय ॥
रंग रंग घनसार । अंग म्रगमद अधिकारिय ॥
मतवंत वृत्ति छोड़ें नहीं । डर न चित्त नन उच्चरहि ॥
षट घोंस गए बित्तें सुभर । दै कग्गद गुन विस्तरिय ॥ छं० ॥ ४० ॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना ।

कवित्त ॥ हरन दच्छ ज्यों जग्य । सेव कीनी कुवेर वर ॥
यों सेवा प्रथिराज । जानि पहुपंग करै नर ॥
भगति भाव विश्राम । ताप जप जाप देव सम ॥
षट सुदीह कग्गर प्रमान । उद्धन्यौ बीर भ्रम ॥
जं कह्यौ जुद्ध जैचंद वर । विधि विधान निरमान गति ॥
जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ । कह्यौ राज राजन सुगति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

साटक ॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुम्मझैव गंध्रव गुरं ॥
सोयं ता परचंड देवि बलयं, पंचे छठं [1]बंधवं ।
नायं भीम द्रुयोध भूमित वलं, एवा किंता अग्गजं ॥
सोयं मंगय राज राजन वरं, मातुल्ल मातुल वरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) ए.-वंभक्कं ।

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना ।

पद्धरी ॥ तिहि मंत काज प्रथिराज राज । बोले सु बीर भर वर विराज ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सत्त । इक अंग अंग पंचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा भ्रम्म सूर । देषत नरिंद वल करि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज । आहुट्ठ मक्षक्ष सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद । आरंभ मलय पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारौति भुम्मि । साइरह मद्धि नमनद्धि पुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि । भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छत्र छिति निद्दुर नरिंद । जैचंद बंध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू पट भ्रम पवित्त । बोलए अवर जैमंत सत्त ॥
इहि विधि प्रमान सामंत रत्त । बोलैं न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति ।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब । अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्प वर । लष्प लष्प सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना ।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजसू जग्य । आरंभ रंभ कीनौ अदग्य ॥
जित्तए राज सब सिंघ बार । मिल्लए कंठ जनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद । आवहि न माल मक्कह अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ । असमथ्थ सेस किम भूमि षाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

बंधो समेत सामंत सथ्थ। उत्तरहि आनि दरबार अथ्थ ॥
सुनि दूत चले दिल्लिय सु थान। आजानबाहं जहं चाहुआन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

पहुंचे सु इंद्र पथ्थह सु थान। गुदराइ वत्त जैचंद नाम ॥
हज्जूर बोलि पट्ठाय राज। क्यों आइ इत्त सो जंपि काज ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द का संदेसा कहना।

तब दूत कह्यि दिल्ली नरेस। आएस जंपि जैचंद नरेस ॥
राजसू जग्य आरंभ कीन। दस दिसन भूप फुरमान दीन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

छिति छत्र बंध आए सु सब्ब। तुम चलहु बेगि नह बिरम अब्ब ॥
फुरमान दीन चहुआन तोहि। कर छरिय दावि दरबान होहि ॥
छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह। संकरै सिंघ गुर जननि चाह ॥
उच्चरे गरुअ गोयंद राज। कलि मझ्झ जग्य को करै आज ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सतजुग्ग कहहि बलिराय कीन। तिहि कित्ति काज चिहुलोक दीन ॥
त्रेता सु कीन रघुवंसराइ। कुब्बेर कनक बरष्यौ सु आइ ॥
छं० ॥ ५६ ॥

धर ध्रम्म पुत्र द्वापर सु लाइ। तिहि पथ्थ बीर अरु हरि सहाइ ॥
(१)इल दर्ब गर्व तुम अप्रमान। बोलहुत बोल देवन समान ॥
छं० ॥ ५७ ॥

(१) कृ. दल।

जानीव तुम्ह पची न कोइ। निव्वीर पङ्गनि कवहूं न होइ॥
जंगलह वास कालिंद कूल। जानै न राज जैचंद मूल॥
छं० ॥ ५८ ॥

जानहित देस जोगिन पुरेस। आनह्ल वंस प्रथ्थिय नरेस॥
कै वार साह बंधयौ जेन। भंजिय सु भूप भिरि भीमसेन॥
छं० ॥ ५९ ॥

संभरि सकोप सोमेस पूत। दामित्त रूप अवतार भूत॥
तिहि कंध सीस किम जग्य होइ। जो प्रथिय नहीं चहुआन कोइ॥
छं० ॥ ६० ॥

देषी सु सभा तिन सिंध रूप। मानै न जग्य मन अन्य भूप॥
आदरहु मंद उठि चलि बसीठ। ग्रामिनी सभा बुधजन बईठ॥
छं० ॥ ६१ ॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना।

कवित्त ॥ मन विचारि बसीठ। आप आयन दै तारी॥
बंछै जंबुक मरन। बथ्थ पंचानन भारी॥
मरन लोइ बंछैत। हथ्थ जमदढ्ढ पोलै॥
अजा मरन बंछैत। वार दीपी संग डोलै॥
वंछई मरन कातर वितर। सूर हक्क पचारई॥
गामी गमार घर बैठि कै। पंग राइ बक्कारई॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ जौ वरपंग नरिंद है। हौं जानू वर जोर॥
ज्यों अगस्ति साइर पियौ। त्यों ढिल्ली धर तोर॥ छं० ॥ ६३ ॥
जोवन वैबर विनै वर। कहै पंग सों अज्ज॥
मंत अवैठो गैठ है। आन मान कमधज्ज॥ छं० ॥ ६४ ॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना।

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज संझ। भय मलिन मुष्प जनु कमल संझ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन। अति रोस कीन रग तैत नैन ॥
छं० ॥ ६५ ॥

बुल्ल्यौ सुमंत परधान तब्ब। कनवज्ज नाथ करि जग्य अब्ब ॥
बोलै सुमंच मंची प्रमान। उद्धरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हकारि। साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
षुरसानषान बंदेति मीर। सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार। अप्पैति मेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार बज्जेति चंग। बद्धी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥
छं० ॥ ६८ ॥

षोषंद बाद बालुकाराज। रष्पियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन वाहि। तब लग्गि ताहि टरि काल जाहि॥
छं० ॥ ६९ ॥

ए आसमंद न्रप करहि सेव। उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि। थप्पियै पवरि दरबार वानि ॥
छं० ॥ ७० ॥

सेंवर सँजोग अरु जग्य काज। वुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंचीन राव परमोधि जामि। घुम्मे सवार नीसान ताम ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि बार। काटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अचार। आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥
छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय। तम हरन कलस रविव्यंब बीय ॥
धज मगन रोर जनु मधु अछीय। जनु रचिय बंभ कैलास बीय ॥
छं० ॥ ७३ ॥

इक बार संजोइय सषिन प्रत्ति। मुसकाय मंद इह कहिय बत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति। बदलीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥
छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का संचार होना ।

गाथा ॥ वंचुरे मलय मरुतं । जगुरे पिक पराग पर पंचं ॥
उतकंठं भार तम्मा । मन मान संके मयं मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह वाले । पुत्तलिका पानि ग्रहनायं ॥
एकंत सेज सहव्वं । लज्जा विया विनया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चंद्रायन ॥ कंचन ग्रेह सु मोतिय वंदर बार हुअ ।
ता ओपम वर भट्ट विचार सु एम जुअ ॥
मेर चरंनन गंग तरंगनि जानकी ।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान कीं ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत संजोगी सोभई ।
रति कौ रूप न होइ काम तन लोभई ॥
मनों मधुक मन मंथि मर्न मधि ही करी ।
कोटि रत्ति कौ तेज रत्ति वह उन्हरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अंकुर पान चरावत वच्छं । मनों माननि मिस दिष्षि अनुच्छं ॥
सहचरि चरित परस पर वत्तय । मनों सजोइ सँजोग मनमथ्थय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ वज्जाइ गाह श्रवनं । नयनं चित्तेहि दिठ्ठ लग्गाहं ॥
ग्रामान ग्राम लज्जा । आनंगा अंकुरी वाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन ।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुनीति संग । पटवीय वरष नन लसति अंग ॥
के जुवति संग हासद सुरंग । मिल लिषहि भाम नव नव अनंग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
संजोगि संग जुवती प्रवीन । आनंद गान तिन कंठ कीन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछंग चिबुकी । आलोली इछं संजोगी ॥
बरनीय पानि पत्तो । दीहास तामि अठ्ठ मंभामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग । अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर । अंकुरहि मान मनमथ्थ जोर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुब्बन जुवत्ति रचि कहहि वत्त । श्रवनन्नि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोह लज्जा सुरत्त । निरधनिय मनहु धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत, सा सषिन्ना । या सुंदरि कथ बर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना । संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग बसंतह जोग । कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्धु, मधुं धुनि होइ । बिना रस जोबन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिल लीन बसंतत राज । सु इच्छत सैसब जोबन बाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि । तहां बिन सैसव जोबन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज । भई न्रप बार बसंतह राज ॥
तहां बजि घुंघर जोबन भाइ । जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ । कछु वसंत धरि भाव ॥
मानों अलि दूतनि भई । नीदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास । मंजरिय तिलक षंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत । संयोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत । परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
लुट्टहित भोर सुग्गंध वास । मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

वन वन्न नम्म हल्लि अंब मोर । सिर ढरत जानि मनमथ्थ चोर ॥
चल्लि सीत मंद सुगंध वात । पावक्क मनों विरहनी पात ॥
छं० ॥ ९३ ॥

कुह कुह करंत कलयंठ जोट । दल मिलहि जानि आनंग कोट ॥
तरु पल्लव पीत अरु रत्त नील । हरि चलहि जानि मनमथ्थ पील ॥
छं० ॥ ९४ ॥

कुसलेप कुसुम नवधनुक साज । मंगी सुपंति गुन गरुअ गाज ॥
मंजर सुवान सो सनहु नेह । विद्दारि जानि जुअ जननि देह ॥
छं० ॥ ९५ ॥

जपल्लिय चलिय चंपक सरूप । प्रज्जरहि प्रगट कंद्रप्प कूप ॥
कर वत्त पत्त केलकि सुकंति । विहरंत रत्त विछुरंत छत्ति ॥
छं० ॥ ९६ ॥

परिरंभ अनिल कंदलि लपान । सिर धुनहि सरस धुनि जान तान ॥
सुंदुरि भ्रमर अभिराम रस्स । नन करहिं पीय परदेस गम्म ॥
छं० ॥ ९७ ॥

फूल्लिग पलास तजि पत रत्त । रन रंग ससिर जीतौ वसंत ॥
दिप्पहि तपंत जिहि कंत दूर । थकि बोल्लि बोल्लि जल रहिय पूरि ॥
छं० ॥ ९८ ॥

संजोग भोग जुवती प्रवीन । पै कंठ नट्टि दुह भगिअ लीन ॥
रवि जोग भोग ससि नीय थान । दिन धर्यौ देव पंचमि प्रमान ॥
छं० ॥ ९९ ॥

सोय जग्य उदीपन वाल काज । विलसन विलास संजोग साज ॥
पर उछव दपिन दीनौ मिलान । विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १०० ॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

स्लोक ॥ अन्यथा नैव पिष्पंति । दुज वाक्यं न मुंचते ।
प्रोपतं जोगिनी नाथो । संजोगी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ जगत वत्त जोगिन पुरह । सुनिय कित्ति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विध्धंस मन । नमि सामंत सुरज्ज ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । थप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन न्टप । नमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्ली न्रपति । थप्यो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ न्टपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उभ्भै पहुपंग । जग्य मंडै अबुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्धंसि धुंम परि ॥
कच करवत पाधान । हथ्थ छुट्टै बर भग्गै ॥
प्रजा पंग आरुही । बहुरि हथ्था नन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि धर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल । करौ सूर एकट्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
लाष बीर सथ्थियै । गयन कंकन प्रति साजन ॥
बनसी मध्य समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
परधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर । पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पंच सूर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
घाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरू दुजराम । राज रष्षन बल राषन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब सूर एक मन ॥
सामंत सूर षोषंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुक्कराव निंदह कढ़िय । षग्ग मग्ग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई वालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना।

दूहा ॥ काज वीर वालुक सु हत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भंजन सु जगि। वाजि वीर अनभंग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतो का कहना कि कन्नोज पर ही चढ़ाई की जाय।

पद्धरी ॥ सुनि मंत तंत जुग्गिनि पुरेस। मंनेव भेव मन मंडि तेस ॥
काज मंत संत जोगीय थान। सब वढ्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

बुलाइ सर्वे भर राज काज। पंमार सलप सम जैत आज ॥
निढ्ढुरह राव जामानि जाद। चंदेल भूप भोंहा सु वाद ॥छं०॥११०
कैमास भासई तेज रासि। दाहिम्म बोलि अग्गैं उहासि ॥
पुंडीर चंद लंगा अभंग। वग्गरी देव पीची प्रसंग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामंत सूर मिलि एक थान। संतेव मंत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुंम .... । ...., ... ॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज। तुम रचिय बुद्धि सो कृत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयंद तब्ब। भंजों निकट्ट कनवज्ज सब्ब ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन। सजि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मचाइ कूह कनवज्ज थाह। पंडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उच्चरिग वत्त जामानि जद्द। सजि चढ़ौं जूह कजि कूह नद्द ॥
भंजियै देस कमधज्ज राज। उज्जारि थान ऊचान राज ॥छं०॥११५॥
पुकार कूह उड्डे करार। भंजहि सु जैन भय जग्य भार ॥
उच्चर्यौ चंद पुंडीर ताम। कैमास मंत पुच्छौ सु हाम ॥छं०॥११६॥
मति सिंधु सद्द गुन अग्गरेस। बुद्धंत बुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब्ब। भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब॥
छं०॥ ११७॥

कैमास ताम जंपै सभेस। कमधज्ज सुबल दल अस्त हेस॥
बालुकाराय षोषंद थान। भंजियै तास हनि जूह जान॥
छं०॥ ११८॥

दग्गियै धाम पुर नैर नेस। पुक्कार भार फुट्टै असेस॥
बिग्गरै जग्य जैचंद राज। जस होइ कित्ति सुभ्र सोम काज॥
छं०॥ ११९॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास। मन्नेव मंत सो धंनि हास॥
आनंद राज प्रथिराज ताम। थपि मंत पत्त निज निज्ज धाम॥
छं०॥ १२०॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कवित्त॥ रष्षि थान षोषंद। राइ बालुक्क प्रमानं॥
दिय अड्डौ चहुआन। जग्य मूलं रषि वानं॥
रष्षि सेन समरथ्थ। गरू आदर भर मन्निय॥
सो संभरि चहुआन। बीर अंकुरि चित्तवन्निय॥
सामंत सूर बर बोलि बर। मंति बैठ ढीलीस पहु॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि। बीर बीर लग्गे सु पहु॥छं०॥१२१॥

गाथा॥ दिढ़ करि मंत्र सहाऔ। पत्तौ धाम राज सा भृत्तं॥
अंतर महल उहासौ। आश्रमेस तथ्थ चहुआनं॥ छं०॥ १२२॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल॥ बोलि तथ्थ मंत्री कयमासं। राजा मानिय दू आभासं॥
और सबै सामंत सुरेसं। दिय सनमानि बहोरि नरेसं॥छं०॥१२३॥

गाथा॥ सिंघासने सुरेसं। सम अरोहि धीर ढीलीसं॥
मत्त पयान विचारं। .... ॥ छं०॥ १२४॥

दूहा ॥ वोल्यौ वंभन सूर तहां। कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि हम। जिन दिन चलैं संघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना।

दूहा ॥ तव वंभन कर जोर कहि। सुनौ सु वात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है। तिन दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

पद्धरी ॥ रवि जोग्य पुष्य ससि तीय थान। दिन धर्यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिषन कीनौ मिलान। विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस। बिलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट अैराक वंस। चहुआन कन्ह अप्पौ उतंस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उंच जति पंषराव। समपौ सु राव गोयंद ताव ॥
मानिक महोदधि मध्य जात। निरषंत नैन थक्कै न गात ॥
छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत धुरिय विज्जल विभास। समयौ सु राव निद्दुरह तास ॥
लहराक तेज अग्गाध भाल। मापंत छोनि मुज्जै न ताल ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअंत भेस। समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति षंधार मझ्झ। समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीस मानै न मग्ग। कूदंत मंत पय धर अलग्ग ॥
हयरोह सोह मन्नै सु भेस। बिलहान जैत अप्पौ जु देस ॥
छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरबाह वंस। कैमास तास अप्पौ सु हंस ॥

चेटकी चित्तरूपी रसाल । समयौ सु जद्द जामान ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोझाल मंझ नाचंत थाल । गति रंभ जेम रचंत ताल ॥
न्त्रप जोह जोह जंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुवर अमर महरेस ताजि । समदेहु राज पाहार गाजि ॥
रंगेस उंच लष्पन सु भेस । समपौ सु राव लंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदनेस साजि । माथुरह सरस कनक्रय मांझि ॥
पटस्तूत पटे परसंग राव । परमार सिंघ कंकन सुभाय ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बग्गरी देव दै तेजदास । सिंघली सिंघ पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । महनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुदेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बहुत कुरंगगति कुरँगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोझाल फाल कनक्रु सु देव । रंगाल राव विझह विरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

महरीस जाति महरेस थान । आजानबाह अप्पौ सुहान ॥
कनक्रु कनक्क रूपी सु तेव । पहुमीस पाय मनों दझझदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात । पाहार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकत्ति साज सब्बै सुभाइ । चहुआन समप्पौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी स्तूर रथ कित्ति कीम । किंगन समप्पि लोहान धीम ॥
हैअवरह अवर भत देहु जाम । बोले समंझ गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

आंरस दीन सा साइनेस। विलहान देहु अत अवर जेस ॥
सद्देव अप्प सुप सिलह दार। समदेहु लिलह अत गात सार ॥
छं० ॥ १४३ ॥

अंदर प्रवेस पावक्क पुज्जि। आसीस मंच दिय गरुअ गज्जि ॥
दिय अतिथ दान हय मंगि राज। आनयौ ताम साकत्ति साज ॥
छं० ॥ १४४ ॥

वर पाच जेम परठंत पाइ। मंडैति थाल जिम तत्त थाइ ॥
कलमोर जेम मंडै कराल। मझंमि पीठ मनु कठ्ठताल ॥
छं० ॥ १४५ ॥

दिस्साल उअर अच्छौ पड़च्छि। निरषंत रथ्य स्त्ररिज्ज सच्छि ॥
मानिक्क मनोहर छब्बि लाल। हर वास भास गौसम विसाल ॥
छं० ॥ १४६ ॥

विन चसम चसम समकंति दीस। लालप्पि लोह चंपैति रीस ॥
अचवंत सुच्छ अंजुलिय अप्प। चमकंत छाह भय तेज वप्प ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग वाग। वर नह जेम लेयंत लाग ॥
मंडंत उद्ध तंडव सु उंच। परसंत पाइ मनु ध्यान रुंच ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अति उंच दृद्ध भर षुरासान। पित मात विमल कुल संभवान ॥
अंनिय सु साजि सिंगार पाट। विंजंति चोर जिम पुंछ राट ॥
छं० ॥ १४९ ॥

चमकंत षुरिय दामिनि दमंकि। पटतार तार धरनिय धमंकि ॥
मंगेव चढ्यौ चहुआन जाम। जै जया सबद आयास ताम ॥
छं० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा ॥ चढ़ि चल्यौ प्रथिराज हय। जै मुष बंदी जंपि ॥
बिकसे स्त्रर सुमट्ट तन। कलच सु कातर कंपि ॥ छं० ॥ १५१ ॥

जग्य विध्वंसे पंग को। धर लुट्टैं परवान ॥
मंति स्हर सामंत सह। चढ़ि चल्लौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ इक तौ सहवलयं। एक तौ होइ सहसयं बरयं ॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्षं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजी रंजन बर ॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर ॥
मनों स्हर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल ॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल ॥
षोषंद काज जीपन प्रथम। बालुक्कां भंजन सुभर ॥
निड्डर नरिंद पुंडीर भर। कारन राज अग्गें सगुर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

सैना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा ॥ गोडंडा षल्ल मित्तरी। धर जंगली बिहान ॥
यों बंधे सह स्हर बर। चढ़ि चल्लौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५५ ॥
है गै बधि बंधन विविध। धन सद्धी ग्रह बीर ॥
चावद्दिसि धर पंग की। ज्यों कलपंतर तीर ॥ छं० ॥ १५६ ॥

गथा ॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे स्हरयं धीरं ॥
ज्यों गुर स्हलत अंगं। सो लग्गे सिंधयं पानं ॥ छं० ॥ १५७ ॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल ॥ संबर काम चढ्यौ चहुआनं। बालुक्का परदेस प्रमानं ॥
है गै दल चतुरंगी पानं। भ्रम भंजन मन उग्यौ भानं ॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढ़ि चल्यौ राज चुहान। बोलिव सूर समान ॥
गिन लिए सूर सु खित्त। भर सहस सजि दह सत्त ॥ छं० ॥१५९॥
नीसान हून समान। भेरीय साद सुरान ॥
बल बढ़िय राजस बीर। जलु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए सकल एकत जाम। गुन सकल ग्रह विदु राम ॥
अग्गौ सु कन्ह चहुआन। ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उछंग अंग सनाह। सथ लिए सूर सबाह ॥
मद्धेस जंगल देस। चढ़ि चलिय दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसि सज्यौ जानि कराल। दाहंत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग षोषंद पास। बढ़ि बीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३॥
मन मुष्ष साजहि जुद्ध। हनि ताहि कम्महि मुद्ध ॥
कलि कूह मंचि करार। धर अग्नि कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
षिनि षेह लोपिय व्योम। दिसि बिदिसि धुंधरि धोम ॥
रिधि मंधि लुट्टहि अप्प। वर सस्त्र सस्त्र सुदप्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक। मधि हनहि आप अनेक ॥
बहु मोल वस्त्र समोच। सम हरहि सब हि सोच ॥ छं० ॥ १६६ ॥
संचरिय धाइ विधाइ। हलाय दिसि दिसि राइ ॥
दूल सैल व्योम संपूर। कलि कूह हलि करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सब नैर भंगर कूक। सञ्चियै अंतस ऊक ॥
षोषंद नर सुर थान। समपत्त अग्नि उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

बालुका राय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना।

मुरिल्ल ॥ छुट्टे दिसा दिसा चहुआनं। संमर काम समावर जानं ॥
परजा मिल्लिय करै बुंबानं। [1]संभरि भारथ रइ रिसवानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ दिसि पहु उट्ठिय धोम। भोम लग्गिय आयासह ॥

(१) ए. कृ.-"संभरित भर थर हरि सवान"

निधि लुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसह॥
निधि पति निधि घट्टिय। सु रंक बढ्ढिय लच्छिय पन॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुष्फल॥
घरियार घरिय बढ्ढय घटै। सो ओपम परमानियै॥
निधि पत्ति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर जानियै॥
छं०॥ १७०॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति षोषंद। सुनिय बालुक्काराय बर॥
धर धामह कामधज्ज। भुज्ज मंडिय कपाट भर॥
अरि भय किम औसेर। बढ्ढिय अग्गर न्रप दीनिय॥
राज तेज यों लग्ग। जोग माया क्रम चीनिय॥
जद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगस्ति रूप होइ अनुसरिय॥
छं०॥ १७१॥

धोम अंषि देषीय। कान संभरि पुकार बर॥
समै जागि लषि कलंक। जीव अरु रहै नहीं धर॥
रबि नट्ठौ ससि छिप्यौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर॥
पवन गवन नन करै। सीत पालै न अत्ति बर॥
जो चलै मेर धूवह चलै। भिलै सात जोगी तदप॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक वय॥
छं०॥ १७२॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाह थाह षो षंद। सुनिय बालुक राव रव॥
लघु बंधव जैचंद। राइ मंकेस असंभव॥
सो संभलि कलि कूह। जक छंडिय दिसि दिसि दर॥
नह सुन्यियै असतुत्ति। नयर सब गाजि गहब्बर॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ बत्त कारन सु कल॥

मम करहु धाइ थिर होइ करि। कवन तेग बंधी सु कल ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना।

किल रह्यौ सुअ्र तरनि। कहै नैरीपति संजम ॥
आज राज जैचंद। कवन उद्देग करै दम ॥
तबै आइ धाह्नन। सुनहि मंकेस राउ सुअ्र ॥
ढीलीवै चहुआन। तेन उज्जारि जारि सुअ्र ॥
सुनि बाद वादि नीसान किय। अप्प बोलि सज्जो [1]सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बढ्यौ सिलह। अनी बंधि आषाढ़ बर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना।

चढ़ि आयौ चहुआन। देस विध्वंसिय अग्गिय ॥
बर बालुक्का राइ। बीर बाजे रन जग्गिय ॥
अवित ढीठ चहुआन। बरै बीरं सुअ्र आनी ॥
धर धूसे धन लुट्टि। अग्य धूसें पंगानी ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि। बालुकराव सु झुक्किया ॥
प्रथिराज सेन संम्हौ विहर। ताजी तुंग सु नष्षिया ॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन।

चढ़त राव बालुक्क। आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचंद। देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यों नव वल्लभ प्रीति। काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुबंध। प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुक्कार सथ्थ सार्थे चल्यौ। कल सथ्थें गोली चलै ॥
रोर चमक सार्थे उठै। त्यों बर कवि ओपम पुलै ॥ छं० ॥ १७६ ॥

(१) ए. को. सुनर।

चहुआना संक्रुद्धौ। राव वालुक उठि धायौ ॥
छीन लगन पथ दूरि। वरन वरसें वर आयौ ॥
तुच्छ दिवस क्रम बहुत। कव्य आतुर चित चाइय ॥
सबैं सेन संमूह। बीर रोसह वरलाइय ॥
लागयौ रोस सामंत सथ। अप्प थान लन तज्यौ किहुं ॥
दिठ परत राइ चहुआन वर। वालुक वर साज्यौ समहुँ ॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या।

दूहा ॥ सेन सहस वत्तीस भर। चल्यौ स जंगल जूह ॥
नैर छंडि बाहिर चले। तब रज छ्यिय जूह ॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना।

कवित्त ॥ षंधे षेत करसनी। ह्वर धावै चावद्दिसि ॥
धन लूटत ज्यों रंक। लज्ज लग्गै न वरं तस ॥
अंबरीष ग्रभ श्राप। जेम दुर्वास चक्र कस ॥
जिम देवासुर द्वेष। सबद जिम तरै कव्वि रस ॥
अट्टत्त जुद्ध हिंदू दुहन। सुवर बीर लग्गे विरद ॥
संग्रत्ति बीर वाराह वर। सुथिर भए न्त्रिंमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥
गाथा ॥ रन डंबर अंबर उत्तानं। देषे हहर सेन समरानं ॥
सज किय सेन अप्प परसंसे। आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
छं० ॥ १८० ॥
सुनियं तामं नाद निसानं। आयौ सेन सम्मुष चहुआनं ॥
दल दुअ ताम दुअं दे ठालं। वज्जे नद्द सद्द भूझालं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
गाथा ॥ दल दुअ दुअ देठालं। गज्जे नाद बीर विसरालं ॥
सज्जे सेन सु चालं। बंधे फौज कमध फसि कालं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

वालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहवद्ध होना।

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देषी चहुआनं। सज्ज किय सेन आप सम्मानं ॥
बंधे सिलह सूर सूरानं। गज्जै सीस सुभर असमानं ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर बर। गज्जे गेन सु लग्गि महाभर ॥
बंधे गरट चले गति मंदं। मानि सूर सामंत अनंद ॥छं०॥१८४॥

दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ जीवंतह कीरति सु लभ। मरन अपच्छर हूर ॥
दो हथान लड्डू मिलै। न्याय करै बर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनों सयन। दिठ्ठ दिठ्ठ करूर ॥
सामिध्रम्म सा क्रम गुर। सो संभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिरं। काल हत्ते सुरं ॥
एक एका गरं। बीर डक्कं करं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार बाजे हरं। गेनं लग्गा नरं ॥
अंत दंती जरं। नाल कड्ढै सरं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हंस चीहं परं। घात सोभै सरं ॥
झार वडप्फरं। लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवती सेन रं। वज्ज नाली करं ॥
पंग वीरं छरं। सूर मत्ते जुरं ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिंघ छुट्टै पलं। बीर मत्ते दलं ॥
ढाल ढालं ढलं। बीर चंपे मिलं ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बालुकाराय का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बर बालुका विसाल। सस्त्र बाहंत उचारिय ॥
पंग भूमि रतनंन। स हथ धार अधिकारिय ॥
मद्धि समुद बालुका। पुब्ब हीरा गल लग्गा ॥
रतन घटू सत छंडि। जिरह लय लरने लग्गा ॥
दल मद्धि एम षोघंद पति। ज्यों ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त बन बायतें। चल पत्तन कर कम्नवै ॥छं०॥१९२ ॥

बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन।

अँग घतेन बहि दुघ्य। सस्त्र लागत जड़ धारिय॥
लोह लगत सिलघान। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करै। लाज संका न ट्रिसा करि॥
छच अम्म चूकंत। सूर संकै न पग्ग धर॥
नव बधुअ संक रत्ता गहअ। कुल संकै कुल बधु सकल॥
कामधज्ज जुध्द चहुआन सों। सुबर बीर घरि पंच छल॥छं०॥१९३॥
घरिय पंच साधंत। सूर साधै असि मर नर॥
बालुक्का अरि राज। सबै भगा जु क्रम्म धर॥
पग पुच्छानन दियै। षेल असिवार परिमानं॥
मोष मह असि रेष। परअ रअ बंने धानं॥
अति बीर सुग्रह तजि रोस बर। इम उकंस चहुआन दिन॥
न्त्रिप जैत बीर बिम्भर भगति। सुबर बीर आरम्भ धन॥छं०॥१९४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत मंच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल लाल रसि॥
कमल विमल विहुरंत। कमल नंचत बर बरतनं॥
इक्क च्यारि सिर च्यारि। नीर किन्नौ जु बीर गुन॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बालुकाराव चहुआन सों। दुतयि बीर भारथ्थ सजि॥छं०॥१९५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। भान चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक न चलंत सूर भुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति ऐसे गतिमानं॥
कुटिल त्रिया चंचल सु। बीज चाव दिसि धानं॥
जिन सुष सु बीर न्त्रिम्मल सु बर। सार झलै ते जलझली॥
मैं मंत पंथ रूक्के सुबर। मुगति पंथ पंथा षुली॥ छं० ॥ १९६ ॥

दूहा॥ मुगति मग्ग पंथा षुली। सबर यापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिग सूर॥ छं० ॥ १९७॥

बालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ बीर कुंड मंडलिय। परिय बालुकाराय फुनि ॥
चंद मंडि ओपंम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भर। तेज बडवानल तुंगं ॥
हेम मज्झि नग धरिय। सूर फिरि मेर सुरंगं ॥
जयपत्त जुद्ध बोलिय सुभर। जं बोल्यौ तं कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गे गिलन। [1]चर अगस्ति मंतह नयौ ॥
छं० ॥ १९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

चोटक ॥ घरिएक भयानक बीर हुअं। बर बज्ज निसान निसान धुअं ॥
अमयं श्रम षेद कटंत वरं। मिटि गावर सीस नवाइ गुरं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दुहु बीरन बीरह हथ्थ धकं। सु मनौ कर तोर निसान डकं ॥
दुहु बीर बिरोधत हथ्थन ही। दुहु दीनह जानि गुमान गही ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परें रुधि सीस कमंध धरे। सुमनों गिर तिंदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि सूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा [2]कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनार परै। निकसी जनु मध्य भलंग तिरै ॥
सु किधौं ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो बल लागत फूल भरी ॥
घन घाव कियें सिर सूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए.-चमू.। (२) को.-मति।

कवित्त ॥ भीर परी प्रथिराज। देषि बालुका मंत गज ॥
चंपि मुट्ठि दिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
टुट्टि सीस मुति बरसि। रुधिर भीजै लग्गे असि॥
सुमनों मग्ग घुति पान। चंपि निकालिय ओपम तस ॥
जुद्धं स एह भंजी जलह। आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
दैवत्त बलह प्रथिराज दुति। छंद चँदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना।

व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ सँभारे सबै स्वामि अस्समिंति स्रूरं। बरंबंस रस्सं असंसंस नूरं॥
तबै उच्चऱ्यौ .... दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं॥
छं० ॥ २०४ ॥

समं साजियं फौजं सु औजं कमंधं। करों साज धाजं अनी अन्न मंधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दप्पौ। नरंनाह कंधं तुमं काम थप्पौ ॥
छं० ॥ २०५ ॥

मुषं अग्ग कन्हं सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं ॥
बरं सज्जियं बाइयं निद्दुरेसं। मध्यं रच्चियं अप्प राजगं लेसं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

सचे सब्ब राषे सु सामंत स्रूरं। गुरुं बीर वाजिच बज्जे करूरं ॥
चले फौल सज्जे समं भट्ट थट्टं। गहारं भरं सेन देषे गिरट्टं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चऱ्यौ ऊंच बालुक्क रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्ष दुष्षै अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्राम थानं॥
छं० ॥ २०८ ॥

भयौ काम काजं जपं चंद आजं। निजं अम्म मन्ने कुलं कत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दठ्ठ जुद्धं सनठ्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन बठ्ठं ॥छं०॥२०९॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

लिन्नौ वालुका राइ गज्ज नरिंदं। सम सेल चहुआन करि षग्ग दंदं॥
सजी सेन चतुरंग तारंग रुष्पं। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुष्षं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमानं। भिरें सेन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
वले दून सेनं मिलं वान वानं। मनों वूंद भद्दं मह मेघ जानं॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूरं लगे हथ्थ वथ्थं। दुअं उच्चरें आन ईसं दुअथ्थं॥
वजी सार धारं समं सार सारं। सुषं उच्चरे मार मारं करारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

ससं वीर वाजिच वाजिच वाजे। धरक्कें धरारं सु गो गेंन गाजे॥
तुटैं सीस दीसं रुरें रुंड मुंडं। परें गज्ज भाजें सु तुट्टैं सुसुंडं॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जंठुरं सठुरं सं विहारं। फरं फेफरं डिंभरू तुट्टि भारं॥
विछुट्टें डरं डिल्लरं अंतरेसं। भभक्कंत श्रोनं सश्रोनं अनेसं॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटें कट्ट वाजंत षग्गं करारं। मनों कट्ठ कठ्ठारि कूटे कुहारं॥
उरा फार फूटंत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थवथ्थं ससं भट्ट चट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दड्ढं सनड्ढं प्रहारं। जरादं जरं तुट्टि उड्डंत सारं॥
तटक्कंत टोपं गुरज्जं प्रहारं। फटै सीस दीसें विकट्टं विहारं॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कंत कंधं कडक्कंत हड्डं। फडक्कंत फेफं सरे मंस मड्डं॥
दडक्कंत श्रोनं प्रहारे सपूरं। गडक्कंत कंधं सु घायंति जूरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धरं सीस हक्कंत धक्कंक जीहं। नचै षग्ग कंमंध धप्पंत दीहं॥
हहक्कंत हक्कंत नाचंत वीरं। पलं चारु गोमाय गाजंत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

घहं राइ चौसट्ठि उपट्टि मद्दं। नचै ईस सीसं डकै डक नद्दं॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं॥
छं० ॥ २१९ ॥

प्रसारं प्रवारं घनं श्रोन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं॥
थलं मंस हड्डं सुथट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं॥
छं० ॥ २२० ॥

हहकार हंकार हक्कार हक्कं। हबक्कं हबक्का धरे धीर धक्कं॥
गहैं केसं केसं प्रहारै परेसं। हने छंडि आवद्ध आवद्धनेसं॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं सूर वथ्थं लरै सूर सथ्थं। बिनानं सु मल्लं पयं ढीक पच्छं॥
कुलं अप्प ईषे बरै आन ईसं। उक्कसंत क्रंसं रजे बीर रीसं॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै षग्ग टेकं। हुये षंड षंडं विहडं विसेकं॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सा सूर भारं॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे इष्षि थोरष्ष नीबीर द्दंदं। रसं बीर नारद्द नंचै अनंदं॥
इसों जुद्ध ह्वतें दुअं जाम वित्तं। मिरें मंत माहिष्ष ज्यों मंस चित्तं॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिठ्ठ सोकी समं सज्जि घायं॥
तबै बालुकाराइ उभ्भारीय षग्गं। करै कन्ह हेलं सहेलं चिभंगं॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कह्यौ कन्ह झल्लं सु सेलंनि हट्टं॥
हयौ सेल षंडं कमंद्धं सजूरं। सिल्है फौरि फुट्टै पटे पुट्ठि भूरं॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं झारियं कन्ह सेलं जु नंषें। पऱ्यौ बालुका राइ सो भूमि धष्षे॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं॥
छं० ॥ २२७ ॥

भग्गी फौज कमधज्ज सा छंडि पंतं। हन्यौ वालुकाराइ देष्यौ समथ्थं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पन्यौ राव सारंग। वीर सज्यौ वड़गुज्जर ॥
ईस सीस संभन्यौ। सोइ लीनौ स वंधि उर ॥
गंग दुचित नदि कंपि। उमा मै दीन प्रमानं ॥
सीस ईस ससिकंठ। हथ्थ वड़गुज्जर थानं ॥
रुंधिव पंच पंचौ मिलिय। सबर वीर तत्तौ सँगति ॥
पोषंद राव झुझ्यौ मरस। स वर वीर भारथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

वालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का जूझ जाना।

परतन नर भर भीर। सिंधु वज्यौ चहुआनं ॥
जे हएए उत्तरे। गयौ वहु हथ्थ निधानं ॥
कुल भारें रजपूत। रहे पथ्थर परिमानं ॥
.... । राज चल्यौ चहुआनं ॥
वालुकाराइ भारे कुलह। पथ्थर ज्यों मंडे रह्यौ ॥
चहुआन वार वज्जी विषम। तंत वेर उझि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

वालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना।

चाहुआन भय राज। सुभर वालुका राज वर ॥
अव लुट्टौं घर धेन। अवहि दक्खिनै परज्जर ॥
धर किपाट वालुका। ल्हूर अंतर संपत्ते ॥
पूरन आहुति दीय। पंग जग्यह आहुत्ते ॥
वालुकाराइ पंजर पन्यौ। देषि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भंजि दोइ वंधि धरि। चर नठ्ठा कासी वहर ॥छं०॥२३१॥
तजि सु नारि भजि पीय। विसरि आतुर भय पंजर ॥
पिय कोमल सुंदरी। परत पिच्छल सल्लर धर ॥
कंचन पत्त परास। ल्हूर कल मोती धारे ॥
नूत पच परिहार। चंद ओपंम बिचारे ॥
तारक बाल मंगलति ग्रह। कै नष सुंदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि। जातें चालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ परत सु बालुक राय रन। सहस पंच सम सथ्थ ॥
उभय घटी मध्यान उध। धनि सामँत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त क्षत। परे सु कटि रन थान ॥
सबे सत्त सामँत कुसल। जै लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुक्काराय। सेन सध्यौ चहुआनं ॥
पंग जग्य विगरंत। अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर। सेन धुंसै दुज्जन धै ॥
प्रथम रारि परि कन्ह। बलि बारुन बंभन वै ॥
सामंत सेन एकट्ठ हुअ। संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर। चंपि चुहान वजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पर्यौ जुद्ध बालुका। मीर बज्रा पंधारं ॥
ते सम पंग कुमार। पग्ग बज्ज्यौ वर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस। रीठ वज्जी झाराहर ॥
मनों मेघ मद्धि बीज। बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस मंझर्झ मिलिय। धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
भारथ्थ पथ्थ दुत्तौ विषम। चंद छंद बत्ते कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं। गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं। सजियं पति दंती विमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुसलमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनों पंक्तियां तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनो पंक्तियां छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

भुजंगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआनं । वजी तार सारं सु धारं प्रमानं ॥
लगी डंवरी रज्ज आयास छायं । निसा पंति गिद्धी रुधिंहज्ज पायं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहां चंद वरदाय ओपंम तव्वी । मनों वाद गंठी परे जगि रब्बी ॥
मिले जोध हथ्थं तिवथ्थं वकारे । परे चंद भद्दीन छुट्टे पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

वजे घाइ आघाय घायं घरक्की । मनों नीर मभ्भों तिरंजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगं सु तूटतं दीसै । मनो सुक्कि छुच्छू छुटे वीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

घरी अद्ध दीहं रह्यौ ता प्रमानं । तवै वाहुर्यौ पंग पाइक्क मानं ॥
सवै मीर वंदा तुरक्काम पानं । कहैं पक्करौ चाहते चाहुआनं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

धर्यौ पंग मोरी सु पंधार सारौ । तिनें रोकियं कन्ह चहुआन भारौ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स वींट वर । मिलि रोक्यौ प्रथिराज ॥
पंति पंग हय जंग परि । तिहु पुर वज्जन वाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भृत पंग घन । लाग निसानति वान ॥
विंटि सेन प्रथिराज वर । जानि समुंद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । चढ्यौ सामंत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिष्ष । पर्यौ चिंता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै वार । मरत इन वार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजूं सु जूहं । उतकंठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अंदेह मनि । मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रच्चि फेर न परें । सुगति वंध वंधे सघन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

घरिय अद्धदिन चढ़त। सूर छुटि जुरन सु बद्धे ॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोऊ सद्धे ॥
अनी मुष्ष जरि मुष्प। सोइ उचाय सु डारिय ॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि घरियार सु मारिय ॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर यट्ट नट पिल्लयौ ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जन भर ढिल्लयौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और मुसलमान सेना का घोर युद्ध।

भुजंग प्रयात ॥ करी ठेलि दूनौ अनी एकमेकं। षटं लष्ष दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुदीनं। उतं उथ्थलै भेजि भ्रज्जानि धीनं ॥
छं० ॥ २४७ ॥

गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसस्त्र लोई ॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै ॥
छं० ॥ २४८ ॥

परें बथ्थ बथ्थं विरुरुक्षाय छुट्टें। मनों मुक्ति सारी दुअं हथ्थ छुट्टें ॥
वहे बान कंमान जंबूर गोरं। सकें उड्डि नाहीं तहां पंषि तोरं ॥
छं० ॥ २४९ ॥

महाबीर धीरं लरें ते तरप्फैं। मनों पंग जंगी बली पंष अप्पैं ॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उषारं ॥
छं० ॥ २५० ॥

हयं अस्सवारं समेतं उठायौ। मनों तापरी ताप माते उचायौ ॥
घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चैवेर जित्यौ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना।

कवित्त ॥ भगिय सेन सा पंग। भगिय चतुरँग भुज मोरिय ॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
बर शृँगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं ॥
कायर हथिय प्रमान। समुद उत्तरि चहुआनं ॥

वालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रह्यौ ॥
दोहित्त पंग कमधज्ज कौ । संभरि वै हथ्थह ग्रह्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥

दूहा ॥ वर वालुका सु राय न्टप । निधि लुट्टिय चतुरंग ॥
विय सुद्देस वर भंजनह । वज्जा वज्जि सु जंग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

वालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भीलं गत हुंत । सोइ कौनिय करतारं ॥
जंघ गत्ति धरि लंक । लंक जंघा मति सारं ॥
नेनह दिद्ध सरोज । केस अहि विंध सु किन्निय ॥
परवत मंझ चढ़ंत । मेलि सांई सुध बन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज वर । गामनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस वास सासन सु पिय । सुवर बीर बीराधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

वालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजंगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंदं । लगी धूम आयास सो भंजि चंदं ॥
तुरी वारजं राय पोपंद वद्दं । तहा वालुकाराय संग्राम सद्दं ॥
छं० ॥ २५५ ॥

तहां वालुकाराय दानै सु मानै । तिने भंजिया भूप घटि चाहुआन
पगं पग्ग पट्टे सु धक्का हलाई । जहां पारसीराव सूरं गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥

छतेरी छनेरी भंडेरी वरारी । तिनं चंद चंदेरि नेरी निहारी ॥
जिने तारिया कालपी कन्हरायं । जिने मंडिया जुद्ध प्रथिराज सायं॥
छं० ॥ २५७ ॥

जिने आल पिंडाइ राचक्क चक्के । वरं रोरिया दाइ संग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गंग पारे । जिने संभरी थाट तंडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥

जिने भंजियं भीम पुर भीम भंजे । जिने भंजिया जाय गोधंग हंजे ॥
जिने भंजियं जाय प्रथमं सु कासी । भए सूर सामंत उत्तं उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं जाय मेवात ग्रामं। जिने वैर सों सेन सज्जे समानं॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सवें पाय पारी॥
छं० ॥ २६० ॥

जिने आलगी जोग पंडे पषेली। जिने माधुरी मोह सोहंत लेली॥
जि सोरीपुरं रोरि पारा जगायं। .... छं० ॥ २६१ ॥

कियं दीन बंवारि प्रथिराज तोरी। षगं पीच षंगार वल्लोच मोरी॥
तहां ग्रीव बंवारि अग्रीव फूटी। तहां गोधनं धेन चौनान लूटी॥
छं० ॥ २६२ ॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी। ते तजें पो पीय कंठं सु गोरी॥
तिनं तीर नह्|चालहं चाल झंषे। तहां झंपरहि जेम गज झंप लष्षे॥
छं० ॥ २६३ ॥

तिनं चीर संमीर झारंत तुट्टे। मनों रत्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै। .... ॥ छं० ॥ २६४ ॥

तमंचे सिषर जमदाह लग्गे। .... ॥
तिनं ध्रम्म प्रज्जारि मिटी म्रग्गएनी। तहां चलहि तिन तेज सुषचंद रेनी॥
छं० ॥ २६५ ॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धाए। तहां दसन बालभै दसनं छिपाए॥
तिनं सद्द सहरोस सहरोस संकी। तहां थर हरे शकि रही हीन लंकी॥
छं० ॥ २६६ ॥

कव्वि रटि रटति पिय पीऊ जंपै। एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै॥
॥ छं० ॥ २६७ ॥

वाघा ॥ संबर काम चढ्यौ चहुआनं। कंपै भै चिय दुज्जन वानं॥
बर छुट्टत नीवी न सम्हारै। लेहिं उसास प्रहार प्रहारै॥छं०॥२६८॥

अंगुरि एक ग्रहै कर बालं। दूजै कीर निवारति जालं॥
थान थान विहवल भइ बालं। मुत्तिन उर बर तुट्टित मालं॥
छं० ॥ २६९ ॥

सो ओपम कविचंद सु पाई। मनों हंस कटि पंछ चिलाइ॥
छं० ॥ २७० ॥

दूहा ॥ गय मंदा चष चंचला । गुरु जंघा कटि रंच ॥
पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ । विपरित करन विरंच ॥छं०॥२७१॥
कवित्त ॥ सुभट सतें सद्दय । घरिनि तिन पुलिय सुरन बल ॥
कुसुम कंप घन उभ्भर । भमर भर करय जु अलि तन ॥
कंपि करग तारंन । अंब पल्लव कि कीर मति ॥
धाह सबद उच्छलीय । कग्ग कलाठ कंठगति ॥
सिर चिहुर मोर विसहर गिलिय । भनिस चंद कवियन वयन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ । प्रथियराज इम तुअ दुअन ॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना ।

हनिग राव बालुका । भंजि पोपंद लचापुर ॥
लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि । कनक पट कूल नंग धुर ॥
करत सास उद्दास । छोहि जोरी वर दंपति ॥
फिऱ्यौ राज चहुआन । प्रान देषे हरि संपति ॥
बाजंत नद्द नीसान वर । धाह प्रकास हिलोर हरे ॥
भंजेव जग्य जैचंद न्रप । थान वयट्ठौ कंपि पर ॥ छं० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन ।

सुनि विधात अब दुष्प । जायषे मानव दुष्पं ॥
चंद दुष्ट अजहूं दहै । विरहिन अप रुप्पं ॥
रिपु जानत चहुआन । मंत इह गत्त न कित्तौ ॥
चष चंचल गति मंद । गुरन जंघा फिरि धत्तौ ॥
पावर सुगत्ति धरतौ तनह । मन अंगम गिरि चढ़न कौं ॥
विचारि वत्त भवषित्त मन । तौ बैठति हम गढ़न कौं ॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना ।

दूहा ॥ रन हारी पुकार पुनि । गई पंग पंधाहि ॥
जग्य विध्वंसिय न्रप दुलह । पति जुग्गिनिपुर प्राहि ॥ छं० ॥ २७५ ॥

इति कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके बालुकाराय बधनो नाम अड़तालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥

अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव ।

(उंचासवां समय ।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना ।

दूहा ॥ जग्य उजाये अठ्ठ दिन । अठ्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माघह पुब्ब पष । सुंदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना ।

पद्धरी ॥ तिन समय ताम कनवज नरेस । क्रत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँवर सँजोग सम जग्य काज । विध्युरिय रिद्धि गति विविध राज॥
छं० ॥ २ ॥

शृंगारि सहर विविधं विनान । आनंद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजैं सु भाइ । जगमगत पंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥

वासन विचित्र उत्तान ताम । मंडप्प उंच सज्जे सु धाम ॥
वासनह श्रेन विधि बंधि बान । सोभंत धज्ज बंधे सु थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

छोनी पवित्र सद्धी सवारि । द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावंत थानथानह सु गेव । मंगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥

जलजात माल तोरन कुसुम्म । बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्नपति अनेक थान । उद्दार मत्ति षिति आसमान ॥
छं० ॥ ६ ॥

संमर संजोग लष्ये सु खूप। संपत्त लाज हय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तान थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान॥ छं० ॥ ७॥
चिंतै सु चित्त कमधज्ज राइ। केहरि कंठेर वर मुत्ति काय ॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सम करह साज हय गय सुभार ॥
छं० ॥ ८ ॥

वाजे अनंत वज्जे विवान। बहु न्रत्य करत रंजंत तान ॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। क्रतयंत कंठ सा दिष्ट रूप ॥
छं० ॥ ९ ॥

भूलंत नेन देषत विनान। मझ्झंम चित्त साक्रत्य जान ॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक्क कोटि नाचंत भेव ॥छं०॥१०॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव ॥
इहि विद्धि सत्त अह वित्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर दार ताम॥
छं० ॥ ११ ॥

कर पंग मग्ग आगें सु वीर। सर सुक्कि सुक्कि सुमनं प्रसीर ॥
सुनियै न सद्द नीसान भार। दरवार भइय इत्तौ पुकार ॥
छं० ॥ १२ ॥

तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अध्रम्म किन करिय काज ॥
उच्चंत ताम धाह्रू सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त ॥छं०॥१३॥
सब देस भंजि षोषंद थान। बालुकाराय हनि देपि प्रान ॥
छं० ॥ १४ ॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा ॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि समुद लवन्न ॥
इन सत्तन सम जफने। बोलिय कमध वचन्न ॥ छं० ॥ १५ ॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त ॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्नि कूंनह अगिनेयं ॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैऋत्ति सुनेयं ॥

(१) ए.-साय।

पच्छिम अधिपति वरुन। वाय कूनं वहवानं ॥
उत्तर हेरि कुवेर। कून ईसह ईसानं ॥
उरद्ध ब्रह्म पाताल नग। मान पंडि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज काल्हि आनो पकरि। तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमंत उपारिय। अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय। सायक पाँच भारथ बग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

वालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ। बुल्लो सरोस कमधज्ज राइ ॥
धन भरौ लष्प वे सरस वाउ। करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयंद सत्तरि हजार। अरु असीलष्प तिष्षे तुषार ॥
पाइक्क कोरि धानुष्ष धार। स्वाकोरि सजौ वंके क्षुझार ॥ छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स वाज। इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पकरौं दुज्जन जिन जाइ भाजि। पूनौ सु भ्रात को टोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥
गहिलेउ पिसुन पारो विपत्ति। जैचंद कोपि बोल्यौ न्रपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय। दिसि मुरधर उपदेस ॥
छिति रष्पन छिति परस बर। सुनि पंगुरें नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना।

पद्धरी ॥ थकि वेद वेन विप्रान गान। आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास। बिग्गर्‍यौ जग्य मंची विसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

बंधों सु चंपि अब चाहुआन। विग्गऱ्यौ जग्य निहचै प्रमान॥
जोगिनी राज चित्त'ग जोइ। बंधों समेत प्रथिराज दोइ॥ छं० ॥ २४॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर। निर्वार करों चहुआन और॥
आहुठराज प्रथिराज साहि। पीलों जु तेल जिम तिल प्रवाहि॥
छं० ॥ २५॥
संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ। इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ॥
सुनियै न पुन्य सभ मध्य राज। जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं० ॥ २६॥
पुच्छीस ताम संजोगि बत्त। कहि धाह कोन मोपित विरत्त॥
उच्चरी ताम सहचरी एक। बंधी सु राज प्रथिराज तेक॥छं०॥२७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त। चहुआन पान देषे सउत्त॥
बालुकाराव सध्यौ सु तेन। घोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन॥छं०॥२८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्थ। चितां सुचित्त गंधर्व कथ्थ॥
संजोगि जोग बर तुम्ह आज। व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज॥
छं० ॥ २९॥
द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति। पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम। मानों सु सुभ्भक्ष इह द्रढ्ढ नेंम॥
छं० ॥ ३०॥
चहुआन सुबर मोसत्ति मत्ति। छंडौ सु अवर लालिच अत्ति॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम। छंडेव अव्व विधि व्याह काम॥
छं० ॥ ३१॥
दूहा॥ गंठि जुन्हाइ उन्हाइ निजु। राइ बरन निज दान॥
श्रुति अनुराग संजोगि कौ। करहु न प्रभू प्रमान॥ छं० ॥ ३२॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना।

कवित्त ॥ बालवेस वय चढ़त । भस्स रुप्पें न सुद्धि ग्रह ॥
भूमि सूमि न्त्रिप मिले । जानि वातूल तूल तहं ॥
वर संजोगि प्रनाइ । राज वंध्यौ चहुआनं ॥
वंधि वीर प्रथिराज । जग्य मंडौ परवानं ॥
सज्जै जु काइ भंजै कवन । का जानै किम होइ फिरि ॥
पुत्तीय स्वयंवर मंडिकै । फिरि वंधौं दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमंत न्त्रप चिंति मन । वजी अवाजन साज ॥
सुनि संजोगि कुमारि ने । व्रत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना ।

कवित्त ॥ जग्य विध्वंसिय पंग । दुअन ओतान वढ़ाइय ॥
सुनि सुनि रह संजोगि । चित्त व्रत लीय प्रवाहिय ॥
वरों कि वर चहुआन । वार पोजं अम्म सारिय ॥
कै कप्पों देंउ प्रान । वरों मनसध्ध विचारिय ॥
मन मंझ वत्त इत्ती करी । प्रगट न वल वालह करी ॥
पहुपंग मंत वहु मानि कै । राज राज उचित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पंग सुयंवर थप्पि तहं । सुनिय जुन्हाइय वत्त ॥
वर कमोद जिम सुंदरी । रचि वचननि सुनि गत्ति ॥ छं० ॥ ३६ ॥
मा मुरछी धुक्किय धरनि । सुनिय संजोइय वाल ॥
सुहन सुहंदी वत्तरी । भुअन परही झाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥

अप्प स्वयंवर की जरहि । सथ मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए । रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥

हालाहल की फौज रत । तुंतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई । धर जंगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना ।

कवित्त ॥ गथ जंगल जगलियं । राज निरवास देस करि ॥
राजा रैवन जुथ्थ । गयौ प्रथिराज संत करि ॥
प्रजा पुलिंद नरिंद । समर रावर धर रापी ॥
चौय चौय माविच । थान थानं न्टप पापी ॥
सम हथ्थ जुथ्थ कौ कथ्थ गै । सुबर कथ्थ कविचंद कहि ॥
प्रथिराज राज अरु वीर गति । विपन मक्क्ष आषेट गहि ॥
छं० ॥ ४० ॥

सब सेना का भाग जाना।

काइर सुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
सुक सर तजिहति हंस । द्रुक्ष वन मृगन पत्ति भजि ॥
ज्यों कलहीत सु पंषि । तजै तरवर नन सेवं ॥
द्रव्य हीन कौं गनिक । तजत पथ्थर करि देवं ॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज । जग्य पवित्र न मानइय ॥
भजि थान थान अरि अत गयं । बर लालचि सु प्रानइय ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ सानि प्रान की लालसा । तजि साईं सौं हेत ॥
छंडि गए कायर सबै । रहै सूर बंधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुत्र लौं । मानिज्जै गुरु जेन ॥
वर संकट सो भृत्त ने । साईं सुक्यो तेन ॥
साईं सुक्यो तेन । सिंघ नन होइ न भिल्लं ॥
सौ समंत छह सूर । समं प्रथिराज इकल्लं ॥
धर धूंसे वर पंग । कोस पंची माल्हिज्जै ॥
मिल्यौ जग्य कमधज्ज । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आपेटक ऋमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्पनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुगिनि पुरैं । गय कनवज फिरि दिष्पि ॥
ढिम्भोवै ढिल्ली चरित । कहैं पंग सों लिष्प ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानौ घत्त । वैर कढ्ढै चहुआनं ॥
मद्धि प्रात अरु संझ । भयति कंपै [1]पंगानं ॥
पंच अग्ग पंचास । सोर ढिल्लिय रचि गड्डे ॥
यों कहंत दुत बीय । आय वन वीर सु ठड्डे ॥
दुस्सन दुरंग दैवान गति । अव कुरंग जम्मी ततरि ॥
गज फुंक जेम पूजौ जु इम । चढ़ि अरि संमुह न्नप्प सिरि ॥छं०॥३॥
सिंघ वचन [2]चर मानि । पान असि लष्प सु फेरं ॥
सुनर तप्प चहुआन । कोइ संमुह नन हेरं ॥
भेद न्नपति करिपान । कान्ह लिन्नौ उर भानं ॥
मिलि ततार कमधज्ज । तारि कढ्ढे चहुआनं ॥
वर हंस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलहो वज्र कर वज्र बर । सट्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गंगानं ।   (२) ए. वर ।

* मो.-प्रति का पाठ यहां से पुनः आरम्भ होता है ।

सिलह अगें करि लीन। गाम मझ्झें उत्तारिय॥
सोदागिर ईसब्ब। [1]बीर वढ्ढिउ जस भारिय॥
अंधारी नव भार। अप्प दूनों संपत्ते॥
अठ्ठ पारि वर चढ्यौ। [2]भेस जू जू वर मत्ते॥
संजुरन बेन कारन्न सव। भाग चवध्ध्यै चढ्ढयौ॥
बाजीद षान लूंषे मनों। चूक [3]चोंक वर वढ्ढयौ॥ छं०॥ ५॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिडार देना।

पार पार बाजीद। धाइ अप्पौ नर कोई॥
चूक चूक चिंतयौ। सब्ब सामंत जगोई॥
चूक बीर मानि कै। बीर [4]कैमास जु आइय॥
सूर सूर आहुट्टि। [5]सब्ब हंसीरह धाइय॥
वर दीन एक अद्दीन जुध। निसि सलूह कलहंत बजि॥
वर जम्म दड्ढ वढ्ढह परे। [6]जहां तहां हिंदू सु भजि॥ छं०॥ ६॥
फिर कहंत बन बीर। चरित ढिल्ली चहुआनं॥
अप्पन न्रप आषेट। सूर सम्हौ सुलतानं॥
वर दाहिम कैमास। सिंघ चौकी वर घल्ली॥
आय अब्ब सामंत। बंध प्रथिराज सु चल्ली॥
वर साम दान अरु भेद दँड। कंक बंक न्रप किज्जियै॥
सामंत मंत वँधि सु मति गति। सामि सँग्राम न छिज्जियै॥छं०॥७॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकदेह पहुपंग। बंधि [7]निझ्झर निसंक भरि॥
दुतिय देह पज्जून। सुरँभ कूरंभदेव बर॥
त्रतिय देह तूंअर। प्रहार पांवार सलष्षी॥
चतुर देह दाहिम्म। धरन नरसिंह सु रष्षी॥

---

(१) ए. कृ. को.-वीर वढ़ी ऊस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेद।
(३) मो.-चूक। (४) मो.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हंसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह नह हिजन सु भज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

पंचमी देह कौसास मति। वर रघुवंस कनक्क बिय ॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लंगुरि सबिय ॥ छं० ॥ ८ ॥

जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंबर करने की सलाह करना।

तब सुमंत परधान। पंग सब सेन बुलाइय ॥
जु कछु मंत मंतियै। मंत चहुआन सु घाइय ॥
प्रथम सूल दिज्जियै। व्याल आवै कै नावै ॥
जिनहि नाहि दिज्जियै। लाभ [1]सुंदरि अकरावैं ॥
सोमंत मंत चिंतै न्रपति। बाल स्वयंबर किज्जियै ॥
तापच्छ सिंघ एकट्ठई। फिरि दुज्जन भिरि भंजियै ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ इतनी बत जैचंद सों। कही सुमंत प्रधान ॥
बत सन्नी जैचंद नें। अंतर मत भए आन ॥ छं० ॥ १० ॥
मानि मंत पहुपंग ने। महल कहल उठि जाइ ॥
वर संवर संजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ ॥ छं० ॥ ११ ॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना।

चौपाई ॥ सुनी जंत वर बैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरंग बुलाई ॥
कहि बर बर उतकंठ सु बाला। चिंते पुच्छि [2]विविरि बर माला॥ छं० ॥ १२ ॥
सहचरि चरित [3]वरन मोकल्ली। मनों हरि कामन हरी इकल्ली ॥ छं० ॥ १३ ॥

संति करन चित हरन। संतिका नाक तिहि।
*बर सुमंतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूहा ॥ सुस्थ सु राजन सुस्थ चित। सुस्थ विलंब न धीर ॥
पुरुष जु क्रम क्रम संचरै। नेन सुता पन पीर ॥ छं० ॥ १५ ॥

---

(१) ए. कृ. को-सुन्दर। (२) ए. कृ. को-विवर। (३) ए. कृ. को-चरन।

* मालूम होता है कि ऊपर की चौपाई के दो अन्तिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ । सहचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ । [1]संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन ।

नाराच ॥ परठ्ठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुक्कने ।
तिसाम दाम दंड भेद सारसी विचष्पने ॥
बचन्न चित्त चातुरी न ताहि कोइ पुज्जई ।
हरंत मांन मेनका मनोहरंन सुक्कझई । छं० ॥ १६ ॥
श्रवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई ।
अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई ।
छिनेक में प्रसन्नवे जु जेम मेन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्कलं अलाप जाप ताप छत्त संसई ॥
म्रिषंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब सुच्छि काम जग्गवै ।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथंममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही ।
विषंम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही ।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हट्ठ सों छंडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै समुझ्झवै ।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न [2]सुझ्झवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारी । चंचल नेंनीय चंचला वेनी ॥
थावर चित संजोई । थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से बचन ।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रप्प किय ।
किम बुद्धिय मो तात सकिल्लिय एक हिय ॥

(१) ए. कृ. को.-संजोगि । (२) मो.-परत्ति ।

तनं बाले वर तात सयंवर मंडइय।
कहि वर उतकंठाइ माल उर छंडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥
चौपाई ॥ मिलि मंडल राजान्न सु बरई। सो उच्छव वंधे संकरई ॥
देपि वाम भोली तजि अंगं। ते ऊभे दरबारह पंगं ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की बातों पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै वर सेन संजोग। सपि सहचरि सम बुल्लिय ॥
अबुभ्क घात वज्रपात। काम वेमो दुष षुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै कित्ति। ताहि गंगा गुन गावै ॥
वंक्षि पूत रस पढ़त। क्रंन हीनह समझावै ॥
सहचरिय वतनि सुन्निय सुवर। चित चल चित बत्त न वकिय ॥
वर भई समक्षि संजोगि पैं। फिरि उत्तर तिन तव्व दिय ॥छं०॥२४॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे वंधे पित संकरह। जे षद्ध पित लोन ॥
ते वद्धी जन बापुरे। वरै सँजोगी कोन ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सह सहचरिय गुन। का जानौ कुल वत्त ॥
जे मो पित बापह कहै। तेमो बंधव अत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुचौ सुनि गुन इतौ। तात बचन तजि [2]काज ॥
कै वहि गंगहि संचरौं। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हियै मन्नि अनराव ॥
हौं बरि अवरहिं देउंबर। दैवै अवर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तव पंगुरि मन पंगु करि। धाइ सबुझ्झी बत्त ॥
तुम पुचौ गुन जानि हौ। करहु दूरि हठ इत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का बचन।

चंद्रायना ॥ मो मन मंझ गुरू जनं गुझ्झ सु तुम कहौं।
जंपत लाजौं जीह सु उत्तर लहु लहौं ॥

---

(१) मो.-मुझ्झवै। (२) ए. कृ. को.-परम। (३) मो.-काहु।

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोहिय हंति अषंडलिय॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन।

दूहा॥ अन दिषि हत कीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्त॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्त॥ छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त॥ बचन समुह संजोगि। बाल उत्तर उच्चारिय॥
अजक्ष कनक समूह। तुच्छ जानै नर नारिय॥
मलया [3]पाम पुलिंद। करै इंधन बर चंदन॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय॥
संयोगि क्रम्म बर पुब्ब गति। तैंत अली अलि व्रत्त लिय॥छं०॥३२॥

सहचरी का बचन।

सहचरी वाक्य॥ गाथा॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन।

संजोगिता का वाक्य।

कवित्त॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ॥
जिहि लुहार संडसी। भीम चालुक अहि साहिय॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय॥
पावक सबर बर नैरि सह। अरनि मंडि जिहिं बारयौ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ॥ छं०॥३४॥

दूहा॥ अथवा राजन राज ग्रह। अथवा माय लुहानि॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंध्रव जानि॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२) ए. कृ. को.-मन्न।
(३) ए. पर मर कृ. को.-पमर।

साटक ॥ आरत्तौ अजमेर धुम्मि धमनो, कर मंडि मंडोवरं ॥
मोरीरा मर सुंड दंड दमनो, अग्निं उचिष्टा करी ॥
रनथंभं थिर थंभ सीस [1]अहिनं, ज्वलदिष्ट कालंजरं ॥
क्रप्पानं चहुआनं जान रहियं, पड़नोपि गोरी घड़ा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुची मरहट्ट थट्ट सबले, नीमंच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निर्मीवे हयलेव मालव धरा, मेवार मंडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव न्रपती, तत्वान्यनं किं वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

श्लोक ॥ नमे राजन संवादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरनेक स्वयं देहे । नान्यथा प्रथिराजयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन संभारिय ॥
रसन वचन चाहंत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाष गंध्रव्व । भयौ किल किंचित नारिय ॥
नयन उमड़ि जल बिंद । बदन अंस्रू परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचंद कहि । बाल जदिन सुर संभयौ ॥
उफ्फेन अमी मभ्भह रह्यौ । ससि कलंक उफफनि गयौ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
द्रिग रत्ते करि बाल । भोंह बंकी करि षिझ्झिय ॥
सो ओपम बरदाइ । चंद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुवन नरिंद । परसपर लरत विश्रानं ॥
मनु सम रष्यत बाल । दुहुन सों षीझत आनं ॥
भोहन्नि तीर जाने छुरी । दुहुन बीच अड्डी करी ॥
सो रूप देषि संजोगि कौ । उठि सहचरि मंतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वंतह वयन । वयन गये मृत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हौं पूछूं तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) मो.-अहितं ।

सखी का बचन।

थिरु बाले वल्लव मिलनु। जो जुड्डनु दिन होइ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं। रति मंझै घट लोइ॥ छं०॥४२॥

संजोगिता का बचन।

रति आग्रह तिन सों करहु। जो तुम सषी समान॥
ज्वाब ज्वाब लजा करों। मों तुम तात प्रमान॥ छं०॥४३॥

सखी का बचन।

तोसों मात न तात तन। गात सुरंगरि याह॥
यों जोवन अथ्थिर रहै। अंब कि अंजुरियाह॥ छं०॥४४॥

साटक॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं॥
जाती फुल्लय [1]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीयं प्रभा॥
झंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया॥
सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तेवसंते छबी॥ छं०॥४५॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन)।

कुंडलिया॥ कहि सजोगि सुनि बत्त इह। सरन सरन सुहि एक॥
किम अलि रावह लभ्भिहै। दुल्लह जनम बिसेष॥
दुल्लह जनम बिसेष। लज्ज सिंगारम थक्की॥
बाहिथ्थवत चहुआन। आस सासा जिय रुक्की॥
बर गुरुजन बिसाहनौ। हिंदु हद्द बद्दह हियौ॥
सुक जाई सवरीस। उभैं पच्छै श्रुति कहियौ॥ छं०॥४६॥

साटक॥ इंद्रो किं अलि अन्यईय अनयो, चक्की भुजंगा सुरं॥
चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचीनि बंका करे॥
तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे॥ छं०॥४७॥

दूहा॥ ग्रभ्भ आइ पहुपंग कै। बर चहुआन सु लेषि॥
सुद्धि नहीं किर बोलु तुहि। रन षत्तह करि देषि॥छं०॥४८॥

---

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (१) मो.-चम्पकस्य।

स्लोक ॥ संबादेव विनोदेव । देव देवान रञ्छितं ।
अनुमाने प्रयाने वा । प्रानेस ढिल्लीश्वरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दूहा ॥ देहि सही संजोगि दै । निकटति पंग कुमारि ॥
जुग्गिनिवै जीवन मरन । लै अलि अब्ब विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । बिनसच पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय । पंग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय । बुद्धि बंध परमान ॥
न्टप आगे बट्टिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

संयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना।

सहचरि पंग नरिंद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥
वर संजोगि न मानई । चित्त करहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तब झुकि पंग नरिंद ने । तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै बुड्डवि जल मझि परै । कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान समान करि । दीनै दुजवर पंग ॥
घनं अनघ चहुआन कै । रष्षि सुरी तट गंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश।

झुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥
चहति गहौ चहुआन कौ । मिटै बाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ किए गंग तट्टं अवासं संजोगी । रही सातघन्नं रु छंडी सभोगी ॥
वसंतारिवासं दई सत्त दासी । बीयं बंभनी मद्द नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तियं पान पानी सयं दुद्ध धारै । करै व्रत बाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेषं अलेषं । सोइ सुप्पनं चित्त चौहान देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

फिरै पंषिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं घट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं॥
दलं पुब्ब सेतं अवं छन्न राजै। जदं ताव द्वार सिंघारेज साजै॥
छं० ॥ ५९ ॥

दलं रत्त तायं गुनं होइ जब्बं। तवे नीद आलस्य आवै जु सब्बं॥
दलं दष्षिनं रूप हब्बी प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं॥
छं० ॥ ६० ॥

दलं ता बनै रत्ति नीलं बरानं। तहां यत्त उग्गं मनं जंम रानं॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै। तहां हास उग्गै विनोदंत साजै॥
छं० ॥ ६१ ॥

दलं बाय कोनं नभं रंग साजो। तहां चिंति चितं उचाटं विचारो॥
दलं उत्तरं पीत छन्नक लज्जी। तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी॥
छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर छन्नं इसानं जु होई। तहां लज्ज संका सु संगी सजोई॥
संधी संधि छन्नं मनं मद्द होई। तहां रोग चिंता त्रिदोषं सलोई॥
छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं बनाई। तहां मर्द अंसी सुअं लोक पाई॥
कहै बंभनी भोग संजोग सिष्षी। तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्षी॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना ।

चौपाई॥ तब इक दिन इम बंभनि बोलिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोलिय॥
कै चहुआन ग्रहौं कर झल्लिय। ना तरु इत संजोग सु हल्लिय॥
छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राज बचन इम जंपै। थर हर धर दिल्लिय पुर कंपै॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मीनह। पंग भयं दुज्जन भय छीनह॥
छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुर प्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय ।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुंढि फौज जैचंद फिरि । वर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर जाहि वर । रहे ठठुक्कि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपंग । फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढीली तें पच कोस । रंक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए न्रप पास । देस दोऊ अरि वस्से ॥
राह रूप प्रथिराज ! जग्गि पंगह गहि गच्छे ॥
न्रिम्मान भान कूरंभ भुज । हांसीपुर न्रप रष्पियैं ॥
सामंत सदै कै मास विन । दुज्जन मुष्प सु दिप्पियै ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हांसी गढ़ की रक्षा के लिये सामंतों को भेजना।

हांसीपुर सामंत । कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यौ भीम पुंडीर । सलप रष्यौ सुत भानं ॥
रष्यौ जैत पंवार । कनक रष्यौ रघुवंसी ॥
रष्यौ देवह क्रन्न । रष्पि उद्दिग क्रन गंसी ॥
वग्गरी राव रष्यौ न्रपति । रा चामंड सु रष्पियै ॥
सामंत सूर तेरह चिगढ़ । गोरो मुष दह दिप्पियै ॥ छं० ॥ ३ ॥

हांसपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आषेटक मंडि कै । ढिल्ली रषि कैमास ॥
पंच पंच सामंत सह । जुग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आषेट वर । पहुपंगनौ जु चास ॥
नैर सु रष्यी सेन सह । न्रिप हांसी पुर पास ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस। भंजि मैवास सबै बर ॥
गुज्जर गोरी पंग। देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाप ज्यों तूल। मूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती। वीर रस बीर अघाइय ॥
चामंड राव गोरी दिसा। भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत स्हर असिवर बल्लह। हांसीपुर अग्गह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआना समस्हर। सबै सामँत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज। समै सामँत पुव धारं ॥
आदर बर चहुआन। हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम राज। राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह। बर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच स्हर संग्राम रबि। सो नतु दै दैही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत। सुनिय बालोच पहारी ॥
हैं मारू पतिसाह। तेन वेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच। भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान। देस अरि मिष्ट सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करों। अरु वेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै। तौ कढ़ै हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम भुमिया भुमवट करहिं। तुम सहाय हम भीर ॥
सब षंधार बलोच मिलि। षनि कढ्ढै ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक बरष प्रथिराज बर। रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावद्दिसि धर भुग्गवै। बर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
घर बीतिय मत्तिय छुरी। घर नागौर निधान ॥
जिन भुज्जन ढिल्ली धरा। ते रष्षे परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ यों चाहैं नृप सूर । चंद चाहै चकोर सुष ॥
बूड़त नाव सु कीर । इथ्थ वोहिथ्थ वीर रुप ॥
सूकत नाजह मेघ । प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आहत तत्त अंतरे । वाल संग्रत गुन चाषै ॥
देषियै दुनौ चहुआन सुष । लज्ज पत्ति परवत सु गुर ॥
मक्का चलाइ वेगम नृपति । तत्त कथा आहत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी वेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजंगी ॥ सयं सत्त वेगंम दीनी नरिंदं । तिनं लज्ज पानी सुषं मेछ इंदं ॥
महं वट्टि डट्टी रूजं सुष्य राची । दियौ षान निसुरत्ति जा मुक्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मियानेति पन्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिकत्ते विराजी सु घट्टी ॥
महं माहु मंती सु सामंत ध्रम्मं । दिये साहि गोरी सकं वीर क्रम्मं ॥
छं० ॥ १४ ॥
घने हेम छ्रनं विभूती निनारी । तिनं देषि कुव्वेर ग्रब्बं प्रहारी ॥
मयं मोह मक्का तिनी जात मन्नी । वियं ग्रेह क्रम्मं क्रमं जात छिन्नी ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मयं हत मध्य महा रस वान । उयौ जनु चंद कलानि पिछान ॥
हस्यौ नर वाहन नाग नरिंद । सु मोतीयदाम पयं पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥
रहे बर सूर कलानिधि राज । मनों नृप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय आसय सूर । मनों पवनंसुत पब्बय सूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ बर बीर सु चामँडराइ । मनों सत पुच तिनं भ्रम चाय ॥
रह्यौ बर बीर चंदेलति सूर । अरी चन बाहन ज्यों नद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

रह्यौ रजि सारँग सारँग गौर। सु रष्पन कों छिति पचन मौर॥
महं गुर जादव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान॥
छं० ॥ १९ ॥

सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरी दल चंपन कौ ससि राह॥
वरं हत दाहिम देव प्रमान। .... पारथ कें उनमान॥
छं० ॥ २० ॥

धनी धर धार धराहर पान। सु विक्रम भोज तनें उनमान॥
षिची लट षीचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

बलोच पहार का सांक्षिप्त वर्णन।

बली हत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज॥
न्रनाहन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अहत्तय तेक॥
छं० ॥ २२ ॥

सतं बर सामँत मध्य सु टारि। रहे बर आसिय साहन च्यार॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सहूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर॥
छं० ॥ २३ ॥

उभै सुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अष्षिय न लिंग्रह चीर॥
तिनें न्रप टारिय तेसम अष्पि। सु रष्पिय राजन आसिय पष्पि॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक॥ राजं जा न्रप राज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्धंतयं जोवनं॥
निर्जेयं च चिकाल वधनं वधं, गोरेनि भा [2]सेसयं॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सषं॥ छं० ॥ २५ ॥

बलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त॥ तिन तुरंग गज भंजि। जंग संभरि उद्धारं॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं॥
ते रष्षे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) क्र.-निभा संसय।

विधि विधिना परिमान। दैव देवा दिसि लंगे॥
सुध मध्य विषम धियपत्ति न्रप। परपि रह्यौ ढिल्ली न्रपति॥
अग्गर सु सकल सुरतान कौ। दिपति दीप दिव लोक पति॥छं०॥२६॥

बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाहीं करना।

मध्य पंथ संभरिय। चलन वेगक अधिकारिय॥
मिलि बलोच पाहार। राव चामंड सु धारिय॥
जु काहु भेद संग्रह्यौ। दियौ तिन भेद प्रमानं॥
विन अग्या सामंत। जग्गि लग्गिय आपानं॥
वरजए राम रघुवंस गुर। गामी बल लग्गा विहसि॥
पज्जूनराव पावस पहर। अमर मोह भूले रहसि॥ छं० ॥ २७ ॥
दूहा॥ सो नागोर सु रष्पि न्रप। अप दिल्ली पुर पास॥
न्रप अग्या विन सूर भर। करिग अहत्त सु वास॥ छं०॥ २८॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तैयारी करना।

कवित्त॥ चढ़ि मक्कां बेगंम। साहि जननी अधिकारिय॥
अति सु धम्म माया न। क्रंम विग्यान विचारिय॥
अष्ट लष्प हाल्लुन। पट्ट विय द्रव्य रजंकिय॥
सो हथ्थी वर बाज। जाइ पंथह सा थक्किय॥
संभरि सुकान चामंड न्रप। लच्छि लोभ षल मत्त सुनि॥
वरजयौ वीर रघुवंस नर। तौ पनि चढ्यौ अभ्भ गनि॥ छं० ॥२९॥

बेगम के पड़ाव का वर्णन।

साटक॥ पासं साइर भार मध्य सघनं, पानीय मिष्टिं गुनं॥
एकं रूपय रेष साहस विधिं, रम्यं हरम्यं तलं॥

जानिज्जै बल हंस स्वग्ग चकिती, नीरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्त अंग समयं, अयं सु वेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपन्नौ ॥
माष ध्रम्म सुरतान। भेद करि भेद सु दिन्नौ ॥
है आस्रिष्ट सुवास। तमकि सब बीर सु हल्लिय ॥
भर गोरी सुरतान। संग षुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हौं षंधार अगियान वर ॥
सोधीर कौन चहआन कौ। लोइ लंक लुट्टै सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धाए ॥
अद्ध रयनि परि सोइ। जोंर हिंदू भर आए ॥
ग्रहि वेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय षास षजीना ॥
भजि बलोच केइ रूझ्झि। सु बर रन्नी वह दीना ॥
बुंबार सद्द दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त इय ॥
दैवत्त गत्त ऐसी हुइय। लहिय [1]घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार वर। पाहारिय सौं षेद ॥
वेगम लुट्टि नरिंद भर। लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि वन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बलोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग वंधौ विषम। अद्ध सेन उप्पर परिग ॥
वेगंम सुट्टि वंधिप सयन। लच्छि अमग्गत सह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अचरज सब सामंत कौं। कहि अब गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान की। अरु भर अवधइ वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए.- पत्त।

बिन पुच्छै बड़ गुज्जरह। चूक कऱ्यौ सामंत॥
तिन सों ए बत्ती कही। गुन में दोस दियंत॥ छं०॥ ३६॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामंतों से प्रार्थना करना।

कवित्त॥ भग्गा वर सब सथ्थ। रही बेगम अधिकारिय॥
मृतक अंग संग्रह्यौ। सस्त्र किन ग्रहि न हकारिय॥
बार बार दिषि समुष। चीर द्रुपदि ज्यों षंचत॥
उहित सद्द गोव्यंद। इहित षुद्दाय सु उच्चत॥
अल्लह रु राम इक्कै निजरि। विषष बंध बंधे चल्लहि॥
साष्टंम पंथ जू जू कियौ। मुगति पंथ एकैं षुल्लहि॥ छं०॥ ३७॥
मुगति पंथ नह भिन्न। एक पंथं अधिकारिय॥
एक नरक संग्रहै। एक मुक्तिय सु विचारिय॥
अंत हरुअ ह्वै तिरै। क्रम्म भारो सो बुड्डै॥
हक्क अंस संग्रहै। अहक सा पुरिसह छुड्डै॥
संसार सकल बुद्धौ फिरै। कहै बंध बंध्यो न किहिं॥
बुड्डे सु इक्क सारंग सुक। सु बुधि बुद्ध तत्तह लहहि॥ छं०॥ ३८॥
चौपाई॥ असु सारंग पत्तियै बंधि। उड़ै साष ह्वै राषै संधि॥
यों न विचारि सु चामंड राइ। मेछ क्रम्म लग्गे गुन चाइ॥
छं०॥ ३९॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना।

कवित्त॥ लूटि सबर चतुरंग। लइय चामंड़राय सधि॥
मुक्कै कै संग्रहै। के विषंडें के विधि विधि॥
के अट्टत किय लच्छि। केन लच्छीति समप्पिय॥
फिरें सब्ब षुरसान। दिसा गज्जनीं स रप्पिय॥
मावित्त मत्त कीनी नहीं। हैगै विधि लग्गे विषम॥
चामंडराइ दाहरतनौ। मत मंची कीनों सुषम॥ छं०॥ ४०॥

चौपाई ॥ तज्जि गाम लुट्टिग बर संगी। हय मिष्टन सब सस्त्र सुरंगी ॥
हांसियपुर फेरिय सुरयानं। पुकारी गोरी सुरतानं॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां। जहँ गज्जनी सहाव ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल। विवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना।

साटक ॥ ए गोरी सुरतान साहिब बरं। साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक हतं। मानस्य मद्दँ जगं॥
बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो। धन पोपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं। ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं। अग्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्रप मृत्यक मृत्य समानं। आन सुनत सेवक्क न मानं॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ बिप्प सु षंडन वेद बर। नर षंडन निर ग्यान ॥
त्रिय षंडन इह मैं सुन्यौ। धिग जीवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनी। जंपी मात निधान ॥
मैं ग्रभ्भह झुझ्झयौ धर्यौ। सुंठिन षद्दी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कवित्त ॥ धरत ग्रभ्भ दस मास। उदर भोगवै दुष्ष तन ॥
सीत जाल बर उष्ण। सवर बरिषा सुमत्त मन ॥
ता जननी दुष देइ। पुत्र ग्रभ्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुत्र कौं गति। न साहि निहचै विचारिय ॥
साम्रत्य काल बंधेति न्रक। कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु बचन आवै नहीं। दिन विवान देषे सुपन॥ छं० ॥ ४७॥
दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सों। करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ। भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतानं। सुनि साहाब सूर सब्बानं ॥
जा जीवत धरवानं। भुग्गै को तास अप्रमानं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
अति आतुर अप्पानं। षानन पान षाइयं पानं ॥
हियै धकि धक्कि लग्गि कंपानं। दीय षबरि सबै फुरमानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन सूर साहब साहि। धकधकी लग्गि रस बीर छाहि॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कीन। सीची कि अग्गि घ्रत होम दीन॥
छं० ॥ ५१ ॥
तमतमे तेज वर भर करूर। बद्दरन फट्टि किरनें कि सूर॥
विफुरैं हथ्थ रस बीर पग्ग। लंघने सींह हयवार तग्ग॥
छं० ॥ ५२ ॥
फुरमान फट्टि षुरसान षान। बज्जेव सोर सुरवर निसान॥
रत्तरे रषत उठ्ठ प्रमान। भद्दव कि मेघ घन रंग आन॥
छं० ॥ ५३ ॥
तत्तारषान सुविहानं मीर। इहि रत्ति मंड बैरंम तीर॥
मंची जु मंच जेसंत रूप। बोलियै सही सुविहान भूप॥
छं० ॥ ५४ ॥
दरबार भीर गजवाज लोइ। पावै न मग्ग भर सुभर कोइ॥
पोलिथहि पग्ग हयगय पलान। किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान॥
छं० ॥ ५५ ॥
बंधों समेत सामंत सूर। सुविहानं साहि बोल्यौ करूर॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तैयारी का हुक्म देना।

कवित्त ॥ हिरनंकुस पाताल। जाय षग जग मंडाइय॥
सोवनपुर सुर लूटि। पकरि चिय काया धाइय॥

नारद आइ छंडाय । भयौं प्रहलाद पुत्र तस ॥
तिहि जननी संग्रहन । सुने उर मद्धि रष्षि गस ॥
मघवान सहित दिगपाल दस । मात वयर कंज भंजि जिम ॥
सुरतान कहत चहुआन भर । हों पनि गंजहु अब्ब इम ॥ छं० ॥ ५७ ॥
थान थान फुरमान । फट्टि बंधन हिंदू दिय ॥
विधिना सो निम्मयौ । मेटि सक्कै न दिषौ दिय ॥
इला नाम धरि हियै । मेछ षुरसानह जोरिय ॥
ज्यों वंराम उच्चरै । सेन वोरन गढ़ तोरिय ॥
हक हलाल बोलै न सुष । काफर एधर बर भई ॥
दह बड़े स्त्रर ह्रम साहि कर । तो सलाम कर सुब्भई ॥ छं० ॥ ५८ ॥

तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना ।

दिष ततार दह करि । सलाम उच्चार वरज्जिय ॥
रहि न बोल ज्यों साहि । दिया उच्चार जु हक्किय ॥
षां ततार वरजे निसान । आसन उर पानं ॥
जु कछु मत्त मत्तियै । हुक्कम दीना सुरतानं ॥
मक्का मुकाम पीरान की । करिव आन बल बंधियै ॥
मादरं पिदर मानें न दर । निमक हलाल न संधियै ॥ छं० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ थान थान फुरमान फटि । बंधन हिंदु नरिंद ॥
दै दुवाह सों न्रिम्मयौ । को कढ्ढै कविचंद ॥ छं० ॥ ६० ॥
कोक कढ़ै विधिना लिषी । आज साह बल तेज ॥
मानों सात समुंद ने । तज्जि म्रजाद अमेज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
मरजादा सत्तों समुद । अमित उलंघी आज ॥
मानों घन के देव दुति । नाग विरोधन पाज ॥ छं० ॥ ६२ ॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान ।

कवित्त ॥ नाग भूमि सिर तजै । चंद छंडै सुचंद कल ॥
कलिन भान उग्गई । पथ्थ मुक्कै सु वान छल ॥

रघु सुग्यान छंडई। भीम छंडै बल बंधै॥
रूप छंडि मारह। कंद छंडै हर संधै॥
मुक्कै जु जोग जोगिंद ऊ। कर फिरस्त छंडै गुनह॥
इत्तने धीर छंडै जदपि। साहि न कस मुक्कै मनह॥ छं० ॥ ६३॥

दूहा॥ मन मुक्कै सुक्कै सुहत। हत गोरी सुरतान॥
सकल सेन सज्जे न्रपति। सुनहु तौ कहूं प्रमान॥ छं० ॥ ६४॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन।

सुनिय मीर मीरन चवै। देषि सष्षिरह मीर॥
जितौ कस्स सुरतान कौ। तितौ न दिष्यौ तीर॥ छं० ॥ ६५॥

पद्धरी॥ देष्यो न जाइ आलम अदब्ब। थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब॥
कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ट। उच्चरै सेन बोलंत गट्ट॥
छं० ॥ ६६॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल। बोलै न मुष्ष सनमुष्ष काल॥
सुरतान निजरि वर भई ताम। दह वेर सूर बर करि सलाम॥
छं० ॥ ६७॥

अंगुरी टेकि इल षां ततार। दह करि सलाम बोलयति बार॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ। उच्चरों मंत सोजीव हेउ॥
छं० ॥ ६८॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना।

दूहा॥ चौसठि वेर सुहत्त बर। फेरि फेरि सुरतान॥
सो पहराए मत्त गुर। दै किताब परिमान॥ छं० ॥ ६९॥
दै किताब पहिराइ चर। नर नरपति मन साहि॥
आसी पुर जो भंजई। इहै तत्त गुन आहि॥ छं० ॥ ७०॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना।

सुन्यौ मंच मंची सुमत। कहत मंच सुरतान॥

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ पति प्रमान हक्करिय। करिय जंगम सु सत गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। काल्ह चंपै सु काल मन ॥
अरि निद्दुर साहरी। सबल मंची इट्टप्पन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सत्ति मस्तूरति वोलि वर ॥
तत्तार ग्रान षुरसान पति। करौं मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज वर ॥
चपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान तत्त नर ॥
बेरं कोबिद अछरि। काम अचपतिय स सुंदरि ॥
इत्ते न्रपति जो होइ। भए न्रप तौर समुंदरि ॥
तिहि कहे षान तत्तार वर। आसीपुर भंजन वलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ला धरा। बैर वत्त बुझ्झै षलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ षां ततार जंपै सुबर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें वनें हम्मान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार वच। हिंदवान लै जाइ ॥
मात रीस बेगम मिटै। सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर वेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करै सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

तत्तार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

कवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ सैमुह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मीर। सज्जि चतुरंग सेन वर ॥
मीर बँदा षुरसान। मुक्कि रहै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि वर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मंति मंत बंधै न्रपति। कित्ति बोलि [1]भर तर पढ़ै॥ छं०॥७७॥

हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना।

षां हसेन आवृत्त मन। सुमति कियौ परिमान॥
आसी पुर भंजन भरै। इह करि मंत निधान॥ छं०॥ ७८॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा।

कवित्त॥ रे अमंत तत्तार। मतौ जानै न प्रमानं॥
ए हिंदू हम बंधि। सीस लग्गै असमानं॥
हम दल भज्जत देषि। तुम्म गिनियै तिन मानं॥
अब हम बंचि कुरान। फतेनामा धरि पानं॥
पाषंड सब्ब अग्गें छिपै। में भंजों दुज्जन अरी॥
चहुआन सेन हांसीपुरह। लुट्टि गाम उब्भा भरी॥ छं०॥ ७९॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा।

हांसीपुर पुर विपुर। करों सु विहान तेज बर॥
तो गज्जानिय सुद्ध। हांसि मंडौ जु अप्प धर॥
अरि भंजे तन भंजि। भार मारह करि मोरों॥
जौ बंधों सामंत। साहि तसलीम सु जोरों॥
ता दिवस षान तत्तार हों। धार धार चढ़ि उत्तरों॥
सुविहान आन चहुआन सों। जौन जुद्ध इत्तौ करों॥ छं०॥ ८०॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना।

दूहा॥ पाहारी बल्लोच तहँ। करि सलाम सुरतान॥
हम बंदे हाजुर निजरि। दै हांसीपुर थान॥ छं०॥ ८१॥

कवित्त॥ सत्त वेर पाहरी। तेग बंधी जु अप्प कर॥
सब बद्धों सामंत। बौंटि षुरसान देउ धर॥
बान साहि साहाब। बीय सन मज्जिय अप्पिय॥
षां षुरसान ततार। षान विय सरद सु धप्पिय॥

(१) ए. को.-भरत।

चतुरंग अनीं हिंद्र दिसा। बर गोरी सज्जिय सुबर॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं०॥ ८२॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा॥ सिंधु मुक्कि गए दूत बर। तजि गोरी सुरतान॥
कै विधि पवर्त चंपई। अवनी उनमी भान॥ छं०॥ ८३॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त॥ कूच कूच उप्परे। पान पुरसान ततारी॥
हसम हयग्गय सूर। दुसह दुज्जन मक्कारी॥
दल बद्दल सु विहान। सूर पच्छिम दिसि उट्ठे॥
लज संकर गल बंधि। सिंघ मद नद्द सु छुट्टे॥
दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह। सजिय सेन संमुह धवै॥
धर दहन वीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै॥ छं०॥ ८४॥

ततार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

त्रोटक॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। द्रिगपाल चमक्कि निसान धुनी॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै। जनु भांवरि भान सुमेर लसै॥
छं०॥ ८५॥

दिसि रत्त रपत्त उठंत बरं। मनों बद्दर भद्दव के दुसरं॥
गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी॥
छं०॥ ८६॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनों जमकें जमजोति जिसा॥
षल की षल संकर अंदनता। सुमनों सुर दादर के जमिता॥
छं०॥ ८७॥

रत रत्त मयूष इला चमकै। मनु इंदवधू नभ तें दमकै॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। बढ़ि आज अवाज सुराज रसं॥
छं०॥ ८८॥

जिनके गुन वीर सुमंत चवै। तिनके बल देवन तत्त भ्रमै ॥
जमसे दरसे जम ते गरुअं। सुरतान तिपाम रह्रे धुरयं ॥छं०॥८९॥
पुरमानय पानति अग्ग अनी। तिनके वर पासन राज यनी ॥
ढनकें ढल ढाल ढलंकि लता। तिर साइर काइर तं कलिता ॥
छं० ॥ ९० ॥

अब दै न्नप गोरिय साहि वरं। सुमनों घन भूमि उतार उरं ॥
चढ़ि चक्रिय उग्गि कला दुनरी। न्निप राज नरिंद सु जुद्ध हरी ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मन सेन गरिट्ट इतौ बलयं। न्नप राजन राजन सो कलयं ॥
रन सुच्छ उट्ठें वर बांक लसी। दिसि बंक विराजत पच्छ ससी॥
छं० ॥ ९२ ॥

इतने गुन चार चरंत करं। उतरे जमरोज नरिंद घरं ॥
जम रोज तजै ग्रह सिंह वरं। चहुआन सुनी रन राज उरं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना।

कवित्त ॥ कूंच कूंच उप्परे। राज अग्या नन मानै ॥
सुवर जूह सुरतान। सैन चावद्दिसि वानै ॥
उगन हार ज्यों प्रात। लेन उग्यौ वर गोरी ॥
तिमरलिंग जुलिक्कन्न। राज रजक्कन्न सु जोरी ॥
धनि धंनि धंनि गोरी सु वर। वलभग्गा भग्गौ न वल ॥
आसीस भंजि ढिल्ली पुरां। नव लग्गों मेवात पल ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ जानि सकल गोरी सुवर। गरुअ मत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्थ सु हत्त पति। पत्ति ना लभ्यौ पार ॥ छं० ॥ ९५ ॥
पां तत्तार सुरतान वर। नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आसौ हुतें। आय सपत्ते थान ॥ छं० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ आय सपत्ते थान। बीर आसी गिरद्द करि ॥
सरद काल ससि मित्त। परी पारस सुमंत धर ॥

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कस धारिय ॥
चावद्दिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रुक्कि सज्यौ साहस बली। सेन सजत लग्गी घरी।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूली सुरी॥ छं० ॥ ९७ ॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चढ्यौ षान तत्तार। सोर हल्लें द्रिगपालं॥
घुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद्द। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों अषाढ़ रति भान। धुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयल्ल कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यों पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥९८॥

मुस्लमानी जातियों का वर्णन।

षां षुरसान ततार। बीय तत्तार षंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इलचि षूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बीर भट्टी मैदानी॥
चौगत्ता चि मनोर। पीरजादा लोहानी॥
अनेक जात जानैति कुल। विरह नेज असि ग्रहि करद॥
तुरकाम बीच बल्लोच बर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार षुरसान॥
वे रज गुर सम्हे सजिग। मचिग जुद्ध विरुझान॥ छं० ॥ १०० ॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार रुस्तम्म। वाम दष्षिन पष पंषी॥
षां निसुरत्ति पहार। उभै सेना पग लष्षी॥
षान षान षुरसान। चंच चछु रचि कसानी॥
कंगुरेस गष्षरह। जंघ मंडे दल भानी॥
षिलची षुरेस भट्टी विहर। पुंछ सु इन पच्छह सुबर॥
महनंग अंग मारुफ षां। छच सीस धारिय सुभर॥ छं० ॥ १०१ ॥

युद्ध वर्णन ।

छनूफाल ॥ परिधाय सूर प्रकार । पांवार वज्र सु भार ॥
कढ़ि पोलि पग्ग विहथ्थ । भारथ्थ ज्यों सुनि पथ्य ॥ छं० ॥ १०२ ॥
पग पगन वाहै पंति । मनों वाज सेन कि पंति ॥
भारथ्थ कथ्थै जोति । असि अंग विढ्ढि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बजि गुरज बीर प्रहार । संग देहि चौसठि तार ॥
दुहुं पास अंत सरंत । गिध गिधी गिद्ध गहंत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
तर वेलि चढ्ढि सुनाल । मनु गहिय संस सिवाल ॥
तुटि मुंड तुंड सुभट्ट । मनु भग्गरं रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
रुधि छच्छ धर बर रुंड । पावक्क झार उठि कुंड ॥
कहि लेहु लेहु सु सूर । भारथ्थ वित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
पग झूर उठ्ठिक वार । झर गिद्धि सो पति पार ॥
परिरंभ रंभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
मुकि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पियन दष्षिन आइ ॥
मिस हारि रंभ स अग्गि । इन सव मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
किं अगनि दस्सझै ताइ । तन धार धार सुलाइ ॥
वर वीर रोस सुगत्ति । तहां सोप इष्षि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दल सुभर अल्हन मझ्झि । जुरिभोम कन्ह अलु झिझ्झ ॥
उच्छरि अरी अरि भीर । चानूर मुष्टक वीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
घरि पंच भिरि भारथ्थ । दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । वीर विरुझाइ सु धाए ॥
नंषि कोट गढ़ ओट । कोट किप्पाट ढहाए ॥
सत छुथ्यौ सामंत । राम बुल्यौ रघुवंसी ॥
रे अभंग सामंत । साहि बंधों बल गंसी ॥
विना न्रपति जो बंध । कित्ति चावद्दिसि चल्लै ॥
सार धार तन षंडि । बीर भारथ्थ न डुल्लै ॥

[1]नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गरुअ ग्रब्ब पंडोति षग ॥
उच्चरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। षग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेन भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर मारू मरद। सरद तेज सांस मुप षुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां धर डुल्यौ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना ॥

भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
सघन घाइ आवत्त। भेर तत्तार होइ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत दुज्यौ न दीन दुहु ॥
उतरि भेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
बहु षग्ग सूर सामंत रन। झोरी षान षुरेस परि ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्ट विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥

समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन [2]विच्छुरहि। रुद्र भूमिअ सु बीर बहि ॥
निसचर बीर [3]उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद्द नद्द नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निसा बर मुंदरी। बर हर हर बज्जे ससुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। मुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह लोहान महा भर। रा॰ बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

---

(१) ए.-मन। (२) ए.-विछुर नाहिं। (३) ए.-उभारी।

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ वर पीची अचलेस । गरुअ गोयंद महनसी ॥
उद्दिग वाह पगार । नरा नरसिंघ समरसी ॥
उभै बंध मोरीय । राव रानिंग गिरेसं ॥
देव कन्ह सापुलों । जुद्ध पारथ्थ विसेसं ॥
मल्लपान भीम पुंडीर भर । जैत पवार सु वग्गरी ॥
चामंड राइ कनक सुभर । रघुवंसी सिर पघ्घरी ॥छं०॥११७॥

दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात घाइ घरियार ॥
राम लगे हिंदू तुरक । मनु वज्जत काठतार ॥ छं० ॥ ११८॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना ।

भुजंगप्रयात ॥ असी अस्सि सस्त्रं बधी पान वस्त्रं ।
सु पग्गं पिती पान सो वीर चस्त्रं ॥
चवै चल्लि चारं सवै रंग वीरं ।
तजी गाभ वारं चढ़ी धार धीरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥

अए अस्त अस्तं उपंमा प्रमानं ॥
मनो षेत पट्टै किसानं रिसानं ॥
मिलें सूर धारं दलं मेल सानं ॥
परी जानि बुंदं समुद्रेन पानं ॥ छं० ॥ १२० ॥

तजे कोट पानं सवै सूर घेरी ॥
मनों भाव रंभान सुम्मेर फेरी ॥
परें पग्ग जद्दों उजत्तीत सारी ॥
मनों देवलं बज्जि काल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥

घयं भेदि घायं अघायंत रासी ॥
निकस्सी परै अद्ध सा सूर कासी ॥
कटे बंध कावंध सो बधं पारी ॥

मनो बड्डि बिब्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भज्जि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों वामना रूप भै भीम भारी ॥
रूधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥
तिनंकी उपंम्मा कवीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।
जलं जावकं सोभ पन्नार पारी ॥
हयं छिंछ उड्डी रुधी छिंछ तारी ।
हथं वक्र जरद्द दूअद्द पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥
तिनंकी उपम्मा कवी तं कहाई ।
जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥
ग्रही केस उड्डे उतंमंग पष्षी ।
तिनंकी उपम्मा कवीचंद अष्षी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं ।
चली नभ्भ तें चंदनं सुक्कि धारं ॥
भगी घायनं भूमि भा प्रान पारं ।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
बजी घाय अध्घाइनं ग्रीव पानं ।
फिरें केत रक्की जलं मझ्झि मानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बैं दलं रुद्धि जस्सी ।
मनो दीपतो हिंदुनं हद्द कस्सी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
षटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बस्सी ।
फिरी फौज तत्तार की घाइ गस्सी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या ।

कवित्त ॥ अद्ध सेन अध परिग । परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग । पयह को गनै असेकं ॥
दसत दून बानेत । घाय झोरी करि लिन्ने ॥
पंच पेंड़ पंचास । सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

पछ पुंछ पान आलील तब। अति आतुर असिवर षरिय ॥
अग्गौ न मीर मो मीर सुनि। अब भंजो हिंदू ररिय ॥ छं० ॥ १२९ ॥

अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना।

सुनि सामंत निसान। षान अलील उभं भरि ॥
सनंहु अग्गि घन हत्त। आय डंडूर समंधरि ॥
डुंगोरी धर कोट। राज [1]अड्डो चहुआनी ॥
सो उभ्भै कुन सूर। भोमि विलसै सुरतानी ॥
इह कहिर सेन अग्गें धरिय। जाय सूर सुष पग्गयौ ॥
तिन सार मार सामंत दल। पंच डोरि पच्छो गल्यौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना।

दूहा ॥ तमकि सूर सामंत तब। झुकि लग्गे फिरि षग्ग ॥
लपट झपट ऐसी बहै। ज्यों [2]जज्जर बन अग्गि ॥ छं० ॥ १३ ॥

लड़ाई का वाकचित्र वर्णन।

विराज ॥ छुटे अग्गिवाजं, मनों नभ्भ गाजं। चढ़े सूर सूरं, नसे रंक नूरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

बहै बान भारी, मनों टिड्ड चारी। दुती सोभ आनं, कवीका बयानं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

दिसायं न्टमल्लं, मनो नाग हल्लं। परै बप्प घायं, मनों वज्र लायं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

करै क्रूह कैकं, हुअं एकमेकं। बहै षग्ग धारी, अभूतं सरारी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

होवै षंड षंडं, धरं रुंड मुंडं। बकै मार मारं, मनों प्रेत चारं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जुटै सूर हथ्थं, मनों मल्ल बथ्थं। परै भूमि सारं, मनों मत्तवारं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

---

(१) को.-कृ.-अड्डी। (२) ए.-वज्जर।

अए कान्ह षेतं, बधे बंध नेतं। छुटी आंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥

षगे मग्ग चाहं, अरी वन्न दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट जानं॥
छं० ॥ १३९ ॥

रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। लोहानों अजानं, तुट्टे पान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥

वहै संग भारी, निकस्से करारी। तिनं घाव सद्दं, करै कुंभ नद्दं॥
छं० ॥ १४१ ॥

जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं। पऱ्यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥

भगे साहि ठट्टं, गए दस्स वट्टं। भट्टी षित्ति ताजं, दियं जित्ति वाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भइय जित्ति सामंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसल। षित्ति रष्षी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि बर गानं॥
जै जया सद्द आयास हुअ। घाव सूर भोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५१॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयग्गय लुट्टि । लुट्टि पष्षर रषतानं ॥
तत्तारी षुरसान । हाम भग्गौ सुरतानं ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्थं ॥
पुच्छि पवरि वर दूत । कहिय भारथ बत कथ्थं ॥
रगतैत नेन साहाव सजि । पैगंवर महमंद भाजि ॥
फिरि सज्जो सेन भसुचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअष्परी ॥ मद्धिय सत संतं सुरतानं । दस दिसि धर दिन्ने फुरमानं ॥
रुम्म हरेव परेव परारिय । मर भंभर भष्षर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकंद कसकंद समानं । बल्लक बलोच तकी मकरानं ॥
कंदल वास अधम्म इलासं । रोही सोह उजब्बक रासं ॥ छं० ॥ ३ ॥
पूनकार ऐराक पंधारं । साहवदीन मिले दल सारं ॥
धुम्मर वृन्न सिरै तुछ रोमं । जाति अनंत गिनै कुन भोमं ॥ छं० ॥ ४ ॥
घोरमुहा केइ सुप्पर क्रंनं । चष्ष करूर मुषं रत क्रंनं ॥
इन सर कंध विवाह अजानं । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमानं ॥
छं० ॥ ५ ॥
जानै धार अनी बथ मल्लं । जानि गिरब्बर सिष्पर चल्लं ॥
तानै सिंनि गिनि जोर बिभारं । गोंन चढ़ै जिन टंक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

बंधे दो दो तोन जुश्रानं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं ॥
सावद्द बेधिय लाघव सारं। पंष हनै षह दिष्ट प्रहारं ॥ छं० ॥ ७ ॥
टारैं अनी अनी साइक्कं। मुंठि अभूल रमै चित किक्कं ॥
मंद अहार सबै फल आसं। पारसि मभ्भ्क विवानि प्रहासं ॥छं०॥८॥
करै रगव्व सरब्बर वानं। जानि कि व्रच्छ विहंग बुलानं ॥
बंधिय जूसन सारषि गातं। जानि जुरी नव नाथ जमातं ॥
छं० ॥ ९ ॥
सजि पष्षर लष्षर है साजं। पंषधरी बर उड्डन काजं ॥
गज घुंमर धज नेजर वानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं ॥छं०॥१०॥
करिय टमंक चल्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद मजादं ॥
तर भांगर गिरि पद्धर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं ॥छं०॥११॥
धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं ॥
है गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि झल्लिय सुविहानं ॥
छं० ॥ १२ ॥

बरन बरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त ॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूहं रचि धाइय ॥
अष्ट सेन रचि अष्ट। ईष्ट करि सैन बनाइय ॥
एक लष्ष सारद्ध। सुभर असवारति साजं ॥
दंती पंति विसाल। अग्ग सज्जे अगिवाजं ॥
पावस्स थान मानों प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय ॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय ॥
छं० ॥ १३ ॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा ॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चारु ॥
कै झुझ्झहु बुझ्झह सपरि। कै निकरौ ग्रम्म दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामंतों का परस्पर सलाह और वादविवाद करना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । वीर बिरुझाइ सु धाए ॥
बड़गुज्जर रा राम । राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरंग सो सीस । वीर सोकिग असमानं ॥
किति मुकाति भर सुभर । वीर वीरं विरुझानं ॥
कूरंभ राव पज्जून दे । गयौ रूप सामंत वर ॥
तस पथैं मरन दीजै नहीं । मरहु तुम्ह जिन पर सु धर ॥छं०॥१५॥
सुनिय मंत कूरंभ । मतौ जानहि सु मरन बर ॥
जीवन मत जानंत । सामभ्रमजाइ भ्रम्म नर ॥
हम वीरा रस धज्ज । जोग जीतन सिर बंधी ॥
हम अभंज अरि भंज । मंत जानै जस संधी ॥
रहायौ हंस पंजर सु पच । सो पंजर भंजहिति भिर ॥
जानियै जगत तनु तिनुक वर । अरि बंधन बंधेति फिरि ॥छं०॥१६॥
सुबर वीर सामंत । मन्न लग्गे विरुझानं ॥
रा चामँड जैतसी । राम बड़गुज्जर दानं ॥
उद्दिगबाह पग्गार । कनक कूरंभ पजूनं ॥
पीची रा परसंग । चंद पुंडीर स कन्हं ॥
सहनंग मेर मोरी मनह । दोज वीर वग्गरि सलप ॥
देवकन कुँअर अल्हन सुबर । लषिय सोभ सुज वर विलष ॥
छं० ॥ १७ ॥

सामंतों का भगवती का ध्यान करना ।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत सह । उदिग बाह पग्गार ॥
मात वीर अस्तुति करै । सत्त सु मंगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय । अंब कि बंधै पालि ॥
तेमन संत पयान किय । इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हांसी के किले में स्थित सामंतों के नाम और उनका वर्णन ।

कवित्त ॥ निड्डुर बर हरसिंघ। बीर भोंहा भर रूपं ॥
बरसिंहह हरसिंघ। गरुअ गोयंद अनूपं ॥
राज गुरू रा राम। बली बंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। गौर सग्गर रनधीरं ॥
चालुक्क बीर सारंगदे। दई देव दुज्जन दहन ॥
सुलतान सेन संमुह भिलै। गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥

चौपाई ॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कीनी। बीय सूर सम्हैं अपु लीनी ॥
चक्की चवसठि जोगिनिकारी। दिसि दच्छिन उर सम्हौ भारी ॥
छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त ॥ उदिग गयौ निक्करै। सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
समर सूर निक्करै। सु फुनि अलंगे उत्तरयौ ॥
चावंड रा निक्करे। सुहड सांवला सहित्तौ ॥
गोयँद रा गहिलौत। सु फुनि निक्करै विगुत्तौ ॥
सापुलौ सूर भोंहा सुतन। कल कथ्था भारथ करै ॥
इत्तने राव गए निक्करे। देवराव क्यों निक्करै ॥ छं० ॥ २२ ॥

ए सामंत अभंग। मेर धुअ मंडल जामं ॥
सेस सीस रवि चंद। सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
एउ टरें कोउ बेर। जोग जुग अंतर आयौ ॥
अटल एक सामंत। जुद्ध जोगा रस पायौ ॥
दैवान देव गति अलघ है। नन गुमान कोइ कर सकै ॥
एकैक सत्त चूकै सबै। जित्ति कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक्क म्रग हत्यौ। सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
हनुअ बंभ नारद। भरथ चुक्कवि सर मुक्क्यौ ॥

विक्रम भीद जतन्न । काग आमिष सुष संडिय ॥
इंद्र अहल्ल्या काज । सहस भग काया मंडिय ॥
नल्ल राय दमंती कारनें । और नाम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्कौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय बग्गरी का वचन ।

साहि मल्लिक साहाव । दीन जिहि द्वारैं वहिय ॥
जेन द्वार निक्करौ । जेन निक्करैं न कढिय ॥
लिय तुरक्क भार पड़िह । सहित धर जाह सरीरह ॥
हूं सभीछ पहुचंन । तनों निकलंक सरीरह ॥
संपुल्लौ सूर सामित्त छल । देवराव कटि बटि मरैं ॥
ता भष्षि पुत्त बापह तनौ । अम्म द्वार छोड़ निक्करैं ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का वग्गरीराव के वचनों का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयंद । सत्त सामंतन छुथ्यौ ॥
वर पीची अचलस । धार धारह तन तुथ्यौ ॥
सत छुथ्यौ उदिग्ग । मरन डर डर्यौ अवाहिय ॥
सत छुट्टत नरसिंघ । लंग उत्तरि पति नाहिय ॥
मुक्यो न सत्त कमधज्ज ने । नाम वीर कल्हन न्रपति ॥
वरि कनकराव परसंग भर । दीपंतन रषि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसी गढ़ पर आक्रमण करना ।

मुक्कत सत तत्तार । तेग बंधी सत बंध्यौ ॥
मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह संध्यौ ॥
आनि साहि साहाव । नैर हांसीपुर चल्यौ ॥
सुन्या सूर सामंत । कोन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छौ सुमंति आमत्त वर । वार वार वर बंधियै ॥
असि पच्छ कढ्ढि बंधौ सुबर । पढ़ि कुरान क्रत संधियै ॥ छं० ॥ २७ ॥

*चन्द्रायन॥ भषे पह्लली मंस सस्त्र बस्त्र मुक्कई। काजी क्रत्य कुरान ध्रम्म नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ मुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त॥ सजे सीस गयनंग। रह्यौ रुप्पे रन मांही॥
सवल सेन सुरतान। परिय पारस परछांही॥
हक्क धक्क किलकार। करै आसुर असमानं॥
गोर नार जंबूर। बान रुक्के रह भानं॥
पावें न मझ्झ पंषी पसर। विसर नद्द बज्जे सबल॥
सांषुलौ सुभर जुथ्थौ समर। उदधि मझ्झ लग्गौ अनल॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिघ संग तत्तार॥
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं बार॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार गढ़ घेरि। ढोह बज्जे बज्जानं॥
दो दस दिन सामंत। झूझ बज्जे परमानं॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन सूरन पाइय॥
गयौ बीर पाहार। नाम किन सूरन साइय॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ सह। गोपिन रषि अपुबल तिया॥
हथ धनुष आइ बंनर बली। सीय कज्ज अपुसह किया॥छं०॥३१॥
असपूर तत्तार। झंझ बज्जी मग सुद्दी॥
ईकल्लो देव कंन। बान अर्जुन मग बुद्दी॥
और सबै सामंत। माहि बिसह आलुद्दी॥
मरन भार उद्दिग। विहार बीरा रस बंधी॥
सांषलौ सूर सारंगदे। तिन बंधी लज्जी जगत॥
उच्चरै सूर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत॥ छं० ॥ ३२ ॥

* मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है।

देवराज बग्गरी की वीरता।

अनल मझि देवराज। परे पारस दषि गोरी॥
सकति सेन बाजंत। धार झारा झकझोरी॥
बज्जि धार विभ्भार। मार मारह सुष जंपहि॥
सूर सत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि॥
लगि नार धार रुधि छंछ घुटि। सहस सूर उठ्ठहि सरन॥
आवट्टि सेन अद्धों सु अध। अद्ध अद्ध लग्गो भिरन॥ छं०॥ ३३॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी॥ परे अद्ध अद्धं सु अद्धं अधानं। भिरै अद्ध अद्धं रहै साह थानं॥
भगे दंत पंती चले साह सूरं। प्रलै काल मानो हलै दक्षि पूरं॥
छं०॥ ३४॥

उतै पारसी मीर बोलै कगारं। इतै सीस छक्कै धरं मार मारं॥
बहै सूर सूरं लगै धार धारं। मनों झल्लरी बज्जि देवं सुधारं॥
छं०॥ ३५॥

गहैं दंत दंती उपारंत सूरं। मनों भील काढ़ै गिरं कंद मूरं॥
परे पीलवानं निसानं सु पीलं। हन्यौ वज्र सैलं सवप्यं कपीलं॥
छं०॥ ३६॥

बहै षग्ग धारं धरंगे निनारं। मनों चक्क पिंडं कुलालं उतारं॥
उठे श्रोन बिंदं रतं धार लग्गी मनों लग्गि तिंदू प्रलै काल अग्गी॥
छं०॥ ३७॥

बहै रत्त धारं अपारं सु दीसं। मनों भद्द मभ्भौ बहै नद्दि ईसं॥
बिहूं बाह बाहै लगै सूर सूरं। मनों प्रीति हेतं मिले आय दूरं॥
छं०॥ ३८॥

बहैं जम्मदड्ढं बहै पारवारं। मनों मोष मग्गं किवारं उघारं॥
परै लुथ्थि पथ्थं उलथ्थंति पानं। मनो मीन कुद्दै जलं तुच्छ मानं॥
छं०॥ ३९॥

रजै ईस सीसं करै रुंडमालं। रमै भूत प्रेतं किलक्कंत नारं॥

ग्रहै ग्रंत गिद्धी चढ़ै गेन मग्गं। मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द सद्दं विहंगं सुनानं। रजै ईस मानं सुरं सत्त पानं॥
भरै षेचरी पच चौसट्ठि चारी। भ्रवै भोमि श्रोनं पलं पल्लहारी॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जास एकं अनेकं प्रकारं। परे सूर सेनं कहै कोन पारं॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना।

दूहा ॥ देवक्रन्न सुरलोक बसि। हय नर धर गज भानि॥
नाग असुर सुर नर सुरभ। बढ़ि भारथ्थ बषान॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जीति समर देवक्रन। धार पति चढ्ढिय धारं॥
निगम ब्रह्म अजमेघ। द्रब्भ थल दुज्ज अचारं॥
रथ रंभन भर थक्कि। रष्षि थक्यौ रथ लोचन॥
बंध इंद्र सर बंध। मंदु बारा रहि सोचत॥
शिव बंध सथ्थ रथ जर चढ़ि। भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर॥
इह करिन कोइ करिहै नहीं। करौ सु को रजपूत धर॥छं०॥४४॥
देव क्रन्न घर वीर। धीर भर भीर अहीरं॥
चौच्यालीस प्रमाण। तुट्टि तन धार सु धीरं॥
थुति सदेव उच्चार। करै अस्तुति दै तारी॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि। भिरन कढ्ढी कट्टारी॥
अरि मुष्ष गयौ चढ़ि चिंत अरि। तनु धारा हर बिंटयौ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन। करि कुट्टा जिम कुट्टयौ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ देव क्रन्नं सु भूनिंग जायं। जिनै वास लोकं सयं बंभ पायं॥
पऱ्यौ वीर मारू नवं कोट रायं। जिनैं जूह लग्गे भुजं काम पायं॥
छं० ॥ ४६ ॥

प=यौ रानि गिरि राव बीरं पताई। जिनै पान जद्दौं ढ़हायौ पताई॥
प=यौ बीर मोरी उभै बंध सघ्यं। भजे जूह संपं घली हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ ४७ ॥

प=यौ पंच भाई सपंचं अभंगं। ढहे जूह बैरी लगै जूह अंगं॥
प=यौ सांपुला सूर नारेन इंदं। जिनं जाम षेध्यौ करी दूरि दंदं॥
छं० ॥ ४८ ॥

परे राव कूरंभ प=न जायं। जिने लोक में लोक संलोक पायं॥
प=यौ पंच पंचायनं पुंज राजं। जिने चंपि बैरी कुलिंगंति बाजं॥
छं० ॥ ४९ ॥

प=यौ बग्गरी रूप नर रूप नाहं। भगी जानि मोरी तुटी जू सनाहं॥
प=यौ बैर बाराह बैरी पचारं। जिने सार झारं दुझारं हकारं॥
छं० ॥ ५० ॥

प=यौ गुज्जरीराव रघुवंसरायं। इयं अस्ति सस्त्रं किनं कान पायं॥
प=यौ पग्ग पिची सु मंची नरिंदं। मरंतं रुजी पौमरं कित्ति कंदं॥
छं० ॥ ५१ ॥

परे इत्तने सूर भारथ्थ वित्ते। डरे सूर ते वार रिन मुंकि पत्ते॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामंतों का किला न छोड़ना।

दूहा ॥ रा देवंग रहंत रन। सहस एक वर वीर॥
तामे एक कमंध षिलि। तिन संघारिग मीर॥ छं० ॥ ५३ ॥
वाने विरद वकौ वहै। वंकौ षान अलील॥
दस सहस सम मीर बर। तिन लीनो गढ़ कील॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मझि रजपूत सौ। तिन सझी दरबार॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना।

हांसीपुर प्रथिराज पै। चंद सुपन बरदाइ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुक्कारिव न्रप राइ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन।

हांसीपुर उच्चार बर। बीट सेन सुलितान ॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं। करि उप्पर चहुआन ॥छं० ॥५७॥

कवित्त ॥ उभै दीह गढ़ ओट। सस्त्र वज्जै सु बान अग ॥
अग्गबान कम्मान। सार सिंधुर अभंग जग ॥
ता उच्छै सामंत। मंत कीनौ परमानं ॥
नंषि कोट गढ़ ओट। सस्त्र लग्गे असमानं ॥
न्रिप राज अन्यौ आसी सुन्यौ। सुपनंतर आसी कहिय ॥
ढिल्ली न्रपत्ति ढीली धरा। ढीली ह्वै अग्गें रहिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
हांसी पुच्छै पहुमि। राय तुं काइन भग्गिय ॥
मो बभीष पम्मारि। तेन भू दंड विलग्गिय ॥
तिन ए रसः उच्चरै। चिया छल अब्ब गमिज्जै ॥
जै सिर पड़ै तो जाहु। कज्ज साईं छल किज्जै ॥
सहसा परि झुझ्झै मांघुलौ। एह अचिज्ज पिष्षन रहिय ॥
देवराव स्त्रर षंडे परिग। ताम तुरक संग्रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना।

दूहा ॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने। हांसी भारथ वित्त ॥
अम दुवारि निक्करि सुभर। देवराव परि षित्त ॥ छं० ॥ ६० ॥
इह भविष्य चिंतै न्रपति। भयो करुना रस चित्त ॥
रुद्र बीर अरु हास रस। ए अपुब्ब कथ वित्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ सुनत राज प्रथिराज। बोलि कैमास महाभार ॥
तम मंची मंचंग। मंच रष्षन सामँत बर ॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ। नट्ठि रधि वासह नट्ठी ॥
सोच सु नट्ठि सनेह। नट्ठ गुन विद्य अनुट्ठी ॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह। मंत उप्पजै सो करौ ॥
कैमास मंत मंती सुमत। मति उच्चारन विच्चरौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ संचि संत कैमास कहि। राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत। कोइ देवान प्रकार ॥ छं ॥ ६३ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना।

कवित्त ॥ कहै मंचि कैमास। पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस। वाहि विन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज। और मिलिहै चिचंगी ॥
जनु प्रजलंती अग्गि। मद्धि घ्रत संचि तरंगी ॥
इस मंचि मंच गिर राज दिसि। दिय पची संमर विगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहिय। दिसि हांसी आवन सु गति॥छं०॥६४॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर षल्यौ। पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन। लषि घर विरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना।

कवित्त ॥ सुझि राज दुज दोइ। वेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि। मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी। राव बड़गुज्जर कन्ह ॥
षीची राव प्रसंग। चंद पुंडीर महन्न ॥
पज्जून कनक उद्दग पगर। दोऊ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ कन्न कुंअर अल्हन सुबर। मिले आय राजान भर ॥छं०॥६६॥
मिलिग आय गोयंद। नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उद्दिग्ग। विरदपागार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम। समर सामंत अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज। दिये आदर बर भारिय ॥
हम कज्ज लज्ज तुम सीस पर। एह बत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति न्निम्मान मति। भइय बत्त चित्त न धरहु ॥छं०॥६७॥

दूहा ॥ कहिय सूर राजन सुनहु । तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै । तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझा बुझा कर सांत्वना देना ।

कवित्त ॥ इक्क वार सुग्रीव । त्रिया तारा नन रष्षिय ॥
इक्क वार पारथ्थ । चीर पंचत चष दिष्षिय ॥
इक्क वार श्रियपत्ति । जमन अग्गौं धर छंडिय ॥
इक्क वार सुत पंड । भोमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल । कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान षान मोषन ग्रहन । महनरंभ बंछहु मरन ॥छं०॥६९॥
बोलि राज सामंत । कहिय तुम जुद्धनि अज्जर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । राइ रामह बड़गुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह । बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ । बोलि बरनं बर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम । लोहानौ आजांन बर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि न्रपति । उदधि जानि हल्लिय गहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना ।

कोलाहल कलकलिय । रत्त द्रिग बयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत । मंत नीसान सद्द दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध । राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत । होइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि । करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि । मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि ।

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढ़ि । अति आतुर वर वीर ॥
वर प्रधान पावास वर । इह तह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सीय काज ॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि । मानो कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥
रगतैत नैन भ्रकुटी कराल । मानो कि ईस चयनेच झाल ॥
वंकुरिय मुंछ लगि भौंह आनि । मानो कि चंद विय किरन वानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥
चिहुफेर सूर विच चाहुआन । मानो निषच परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अँग अंग थान । मानो कि मुकुर प्रतिव्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥
करि करी अग्ग रज रजत दंत । मानो कि जलद पँग वग्ग पंति ॥
उभ्भारि सुंड गज लैहि वीर । मानो कि व्यंब अहि मरुत मीर ॥
छं० ॥ ७६ ॥
मद झरहि पाट वरषंत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मचत कीच हय कलत लार । मानो कि भद्र काद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥
धर स्याम सेत रत पीतवंत । मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चमकंति अनिय दामिनि समान । बाजंत वज्ज घनघोर वान ॥
छं० ॥ ७८ ॥
उच्चरहि छंद कवि मोर सोर । पप्पीह चीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घंट सादुरनि नद्द । मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥
दिसि विदिसि धुंध मुंदियग भानि । तिभ्रंम इंद्र विय इंद्र जानि ॥
वरषंत धार चढ़ि व्योम मंत । तिन उड़िग रेन विच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

तिन कलहि पंषि पावै न ठौर। उप्पमा कौन जंपौस और॥
कलमलिय नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार॥
छं०॥ ८१॥

रथ षरहि छ्हर अप अप्प मान। मानो छयल्ल कुलटा मिलान॥
सिर लग्गि व्योम हय षरहि राज। मानो कि कपिय गिरि द्रोन काज॥
छं०॥ ८२॥

पत्तौ जु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान॥
छं०॥ ८३॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा॥ चढ्यौ राज प्रथिराज वर। सुनि चिचंगी भीर॥
बर हांसी सामंत सह। बीटि षान बर बीर॥ छं०॥ ८४॥

कवित्त॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ॥
रन रत्तौ रन सु। अम्म आअम्म विरत्तौ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ॥
कूंच कूंच उप्पार। दीह चौ पंच सु जत्तौ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत॥
आवाज बढ़ी तव मीर बर। सेन संभ हांसी विरत॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचते ही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पत्तीय। मेर लजपत्ति सु धारी॥
सबर सत्त जंपन सु। वीर किति सम बर चारी॥
ब्रह्म रूप जीति न सु। ब्रह्म आहुट्ठ सपन्नौ॥
लष्यौ रूप तत्तार। रंक लभ्भै वित मन्नौ॥
लगि ऊक सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस॥
बर भिरन षान षुरसान दल। बल प्रमान षोलीति अस॥
छं०॥ ८६॥

डिट्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन॥
बंधि फवज्ज सुबीर। बीर उचरंत मंत मन॥
हरवल षान ततार। करै करवलति षुरेसी॥

तुंड समर लगि नहीं । आनि बंधी वन्न गंसी ॥
सुप रुक्क मेलि मारु महन । नाहर राव नरिंद तन ॥
सावंग समर दिसि दिसि पिनह । सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलोपन का वर्णन ।

महन रंभ आरंभ । समर बंधीत समर वर ॥
अमर नाम वर अमर । मुंकि सामंत ललैभर
पुर हांसी वर पत्त । पूर दच्छिन दच्छिन वर ॥
मिले सूर कर वर करूर । बंधीति सिरी सर ॥
बंधि सनाह विलगे समर । करि भर घाइ अपुब्ब भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय । वज्र मेर वज्जे सुभर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चिचंग । वाज उप्पर वर नंषिय ॥
मनहु कंस सिर वज्र । चिल्ह उप्पर धर पंषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत । हथ्थ किरवान उभारिय ॥
मनहुँ चंद विय व्योम । परिग रारिय चमरारिय ॥
धरि च्यार धार धारह लरिय । भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस क्रम । कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ दोऊ (१)रूर वद्दं, उडीरेन जद्दं । निसी जानि भद्दं, वढ्ढैं वान सद्दं ॥
छं० ॥ ९० ॥
सुकै गज्ज मद्दं, वढै षग्ग जद्दं । सुभै रथ्थ हद्दं, नचै वीर बद्दं ॥
छं० ॥ ९१ ॥
बजै षग्ग सद्दं, घटा बज्जि भद्दं । षमंजाल षद्दं, प्रलै अग्गि नद्दं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को.-सूर ।

त्रिसूली अनद्दं, बजै घाय रुद्दं। जनौं घट्ट बद्दं, कहं जोग सद्दं॥
छं० ॥ ९३ ॥

लगी सुत्ति दद्दं, षगं सोर षद्दं। उअं ताप उद्दं, कवीचंद चंदं॥
छं० ॥ ९४ ॥

सुभे रथ्थ हथ्थं, ... । रसं रोस भानी, अमं सेन दानी॥
छं० ॥ ९५ ॥

जकी जोग माया, चितं जोग पाया। ...., ... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

समरसी जी की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष। सिंघ छुट्टा पल काजै॥
कै तुट्टा बयवाज। बीच कोलिंग बिराजै॥
कै रस संका छुट्टि। वृषभ दोइ छुट्टि विलुद्धा॥
लज्ज रतन विषग्गंत। उभै रंकहु आलुद्धा॥
बर सेन उररि निसुरत्ति षां। दइ दुवाह उप्पर परी॥
चित्रंगराव रावर समर। सुवर जुद्ध एतौ करी॥ छं० ॥ ९७ ॥

समरसी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिलिग घाइ अघघाइ। समर धायौ जु समर बँध॥
धार धार तन उघरि। गयौ सुर लोक रंभ काँध॥
षठ सु पंच अरि ढाहि। पंच मिलि पंच प्रपत्तं॥
दइ दुबाह रन अमर। अमर भौ बोलन जत्तं॥
हर हार कंठ आनंद मध। सुनि सँग्राम दुभार बन॥
दुअ हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों। रह्यौ पिष्षि तं चिय नयन॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम ॥ जु रुप्यौ रन रावल मंझ अनी। सु मनों ससि मंडल भ्रू अधनी॥

---

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया हैं। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

बजि षग्ग उनंगत षंग बजै। घरियारन के सुर मंझ लजै॥
छं० ॥ ९९ ॥
गज षग्ग उडंतह मुत्ति झरै। तिनकी उपमा कविचंद करै॥
मनि मै ग्रह रत्ति प्रनार चली। जल आवक नागिनि पौरि हली॥
छं० ॥ १०० ॥
कढ़ि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी। तिनकी उपमा कविचंद धरी॥
मुष से सहँते जल धार धसी। निकसी जुइ एक प्रवाह गसी॥
छं० ॥ १०१ ॥
छित रावर भारथ राज धनी। कहि भग्गिय षान ततार अनी॥
छं० ॥ १०२ ॥
अरिल्ल* ॥ षां ततार सुनि बेन नेन सोयं। लल्ले करी बर भग्गा जे भानं॥
ओटं जिन कोटह सुव्वर। लै दस्तिक कर चुंमि तुंड डठ्ठी बठ्ठी कर॥
षां षुरसान ततारं। भंजि भंजे सुर सुभ्भर॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना।

कवित्त ॥ बाज नंषि तत्तार। बाजि षुरतार बज्जि षग॥
पंच अग्ग सौ मीर। संग धार पयान मग॥
जुद्ध कथ्थ कर हिंदु। तूल जिम बाय उडाइय॥
मेर लाज पज्जून। सत्त साइर बर धाइय॥
घरि एक झिंझ बज्जी सकल। बर उप्पर पावार करि॥
निट्ठ करि षान तत्तार कढ़ि। हिंदुमेच्छ लहिये अपरि॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन।

पद्धरी ॥ बर लुथ्थ लुथ्थि आलुथि पलथ्थ। नचि प्रेत नाद वीरं ततथ्थि॥
नारद नद निस सुनि सभीर। सारद सिद्ध तिन तत्त बीर॥
छं० ॥ १०५ ॥
चौसठ्ठि धाइ सह स्तूर संचि। पंचं पचीस काबंध नंचि॥

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है। इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की वृत्ति के समान है। दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है। इस से मालूम होता है कि यहां के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है।

बजि घाइ सद्द सद्दीन हद्द। सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द॥
छं० ॥ १०६ ॥

सत पंच सुक्कि तरवार बूव। तत्तार गात अरवार हूव॥
बँधि चाल चाल उच्चाल पाव। षगवाह विहथ्थन सूर लाव॥
छं० ॥ १०७ ॥

तन बंधि संग सो लोह कढ्ढि। मानो कि समुद्द जल मीन चढ्ढि॥
उठि छिंछ रकत तीरत्त भाइ। मानो पलास बन फुल्लि नाइ॥
छं० ॥ १०८ ॥

बर बुक्किक्क साहि कर वज्र वाय। रुधि पियत [1]भीम साम्मन्न काय॥
उतमंग हक्क धर नच्चि धाव। झम वढ्ढै षग्ग की विज्ज लाव॥
छं० ॥ १०९ ॥

दूहा॥ अलुध जुद्ध हिंदू तुरक। भय अनादि जमनूत॥
इल ततार संमुष अनी। उतै समर अवधूत॥ छं० ॥ ११० ॥

रसावला॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं चढ़ी। षग्ग [2]झालं जढ़ी, लोह दूनो कढ़ी॥
छं० ॥ १११ ॥

ढूल बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। लथ्थि लुथ्थं बढी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२ ॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी। देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी॥
छं० ॥ ११३ ॥

उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी। ईस देषै ननं, [3]पुत्तनं रंजनं॥
छं० ॥ ११४ ॥

सूर कढ्ढै इसं, बान कढ्ढी जिसं। .... छं० ॥ ११५ ॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना।

दूहा॥ षोड़स इक पंचह सुभर। समर परिग संग्राम॥
नव घट्टी अंतर परिग। सुत सोमेस सु ताम॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त॥ मद्धि पहर विप्पहर। समर सामंत जुद्ध मिलि॥

---

(१) ए.-भूमि। (२) ए.-जालं।
(३) को. कृ.-पुत्ततं।

नवनि नीच करि नीच। जुद्ध संग्राम सार झिलि॥
विमुष न भौ परि बंध। जुद्ध सामंत सूर मिलि॥
अनी एक करि मेर। धाइ अरि जुट्टि षग्ग षुलि॥
षुरसान षान दल ठेलि बर। चच्चर सौ चौरंग बजि॥
थिर भए सूर रथ द्रिषत पर। कायर चलि जंगम प्रहजि॥

छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी ॥ कढ़े लोह सूरं करूरंति तायं। चले सस्त्र हथ्थं न चालंत पायं॥
मिलै हंस हंसं चलै अस्व कैसें। जनों नीधनी नार पिय अग्ग जैसें॥

छं० ॥ ११८ ॥

मनं डोलि चित्तं मरंनंति सूरं। चिया कुंभ चितं चलै हथ्थ जूरं॥
प्रतंग्या प्रमानं समानं न सूरं। बुझै पंच पंचं ननं दीप हूरं॥

छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्परं टूक सा टूक सथ्थ। कला चंद्र राहै उभै भूप तथ्थैं॥
कलै निक्कऱ्यौ बार सन्नाह फुट्टै। तिनंकी उपम्मा कवीचंद जुट्टै॥

छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लवं व्रत्त जुट्टी। रवी राह भेदं दुहुं (१)अंग फुट्टी॥
लगे धार धारं दुधारं प्रहारं। बरं काइरं भास चित्तं विचारं॥

छं० ॥ १२१ ॥

करं मीडि दूनों सिरं धुन्नि जत्ती। मनों मष्षिका जाति षच्छै सुरत्ती॥
सुमिच्चं कपी जानि संवालिजायं। उपंमा इनं की ननं भूलि पायं॥

छं० ॥ १२२ ॥

वजी झंझ लग्गे असम्मान सीसं। उठे पंच दह दून धावंत दीसं॥
नही मानवे दानवे नाग लोयं। कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोयं॥

छं० ॥ १२३ ॥

परे संमरं शूर षट्टंति पंचं। लगे धार धारं भए रंचरंचं॥
सबै धाव सामंत सूरं प्रकारं। पऱ्यौ बग्गरी रा चव्यौ धार धारं॥

छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए.-अग्ग।

भरं राज प्रथिराज पंचास पंचं। गयौ राव चावंड रंधीरि अंचं॥
॥ छं० १२५॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त॥ पर्‍यौ अमर घावास। ग्रिद्ध संमुह उड्डावै॥
बल घट्टै तन घट्टि। कित्ति घट्टी नर जावै॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गी॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गी॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम। गयौ मोह माया सु पश॥
जग हथ्थ राइ सुर लोक बसि। सली जुग्ग भारथ्थ कथ॥
छं०॥ १२६॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर॥
बर बरु करि भग्गरी। सौ कि रानी पुक्कारी॥
धूप दीप साषा सु। पुहप द्रष्टह उच्छारी॥
तन पवित्र भ्रम भ्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह॥
अघ रोकि न्वपति जोवन्न बर। षग्ग मग्ग पुरसान लह॥
छं०॥ १२७॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया॥ जै कित्ती रत्ती उमा। सुगत सुरत्ती पान॥
चाहुआन बल बढ़त बर। बल घथ्यौ सुरतान॥
बल घथ्यौ सुरतान। साहि भौ पूरन चंदं॥
राज न्वपति बियचंद। बीर बीरं रस मंदं॥
विधि विधान निरमान। घान द्रिष्षिय तिहि बतहय॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतिजय॥ छं०॥ १२८॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा॥ जै बट्ठी जै जै सकल। पीलँ तन धरि ढाल॥
बल गौरी बल संग्रहै। ज्यौं चंपै बर काल॥ छं०॥ १२९॥

ज्यों चंपै वर काल गुन । हर चंपै विप कंद ॥
रवि चंपै किरनावली । ज्यों चंपैत नरिंद ॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ वर संभरि चहुआन निवासं । उत चित्रंग नरिंदह सासं ॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी । मनो चंद बद्दर बिच सारी ॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत वीर शरीर गति । छिति मिच्छिति वर राज ॥
मनहु भूप भूआल कौ । वर बसंत रितराज ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ वर वसंत वर साज । सूर लग्गा चावद्दिसि ॥
रत्त रुधिर समरंग । छित्त राजै अट्टत्त बसि ॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान । चंद वध्यौ उड़गन वर ॥
निस नछित्र ज्यों प्रात । सेन दिष्यौ जुमंच वर ॥
नर गिरहि भिरहि उठ्ठहि लरत । पट षट्टंति न सुभट घट ॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ । दाहिम्मै चावंड थट ॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर । यों सुबरे संमेत ॥
सार धार वर देषियै । सार प्रहारन प्रेत ॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।

कवित्त ॥ गुरज उब्भ तिय तेग । तोन बिय सत्त सुरगं ॥
छह कमान सर सहस । लोह सौ बीर अभंगं ॥
ए तुट्टै वर अंग । तोन थक्का सुर थानं ॥
अंग अंग निरमलौ । कित्ति सारथी सु आनं ॥
तिहि परत गयौ गोरी न्रिपति । परत षान चौसट्ठि धर ॥
तिन जंपि चंद बरदाइ वर । नाम जु जू ए सब विवरि ॥छं०॥१३५॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।

त्रिभंगी ॥ वर षांन ततारं, झोरिय डारं, नेह उधारं, परिषानं ॥
.... ॥

हबसी षट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
असि बर बर भारी, षान प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गोरी घर काले, शस्त्र न झाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
महनंसिय मेरं, परि धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं. चौसठि थानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥छं०॥१३७॥

उन रंग अवत्तं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि देनं।
.... ॥
उड़ि साइक सूरं, नभ तक रूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
.... ॥ छं० ॥ १३८ ॥

झल्लारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पै नग्गं।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
प्रारथ्थ सुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कँद षुत्तो, रन षुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं० ॥ १३९ ॥

झोरी परि लीनं, छित रस भीनं. रन दुहु दैनं, कारि हैनं ॥
.... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मन कारि गत्तं, कर हित सतं, रन गत्तं ॥
.... छं० ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहुट्टे, मति षुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सन मानं, बर फुट्टै ॥
इन सूर समानं, देवन जानं. रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहन्नी भग्गा, तन षग लग्गा, जुगति सु जग्गा. प्रति लग्गा ॥
छं० ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान आकूब। षूब मारू षिति मारू ॥
षूब बेर तत्तार। षूब मंडी षिति तारू ॥

षूब षान षुरसान। षूब जा भारथ षंडै ॥
षूबर गोरिय सेन। जेन भग्गापग मंडै ॥
अदिहार साह गोरी सुबर। सुदिन राज प्रथिराज बर ॥
तित्तने परे झोरी धरे। सुबर बीर बीरं सु रर ॥ छं० ॥ १४२ ॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा।

बलि भट्टी महनंग। गरूअ गब्बह गज्जिय धर ॥
इन लरंत सामंत। साहि चढ्यौ दिल्लिय पर ॥
जोगिन पुर जोगिंद। आदि चच्चर चौरंगी ॥
इंद्र जोग जुध इंद्र। इंद्र कल इंद्र अभंगी ॥
नग नग नरिंद नग बर सजहि। रजहि सेन सामंत सह ॥
नंषयौ कोट आसी पुरह। सुबर बीर लग्गे मगह ॥ छं० ॥ १४३ ॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना।

लगे मग्ग सामंत। अंग नंचे चच्चर रन ॥
इक्क मंत आमंत। इक्क देषै धावत घन ॥
महन मंत आरंभ। रंभ लग्गा चावद्दिसि ॥
एक सस्त्र बरषंत। एक बरषंत बीर असि ॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुअ। सुबर बीर उप्पर करन ॥
कललंकराव कप्पन विरद। महन रंभ मच्च्यौ सुरन ॥ छं० ॥ १४४ ॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन।

भुजंगी ॥ महं रंभ आरंभ सारं प्रकारं। नचै रंग भैरूं ततथ्थे करारं ॥
तहां पत्तयौ तत्त चिचंग राजं। मनों गज्जियं देव देवाधि साजं ॥
छं० ॥ १४५ ॥

महा मंत मंतं सु तंतं हकारे। मनों बीर भद्रं सु भद्रं डकारे ॥
झनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी। मनो बीज कोटी कलासी पसारी ॥
छं० ॥ १४६ ॥

दुहुं बाह बीरं सहसं भुजानं। कहै कौन कब्बी बलं जा प्रमानं ॥

रसं तार तारं जिते तार वग्गे। मनो मानही देव मा देव भग्गे॥
छं० ॥ १४७॥

बहै बाह वाहं करारेति तथ्थं। परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं॥
नचै बीर पायं झनक्कंत षग्गं। मनो तार वज्जे सु देवाल अग्गं॥
छं० ॥ १४८॥

करें कंस कंसी बजे जानि नैनं। इसे सार सों सार वज्जै स घैनं॥
उनंके, उनाही गुमानं न भग्गें। करी षान षुरसान षुरसान मग्गें॥
छं० ॥ १४९॥

बहै बान कम्मान आवत्त तेजं। लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं। मनो चच्चरी जानि आवत्त नग्गं॥
छं० ॥ १५०॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे। मनों लग्गियं च्यार ज्यों मत्तवारे॥
उभै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै। सहैं अंग अंगं दुधारे दुधारै॥
छं० ॥ १५१॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै। चढ्यौ सूर सूर मध्यान मझारे॥
छं० ॥ १५२॥

घोर युद्ध उपस्थित होना।

गाथा॥ मध्यानं बर भानं भानं। तेजाय सूरयो 'मुष्षं'॥
चच्चर सी चवरंगं। उच्चारं मत्तयो वेनं॥ छं० ॥ १५३॥

भुजंगी॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं। नमो डंबर्‍यौ भान उग्यौ करूरं॥
दुअं बीर धाए सु चौहान मोरी। मनों षेत षड्डें किसानंत भोरी॥
छं० ॥ १५४॥

कहें हक्क बाजी विराजंत लल्ले। सुभें दंग लग्गें जु पावक्क प्रल्ले॥
दुअं सेन हक्कें विहक्कंत न्यारैं। बकै जानि दंदं सु बंदी पुकारैं॥
छं० ॥ १५५॥

(१) ए.-सुष्षं।

रनं रंग रत्तं विराजै सु भूमी। मनों मंगलं पुत्त की आनि रूमी॥
उडै हंस हंसं द्रुमं डाल ढालं। मनों नाग मध्यं बरें अग्गि चालं॥
छं० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्गे मुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नमं देवदत्ते॥
भए नेन ऐसें द्रिगं देव जैसे। .... ॥ छं० ॥ १५७ ॥

परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीनं। महा मंत मत्ती लगे लोह पीनं॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग बंकी सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चंद। बीर उज्जली सुधारिय॥
सेन चमर सम भिंजि। रही लट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अंग अंगन छत दग्गिय॥
कज्जलन कूट तें उत्तरहि। चिय नंदी संग्राम तिथ॥
चिचंग राव रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ कथ॥ छं० ॥ १५९ ॥

भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
विध विधान निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथ्थां पारथ्थ। समर रावर प्रथिराजं॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बद्ध गिरि राजं॥
जित्ति कित्ति पन सांइ सों। भिरन करन बीरत्त गुर॥
चामंडराइ दाहर तनौ। भारथ्थां लीनी सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजंगी ॥ धरा भ्रम्म भारी सु लीनी नरिंदं। मनों मेनिका देव जुद्धं सुकंदं॥
कमद्धं हँकारे हकें हाक बज्जी। कहै सीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनक्कंत बानं झनक्कंत षग्गं। मनो बीज के बाल अभ्यास जग्गं॥
दुहं दीन दीनं चहुव्वान गोरी। हडूडूत षेलंत बालक्क जोरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

नियं ब्रह्म देहं इकं अंग जान्यौ। जिनें मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत कढ्ढे करै सस्त्र भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

उदै इंद कढ्ढै रबी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं भमक्कै प्रमानं॥
घटे हथ्थ झारे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं० ॥ १६४ ॥

उड़ै सद्द बानं विवानंत रुक्कै। तिनं मारुतं सद्दगं मद्द सुक्कै॥
छबी छब्बि रत्तं उड़ै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं बरष्षै करारी॥
छं० ॥ १६५ ॥

परं नाग नागं हलै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं० ॥ १६६ ॥

युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमठ्ठ सुधि॥
ननि सीस मुक्यौ। इहै दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हक्कारै॥
घरि एक भयौ विभ्रमत मन। बहु रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकथ। राज उठ्ठि संग्राम लिय॥छं०॥१६७॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन।

सोइ सँग्राम सोइ साम। सोई विश्राम मुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। ताह अच्छरि रस मत्ती॥
जु कुछ मुकति तिन ग्रसिय। सार बज्जे नह अंगं।
ग्रसिय जनं किय अग्गि। जोग जुट्टे घन जंगं॥
विन जोग विरह भारथ्थ विन। सूर भेद भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंचौ सुबर। गयौ सूर भेदेव सोइ॥ छं० ॥ १६८॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी॥ चढ़े ज्वान अष्षं नषं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मझ्झे सुरंगं॥

चढ़े कोतरं कोक कोकं पुरानं। रवी तेज भग्गी मची चार पानं॥
१६९॥ छं०॥

मुदे सूर सस्सिं सरोजं पुहप्पं। गयं मुद्दितं पत्त आरह्द अप्पं॥
कमोदंत मोदं घरं वै प्रमानं। तहां काइरं सो सद्दिप्पं तथानं॥
छं०॥ १७०॥

प्रफुल्लंत वीरं चकं चक्क थानं। इकं मुक्ति वंछै इकं सामि पानं॥
त्रिया कंत वंछै वियोगीं सँजोगं। रनं सूर वंछै अछी अच्छ भोगं॥
छं०॥ १७१॥

भई सिंहरेनी वरं दीह ऐसें। मनो संधि वालं विराजंत जैसें॥
दुहुं सेन वज्जे निसानं दुरत्ते। तहां पंप पंपी रहे थान जत्ते॥
छं०॥ १७२॥

दुवं सेन वेनं निवंती प्रकारं। दोऊ वीर छेड़े तजे बाज सारं॥
विना नींद पानी विना अन्न धारं। रहे एक हिंदू सहिंदान सारं॥
छं०॥ १७३॥

भपै मेच्छ बाजी रनं जे करारे। तके वीर कज्जी विना अग्गि सारे॥
भपैं मंस चोरं धिगं जा प्रकारं। इसी रेंन वित्ती दुहुं दीन भारं॥
छं०॥ १७४॥

उरव्वीति मीरंत वारंति पानं। हसे रंग रंगं रसं वीर पानं॥
इसी रेन दोऊ गई नठ्ठि नठ्ठी। गईं कायरं कट्टु सूरंत मिठ्ठी॥
छं०॥ १७५॥

कवित्त॥ रही रत्ति आरत्ति। तत्त लग्गी परिमानं॥
जुद्ध जूह सुरतान। मंच कीने परिमानं॥
भान पयानन होइ। लोह जित्ते पायानं॥
सार धार निरधार। सार उद्धार समानं॥
षुरसान षान तत्तार रन। दिसि रत्ती रत्तीत अप॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुबर बीर वीरंत जप॥ छं०॥ १७६॥

प्रातःकाल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना।

दूहा॥ बर भग्गी जग्गीत्ति निसि। दोऊ दीन परमान॥
बंचि सिपारे तीसचव। करि निवाज सुरतान॥ छं०॥ १७७॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहि। उघरि सत पच मत्त जनु ॥
भ्रंग भृंगि सम भ्रमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उडगन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
सेंविधि सुरंग व्यापार घन। रवि रत्तौ मुष दिष्षयौ ॥
भासक्कर सहसकर क्रंमकर। नवकर कमुद विसष्षयौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकासय। वारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अट्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥छं०॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुन्नय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥

तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कमोदनि को मत सूरय ॥
बंध जवासुर ग्रीषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात सनी सर सूरय। भास करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्त्रति भाष प्रकारय। तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हैवर ओष करं गिर पारय। मानहुं देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज असूव्रत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचारय ॥
छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्षिय। मुक्ति स लच्छिय संपन अष्षिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिव्यंब। तिमर तोरन गयंद घर ॥
ब्रह्म विष्णु अंजुल। उदंत आनंद नंद हर ॥
इक चक्र चिहुं दिसै। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कामल पानि सारी अरुन। संसार जियन जन ॥
उद्वंग वीर छच्छव पवन। निरारंभ समह सुसुप ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। हरो मित्त दोइ दीन दुष ॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन।

दूहा ॥ सो जगत मंगी सु कर। कढ़े लोह करि छोह ॥
दै दिवान देवत्त गति। हाइ हाइ रति रोह ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ ....। .... अरिष्ट गरिष्टं ॥
चाहुआन सुरतान। वीर भारथ्थ वरिष्टं ॥
दै दुवाह अति थाह। षग्ग षोलै छिति तोलै ॥
सत्त्व वीर बाजंत। देव देवासुर डोलै ॥
डक्कनि डहक्कि जोगनि लसय। लसै लोह देवर धसै ॥
चामंडराय दाहरतनौ। राज-ध्रम्म चित्तं वसै ॥ छं० ॥१८७॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन।

उद्दू दिसा सामंत। अड्ड उभ्भै दुहुं पासं ॥
रा चामंड जैतसी। सलष हरिवा सुवासं ॥
लोहानौ आजान। वलिय पांवार सभारिय ॥
दै दिवान देवत्त। वर्ज लैहै अधिकारिय ॥
महनसी मेर पच्छै न्टपति। सुगति हथ्थ कट्टौ निजरि ॥
देवत्त वाह देवत्त गति। सुवर बीर ठट्टे उसरि ॥ छं० ॥ १८८॥

यवन सैनिकों का उत्साह।

* सौ मीरन संगमति। वज्जि नीसान षेत रहि ॥

* मालूम होता है कि या तो यहां के कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है। छन्द १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिएं। तिस के बाद मृतकों की संख्या या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए। परन्तु छन्दों के खंडित होने के सिवाय हमारे विचार से छन्दों का लौट फेर भी हुआ है। छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उधर बेसिलसिले पड़ता है। इसलिये संभव है वज कि प्राचीन समय में खुले पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो। परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतियां समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है। पाठक स्वयं विचार कर देखें।

हय गय नर विच्छुरै। रुद्र भौ बीर बीर नह ॥
निस वर वर उभ्भरहि। भूत प्रेतन उच्छव सिर ॥
बज्जि घाव हक्के। न्त्रिघाव चौसट्ठि रंभ वर ॥
नारह नह सहह सुभर। बीरभद्र आनंद भर ॥
इहि भंति निसा सुर सुंदरी। भर हर हर वज्यौ सुभर ॥छं०॥१८९॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन।

भय विभात लगि गात। रत्त रत्तं रन मत्यौं ॥
हिंदवान तुरकान। जुद्ध अंबर अंगत्यौं ॥
अगति मग्ग पाइन। सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ ॥
अश्वमेद बहु दान सत्व। सम एक न षुल्ल्यौ ॥
स्वामित्त धरम कीनौ जु इम। मन उछाह अच्छे रहसि ॥
ना करी कोइ करिहै न को। करौ सु कौ रवि चक्क गसि ॥छं०॥१९०॥

दूहा ॥ चक्क चरित सोमंत असि। निज निवर्त मग लाम ॥
चाहुआन सुरतान सौं। बजि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम।

कवित्त ॥ गयौ षान तत्तार। पर्यौ पुर सानति षानं ॥
पर्यौ हिंदु बर रूप। भीम परि परि रन भानं ॥
पर्यौ भट्टि बलिभद्र। मान परिमान न मुक्यौ ॥
पर्यौ जंगलीराव। बीर दहिमा दल रुक्यौ ॥
अजमेर जोध जोधा परिग। पर किल्हन बन बीर बँध ॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय। चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध ॥
छं० ॥ १९२ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ। अब्ब सु नंष्यौ साहि ॥
लज्ज अब्ब भै मै दुर्यौ। जस सु जोति बल नांहि ॥छं०॥१९३॥

खेतझरना होना और लाशों का उठवाया जाना।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार ढुंढ्योति समर बर ॥
बजि निसान आहत्त । जीति षुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामंत । बीस तिय डोल प्रमानं ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समानं ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा कित्ति उड्डी फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि षुरसान दल । छोड़ फकीर छुट्टेति फिरि ॥
छं० ॥ १९४ ॥

युद्ध में मृत वीरों के नाम।

परिग षान षावास । गौर हांसीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर विभारी॥।
पऱ्यौ कछै चंदेल । पऱ्यौ राजा नव भानं ॥
परि मोरी महनंग । जंग जीते जुग जानं ॥
पँावार परिग पूरन्न पह । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर बलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १९५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्थ बर । न्रिप सम करि जुध ताम ॥
ढुंढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥छं०॥१९६॥

कवित्त ॥ जंगलवै वर मग्गि । भग्गि तत्तार सपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बंधव सलषन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ नाहर नाहर हर ॥
कन्ह पुत्त दुति कन्ह । चंद रघुबंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
बीरम्म बीर माल्हन परिग । मल्हन वास विरास मन ॥
छं० ॥ १९७ ॥

हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन।

हांसीपुर दिन सत्त । तीय बासर अग्या बर ॥
घाव बांधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
वार सोम सत्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रप्पवि अरि भंजि। मिलिय रावल रन रत्तो ॥
सामंत रष्षि भारथ्थ जिति। गवन रष्षि नन राज अंग ॥
वर मिलि समंद सलिता सुवर। जलन देषि एकह सुमग ॥
छं० ॥ १९८ ॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना।

जीति षान तत्तार। पारि हांसीपुर नीरं ॥
जीति समर भिरि समर। रुधिर रत लत्त सरीरं ॥
प्रथु सामत प्रथिराज। सुने सामंत सु कथ्थं ॥
जथ्थ कथ्थ अरि करिय। डोलि नन सूर सु रथ्थं ॥
छलि कै अमंत सुक्कै न बल। तजि हांसी सम्हौ भिरिय ॥
रुंधयौ चक्क जुग्गिनि सु वर। बीर बीय संमुह फिरिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली सह सामंत सथ। अमर सुक्रत ढिग थान ॥
समरसिंघ रावर सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं० ॥ २०० ॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना।

भावभगति बहु विद्धि करि। हम लज्जा तुम भीर ॥
इक्क अरी कमधज्ज गिनि। इक सहाबदी मीर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

बालुक्का सङ्खौ समर। और विध्वंस्यौ जग्ग ॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत। फेरि उन्हाई अग्गि ॥ छं० ॥ २०२ ॥

द्विवस पंच मनुहारि करि। पहुँचायो चिचंग ॥
बीस अश्व गज पंच सजि। दै पहुँचाए रंग ॥ छं० ॥ २०३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५२ ॥

अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ।

दूहा ॥ सुक सुकी सुक संभरिय। बालुक कुरंभ जुद्ध ॥
कोट महुव्वा साह दल। कहौ आनि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनैं। हारि कूरँभ षग झट्टिय ॥
सब लुट्टे गजबाजि। हेम मानिक नग बट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह। हारि कूरँभ सम लड्डिय ॥
लह वालूक कमंध। उभय पज्जून सकिड्डिय ॥
अध्यैव नाम तत्तार बर। करौ कूंच उत्तं गहर ॥
महुवा दिसान चंपै धरा। वीर पजून सु बंधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर। कोट मह्नवा थान ॥
षा निसुरति रुमों नदी। बर कीनों अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥
कियो कूंच गोरी गहर। सहर महुव्वा थान ॥
षां षुरसान षुरेस षां। पाइल लष्ष प्रमान ॥ ॥छं० ॥ ४

शाही सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ्यौ साह सुरतान। पान षोयौ फिर ढूंढ़न ॥
सम कूरँभ चहुआन। धरा मोह अब मंडि रन ॥
लष्ष एक असवार। सद्दै बानइ सम बारुन ॥
पाइक अयुत त्रिपंच। संग तत्तार सु धारन ॥

बलिराइ जेम दानव बलिय। तेम प्रकारन मद्धि मढ़ ॥
उड़गन कि चंद तत्तार दल। इस घेऱ्यौ मोहव्व गढ़ ॥ छं० ॥ ५ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ रष्षन गढ़ थानौ न्रपति। बहु दिन बीर पजून ॥
पठये इत्त सु राज पै। निढ्ढुर मन साजन ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूत कहिय दारुन षबर। फौज साह सुरतान ॥
पारस राका दल प्रबल। कोट मह्लवा षान ॥ छं० ॥ ७ ॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल लरन सुरतान ॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध मह्लवा थान ॥ छं० ॥ ८ ॥
फौज दिष्षि चहुआन की। सबै सूर रनधीर ॥
मद्धि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराव हमीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

नेज बाज नीसान सजि। चढ़े सकल सामंत ॥
कूरँभ बिन को अंग में। अनी लष्ष हैमंत ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय ॥
को ढुंढारह राइ। षग्ग मग्गह संभारिय ॥
मोसें बोलि नरिंद। [1]सैन दै नेन मिलाइय ॥
ए कूरंभ नरिंद। साह सम राह सु आहिय ॥
बोलयो जाम जद्दौं सुबर। चित्रंगी रावर सुभर ॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर न को रविचक्क तर ॥छं०॥११॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। षेदि कढ्ढौ तत्तारिय ॥
बह्म पुच कै वार। जुद्ध अरियन सिर झारिय ॥

(१) कृ. को.-'सेन दे नेनानि लाहय'।

इन सेंहरा पै जाय । षेदि कढ्यौ चालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ । लियौ छोंगा चालुक्की ॥
इन लंपि पोदि आबू सिषर । अजै वीर अजपाल हित ॥
केवरा वीर केवर हतिग । करै वीर आनंद षिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पंगानों वीर । वाद षोषंद पहारिय ॥
इन देवग्गिरि जुरिग । बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन जालौरय जाय । दई भाटी महनंसिय ॥
बंधि जोध अजमेर । वैर भंज्यौ मलअंसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय । ढिल्लिय धर अविचल धरा ॥
संग्राम सूर कूरंम ढिग । नको वीर वीरंमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज वर । समर मिलिग पज्जून ॥
बर हांसी हिंसार दिय । गढ़ दीने दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ दीने छत्र सुजीक । सत्त नीसान चोर बर ॥
रतन हेम हय गय । समूह आदर अनंत भर ॥
सुधर वीर अति धीर । कन्ह कल्हन बुल्लायौ ॥
अप्पि मल्लवा लाज । वाजि वर वीर चढ़ायौ ॥
सुरतान साह गोरी चढ़िग । षां ततार अगिवान करि ॥
उतऱ्यौ सिंधु अरु विहथ बिच । मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ सगुन सरम्भर सुभ असुभ । जिह्वा जहर मुनिंद ॥
चले साह कारन करन । नह पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ सुनि ततार वर वीर । तोन बंध्यौ गोरीय झुकि ॥
दैवकाल उपज्ज्यौ । छित्ति छचीन रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह । हम स हिंदु सामंता ॥
ज्यौ रोजा सों झुकि । वहथ छंडै जुधवंता ॥

कूरंभ सकल बरबंधि कैं। हौं बंधन गोरी करौं ॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा। सुबर बीर कित्ती धरौं ॥ छं० ॥ १७॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा ॥ षरिग सहाब महुव्व धर। दिल्ली दक्खिन छंडि ॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै। आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी। पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥ छं० ॥ १९ ॥
भिरै बीर बीरं, बजे सद्द तीरं। भजै कोटि धारी, बयन्नं करारी ॥ छं० ॥ २० ॥
करं कुंत हल्लैं, महाबीर बुल्लै। मलैसिंह हथ्थं, दिषै कोटि सथ्थं ॥ छं० ॥ २१ ॥
रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं। स्वयं बीर बीरं, महामत्त तीरं ॥ छं० ॥ २२ ॥
जिनै मुष्ष पानी, झुलै षग्ग बानी। उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त भावै॥ छं० ॥ २३ ॥
छुटै बीर वीरं, रूलंते सरीरं। कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा ॥ भीर सु भंजत बीर बर। चढ्यौ भान मध्यान ॥
जे कूरंभ करै सु भर। देव मनुष्य प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
धंनि सुक्रत पज्जून कौ। मलयसिंह वलिभद्र ॥
स्वामि सद्द बंधन हसहि। कट्टन भीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥

त्रिभंगी ॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर झाले, झुभझाले ॥
षानं मुलतानं, से षुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं ॥
गजदंत सु कट्टै दै पग चट्टै, कंद उकट्टै, भिल्लानं ॥

*नरजे बल कारी, सुर वर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छं० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना ।

कवित्त ॥ भग्गौ दल पुरसांन । पान पीरोज उपारे ॥
पूत्र पान आकूत्र । पूत्र सिर तेग प्रहारे ॥
मारूराव नरिंद । पारि पप्पर परिहारी ॥
दुत्रै अंग वलिभद्र । घाव दुअ अंग विचारी ॥
पट वार चढ़ायौ पित्त में । जै वज्जा घन वज्जया ॥
प्रथिराज भाग जं जं जियै । कूरंभराव सु रज्जया ॥ छं० ॥ २८ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा ।

प्रथीराज साहन समूह । दल मिलिग मुहस्सै ॥
तिनह दलह रावत्त । डरै डगमगैं न डुस्सै ॥
संभरि राव नरेस । फिरे पिछवाह न दिष्यौ ॥
नलह वंस नल वर । नरेस दस दिसि दल रष्यौ ॥
गहि सेल सकुंजर सिर हयौ । भर भंजन जग डग्ग सुअ ॥
पज्जून महुव्वै जीति रन । जैत पत्र कूरंभ तुअ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना ।

दूहा ॥ जीति महुव्वा लीय वर । ढिल्ली आनि सु पथ्थ ॥
जं जं कित्ति कला वढ़ी । मलैसिंह जस कथ्थ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गज्जने । बहु दल रिन में कढ्ढि ॥
उभै हारि असि पति लही । उर अति रोस अचढ्ढि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून महुवा जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

* इस छन्द का बहुत कुछ अंश लोप हो गया मालूम देता है पाठ में भी बहुत भेद पड़ता है ।

अथ पज्जून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(चौवनवां समय।)

और सामतों को महुवा में छोड़ कर पज्जून का नागौर जाना।

कवित्त ॥ रष्षे कन्ह नरिंद। सलष रष्षे बड़ गुज्जर ॥
उदिग वाह पग्गार। साह्र साईं भुज पंजर ॥
रष्ष निड्डुर बीर। बीर रष्षे सु पवारं ॥
किल्हन दे तूंअर। उतंग किल्लन सिर सारं ॥
पज्जून महौवे जीति बर। पुच रष्षि बलिभद्र बर ॥
तिय बंध मलैसी पल्हसी। सुवर चित्त चिंता सुभर ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ ए सब रष्षि पजून संग। दै साँईं सिर भार ॥
बर नागौर सु रष्षिया। झिल्लन सार प्रहार ॥ छं० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै। तज्जि मौहव महत्त सम ॥
उभै हारि सिर धार। छंडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बढ़िय दुःष घटि सुष्ष। संझ छायारु प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन एम। पाग बंधों कूरंभ हनि ॥
पठ्ठये दूत नागौर दिसि। संभरि आषेटक स पुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ़। दिसि जुग्गिनिपुर गंम तह ॥
छं० ॥ ३ ॥

धर्म्मायन का गजनी को समाचार देना।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा। सुर धर सुभर सु रष्षि ॥
ध्रम्माइन काइथ कुटिल। कग्गद गोरी लिष्षि ॥ छं० ॥ ४ ॥

गोरी पै गय दूत बर। षान [1]साहि सुरतान॥
बर कूरंभ चरित्त दिषि। धर नागौर प्रमान॥ छं० ॥ ५॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्षि फुनि॥
संभरिवै जहों दिसान। आसेर सु हिंडिय॥
व्याह विनोद सुरंग। न्रपति देवास समंडिय॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कढ्ढिहौं॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु वपु षंडिहौं॥ छं० ॥ ६॥

पद्धरी ॥ लष तीन मीर अवसान सद्धि। चहुआन धरा कामना किद्धि॥
दस सहस करी मत्त प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि॥
छं० ॥ ७॥

पाइक्क सहस चौसह चिअच्छ। दह घाव इक्क टारंत स्वछ॥
सावद्द वेध साइक्क मग्ग। दिष्षेव साइ बंधंत षग्ग॥ छं० ॥ ८॥

साइक्क साइ बर हने तीर। असि वरहु पंच कटि बाज बीर॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस॥
छं० ॥ ९॥

कूरंभ दीसा फुरमान लष्षि। सिर ताव भाव बहु बैन अष्षि॥
फुरमान लिष्षि सुरतान बीर। मुक्कले दूत नागौर तीर॥ छं० ॥ १०॥
पज्जून तेगवर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्थ॥
छं० ॥ ११॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर॥
सम सहाब संमर करन। आयो जोजन तीर॥ छं० ॥ १२॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

कवित्त ॥ हँसि पज्जून नरिंद। कहै सुरतान साह वर ॥
जीव डरै लज्जवै। सो न कूरंभ होहि नर ॥
मो न होहि रघुवंस। तेग छंडैं मरनं डर ॥
हम छंडैं जव तेग। सूर उग्गै न दीह पर ॥
चल्लै न पवन गंगा थकै। गवरि तजै वर ईस बर ॥
पज्जून नाम कूरंभ मो। साहि जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १३ ॥
कहै राज पज्जून। वीर कूरम्भ चेत वर ॥
हम सलाह सुरतान। हम सु रष्षें ढिल्लिय धर ॥
हम रवि मंडल भेदि। जाम लगि सत्त न छंडैं ॥
षंड षंड धर ढारि। सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिव चिंता न करि। मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर। मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कहना।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह। दिय दुवाह सुरतान ॥
भग्गि अवर चक्रित सुभर। कूरँभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान। षान तत्तार बुलायौ ॥
हम सुषान जंगली। जुद्ध चहुआन चलायौ ॥
षोषंदा वर वाद। मारि गम्मार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी साहावदीन। लोकह परि लित्तौ ॥
पज्जून सुनवि सामंत सम। आय पाय सुरतान परि ॥
कै अप्पि कोट नागौर तजि। कै सु साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ।

इधर नागौर में किलेबन्दी होना।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र बर। मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहिं साह संमुह लरन। लज्जह काँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
बर पज्जून बरज्जिया। न्टपतिन ढिल्ली ढाइ ॥

को रष्षै ढुंढा रहा। उभै पूत सँग लाइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
तात सु अग्या मानि बर। साजि कोट नागौर ॥
सकल सूर सामंत मनि। मरन सरन किय और ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय की बीर व्याख्या।

कवित्त ॥ सकल सूर सों कही। बीर कूरंभ उचारिय ॥
न रहै तन धन तरुनि। किरनि वेताइन चारिय ॥
वापी कूप तड़ग्ग। सरित सर बर गिरि जैहैं ॥
मठ मंडप बर कोट। कोटि पाषंड सचै हैं ॥
अप कित्ति कित्ति जैहै न जग। रहै मग्ग षिची सुबर ॥
पज्जून द्रढ्ढ नागौर गहि। साधन सार समग्ग कर ॥ छं० ॥ २० ॥

यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नाल चलाना।

पद्धरी ॥ सुरतान घेरि नागौर गढ्ढ। मानो कि मद्धि प्रक्कार मढ्ढ ॥
अर बाज करिय पावस पमान। मानो नषिच मधि एम जान॥
छं० ॥ २१ ॥
सावाति भांति चिहुं दिसा लग्गि। अंजनी सुतन दै लंक अग्गि ॥
गोला अवाज दस दिसा घोरि। बंधनह पाज कपि करिय सोर ॥
छं० ॥ २२ ॥
दस दिसा षान गढ़ बंटि दीन। अप अप्प ठौर चौकीस कीन ॥
त्रय लष्ष मीर नाषित अमान। घेऱ्यौ सु मद्धि पज्जून भान ॥
छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर। पंति मंडी सु पंति पर ॥
दैव काल सामंत। सत्त छूटंत बीर बर ॥
पथ्थ गोपी लुट्टई। बहित बारह सत लुथ्यौ ॥
दुर्जोधन बल बंधि। सिंधु बंधी जल लुथ्यौ ॥

जानंदौ मत्त सुरतान वर । सकल सूर सामंत डर ॥
जंपै सु चंद कूरंभ जस । प्रथीराज जित्तौ सु भर ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून रु वलिभद्र । बोलि कूरंभ करारो ॥
मत छुट्यौ नहि साह । सत्त मो सत्तह सारो ॥
उदिग बांह पग्गार । सुनहु सामंत सवाहौ ॥
लक्ख फौज गोरी । नरिंद पंती गज गाहौ ॥
पंचीस पंच नह अग्गरौ । फेरि काल फुनि फुनि परौ ॥
जं करो सब्ब सामंत मिलि । बोल रहै जुग उब्बरौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना ।

तेग तमकि पक्करिग । सकल सामंत सूर वर ॥
पंच बंध कूरंभ । कोटि रप्पे पहार भर ॥
उघ्घारिय गढ़ पौरि । अड निसि वीर सु तत्ते ॥
गत्तिवाह करि चाह । कूर करि सूर सपत्ते ॥
राजाधिराज सामंत सर । तमकि तमकि तेगं कसी ॥
ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि । कूरंभ आनन में बसी ॥
छं० ॥ २६ ॥

मुसल्मान सेना के पहरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना ।

विराज ॥ वसी मुष्य लज्जी, सिला धूर रज्जी । दिसा उत्तरायं, सु वीरं पठायं ॥
छं० ॥ २७ ॥

कियं कूच मंचं, हलाल अनंतं । लगे लोइ चौकी, मनो नारि सौकी ॥
छं० ॥ २८ ॥

दुअं इक्क थीयं, भजे पुट्ठि दीयं । चढ़े पान षानं, समंझी गुरानं ॥
छं० ॥ २९ ॥

सबै सेन धायौ, षषं जैति नायौ । मजूनं सपूतं, मिलै सिंह जूतं ॥
छं० ॥ ३० ॥

नषे कोट पाटं, हुऔ जोट थाटं। कटे कोट डेरा, कियं साह घेरा॥
छं० ॥ ३१ ॥

मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं। सुरत्तान पायौ, सनंमुष्य धायौ॥
छं० ॥ ३२ ॥

सबै सूर सज्जी, मंडे जानि पज्जी। षुले षग्ग राजी, वलीभद्र साजी॥
छं० ॥ ३३ ॥

भुजं ओट कोटं, पहारंति जोटं। मुषं सुष्य आई, सहस्सा दिषाई॥
छं० ॥ ३४ ॥

जकी जोग माया, हरी रूप पाया। तुटै अंग अंगं, विभंगं त्रिभंगं॥
छं० ॥ ३५ ॥

छनंकेति तीरं, परं वज्र ओरं। पयं पल्ह धायौ, सुरत्तान आयौ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मिलै सिंह साहं, विवंधो विवाहं। उड़ै चाल टोपं, ति कूरंभ कोपं॥
छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक्क ओर बीरम्म बर। कियौ गहम्मह सूर॥
परि सुरतानह उप्परै। अति आतुर गति क्रूर॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का युद्ध।

षा षुरसान ततार तब। सुनिय कूह दल सथ्थ॥
सहस बीस गष्षर लियें। आयो बीर समथ्थ॥ छं० ॥ ३९ ॥

नंषि पाट पज्जून रिन। पत्ते गष्षर कोट॥
सहस बीस गष्षर मसँद। लग्गि करी जम जोट॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना।

कवित्त ॥ सहस बीस गष्षर गुराय। तत्तार षान रहि॥
नव दूनं कटि बाज। बीर बलिभद्र हथ्थ बहि॥
मुररि मुररि मारूफ। बान कम्मानति [1]नग्गी॥
मुक्कि बान कम्मान। तेग कड्डी सालग्गी॥

(१) कृ. को.-भग्गी।

वजि घाइ निघाइ अघाय घट। वर वसंत जिम दिष्षि भर॥
फुल्लै सु जानि केसू सुरंग। यौ दीसै वर वीर नर॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ लरत पिष्षि वलिभद्र कौं। हरषि पजून सुचित्त॥
को रष्षै कविचंद इह। हम समान तुम मित्त॥ छं० ॥ ४२ ॥
परे दौरि हिंदू सुभर। उसर साह साहाब॥
औसरि लगि आसुर सयन। मद्धति वेर किताब॥ छं० ॥ ४३ ॥

पज्जून राय के पुत्रों का पराक्रम।

भुजंगी ॥ पऱ्यो षान जल्लाल सें तीन जामं। भई बारहूं फौज सौ एक ठामं॥
लरंतं सु वीरं प्रमानं प्रमानं। वजे वंस नंसं करष्षे कमानं॥
छं० ॥ ४४ ॥

मिलै सिंह धायौ लषें वीर धीरं। गही वग्ग वलिभद्र आनुज्ज वीरं॥
दुअं वीर तेगं हुड़ा होड़ वाहै। मनों चचरी चक्र डंकेस गाहैं॥
छं० ॥ ४५ ॥

नियं ध्रम्म रष्षे सदा व्रत्त ग्रेहं। हडूहूह षेलंत वालक्क जेहं॥
छुरी धार धारं छुरै हथ्थ नाहीं। गहीदंत वग्गं कटारी समाहीं॥
छं० ॥ ४६ ॥

झरे षग्ग षग्गं चिनंगीत उट्ठैं। मनों झिंगनं भद्दवं रैनि चट्ठैं॥
इलाहं इलाहं कहैं षान जादे। इसे वीर वीरं महो माह वादे॥
छं० ॥ ४७ ॥

करै मुष्प पूतं पजूनं दुहाई। प्रलै काल मानों उभै सेस धाई॥
दुअं वाह वीरं वहै वीर भग्गे। इसे सूर कूरंभ के हथ्थ लग्गे॥
छं० ॥ ४८ ॥

कहै मेछ रुष्पं सरुष्पं प्रमानं। किधों मानवं लोह लै देव जानं॥
द्रुमं ढाल ढालं दुवं संक्ररक्के। लग्यौ अंस वंसं सु वंसं षरक्के॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै वान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै तथ्थ गिद्धं सु पावै न जानं॥
मलै सिंह हथ्थं पऱ्यौ वथ्थ गोरी। मनों फूल माला लई हथ्थ जोरी॥
छं० ॥ ५० ॥

लगे लोह अंगं परे जंग षानं। पन्यौ पान षुरसान तह षेत पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंष्यौ सु भर। मलै सिंह कूरंभ॥
दस हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तन तरंग स्रूरंम॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जित्तें भग्गौ सु अरि। वर बंध्यौ सुरतान॥
दुअ सु लष्य को अंग लै। धनि कूरंभ प्रमान॥ छं० ॥ ५३॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त॥ षूव षान मारुफ। षूव दल मलिय मलैसी॥
बंध्यौ गोरी साहि। भांति करिकें जु प्रलै सी॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं॥
सुबर भाग प्रथिराज। वीर कूरम्भ सु गावैं॥
लै गयौ साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया॥
कूरंभ वंस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ षान तत्तार। साहि गहि कोट पयट्ठौ॥
सुरतानह सब सेन। संकि आतुर वर नट्ठौ॥
छंडि करी सें सत्त। बुगर आतुर अध हैं बर॥
हसम हेम डेरा। जरीन बरभर दर कज्जर॥
हुअ प्रात आइ पज्जून भर। करि हसम्म हैवर गिरद॥
कविचंद कित्ति उज्जल उदित। राका निसि चंदह सरद॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरँभ धारिय॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकरारिय॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु॥

[1]वार वार प्रौढा प्रमान। दंड करि घर जावहु॥
कोरान करीम करम्म तजि। हम सु पैज पौरान किय॥
कूरंभ समह मुर षेत षसि। षोय लज्ज षुरसान किय॥छं०॥५६॥

दूहा॥ दंड मंडि सुरतान सिर। छंडि दयौ चहुआन॥
औ सु भ्रम हिंदवान कुल। करिग चंद बष्यान॥ छं०॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछावाहा पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौं प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५४॥

(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और "दंड" शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्रति में पाठभेद नहीं है।